

नमो नमो निम्मलदंसणस्स

पू. आनंद-क्षमा-ललित-सुशील-सुधर्मसागर गुरुभ्यो नमः

३९

महानिसीहं-छट्टं छेयसुत्तं

मुनि दीपरत्नसागर

Date : / /2012

Jain Aagam Online Series-39

कमंको	अज्झयणं	उद्देशक	सुत्तं	गाहा	अणुककमो	पिडंको
१	सल्लुद्धरणं	-	१-२१७	१-७	१-२२५	२
२	कम्मविवाग-वागरणं	३	१-२०८	१-३२	२२६-४६६	१६
३	कुसील लक्खणं	-	१-१३६	१-४२	४६७-६५३	३६
४	कुसील संसग्गी	-	१-१४	१-११	६५४-६८३	५७
५	नवनीयसारं	-	१-१२८	१-२९	६८४-८४४	६५
६	गीयत्थविहारो	-	१-४१६	१-२	८४५-१३५६	८९
७	पच्छित्तसुत्तं [एगंतनिज्जरा चूलिया-१]	-	१-१०३	१-२२	१३५७-१४८३	११५
८	सुसढअनगार कहा [चूलिया-२]	-	१-३०	१-८	१४८४-१५२८	१३४

३९ महानिसीहं - छट्ठं छेयसुत्तं

० पढमं अज्झयणं-सल्लुद्धरणं ०

[१] ओम् नमो तित्थस्स । ओम् नमो अरहंताणं । सुयं मे आउसं ! तेणं भगवया एवम् अक्खायं-इह खलु छउमत्थ-संजम-किरियाए वट्टमाणे जे णं केइ साहू वा, साहूणी वा, से णं इमेणं परमत्थ-तत्त-सार-सब्भयत्थ-पसाहग-सुमहत्थातिसय-पवर-वर-महानिसीह-सुयक्खंध-सुयाणुसारेणं तिविहं तिविहेणं सव्व-भाव-भावंतरंतरेहि णं नीसल्ले भवित्ताणं आयहियद्वाए अच्चंत-घोर-वीरुग्ग-कट्ट-तव-संजमानुद्वाणेसुं सव्व-पमाया-लंबण-विप्पमुक्के अनुसमयमहणिसमनालसत्ताए सययं अनित्त्विण्णे अनन्न-परम-सद्धा-संवेग-वेरग्ग-मग्गगए निण्णियाणे अनिगूहिय-बल-वीरिय-पुरिसक्कार-परक्कमे अगिलाणीए वोसट्ट-चत्त-देहे सुनिच्छि-एग्गचित्ते-अभिक्खणं अभिरमेज्जा ।

[२] नो णं राग-दोस-मोह-विसय-कसाय-नाणालंबणानेग-पमाय-इइडि-रस-साया गारव-रोद्ध-ट्टज्जाण-विगहामिच्छत्ताविरइ-दुद्ध-जोग-अनाययणसेवणा-कुसीलादि-संसग्गी-पेसुन्नसब्भक्खाण-कलह-जातादि-मय-मच्छरामरीस-ममीकार-अहंकारादि-अनेग-भेय-भिन्न-तामस-भाव-कलुसिएणं हियएणं हिंसालिय चोरिक्क-मेहुण-परिग्गहारंभ-संकप्पादि-गोयर-अज्झवसिए-घोर-पयंड-महारोद्ध-घन-चिक्कण-पाव-कम्म-मल-लेव-खवलिए असंवुडासव-दारे ।

[३] एकक-खण-लव-मुहुत्त निमिस-निमिसद्धभंतरमवि ससल्ले विरत्तेज्जा, तंजहा -

[४] उवसंते सव्वभावेणं विरत्ते य जया भवे ।

सव्वत्थ विसए आया रागेयर-मोह-वज्जिरे ॥

[५] तथा संवेगमावण्णे पारलोइअ वत्तणिं ।

एग्गगेणेसती सम्मं हा मओ कत्थ गच्छिहं ? ॥

[६] को धम्मो को वओ नियमो को तवो मेऽनुचिद्धिओ ।

किं सीलं धारियं होज्जा को पुण दानो पयच्छिओ ॥

[७] जस्साणुभावओन्नत्थ हीन-मज्झुत्तमे कुले ।

सग्गे वा मनुय-लोए वा सोक्खं रिद्धिं लभेज्जहं ॥

[८] अहवा किंथ विसाएणं ? सव्वं जाणामि अत्तियं ।

दुच्चरियं, जारिसो याहं, जे मे दोसा य जे गुणा ? ॥

[९] घोरंधयार-पायाले गमिस्सेऽहमनुत्तरे ।

जत्थ दुक्ख-सहस्साइं अनुभविस्सं चिरं बहू ॥

[१०] एवं सव्वं वियाणंते धम्माधम्मं सुहासुहं ।

अत्थेगे गोयमा ! पाणी जे मोहायहियं न चिट्ठए ॥

- [११] जे यावाय-हियं कुज्जा कत्थई पारलोइयं ।
मायाडंभेण तस्सावी सयमवी तं न भावए ॥
- [१२] आया सयमेव अत्ताणं निउणं जाणे जहड्डियं ।
आया चेव दुपत्तिज्जे धम्ममवि य अत्त-सक्खियं ॥
- [१३] जं जस्सानुमयं हियए सो तं ठावेइ सुंदर-पएसु ।
सद्धली निय-तणए तारिसकूरे वि मन्नइ विसिद्धे ॥
- [१४] अत्तत्तीया समेच्चा सयल कप्पयंतस्सप्पणप्पं पाणिणो ।
दुट्ठं वइ-काय-चेट्ठं मणसिय-कलुसं जुंजयंते चरंते ॥
निद्धोसं तं च सिद्धे ववगय-कलुसे पक्खवायं विमुच्चा ।
विक्खंतस्सच्चंतपावे कलुसिय-हिययं दोस-जालेहिं नद्धं ॥
- [१५] परमत्थ तत्त सिद्धं सब्भूयत्थ पसाहगं ।
तब्भणियानुट्ठाणेणं जे आया रंजए सकं ॥
- [१६] तेसुत्तमं भवे धम्मं उत्तमा तय-संपया ।
उत्तमं सील-चारित्तं उत्तमा य गती भवे ॥
- [१७] अत्थेगे गोयमा ! पाणी जे एरिसमवि कोडिं गते ।
ससल्ले चरती धम्मं आयहियं नावबुज्झइ ॥
- [१८] ससल्लो जइ वि कहुग्गं घोर-वीर-तवं चरे ।
दिव्वं वाससहस्सं पि ततो वी तं तस्स निप्फलं ॥
- [१९] सल्लं पि भन्नई पावं जं नालोइय-निंदियं ।
न गरहियं न पच्छित्तं कयं जं जह य भाणियं ॥
- [२०] माया-डंभमकत्तत्त्वं महापच्छन्न-पावया ।
अयज्ज-मनायारं च सल्लं कम्मद्व-संगहो ॥
- [२१] असंजम-अहम्मं च निस्सील-व्वतता वि य ।
सकुलसत्तमसुद्धी य सुकयनासो तहेव य ॥
- [२२] दुग्गइ-गमन-मनुत्तारं दुक्खे सारीर-मानसे ।
अव्वोच्छिन्ने य संसारे विग्गोवणया महंतिया ॥
- [२३] केसं विरूव-रूवत्तं दारिद्धं-दोहग्गया ।
हा हा भूयसवेयणा परिभूयं च जीवियं ॥
- [२४] निग्घिण-नित्तिंस-कूरत्तं निद्धय-निक्किययावि य ।
निल्लज्ज-गूढहियत्तं वंक-विवरीय-चित्तया ॥
- [२५] रागो दोसो य मोहो य मिच्छत्तं घन-चिक्कणं ।
सम्मग्गनासो तह य एगे ऽजस्सित्तमेव य ॥
- [२६] आणा-भंगमबोही य ससल्लत्ता य भवे भवे ।
एमादी पाव-सल्लस्स नामे एगड्डिए बहू ॥

- [२७] जे णं सल्लिय-हिययस्स एगस्सी बहू-भवंतरे ।
सव्वंगोवंग-संधीओ पसल्लंती पुणो पुणो ॥
- [२८] से य दुविहे समक्खाए सल्ले सुहुमे य बायरे ।
एक्केक्के तिविहे नेए घोरुग्गुग्गतरे तहा ॥
- [२९] घोरं चउव्विहा माया घोरुग्गं मान-संजुया ।
माया लोभो य कोहो य घोरुग्गुग्गतं मुणे ॥
- [३०] सुहुम-बायर-भेएणं सप्पभेयं पि णं मुनी ।
अइरा समुद्धरे खिप्पं ससल्ले नो वसे खणं ॥
- [३१] खुड्डलगे वि अहिपोए सिद्धत्थयतुल्ले सिही ।
संपलग्गे खयं नेइ नर-पुरे विंझाडई ॥
- [३२] एवं तनु-तनुययरं पावसल्लमणुद्धियं ।
भव-भवंतरकोडीओ बहु संतावपदं भवे ॥
- [३३] भयवं सुदुद्धरे एस, पावसल्ले दुहप्पए ।
उद्धरिउं पि न याणंती बहवे जह वुद्धरिज्जई ॥
- [३४] गोयमा ! निम्मूलमुद्धरणं निययमे तस्स भासियं ।
सुदुद्धरस्सावि सल्लस्स सव्वंगोवंग-भेदिणो ॥
- [३५] सम्मद्धंसणं पढमं सम्मन्नाणं बिइज्जयं ।
तइयं च सम्मचारित्तं एगभूयमिमं तिगं ॥
- [३६] खेत्तीभूते वि जे जित्ते जे गूढसद्धंसणं गए ।
जे अत्थीसुं ठिए केई जेत्थिमब्भंतरं गए ॥
- [३७] सव्वंगोवंग-संखुत्ते जे सब्भंतर-बाहिरे ।
सल्लंती जे न सल्लंती ते निम्मूले समुद्धरे ॥
- [३८] हयं नाणं कियाहीणं हया अन्नाणतो किया ।
पासंतो पंगुलो दइढो धावमाणो य अंधओ ॥
- [३९] संजोग-सिद्धीअ उ गोयमा फलं नहु एगचक्केण रहो पयाइं ।
अंधो य पंगू य लवणे समिच्चा ते संपउत्ता नगरं पविट्ठा ॥
- [४०] नाणं पयासयं सोहओ तवो संजमो य गुत्तिकरो ।
तिण्हं पि समाओगे गोयम ! मोक्खो न अन्नहा उ ॥
- [४१] ता नीसल्ले भवित्ताणं सव्वसल्ल-विवज्जिए ।
जे धम्मसमणु चिद्धेज्जा सव्व-भूय सप्पकंपि वा ॥
- [४२] तस्स तं सफलं होज्जा जम्म-जम्मंतरेसु वि ।
विउला संपय-रिद्धी य लभेज्जा सासयं सुहं ॥
- [४३] सल्लमुद्धरिउ-कामेणं सुपसत्थे सोहणे दिने ।
तिहि-करण-मुहुत्त नक्खत्ते जोगे लग्गे ससी-बले ॥

- [४४] कायव्वाऽऽयंबिल-कखमणं दस दिने पंचमंगलं ।
परिजवियव्वेऽद्वसयं सयहा तदुवरिं अद्वमं करे ॥
- [४५] अद्वम-भत्तेण पारेत्ता काउणाऽऽयंबिलं तओ ।
चेइय-साहू य वंदित्ता करिज्ज खंतमरिसियं ॥
- [४६] जे केइ दुदु संलत्ते जस्सुवरिं दुदु चिंतियं ।
जस्स य दुदु कयं जेण पडिदुदुं वा कयं भवे ॥
- [४७] तस्स सव्वस्स तिविहेणं वाया मनसा य कम्मणा ।
नीसल्लं सव्वभावेणं दाउं मिच्छा मि दुक्कडं ॥
- [४८] पुणो वि वीयरागाणं पडिमाओ चेइयालए ।
पत्तेयं संथुणे वंदे एगगो भत्ति-निब्भरो ॥
- [४९] वंदित्तु चेइए सम्मं छद्वभत्तेण परिजवे ।
इमं सुयदेवयं विज्जं लक्खहा चेइयालए ॥
- [५०] उवसंतो सव्वभावेणं एगचित्तो सुनिच्छिओ ।
आउत्तो अक्खिखत्तो रागरइ-अरइ-वज्जिओ ॥

[५१] अ उ म् । अ म् ओ क् ओ इ अ ब् उ द् ई ण् अ म्,

अ उ म् न् अ म् ओ प् अ य् आ ण् उ स् आ र् ई ण् अ म्, अ उ म् न् अ म् ओ स् अ म् भू इ अस्
ओ ई ण् अ म्, अ उ म् न् अ म् ओ ख् ई र् आ स व ल द् ई ण् अ म्, अ उ म् न् अ म् ओ स व्
ओ सहि ल द् ई ण् अ म् अ उ म् न् अ म् ओ अ क् ख् ई ण् अ म् अ ह् आ णस् लद् ई ण् अ म्,

अ उ म् न् अ म् ओ भगवओ अरहओ महइ महावीर वद्वमाणस्स धम्म तित्थंकरस्स
अउम् न् अ म् ओ सव्व धम्मतित्थंकराणं अउम् न् अ म् ओ सव्व सिद्धाणं अउम् ण् अ म् ओ सव्व साहूणं अउम् न्
अ म् ओ भगवतो मइ न् आ णस्स अउम् न् अ म् ओ भगवओ सुय न् आणस्स अउम् न् अ म् ओ भगवओ ओहइ
न्आणस्स अउम् न् अ म् ओ भगवओ मनपज्जव न् आ णस्स अउम् न् अ म् ओ भगवओ क् ए वल न्
आ णस्स अउम् न् अ म् ओ भगवतीए सुय द् ए व् अ य् आ ए सिज्जउ म् ए सु य् आ हि वा [एसा महा]
विज्जा अउम् न् अ म् ओ भगवओ अउम् न् अ म् ओ व् अ म् अउम् न् अ म् ओ अउम् न् अ म् ओ आ औ
अभिवत्तीलक्खणं सम्मदंसणं अउम् न् अ म् ओ अद्वआ र् अ स् ई ल् अ म् ग-सहस्साहिद्वियस्स ण् ई स् अ म्
ग ण् इ ण् इ य् आ ण् अ ण् ई सल्ल ण् इ भय सल्लगतण स् अ र् अ ण्ण सव्वदुक्खनिम्महण-
परमनिव्वुइकरस्स णं पवयणस्स परमपवित्तुमस्सेति ।

[ॐ नमो कोदुवुद्धीणं ॐ नमो पयाणुसारीणं ॐ नमो संभिण्णसोईणं ॐ नमो
खीरासवलद्धीणं ॐ नमो सव्वोसहिलद्धीणं ॐ नमो अक्खीणमहानसलद्धीणं ॐ नमो भगवओ अरहओ
महइमहावीरवद्वमाणस्स धम्मतित्थंकरस्स ॐ नमो सव्वधम्मतित्थंकराणं ॐ नमो सव्वसिद्धाणं ॐ नमो
सव्वसाहूणं ॐ नमो भगवतो मइनाणस्स, ॐ नमो भगवओ सुयनाणस्स, ॐ नमो भगवओ ओहिनाणस्स
ॐ नमो भगवओ मनपज्जवनाणस्स ॐ नमो भगवओ केवलनाणस्स ॐ नमो भगवतीए सुयदेवयाए
सिज्जउ मे सुयाहिवा विज्जा ॐ नमो भगवओ ॐ नमो वं ॐ नमो ॐ नमो आ औ अभिवत्ती लक्खणं
सम्मदंसणं ॐ नमो अद्वारससीलंगसहस्साहिद्वियस्स नीसल्लनिभय-सल्लगतण

सरण्ण सव्वदुक्ख-निम्महण-परम-निव्वुड्ढकरस्स णं पवयणस्स परम पवित्तुत्तमस्सेति ॥

[५२] एसा विज्जा सिद्धंतिएहिं अक्खरेहिं लिखिया, एसा य सिद्धंतिया लीवी । अमुणिय-समयसब्भावाणं सुयधरेहिं णं न पण्णवेयव्वा । तह य कुसीलाणं च ।

- [५३] इमाए पवर-विज्जाए सव्वहा उ अत्ताणगं ।
अहिमंतेऊण सोवेज्जा खंतो दंतो जिइंदिओ ॥
- [५४] नवरं सुहासुहं सम्मं सिविणगं समवधारए ।
जं तत्थ सिविणगे पासे तारिसगं तं तहा भवे ॥
- [५५] जइ णं सुंदरगं पासे सिमिणगं तो इमं महा ।
परमत्थ-तत्त-सारत्थं सल्लुद्धरणं मुणेतुणं ॥
- [५६] देज्जा आलोयणं सुद्धं अट्ठ-मय-ट्ठाण-विरहिओ ।
रंजंतो धम्मतित्थयरे सिद्धे लोगग-संठिए ॥
- [५७] आलोएत्ताण नीसल्लं सामन्नेण पुणो वि य ।
वंदित्ता चेइए साहू विहि-पुव्वेण खमावए ॥
- [५८] खामेत्ता पाव-सल्लस्स निम्मूलुद्धरणं पुणो ।
करेज्जा विहि-पुव्वेणं रंजंतो ससुरासुरं जगं ॥
- [५९] एवं होऊण नीसल्लो सव्व-भावेण पुनरवि ।
विहि-पुव्वं चेइए वंदे खामे साहम्मिए तहा ॥
- [६०] नवरं जेण समं वुत्थो जेहिं सद्धिं पविहरिओ ।
खर-फरुसं चोइओ जेहिं सयं वा जो य चोइओ ॥
- [६१] जो वि य कज्जमकज्जे वा भणिओ खर-फरुस-निट्ठुरं ।
पडिभणियं जेण वी किंचि सो जइ जीवइ जई मओ ॥
- [६२] खामेयव्वो सव्व-भावेणं जीवंतो जत्थ चिट्ठइ ।
तत्थ गंतूण विनएण मओ वी साहुसक्खियं ॥
- [६३] एवं खामण-मरिसामणं काउं तिहुयणस्स वि भावओ ।
सुद्धो मन-वइ-काएहिं एयं घोसेज्ज निच्छिओ ॥
- [६४] खामेमि अहं सव्वे सव्वे जीवा खमंतु मे ।
मित्ती मे सव्वभूएसुं वेरं मज्झं न केणई ॥
- [६५] खमामि हं पि सव्वेसिं सव्व-भावेण सव्वहा ।
भवभवेसु वि जंतूणं वाया-मनसा य कम्मणा ॥
- [६६] एवं घोसेत्तु वंदिज्जा चेइय-साहू विहीय उ ।
गुरुस्सावि विही-पुव्वं खामण-मरिसामणं करे ॥
- [६७] खमावेत्तु गुरुं सम्मं ताण-महिमं स-सत्तिओ ।
काऊणं वंदिऊणं च विहि-पुव्वेण पुणो वि य ॥
- [६८] परमत्थ-तल-सारत्थं सल्लुद्धरणमिमं सुणे ।

सुणित्ता तहमालोए जह आलोयंतो चेव उप्पए केवलं नाणं

॥

- [६९] दिन्नेरिस-भावत्थेहिं नीसल्ला आलोयणा ।
जेणालोयमाणणं चेव उप्पन्नं तत्थेव केवलं ॥
- [७०] केसिं चि साहिमो नामे महासत्ताण गोयमा ! ।
जेहिं भावेणालोययंतेहिं केवलनाणमुप्पाइयं ॥
- [७१] हा हा ! दुट्ठ-कडे साहू हा हा ! दुट्ठु विचिंतरे ।
हा हा ! दुट्ठु-भाणिरे साहू हा हा ! दुट्ठुमनुमते ॥
- [७२] संवेगालोयगे तह य भावालोयण-केवली ।
पय-खेव-केवली चेव मुहनंतग-केवली तहा ॥
- [७३] पच्छित्त-केवली सम्मं महा-वेरगग-केवली ।
आलोयणा केवली तह य हा ! हं पावि त्ति-केवली ॥
- [७४] उस्सुत्तुम्मगग-पन्नवए हा हा ! अनायार-केवली ।
सावज्जं न करेमि त्ति अक्खंडिय-सील-केवली ॥
- [७५] तव-संजम-वय-संरक्खे निंदण-गरिहणे तहा ।
सव्वत्तो सील-संरक्खे कोडी-पच्छित्तए वि य ॥
- [७६] निप्परिकम्मे अकंडुयणे अनिमिसच्छी य केवली ।
एग-पासित्त दो पहेरे मूणव्वय-केवली तहा ॥
- [७७] न सक्को काउ सामन्नं अनसने ठामि केवली ।
नवकार-केवली तह य निच्चालोयण-केवली ॥
- [७८] निसल्ल-केवली तह य सल्लुद्धरण-केवली ।
धन्नोमि त्ति सपुण्णो स ता हं पी किं न ? केवली ॥
- [७९] ससल्लो हं न पारेमि चल-कट्ट-पय-केवली ।
पक्ख-सुद्धाभिहाणे य चाउम्मासी य केवली ॥
- [८०] संवच्छर-मह-पच्छित्ते हा ! चल-जीविते तहा ।
अनिच्चे खण-विद्धंसी मनुयत्ते केवली तहा ॥
- [८१] आलोय-निंद-वंदियए घोर-पच्छित्त-दुक्करे ।
लक्खोवसगग-पच्छित्ते सम-हियासण-केवली ॥
- [८२] हत्थोसरण-निवासे य अट्ठकवलासि केवली ।
एग-सित्थग-पच्छित्ते दस-वा से केवली तहा ॥
- [८३] पच्छित्ताढवगे चेव पच्छित्तद्ध-कय-केवली ।
पच्छित्त-परिसमत्ती य अट्ठ-स-उक्कोस-केवली ॥
- [८४] न सुद्धी वि न पच्छित्ता ता वरं खिप्प केवली ।
एगं काऊण पच्छित्तं बीयं न भवे जह चेव केवली ॥

[८५] तं चायरामि पच्छित्तं जेणागच्छइ केवली ।

तं चायरामि जेण तवं सफलं होइ केवली ॥

[८६] किं पच्छित्तं चरंतोऽहं चिट्ठं नो तव-केवली ।

जिणाणमाणं न लंघे ऽहं पाण-परिचयण-केवली ॥

[८७] अन्नं होही सरीरं मे नो बोही चेव केवली ।

सुलद्धमिणं सरीरेणं पाव-निड्डहण-केवली ॥

[८८] अनाइ-पाव-कम्म-मलं निद्धोवेमीह केवली ।

बीयं तं न समायरियं पमाया केवली तहा ॥

[८९] दे दे ! खवओ सरीरं मे निज्जरा भवउ केवली ।

सरीरस्स संजमं सारं निक्कलंकं तु केवली ॥

[९०] मनसा वि खंडिए सीले पाणे न धरामि केवली ।

एवं वइ-काय-जोगेणं सीले रक्खे अहं केवली ॥

[९१] एवमादी अनादीया कालाओ नंते मुनी ।

केइ आलोयणा सिद्धे पच्छित्ता केइ गोयमा ! ॥

[९२] खंता दंता विमुत्ता य जिइंदी सच्च-भासिणो ।

छक्काय-समारंभाओ विरते तिविहेण उ ॥

[९३] ति-दंडासव-विरया य इत्थि-कहा-संग-वज्जिया ।

इत्थी-संलाव-विरया य अंगोवंग- ऽनिरिक्खणा ॥

[९४] निम्ममत्ता सरीरे वि अप्पडिबद्धा महायसा ।

भीया च्छि-च्छि-गब्भवसहीणं बहु-दुक्खाउ भवाउ तहा ॥

[९५] तो एरिसेण भावेणं दायव्वा आलोयणा ।

पच्छित्तं पि य कायव्वं तहा जहा चेवेएहिं कयं ॥

[९६] न पुणो तहा आलोएयव्वं माया-डंभेण केणई ।

जह आलोएमाण्णं चेव-संसार-वुड्ढी भवे ॥

[९७] अनंतेऽनाइकालाओ अत्त-कम्महिं दुम्मई ।

बहुविकप्प-कल्लोले आलोएंतो वी अहोगए ॥

[९८] गोयम! केसिं चि नामाइं साहिमो तं निबोधय ! ।

जे सा ऽऽलोयण-पच्छित्ते भाव-दोसेक्क-कलुसिए ॥

[९९] ससल्ले घोर-महं दुक्खं दुरहियासं सु-दूसहं ।

अनुहवंति वि चिट्ठंति पाव-कम्मि नराहमे ॥

[१००] गुरुगा संजमे नाम साहू निद्धंधसे तहा ।

दिट्ठि-वाया-कुसीले य मन-कुसीले तहेव य ॥

[१०१] सुहुमालोयगे तह य परववएसालोयगे तहा ।

किं चालोयगे तह य न किंचालोयगे तहा ॥

[१०२] अकयालोयणे चेव जन-रंजवणे तहा ।

अज्झयणं-१, उद्देशो-

नाहं काहामि पच्छित्तं छम्मालोयणमेव य ॥

[१०३] माया-डंभ-पवंची य पुर-कड-तव-चरणं कहे ।
पच्छित्तं नत्थि मे किंवि न कया लोयणु च्चरे ॥

[१०४] आसन्नालोयणकखाई लहु-लहु-पच्छित्त-जायगे ।
अम्हानालोइयणं चिट्ठे मुहबंधालोयगे तहा ॥

[१०५] गुरु-पच्छित्ताऽहमसक्के य गिलाणालंबणं कहे ।
अरडालोयगे साहू सुण्णा ऽसुण्णी तहेव य ॥

[१०६] निच्छिन्ने वि य पच्छित्ते न काहं वुड्ढिजायगे ।
रंजवण-मेत्तलोगाणं वाया-पच्छित्ते तहा ॥

[१०७] पडिवज्जण-पच्छित्ते चिर-याल-पवेसगे तहा ।
अननुद्विय-पायच्छित्ते अनुभणिय ऽन्नहाऽऽयरे तहा ॥

[१०८] आउट्ठीय महा-पावे कंदप्पा-दप्पे तहा ।
अजयणा-सेवणे तह य सुया ऽसुय-पच्छित्ते तहा ॥

[१०९] दिट्ठ-पोत्थय-पच्छित्ते सयं पच्छित्त-कप्पगे ।
एवइयं एत्थ पच्छित्तं पुव्वालोइय-मनुस्सरे ॥

[११०] जाती-मय-संकिए चेव कुल-मय-संकिए तहा ।
जाती-कुलोभय-मयासंके सुत-लाभिस्सरिय-संकिए तहा ॥

[१११] तवो-मया-संकिए चेव पंडिच्च-मय-संकिए तहा ।
सक्कार-मय-लुद्धे य गारव-संदूसिए तहा ॥

[११२] अपुज्जो वा विहं जम्मे एगजम्मेव चिंतगे ।
पाविट्ठाणं पि पावतरे सकलुस-चित्तालोयगे ॥

[११३] पर-कहावगे चेव अविनयालोयगे तहा ।
अविहि-आलोयगे साहू एवमादी दुरप्पणो ॥

[११४] अनंतेऽनाइ-कालेणं गोयमा ! अत्त-दुक्खिया ।
अहो अहो ! जाव सत्तमियं भाव-दोसेक्कओ गए ॥

[११५] गोयम! नंते चिट्ठंति जे अनादीए ससल्लिए ।
निय-भाव-दोस-सल्लाणं भुंजंते विरसं फलं ॥

[११६] चिट्ठइसंति अज्जावि तेणं सल्लेण सल्लिए ।

अनंतं पि अनागयं कालं तम्हा सल्लं न धारए खणं मुणि ॥ त्ति

[११७] गोयम! समणीण नो संखा जाओ निक्कलुस-नीसल्ल-विसुद्ध-सुनिम्मल-विमल-

मानसाओ अज्झप्पविसोहिए आलोइत्ताण सुपरिफुडं नीसंकं निखिलं निरावयवं निय-दुच्चरियमादीयं सव्वं
पि भावसल्लं । अहारिहं तवो-कम्मं पायच्छित्तमनुचरित्ताणं निद्वोयपाव-कम्म-मल-लेव-कलंकाओ उप्पन्न-
दिव्व-वर-केवलनाणाओ महानुभागाओ महायसाओ महा-सत्त-संपन्नाओ-सुगहिय नामधेज्जाओ अनंतुत्तम-

- [११८] कासिंचि गोयमा ! नामे पुन्न-भागाण साहिमो ।
जासिमालोयमाणीणं उप्पन्नं समणीण केवलं ॥
- [११९] हा हा हा ! पाव-कम्मा हं पावा पावमती अहं ।
पाविट्ठाणं पि पावयरा हा हा हा ! दुट्ठविंतिमो ॥
- [१२०] हा हा हा ! इत्थि भावं मे ताविह-जम्मे उवट्ठियं ।
तहावी न घोर-वीरुग्गं कट्ठं तव-संजमं धरं ॥
- [१२१] अनंता-पाव-रासीओ सम्मिलियाओ जया भवे ।
तइया इत्थित्तणं लब्भे सुद्धं पावाण कम्माण ॥
- [१२२] एगत्थपडी भूताणं समुदय तणुतं तह ।
करेमि जहन पुणो इत्थिहं होमि केवलि ॥
- [१२३] दिट्ठे वि न खंडामि सीलं हं समणि-केवलि ।
हा हा ! मणेण मे किं पि अत्त-दुहत्त-चिंतियं ॥
- [१२४] तमालोइत्ता लहुं सुद्धिं गेण्हे हं समणि-केवलि ।
दड्ढूण मज्झ लावण्णं रूवं कंतिं दित्तिं सिरिं ॥
- [१२५] मा नर-पयंगाहमा-जंतु खयं अनसनं समणि य केवली ।
वा तं मोत्तूण नो अन्नो निच्छयं मह तणूच्छीवे ॥
- [१२६] छक्काय-समारंभं न करेऽहं समणि-केवली ।
पोग्गल-कक्खोरु-गुज्झं तं नाहिं जहनंतरे तहा ॥
- [१२७] जननीए वि न दंसेमि सुसंगुत्तंगोवंगा समणी य केवली ।
बहु-भवंतर-कोडीओ घोरं गब्भ-परंपरं ॥
- [१२८] परियट्ठंतीए सुलद्धं मे नाण-चारित्त-संजुयं ।
मानुसजम्मं स-सम्मत्तं पाव-कम्म-खयंकरं ॥
- [१२९] ता सव्व-भाव-नीसल्ला आलोएमि खणे खणे ।
पायच्छित्तमनुट्ठामि बीयं तं न समारंभं ॥
- [१३०] जेणागच्छति पच्छित्तं वाया मनसा य कम्मणा ।
पुढवि-दगागनि-वाऊ हरिय-कायं तहेव य ॥
- [१३१] बिय-काय-समारंभं बि-ति-चउ-पंचिंदियाण य ।
मुसाणुं पि न भासेमि ससरक्खं पि अदिन्नयं ॥
- [१३२] ने गेण्हं सिमिणंते विं न पत्थं मनसा वि मेहुणं ।
परिग्गहं न काहामि मुलुत्तर-गुण-खलणं तहा ॥
- [१३३] मय-भय-कसाय-दंडेसुं गुत्ती-समितिंदिएसु य ।
तह अट्टारस सीलंग सहस्साहिट्ठिय तणू ॥
- [१३४] सज्झाय-झाण-जोगेसुं अभिरमं समणि-केवली ।

- [१३५] तमहं लिंगं धरेमाणी जइ वि हु जंते निफीलियं ।
मज्झोमज्झी य दो खंडा फालिज्जामि तहेव य ॥
- [१३६] अह पक्खिप्पामि दित्तग्गिं अहवा छिज्जे जइ सिरं ।
तो वी हं नियम-वय-भंगं-सील-चारित्त-खंडणं ॥
- [१३७] मनसा वी एक्क-जम्म-कए न कुणं समणि-केवली ।
खरुट्ट-साण-जईसुं सरागा हिंडिया अहं ॥
- [१३८] विकम्मं पि समायरियं अनंते भव-भवंतरे ।
तमेव खरकम्ममहं पव्वज्जापट्टिया कुणं ॥
- [१३९] घोरंधयारपायाला जेणं नो नीहरं पुणो ।
बे दियहे मानुसं जम्मं तं च बहुदुक्ख-भायणं ॥
- [१४०] अनिच्चं खण-विद्धंसी बहु-दंडं दोस-संकरं ।
तत्थावि इत्थी संजाया-सयल-तेलोकक-निंदिया ॥
- [१४१] तहा वि पावियं धम्मं निव्विग्घमनंतराइयं ।
ता हं तं न विराहेमी पाव-दोसेण केणई ॥
- [१४२] सिंगार-राग-सविगारं साहिलासं न चेट्टिमो ।
पसंताए वि दिट्ठीए मोत्तुं धम्मोवसएसगं ॥
- [१४३] अन्नं पुरिसं न निज्झायं नालवं समणि-केवली ।
तं तारिसं महापावं काउं अक्कहनीययं ॥
- [१४४] तं सल्लमवि उप्पन्नं जह दत्तालोयण-समणि-केवली ।
एमादि-अनंत-समणीओ दाउं सुद्धालोयणं ॥
- [१४५] निसल्ला केवलं पप्पा सिद्धाओ अनादी-कालेण गोयमा ! ।
खंता दंता विमुत्ताओ जिइंदियाओ सच्च-भाणिरीओ ॥
- [१४६] छ-क्काय-समारंभा विरया तिविहेण उ ।
ति-दंडासव-संवुत्ता पुरिस-कहा-संगवज्जिया ॥
- [१४७] पुरीस-संलाव-विरयाओ पुरिसंगोवंग-निरिक्खणा ।
निम्ममत्ताउ स-सरीरे अपडिबद्धाउ महा-यसा ॥
- [१४८] भीया छि-छि-गब्भ-वसहीणं बहु-दुक्खाओ भवसंसरणाओ तहा ।
ता एरिसेण भावेणं दायव्वा आलोयणा ॥
- [१४९] पायच्छित्तं पि कायव्वं तह जह एयाहिं समणीहिं कयं ।
न उणं तह आलोएयव्वं माया-डंभेण केणई ॥
- [१५०] जह आलोयमाणीणं पाव-कम्म-वुड्ढी भवे ।
अनंतानाइ कालेणं माया-डंभ-छम्म-दोसेण ॥
- [१५१] कवडालोयणं काउं समणीओ ससल्लाओ ।

- [१५२] कासिंचि गोयमा ! नमो साहिमो तं निबोधय ।
जाओ आलयमाणाओ भाव-दोसेण ॥
- [१५३] सुट्टुतरगं पाव-कम्म-मल-खवलिय-तव-संजम-सीलंगाणं ।
निसल्लत्तं पसंसियं तं परमभाव-
विसोहिए विणा खणद्धंपि नोभवे ॥
- [१५४] ता गोयम केसिमित्थीणं चित्त-विसोहि सुनिम्मला ।
भवंतरे वि नो होही जेण नीसल्लया भवे ॥
- [१५५] छट्ट-ट्टम-दसम-दुवालसेहिं सुखंति के वि समणीओ ।
तह वि य सराग-भावं नालोयंती न छड्डंति ॥
- [१५६] बहु-विह विकप्प-कल्लोल-माला उक्कलिगाहिणं ।
वियरंतं ते ण लक्खेज्जो दुरवगाह-मन-सागरं ॥
- [१५७] ते कहमालोयणं दैतु जासिं चित्तं पि नो वसे ? ।
सल्लं जो ताणमुद्धरणे स-वंदनीओ खणे खणे ॥
- [१५८] असिनेह-पीड-पुत्वेणं धम्म-सद्धुल्ल-सावियं ।
सीलंग-गुणट्ठाणेसुं उत्तमेसुं धरेइ जो ॥
- [१५९] इत्थी बहुबंधणुम्मुककं गिह-कलत्तादि-चारगा ।
सुविसुद्ध-सुनिम्मल-चित्तं नीसल्लं सो महायसो ॥
- [१६०] दट्टव्वो वंदनीओ य देविंदाणं स उत्तमो ।
दीनत्थी सव्व-परिभूयं विरइट्ठाणे जो उत्तमे धरे ॥
- [१६१] नालोएमी अहं समणी दे कहं किंचि साहुणी ।
बहुदोसं न कहं समणी जं दिट्ठं समणीहिं तं कहं ॥
- [१६२] असावज्ज-कहा समणी बहु आलंबणा कहा ।
पमायखावगा समणी पाविट्ठा बल-मोडी-कहा ॥
- [१६३] लोग-विरुद्ध-कहा तह य परववएसाससलोयणी ।
सुय-पच्छित्ता तह य जायादी-मय-संक्रिया ॥
- [१६४] मूसगार-भीरुया चेव गारव-तिय-दूसिया तहा ।
एवमादि-अनेग-भाव-दोस-वसगा पावसल्लेहिं पूरिया ॥
- [१६५] निरंतरा अनंतेणं काल-समएण गोयमा ! ।
अइक्कंतेणं अनंताओ समणीओ बहु-दुक्खावसहं गया ॥
- [१६६] गोयम! अनंताओ चिट्ठंति जा अनादी-सल्ल-सल्लिया ।
भाव-दोसेक्क-सल्लेहिं भुंजमाणीओ कडु-विरसं घोरग्गुगततरंफलं ॥
- [१६७] चिट्ठइस्संति अज्जावि तेहिं सल्लेहिं सल्लिया ।
अनंतं पि अनागयं कालं तम्हा सल्लं सुसुहमं पि ।

- [१६८] धग-धग-धगस्स पज्जलिए जालमालाउले दढं ।
हुयवहे वि महाभीमे स सरीरं डज्झए सुहं ॥
- [१६९] पयलितिंगार-रासीए एगसि झंपं पुणो जले ।
घल्लित्तो गिरितो सरीरं जं मरिज्जेयं पि सुक्करं ॥
- [१७०] खंडिय-खंडिय-सहत्थेहिं एक्केक्कमंगावयवं ।
जं होमिज्जइ अग्गीए अनु-दियहेयं पि सुक्करं ॥
- [१७१] खर-फरुस-तिकख-करवत्त दंतेहिं फालाविउं ।
लोणूस-सज्जिया-खारं जं धत्तावेयं पि स-सरीरे ऽच्चंत-सुक्करं ।
जीवंतो सयमवी सक्कं खल्लं उत्तारिऊ ण य ॥
- [१७२] जव-खार-हलिद्धादीहिं जं आलिंपे नियं तणुमेयं पि सुक्करं ।
छिंदेऊणं सहत्थेणं जो धत्ते सीसं नियं ॥
- [१७३] एयं पि सुक्करमलीहं दुक्करं तव-संजमं ।
नीसल्लं जेण तं भणियं सल्लो य निय-दुक्खिओ ॥
- [१७४] माया-डंभेण पच्छन्नो तं पायडिउं न सक्कए ।
राया दुच्चरियं पुच्छे अह साहह देह सव्वस्सं ॥
- [१७५] सव्वस्सं पि पएज्जा उ नो निय-दुच्चरियं कहे ।
राया दुच्चरियं पुच्छे साह पुहइं पि देमि ते ॥
- [१७६] पुहवी रज्जं तणं मन्ने नो निय दुच्चरियं कहे ।
राया जीयं निकिंतामि अह निय-दुच्चरियं कहे ॥
- [१७७] पाणेहिं पि खयं जंतो निय-दुच्चरियं कहेइ नो ।
सव्वस्सहरणं च रज्जं च पाणे वी परिच्चएसु णं ॥
- [१७८] मया वि जंति पायाले निय-दुच्चरियं कहिंति नो ।
जे पावाहम्म-बुद्धिया काउरिसा एगजम्मिणो ।
ते गोवंति स-दुच्चरियं नो सप्पुरिसा महामती ॥
- [१७९] सप्पुरिसा ते न वुच्चंति जे दानव इह दुज्जने ।
सप्पुरिसा णं चरिते भणिया जे निसल्ला तवे रया ॥
- [१८०] आया अनिच्छमाणो वि पाव-सल्लेहिं गोयमा ! ।
निमिसद्धानंत-गुणिएहिं पूरिज्जे निय-दुक्किया ॥
- [१८१] ताइं च झाण-सज्झाय-घोर-तव-संजमेण य ।
निद्धंभेण अमाएणं तक्खणं जो समुद्धरे ॥
- [१८२] आलोएत्ताण नीसल्लं निंदिउं गरहिउं दढं ।
तह चरती पायच्छित्तं जह सल्लाणमंतं करे ॥
- [१८३] अन्न-जम्म-पहुत्ताणं खेत्ती-भूयाण वी दढं ।

- [१८४] सो सुहडो सो य सप्पुरिसो सो तवस्सी स-पंडिओ ।
खंतो दंतो विमुत्तो य सहलं तस्सेय जीवियं ॥
- [१८५] सूरुो य सो सलाहो य दडुव्वो य खणे खणे ।
जो सुद्धालोयणं देंतो निय-दुच्चरियं कहे फुडं ॥
- [१८६] अत्थेगे गोयमा ! पाणी जे सल्लं अद्धउद्धियं ।
माया-लज्जा-भया मोहा झसकारा-हियए धरे ॥
- [१८७] तं तस्स गुरुतरं दुक्खं हीन-सत्तस्स संजणे ।
से चिंते अन्नाण-दोसाओ नोद्धरं दुक्खिज्जिहं किल ॥
- [१८८] एग-धारो दु-धारो वा लोह-सल्लो अनुद्धिओ ।
सल्लेगच्छाम जम्मेगं अहवा संसी भवे इमो ॥
- [१८९] पाव-सल्लो पुणासंख-तिक्ख-धारो सुदारुणो ।
बहु-भवंतर-सव्वंगे भिंदे कुलिसो गिरि जहा ॥
- [१९०] अत्थेगे गोयमा ! पाणी जे भव-सय-साहस्सिए ।
सज्झाय-ज्झाण-जोगेणं घोर-तव-संजमेण य ॥
- [१९१] सल्लाइं उद्धरेऊणं चिरयाला दुक्ख-केसओ ।
पमाया बिउण-तिउणेहिं पूरिज्जंती पुणो वि य ॥
- [१९२] जम्मंतरेसु बहुएसु तवसा निद्धडु-कम्मणो ।
सल्लुद्धरणस्स सामत्थं भवती कह वि जंतुणो ॥
- [१९३] तं सामग्गिं लभित्ताणं जे पमाय-वसंगए ।
ते मुसिए सव्व-भावेणं कल्लाणाणं भवे भवे ॥
- [१९४] अत्थेगे गोयम ! पाणी जे पमाय-वसं गए ।
चरंते वी तवं घोरं ससल्लं गोवेतिं सव्वहा ॥
- [१९५] नेयं तत्थ वियाणंति जहा किमम्हेहिं गोवियं ।
जं पंच-लोगपालप्पा-पंचेंदियाणं च न गोवियं ॥
- [१९६] पंच-महालोग-पालेहिं अप्पा-पंचिंदिएहि य ।
एक्कारसेहिं एतेहिं जं दिट्ठं स-सुरासुरे जगे ॥
- [१९७] ता गोयम ! भाव-दोसेणं आया वंचिज्जई परं ।
जेणं चउ-गइ-संसारे हिंडइ सोक्खेहिं वंचिओ ॥
- [१९८] एवं नाऊण कायव्वा निच्छिय-दढ-हियय-धीरिया ।
मह-उत्तिम-सत्त-कुंतेणं भिंदेयव्वा माया-रक्खसी ॥
- [१९९] बहवे अज्जव-भावेणं निम्महिऊण अनेगहा ।
विनयातीहंकुसेण पुणो मानवाइंदं वसीयरे ॥
- [२००] मद्धव-मुसलेण ता चूरे वसियरिऊं जाव दूरओ ।

- [२०१] कोहो य मानो य अनिग्गहीया माया य लोभो य पवड्ढमाणा ।
चत्तारि एए कसिणा कसाया पायंति सल्ले सुदुरुद्धरे बहुं ॥
- [२०२] उवसमेण हणे कोहं मानं मद्दवया जिने ।
मायं च ऽज्जव-भावेणं लोहं संतुट्ठिए जिने ॥
- [२०३] एवं निज्जिय-कसाए जे सत्त-भयट्ठाण-विरहिए ।
अट्ठमय-विप्पमुक्के य देज्जा सुद्धालोयणं ॥
- [२०४] सु-परिफुडं जहावत्तं सव्वं निय-दुक्खियं कहे ।
नीसंके य असंखुद्धे निब्भीए गुरु-संतियं ॥
- [२०५] भूणे मुद्धडगे बाले जह पलवे उज्जु-पद्धरं ।
अवि उप्पन्नं तहा सव्वं आलोयव्वं जहट्ठियं ॥
- [२०६] जं पायाले पविसित्ता अंतरजलमंतरे इ वा ।
कय मह रातोंधकारे वा जननीए वि समं भवे ॥
- [२०७] तं जहवत्तं कहेयव्वं सव्वमन्नं पि निक्खिलं ।
निय-दुक्खिय-सुक्खियमादी आलोयंतेहिं गुरुयणे ॥
- [२०८] गुरु वि तित्थयर-भणियं जं पच्छित्तं तहिं कहे ।
नीसल्ली भवति तं काउं जइ परिहरइ असंजमं ॥
- [२०९] असंजमं भण्णती पावं तं पावमनेगहा मुणे ।
हिंसा असच्चं चोरिक्कं मेहुणं तह परिग्गहं ॥
- [२१०] सद्धा इंदिय-कसाए य मन-वइ-तनु-दंडे तहा ।
एते पावे अछड्डंतो नीसल्लो नो य णं भवे ॥
- [२११] हिंसा पुढवादि-छब्भेया अहवा नव-दस-चोद्धसहाउ ।
अहवा अनेगहा नेया काय-भेदंतरेहि णं ॥
- [२१२] हिओवदेसं पमोत्तूण सव्वुत्तम-पारमत्थियं ।
तत्त-धम्मस्स सव्वसल्लं मुसावायं अनेगहा ॥
- [२१३] उग्गम-उप्पायणेसणया-बायालिसाए तह य पंचेहिं ।
दोसेहिं दूसियं जं भंडोवगरण-पाणमाहरं ।
नव कोडीहिं असुद्धं परिभुंजतो भवे तेणो ॥
- [२१४] दिव्वं काम-रई-सुहं तिविहं तिविहेण अहव ओरालं ।
मनसा अज्झवसंतो अबंभयारी मुणेयव्वो ॥
- [२१५] नव-बंधेचर-गुत्ती-विराहए जो य साहु समणी वा ।
दिट्ठिमहवा सरागं पउंजमाणो अइयरे बंधं ॥
- [२१६] गणणा-पमाण-अइरित्तं धम्मोवगरणं तहा--- ।
[परिग्गहं वियाणेज्जा तह य मुच्छा जहिं च वत्थु हिं ॥

तप्परिणामऽज्झवसाएणं हिंसा, तनुमवि आरंभमसमियत्तणं तहा ।।

--- स कसाय-कूर-भावेणं जा वाणी कलुसिया भवे ।।

[२१७] सावज्ज-वइ-दोसेसुं जा पुट्ठा तं मुसा मुणे ।
ससरक्खमवि अविदिन्नं जं गिण्हे तं चोरिक्कयं ।।

[२१८] मेहुण-कर-कम्मणेणं सद्दादीण-वियारणे ।
परिग्गहं जहिं मुच्छा लोहो कंखा ममत्तयं ।।

[२१९] अणूणोयरियमाकंठं भुंजे राई-भोयणं ।
सद्धस्सानिद्ध-इयरस्स रूव-रस-गंध-फरिसस्स वा ।।

[२२०] न रागं न प्पदोसं वा गच्छेज्जा उ खणं मुनी ।
कसाय-चउ-चउक्कस्स मनसि विज्जावणं करे ।।

[२२१] दुट्ठे मनो-वती-काया-दंडे नो णं पउंजए ।
अफासु-पाण-परीभोगं बीय-काय-संघट्टणं ।।

[२२२] अछड्डेतो इमे पावे नो णं नीसल्लो भवे ।
एएसिं महंत-पावाणं देहत्थं जाव कत्थई ।।

[२२३] एकं पि चिट्ठए सुहुमं नीसल्लो ताव नो भवे ।
तम्हा आलोयणं दाऊं पायच्छित्तं करेऊणं ।
[निखिलं तव-संजमं धम्मं नीसल्लमनुचिट्ठियव्वयं]।
एयं निक्कवड-निद्धंभं नीसल्लं काउं तवं ।।

[२२४] जत्थ जत्थोवज्जेज्जा देवेसु मानुसेसु वा ।
तत्थ तत्थुत्तमा-जाई उत्तमा रिद्धि-संपया ।

लभेज्जा उत्तमं रूवं सोहग्गं जइ णं नो सिज्जेज्जा तब्भवे ।।- त्तिबेमि

◦ पढमं अज्झयणं समत्तं ◦

[२२५] एयस्स य कुलिहिय-दोसो न दायव्वो सुयहरेहिं किंतु जो चेव एयस्स पुव्वायरिसो
आसि, तत्थेव कत्थइ सिलोगो, कत्थइ सिलोगद्धं, कत्थइ पयक्खरं, कत्थइ अक्खर-पंतिया, कत्थइ पन्नग-
पुट्टिया, कत्थइ एग तिन्नि पन्नगाणि एवमाइ-बहुगंथं परिगलियं ति ।

◦ बीयं अज्झयणं - कम्मविवाग वागरणं ◦

◦ पढमो उद्देसो ◦

[२२६] निम्मूलुद्धिय-सल्लेणं सव्व-भावेण गोयमा ! ।
झाणे पविसित्तु सम्मेयं पच्चक्खं पासियव्वयं ।।

[२२७] जे सण्णी जे वि याऽसण्णी भव्वाभव्वा उ जे जगे ।
सुहत्थी-तिरियमुट्ठाऽहं इहमिहाडंति दस-दिसिं ।।

[२२८] असण्णी दुविहे नेए वियलिंदी एगिंदिए ।

- [२२९] पसु-पक्खी-मिगा-सन्नी नेरइया मनुयामरा ।
भक्वाभक्वा वि अत्थेसुं नीरए उभय-वज्जिए ॥
- [२३०] धम्मत्ता जंति छायाए वियलिंदी-सिसिरायवं ।
होही सोक्खं किलम्हाणं ता दुक्खं तत्थ वी भवे ॥
- [२३१] सुकुमालंगत्ताओ खण-दाहं सिसिरं खणं ।
न इमं न इमं अहियासेउं सक्कीण्णं एवमादियं ॥
- [२३२] मेहुण-संकप्प-रागाओ मोहा अन्नाण-दोसओ ।
पुढवादिसु गयएगिंदी न याणंती दुक्खं सुहं ॥
- [२३३] परिवत्तंते अनंते वि काले बेइंदियत्तणं ।
केइ जीवा न पावेंति केइ पुणा ऽनादि पावियं ॥
- [२३४] सी-उण्ह-वाय-विज्झडिया मिय-पसु-पक्खी-सिरीसिवा ।
सिमिणंते वि न लभंते ते निमिसद्धभंतरं सुहं ॥
- [२३५] खर-फरुस-तिकख-करवत्ताइएहिं फालिज्जता खण खण ।
निवसंति नारया नरए तेसिं सोक्खं कुओ भवे ? ॥
- [२३६] सुरलोए अमरया सरिसा सव्वेसिं तत्थिमं दुहं ।
उवट्टिए वाहणत्ताए एगो अन्नो तत्थमारुहे ॥
- [२३७] सम-तुल्ले पाणि-पादेणं हा हा ! मे अत्त-वेरिणा ।
माया-डंभेण धि द्वि द्वि ! परितप्पे हं आयवंचिओ ॥
- [२३८] सुहेसी किसि-कम्मत्तं सेवा-वाणिज्ज-सिप्पयं ।
कुव्वंताऽहन्निसं मणुया धुप्पंते एसिं कुओ सुहं ? ॥
- [२३९] पर-घरसिरीए दिट्ठाए एगे डज्झंति बालिसे ।
अन्ने अपहुप्पमाणीए अन्ने खीणाए लच्छिए ॥
- [२४०] पुन्नेहिं वड्ढमाणेहिं जस-कित्ती-लच्छी य वड्ढइ ।
पुन्नेहिं हायमाणेहिं जस-कित्ती-लच्छी-खीयइ ॥
- [२४१] वास-साहस्सियं केइ मन्नंते एगं दिनं पुणो ।
कालं गमैति दुक्खेहिं मनुया पुन्नेहिं उज्झिया ॥
- [२४२] संखेवत्थमिमं भणियं सव्वेसिं जग-जंतुणं ।
दुक्खं मानुस-जाईणं गोयम ! जं तं निबोधय ॥
- [२४३] जमनुसमयमनुभवंताणं सयहा उव्वेवियाण वि ।
निव्विण्णाणं पि दुक्खेहिं वेरग्गं न तहा वी भवे ॥
- [२४४] दुविहं समासओ मुणसु दुक्खं सारीर-मानसं ।
घोर-पचंड-महारोद्धं तिविहं एक्केक्कं भवे ॥
- [२४५] घोरं जाण मुहुत्तंतं घोर-पयंडं ति समय-वीसामं ।

- [२४६] घोरं-मनुस्स-जाईणं घोर-पयंडं मुने तिरिच्छासुं ।
घोर-पयंडं महारोद्धं नारय-जीवाण गोयमा ! ॥
- [२४७] मानुस्सं तिविहं जाणे जहन्न-मज्झुत्तमं दुहं ।
नत्थि जहन्नं तिरिच्छाणं दुह-मुक्कोसं तु नारयं ॥
- [२४८] जं तं जहन्नगं दुक्खं मानुस्सं तं दुहा मुने ।
सुहुम-बादर-भेदेणं निव्विभागे इतरे दुवे ॥
- [२४९] सम्मुच्छिमेसु मनुएसुं सुहुमं देवेसु बायरं ।
चवणयाले महिड्ढिणं आजम्ममाभिओगियाण उ ॥
- [२५०] सारीरं नत्थि देवाणं दुक्खेणं मानसेण उ ।
अइबलियं वज्जिमं हिययं सय-खंडं जं न वी फुडे ॥
- [२५१] निव्विभागे य जे भणिए दोण्णि मज्झुत्तमे दुहे ।
मनुयाणं ते समक्खाए गब्भवक्कंतियाण उ ॥
- [२५२] असंखेयाऊ मनुयाणं दुक्खं जाणे वि मज्झिमं ।
संखेयाउ मनुस्साणं तु दुक्खं चेवुक्कोसगं ॥
- [२५३] असोक्खं वेयणा वाही पीडा दुक्खमनेव्वुई ।
अणरागमरई केसं एवमादी एगट्टिया बहू ॥
◦ बीए अज्झयणे पढमो उद्देसो समत्तो ◦

◦ बिइओ-उद्देसो ◦

- [२५४] सारीरेयर-भेदमियं जं भणियं तं पवक्खई ।
सारीरं गोयमा ! दुक्खं सुपरिफुडं तमवधारय ॥
- [२५५] वालगग-कोडि-लक्ख-मयं भागमेत्तं छिवे धुवे ।
अथिर-अन्नन्नपदेससरं कुंथुं मणह वित्तिं खणं ॥
- [२५६] तेन वि करकत्ति सल्लेउं हिययमुद्धसए तनू ।
सीयंती अंगमंगाइं गुरु उवेई ।
सव्वसरीरस्स ऽब्भंतरं कंपे थरथरस्सय ॥
- [२५७] कुंथु-फरीसियमेत्तस्स जं सलसले-तनुं ।
तमवसं भिन्न-सव्वंगे कलयल-डज्झंत-मानसे ॥
- [२५८] चिंतितो हा ! किं किमेयं बाहे गुरु-पीडाकरं ।
दीहुण्ह-मुक्कनीसासे दुक्खं दुक्खेण नित्थरे ॥
- [२५९] किमेयं ? कियचिरं बाहे ? कियचिरेणेव निड्ढिही ? ।
कहं वा ऽहं विमुच्चीसं इमाओ दुक्खसंकडा ॥
- [२६०] गच्छं चिट्ठं सुवं उट्ठं धावं नासं पलामि उ ।

- [२६१] एवं तिवग्गवावारं चिच्चोरु-दुक्ख-संकडे ।
पविट्ठो बाढ-संखेज्जा आवलियाओ किलिस्सिउं ॥
- [२६२] मुणे हुं कंडुयमेस कंडूये अन्नहा नो उवस्समे ।
ता एयज्झवसाएणं गोयम ! निसुणेसुं जं करे ॥
- [२६३] अह तं कुंथुं वावाए जइ नो अन्नत्थ गयं भवे ।
कंडुएमाणोऽह भित्तादी अनुघसमाणो किलम्मए ॥
- [२६४] जइ वावाएज्ज तं कुंथुं कंडुयमाणो व इयरहा ।
तो तं अइरोद्धज्जाणम्मि पविट्ठं निच्छयओ मुने ॥
- [२६५] अह किलामे तओ भयणा रोद्धज्जाणेयरस्स उ ।
कंडुयमाणस्स उण देहं सुद्धमट्टज्जाणं मुने ॥
- [२६६] समज्जे रोद्धज्जाणट्ठो उक्कोसं नारगाउयं ।
दुभ-गित्थी-पंड-तेरिच्छं अट्टज्जाणा समज्जिणे ॥
- [२६७] कुंथु-पद-फरिस-जणियाओ दुक्खाओ उवसमिच्छया ।
पच्छ-हल्लप्फलीभूते जमवत्थंतरं वए ॥
- [२६८] विवण्ण-मुहलावण्णे अइदीने विमण-दुम्मणे ।
सुन्ने वुन्ने य मूढ-दिसे मंदर-दर-दीह-निस्ससे ॥
- [२६९] अविस्साम-दुक्खहेऊयं असुहं तेरिच्छ-नारयं ।
कम्मं निबंधइत्ताणं भमिही भव-परंपरं ॥
- [२७०] एवं खओवसमाओ तं कुंथुवइयरजं दुहं ।
कह कह वि बहु किलेसेणं जइ खणमेक्कं तु उवसमे ॥
- [२७१] ता मह किलेसमुत्तिणं सुहियं से अत्ताणयं ।
मण्णंतो पमुइओ हिट्ठो सत्थचित्तो वि चिट्ठई ॥
- [२७२] चिंतइ किल निव्वुओमि अहं निद्वलियं दुक्खं पि मे ।
कंडुयणादीहिं सयमेव न मुणे एवं जहा मए ॥
- [२७३] रोद्धज्जाणगएण इहं अट्टज्जाणे तहेव य ।
संवग्गइत्ता उ तं दुक्खं अनंतानंतगुणं कडं ॥
- [२७४] जं चाणुसमयमनवरयं जहा राई तहा दिनं ।
दुहमेवानुभवमाणस्स वीसामो नो भवेज्जमो ॥
- [२७५] खणं पि नरय-तिरिएसु सागरोवम-संखया ।
रस-रस-विलिज्जए हिययं जं वा इच्छंत ताण वि ॥
- [२७६] अहवा किं कुंथु-जणियाओ मुक्को सो दुक्ख-संकडा ।
खीणट्ट-कम्म-परीणामो भवेज्जे जणुमेत्तेणव उ ॥
- [२७७] कुंथुमुवलक्खणं इहइं सव्व पच्छक्खं दुक्खदं ।

- [२७८] अन्ने वि उ गुरुयरे दुक्खे सव्वेसिं संसारिणं ।
सामण्णे गोयमा ! ता किं तस्स तेनोदए गए ॥
- [२७९] हण मर जं अन्नजम्मेसुं वाया वि उ केइ भाणिरे ।
तमवीह जं फलं देज्जा पावं कम्मं पवुज्झयं ॥
- [२८०] तस्सुदया बहुभवग्गहणे जत्थ जत्थोववज्जती ।
तत्थ तत्थ स हम्मंतो मारिज्जंतो भमे सया ॥
- [२८१] जेण पुण अंगुवंगं वा अक्खिं कण्णं च नासियं ।
कडि-अट्ठि-पट्ठिभंगं वा कीड-पयंगाइ-पाणिणं ॥
- [२८२] कयं वा कारियं वा वि कज्जंतं वा ऽह अनुमयं ।
तस्सुदया चक्कनालिवहे पीलीही सो तिले जहा ॥
- [२८३] न एककं नो दुवे तिन्निं वीसं तीसं न यावि य ।
संखेज्जे वा भवग्गहणे लभते दुक्ख-परंपरं ॥
- [२८४] असुय-मुसा-अनिट्ठ-वयणं जं पमाय-अन्नाण-दोसओ ।
कंदप्प-नाहवाएणं अभिनिवेसेण वा पुणो ॥
- [२८५] भणियं भणावियं वा वि भण्णमाणं च अनुमयं ।
कोहो लोहा भया हासा तस्सुदया एयं भवे ॥
- [२८६] मूगो पूति-मुहो मुखो कल्लविलल्लो भवे-भवे ।
विहल-वाणी सुयइढो वि सव्वत्थ ऽब्भक्खणे लभे ॥
- [२८७] अवितह-भणियं नु तं सच्चं अलिय-वयणं पि नालियं ।
जं छज्जीव-निकाय-हियं निट्ठोसं सच्चं तयं ॥
- [२८८] चोरीक्का निप्फलं सव्वं कम्मरंभं किसानियं ।
लद्धत्थस्सा वि भवे हानी अन्न-जम्म-कया इहं ॥

◦ बीए अज्झयणे बीओ उद्देसो समत्तो ◦

◦ तइओ-उद्देसो ◦

- [२८९] एवं मेहुण-दोसेणं वेदित्ता थावरत्तणं ।
केसेणमनंत-कालाओ मानुस-जोणि समागया ॥
- [२९०] दुक्खं जरेंति आहारं अहियं सित्थं पि भुंजियं ।
पीडं करेइ तेसिं तु तण्हाबाहे खणे खणे ॥
- [२९१] अद्धाण-मरणं तेसिं बहुजप्पं कट्ठासनं ।
थाणुव्वालं निविण्णाणं निट्ठाए जंति नो वणिं ॥
- [२९२] एवं परिग्गहारंभ-दोसेणं नरगाउयं ।
तेत्तीसं-सागरुक्कोसं वेइत्ता इह समागया ॥

[२९३] छुहाए पीडिज्जंति भुत्त-भुत्तुत्तरे वि य

|

अज्झयणं-२, उद्देसो-३

चरंता अहन्निसं तित्तिं नो गच्छंती पसवे जहा ॥

[२९४] कोहादीणं तु दोसेणं घोरमासीविसत्तणं

|

वेइत्ता नारयं भूओ रोद्धा मेच्छा भवंति ते ॥

[२९५] सढ-कूड-कवड-नियडीए डंभाओ सुइरं गुरुं

|

वेइत्ता चित्त तेरिच्छं मानुस जोणिं समागया ॥

[२९६] केइ बहुवाहि-रोगाणं दुक्ख-सोगाण भायणं

|

दारिद्ध-कलहमभिभूया खिंसणिज्जा भवंतिहं ॥

[२९७] तक्कम्मोदय-दोसेणं निच्चं पज्जलिय-बोदिणं

|

ईसा-विसाय-जालाहिं धग-धग-धग-धगस्स उ ॥

[२९८] जम्मं पि गोयमा बाले-बहु-दुहसंधुक्कियाण य

|

तेसिं सदुच्चरिय-दोसो कस्स रूसंतु ते इहं

? ॥

[२९९] एवं वय-नियम-भंगेणं सीलस्स उ खंडणेण वा

|

असंजम-पवत्तणया उस्सुत्तुमग्गायरणेण हि ॥

[३००] नेगेहिं वितहायरणेहिं पमाया सेवणेहिं य

|

मणेणं अहव वायाए अहवा काएण कत्थइ ।

कय-कारिगा ऽनुमएहिं वा पमाय सेवणेण वा

॥

[३०१] तिविहेण-मनिंदिय-मगरहिय-मनालोइय-मपडिक्कंत-मकयपायच्छित्त-मविसुद्ध-सयं-

दोसओ ससल्ले आमगब्भेसुं पच्चिय पच्चिय-अनंतसो वियलंते दुति-चउ-पंच-छणहं मासाणं असंबद्धठीकर-
सिर-चरणच्छवी ।

[३०२] लद्धे वि मानुसे जम्मे कुट्टादी-बाहि-संजुए

|

जीवंते चेव किमिएहिं खज्जंती मच्छियाहि य ।

अनुदियहं खंड-खंडेहिं सडहडस्स सडे तनुं ॥

[३०३] एवमादी-दुक्खमभिभूए लज्जणिज्जे ।

खिंसणिज्जे निंदणिज्जे गरहणिज्जे ।

उव्वेवणिज्जे अपरिभोगे निय-सुहि ।

सयण-बंधवाणं पि भवंती ते दुरप्पणे ॥

[३०४] अज्झवसाय-विसेसं तं पडुच्चा केइ तारिसं

|

अकाम-निज्जराए उ भूय-पिसायत्तं लभते ॥

[३०५] तप्पुव्व-सल्ल-दोसेणं बहु-भवंतर-त्थाइणा

|

अज्झवसाय-विसेसं तं पडुच्चा केई तारिसं ॥

[३०६] दससु वि दिसासु उद्धो निच्च दूरप्पिए दढं

|

निरुच्छल्ल-निरुस्सासे निराहारे न पाणिए ॥

[३०७] संपिंडियंगमंगे य मोह-मदिराए धम्मरिए

|

- [३०८] भव-काय-द्वितीए वेएत्ता तं तेहिं किमियत्तणं ।
जइ कह वि लहंति मनुयत्तं तओ ते होंति नपुंसगे ॥
- [३०९] अज्झवसाय-विसेसं तं पवहंते अइकूर-घोर-रोद्धं तु तारिसं ।
वम्मह-संधुक्किया मरितुं जम्मं जंति वणस्सई ॥
- [३१०] वणस्सई गए जीवे उड्डपाए अहोमुहे ।
चिद्धंतिऽनंतयं कालं नो लभे बेइंदियत्तणं ॥
- [३११] भव-काय-द्वितीए वेइत्ता तमेग-बि-ति-चउरिंदियत्तणं ।
तप्पुव्व-सल्ल-दोसेणं तेरिच्छेसूवज्जिउं ॥
- [३१२] जइ णं भवे महामच्छे पक्खीवसह-सीहादयो ।
अज्झवसाय-विसेसं तं पडुच्च अच्चंत-कूरयरं ॥
- [३१३] कुणिममाहारत्ताए पंचेंदियवहेणं य ।
अहो अहो पविस्संति जाव पुढवीउ सत्तमा ॥
- [३१४] तं तारिसं महाघोरं दुक्खमनुभविउं चिरं ।
पुणो वि कूरतिरिएसु उववज्जिय नरयं वए ॥
- [३१५] एवं नरय-तिरिच्छेसुं परियद्धंते विचिद्धति ।
वासकोडिए वि नो सक्का कहिउं जं तं दुक्खं अनुभवमाणे ॥
- [३१६] अह खरुद्ध-बइल्लेसुं भवेज्जा तब्भवंतरे ।
सगडायड्डण-भरुव्वहण खु-तण्ह-सीयायवं ॥
- [३१७] वह-बंधणंकणं डहणं नास-भेद निलंछणं ।
जमलाराईहिं कुच्चादिहिं कुच्चिज्जंताण य ।
जहा राई तहा दियहं सव्वद्धा उ सुदाररुणं ॥
- [३१८] एमादी-दुक्ख-संघट्टं अनुहवंति चिरेण उ ।
पाणे पयहिंति कह कह वि अट्ज्जाण-दुहट्टिए ॥
- [३१९] अज्झवसाय-विसेसं तं पडुच्चा केइ ।
कह कह वि लब्भंती मानुसत्तणं ।
तप्पुव्व-सल्ल-दोसेणं मानुसत्ते वि आगया ॥
- [३२०] भवंति जम्म-दारिद्धा वाही-खस-पाम-परिगया ।
एवं अदिद्ध-कल्लाणे सव्व-जनस्स सिरि-हाइउं ॥
- [३२१] संतप्पंते दढं मनसा अकयतवे गिहणं वए ।
अज्झवसाय-विसेसं तं पडुच्चा केइ तारिसं ॥
- [३२२] पुणो वि पुढविमाईसुं भमंती ते दु-ति-चउरो पंचिंदिएसु वा ।
तं तारिसं महा-दुक्खं सुरोद्धं घोर-दारुणं ॥
- [३२३] चउगइ-संसार-कंतारे अनुहमाणे सुदूसहं ।

[३२४] चिद्वंति संसरेमाणे जम्म-जर-मरण-बहु-वाहि वेयणा-रोग-सोग-दारिद्र-कलह-ब्भक्खाणं-
संताव-गब्भवासादि-दुक्खसंधुक्किए तप्पुव्वसल्ल-दोसेणं निच्चाणंद-महूसव-थाम-जोग-अट्टारस
-सीलंग-सहस्साहिद्वियस्स सव्वासुह-पावकम्मद्व-रासि-निद्वहण-अहिंसा-लक्खण-समण-धम्मस्स बोहिं नो
पाविति ते ।

- [३२५] अज्झवसाय-विसेसं तं पडुच्चा केई तारिसं |
पोग्गल-परियट्टलक्खेसुं बोहिं कह कह वि पावए ||
- [३२६] एवं सुदुल्लहं बोहिं सव्व-दुक्ख-खयं करं |
लद्धूणं जे पमाएज्जा तयहुत्तं सो पुणो वए ||
- [३२७] तासुं तासुं च जोणीसुं पुव्वुत्तेण कमेण उ |
पंथेणं तेणई चेव दुक्खे ते चेव अनुभवे ||
- [३२८] एवं भव-काय-द्वितीए सव्व-भावेहिं पोग्गले |
सव्वे सपज्जवे लोए सव्व वण्णंतरेहि य ||
- [३२९] गंधत्ताए रसत्ताए फासत्ताए संठाणत्ताए |
परिणामित्ता सरीरेणं बोहिं पावेज्ज वा न वा ||
- [३३०] एवं वय-नियम-भंगं जे कज्जमाणमुवेक्खए |
अह सीलं खंडिज्जंतं अहवा संजम-विराहणं ||
- [३३१] उम्मग्ग-पवत्तणं वा वि उसुत्तायरणं पि वा |
सो वि य अनंतरुत्तेणं कमेणं चउगई भमे ||
- [३३२] रुसउ तुसउ परो मा वा विसं वा परियत्तउ |
भासियव्वा हिया भासा सपक्ख-गुणकारिया ||
- [३३३] एवं लद्धामवि बोहिं जइ णं नो भवइ निम्मला |
ता संवुडासव-द्वारे पगति-द्विय-पएसानुभावियबंधो ।
नो हासो नो य निज्जरे ||
- [३३४] एमादी-धोर-कम्मद्वजालेणं कसियाण भो ! |
सव्वेसिमवि सत्ताणं कुओ दुक्ख-विमोयणं ? ||

[३३५] पुत्विं दुक्कय-दुचिण्णाणं दुप्पडिकंताणं नियय-कम्माणं न अवेइयाण मोक्खो
घोरतवेण अज्झोसियाण वा ।

- [३३६] अनुसमयं बज्झए कम्मं नत्थि अबंधो उ पाणिणो |
मोत्तुं सिद्धे अजोगी य सेलेसी संठिए तहा ||
- [३३७] सुहं सुहज्झवसाएणं असुहं दुद्धज्झवसायओ |
तिव्वयरेणं तु तिव्वयरं मंदं मंदेण संचिणे ||

[३३८] सव्वेसिं पावकम्माणं एगीभूयाणं जेत्तियं रासिं भवे तमसंखगुणं वय-तव-संजम-
चारित्तखंडण-विराहणेणं उस्सुत्तुम्मग्ग-पन्नवण-पवत्तण-आयरणोवेक्खणेण य समज्जिणे ।

- पाव-रासी खयं गच्छे जहा तं सव्वोवाएहिमायरे ॥
- [३४०] आसवदारे निरुंभित्ता अप्पमादी भवे जया ॥
बंधे सप्पं बहु वेदे जइ सम्मत्तं सुनिम्मलं ॥
- [३४१] आसवदारे निरुंभिता आणं नो खंडए जया ॥
दंसण-नाण-चरित्तेसुं उज्जुत्तो जो दढं भवे ॥
- [३४२] तया वेए खणं बंधे पोरणं सव्वं खवे ॥
अनुइण्णमवि उईरित्ता निज्जिय-घोर-परीसहो ॥
- [३४३] आसवदारे निरुंभित्ता सव्वासायण-विरहिओ ॥
सज्झाय-ज्झाण-जोगेसुं धोर-वीर-तवे रओ ॥
- [३४४] पालेज्जा संजमं कसिणं वाया मनसा उ कम्मुणा ॥
जया तया न बंधेज्जा उक्कोसमनंतं च निज्जरे ॥
- [३४५] सव्वावस्सगमुज्जुत्तो सव्वालंबणविरहिओ ॥
विमुक्को सव्वसंगेहिं सबज्झभंभंतरेहि य ॥
- [३४६] गय-राग-दोसमोहे य निन्नियाणे भवे जया ॥
नियत्ते विसयतत्तीए भीए गब्भपरंपरा ॥
- [३४७] आसवदारे निरुंभित्ता खंतादी धम्मं ठिते ॥
सुक्कज्झाणं समारुहिय सेलेसिं पडिवज्जए ॥

[३४८] तया न बंधए किंचि चिरबद्धं असेसं पि । निड्डहियज्झाण-जोग-अग्गीए भसमी करे दढं । लहु पंचक्खरुग्गिरण मेत्तेणं कालेण भवोवगाहियं ।

- [३४९] एवं सजीव-विरिय-सामत्थ-पारंपरण गोयमा ! ॥
पविमुक्क-कम्म-मल-कवया समएणं जंति पाणिणो ॥
- [३५०] सासय-सोक्ख-अनाबाहं रोग-जर-मरण-विरहियं ॥
अदिट्ठ-दुक्ख-दारिद्धं निच्चानंदं सिवालयं ॥
- [३५१] अत्थेगे गोयमा ! पाणी जे एयं मन्नए विसं ॥
आसव-दार-निरोहादी इयर-हेइ-सोक्खं चरे ॥
- [३५२] ता जाव कसिण-ट्ठ कम्माणि घोर-तव-संजमेण उ ॥
नो निद्धड्ढे सुहं ताव नत्थि सिविणे वि पाणिणं ॥
- [३५३] दुक्खमेवमवीसामं सव्वेसिं जगजंतुणं ॥
एक्कं समयं न सम-भावे जं सम्मं अहियासिउं तरे ॥
- [३५४] थेवमवि थेवतरं थेवयरस्सावि थेवयं ॥
जेणं गोयम ता पेच्छ कुंथुं तस्सेव य तनू ॥
- [३५५] पाय-तलेसु न तस्सावि तेसिमेगदेसं मुण ॥
फरिसंतो कुंथु जेणं चरई कस्सइ सरीरगे ॥

[३५६] कुंथूणं सय-सहस्सेणं तेलियं नो पलं भवे

|

अज्झयणं-२, उद्देशो-३

- एगस्स केत्तियं गत्तं किं वा तोल्लं भवेज्ज से ||
- [३५७] तस्स वि पायतल देसेणं फरिसिओ तमवत्थंतरं |
पुव्वुत्तं गोयमा ! गच्छे पाणी तो णं इमं सुणे ||
- [३५८] भमंत-संचरंतो य हिंडि नो मइले तनुं |
न करे कुंथू खयं ताणं न यावासी य चिरं वसे ||
- [३५९] अह चिट्ठे खणमेगं तु बीयं नो परिवसे खणं |
अह बीयं पि विरत्तेज्जा ता बुज्जेयं तु गोयमा ! ||
- [३६०] रागेणं नो पओसेणं मच्छरेणं न केणई |
न यावि पुव्ववेरेणं खेड्डातो कामकारओ ||
- [३६१] कुंथू कस्सइ देहिस्स आरुहेइ खणं तनुं |
वियलिंदी भूण-पाणे जलंतग्गी वावी विसे ||
- [३६२] न चिंतेवं जहा मे स पुव्ववेरी सहवा सुही ? |
ता किंची खेम-पावं वा संजणेमि एयस्स सहं ? ||
- [३६३] पुव्व-कड-पाव-कम्मस्स विरसे भुंजंतो फले |
तिरि-उड्डाह-दिसानुदिसं कुंथू हिंडे वराय से ||
- [३६४] चरंतेवमबाहाए सारीरं दुक्खमानसं |
कुंथू वि दूसहं जण्णे रोद्ध-वृ-ज्झाण-वड्डणं ||
- [३६५] ता उ सल्लमारभेत्ताणं मन-जोगं अन्नयरेण वा |
समयावलिय-मुहुत्तं वा सहसा तस्स विवागयं ||
- [३६६] कह सहिहं बहु-भव-ग्गहणे दुहमनुसमयमहणिसं |
घोर-पयंडं-महारोद्धं ? हा-हा-कंद-परायणा ! ||
- [३६७] नारय-तिरिच्छ-जोणीसु अत्ताणासरणा वि य |
एगागी ससरीरेणं असहाया कडु-विरसं घनं ||
- [३६८] असिवण-वेयरणी जंते करवत्ते कूडसामलिं |
कुंभी-वायासा-सीहे एमादी नारए दुहे ||
- [३६९] नत्थंकण-वह-बंधे य पउलुककंत-विकत्तणं |
सगडा-कड्डण भरुव्वहणं जमला य तण्हा छुहा ||
- [३७०] खर-खुर-चमढण-सत्थग्गी खोभण-भंजणमाइए |
परयत्तावस-नित्तिसे दुक्खे तेरिच्छे तहा ||
- [३७१] कुंथू-पय-फरिस-जणियं पि दुक्खं न अहियासितं तरे |
ता तं मह-दुक्ख-संघट्टं कह नित्थरिह सुदारुणं ||
- [३७२] नारय-तेरिच्छ-दुक्खाओ कुंथू-जाणियाउ अंतरं |
मंदरगिरि-अनंत-गुणियस्स परमाणुस्सा वि नो घडे ||

[३७३] चिरयाले संसुहं पाणी कंखंतो आसाए निव्वुओ ।

अज्झयणं-२, उद्देशो-३

- भवे दुक्खमईयं पि सरंतो अच्चंत-दुक्खिओ ॥
- [३७४] बहु-दुक्ख-संकडद्वेत्थं आवया-लक्ख-परिगए ।
संसारे परिवसे पाणी अयडे महु-बिंदू जहा ॥
- [३७५] पत्थापत्थं अयाणंते कज्जाकज्जं हियाहियं ।
सेव्वो सेव्वमसेव्वं च चरणिज्जा चरिज्जं तहा ॥
- [३७६] एवइयं वइयरं सोच्चा दुक्खस्संत-गवेसिणो ।
इत्थी-परिग्गहारंभे चेच्चा घोरं तवं चरे ॥
- [३७७] ठियासणत्था सइया परंमुही सुयलंकरिया वा अलंकरिया वा ।
निरक्खमाणापमया हि दुब्बलं मणुस्समालेह-गया वि करिस्सई ॥
- [३७८] चित्त-भित्तिं न निज्झाए नारिं वा सुयलंकियं ।
भक्खरं पि व दडूणं दिट्ठिं पडिसमाहरे ॥
- [३७९] हत्थ-पाय-पडिच्छिन्नं कन्न-नासोद्धि-वियप्पियं ।
सडमाणी-कुट्टवाहीए तमवित्थीयं दूरयरेणं बंभयारी विवज्जए ॥
- [३८०] थेर-भज्जा य जा इत्थी पच्चंगुब्भड-जोव्वणा ।
जुण्ण-कुमारिं पउत्थवइं बाल-विहवं तहेव य ॥
- [३८१] अंतेउरवासिणी चेव स-पर-पासंड संसियं ।
दिक्खियं साहुणी वा वि वेसं तह य नपुंसगं ॥
- [३८२] कण्हं गोणिं खरिं चेव वडवं अविलं अविं तहा ।
सिप्पित्थिं पंसुलिं वा वि जम्मरोगि-महिलं तहा ॥
- [३८३] चिरे संसद्वचेल्लिक्कं एमादीपावित्थिओ ।
पगमंती जत्थ रयणीए अह पइरिक्के दिनस्स वा ॥
- [३८४] तं वसहिं सन्निवेसं वा सव्वोवाएहिं सव्वहा ।
दूरयर-सुदूर-दूरेणं बंभयारी विवज्जए ॥
- [३८५] एएसिं सद्धिं संलावं अद्धाणं वा वि गोयमा ! ।
अन्नासुं वा वि इत्थीसुं खणद्धं पि विवज्जए ॥

[३८६] से भयवं कित्थीणं नो णं निज्झाएज्जा ? गोयमा ! नो निज्झाएज्जा ।

से भयवं किं सुनियत्थं वत्थालंकरिय-विहूसियं इत्थीयं नो णं निज्झाएज्जा उयाहु णं
विनियंसणिं ? गोयमा ! उभयहा वि णं नो निज्झाएज्जा ।

से भयवं किमित्थीयं नो आलवेज्जा ? गोयमा ! नो णं आलवेज्जा ।

से भयवं किमित्थीसुं सद्धिं खणद्धवि नो संवसेज्जा ? गोयमा ! नो णं संवसेज्जा, से भयवं
किमित्थीसुं सद्धिं नो अद्धाणं पडिवज्जेज्जा ? गोयमा ! एगे बंभयारी एगित्थीए सद्धिं नो पडिवज्जेज्जा ।

[३८७] से भयवं केणं अद्वेणं एवं वुच्चइ जहा णं नो इत्थीणं निज्झाएज्जा, नो नमालवेज्जा, नो णं तीए सद्धिं परिवसेज्जा, नो णं अद्धाणं पडिवज्जेज्जा ? गोयमा ! सव्व-प्पयारेहिं णं सव्वित्थीयं अच्चत्थं मउक्कडत्ताए रागेणं संधुक्किज्जमाणी कामग्गिए संपलित्ता सहावओ चेव विसएहिं अज्झयणं-२, उद्वेसो-३

बाहिज्जइ । तओ सव्व-पयारेहिं णं सव्वित्थीयं अच्चत्थं मउक्कडत्ताए रागेणं संधुक्किज्जमाणी कामग्गीए संपलित्ता सहावओ चेव विसएहिं बाहिज्जाणी, अनुसमयं सव्व-दिसि-विदिसासुं णं सव्वत्थ विसए पत्थेज्जा जावं णं सव्वत्थ-विसए पत्थेज्जा, ताव णं सव्व-पयारेहिं णं सव्वत्थ सव्वहा पुरिसं संकप्पिज्जा जाव णं पुरिसं संकप्पेज्जा ताव णं सोइंदियोवओगत्ताए चक्खुरिंदिओवओगत्ताए रसणिंदिओवओगत्ताए घाणिंदिओव-ओगत्ताए फासिंदिओवओगत्ताए ।

जत्थ णं केइ पुरिसे कंत-रूवे इ वा अकंत-रूवे इ वा पडुप्पन्नजोव्वणे इ वा अपडुप्पन्न-जोव्वणे इ वा गय-जोव्वणे इ वा, दिट्ठ-पुव्वे इ वा अदिट्ठ-पुव्वे इ वा, इइड्ढिमंते इ वा अणिइड्ढिमंते इ वा, इइड्ढिपत्ते इ वा अणिइड्ढी पत्ते इ वा, विसयाउरे इ वा निव्विण्ण-काम भोगे इ वा उद्धय-बौदीए इ वा अनुद्धयबौदीए इ वा महासत्ते इ वा हीन-सत्ते इ वा महा-पुरिसे इ वा कापुरिसे इ वा, समणे इ वा माहणे इ वा अन्नयरे इ वा, निंदियाहम-हीन-जाईए वा,

तत्थ णं इहा पोह-वीमंसं पउंजित्ताणं जाव णं संजोग-संपत्तिं ज्जाएज्जा, जाव णं संजोग-संपत्तिं परिकप्पे ताव णं से चित्ते संखुद्धे भवेज्जा, जाव णं से चित्ते संखुद्धे भवेज्जा ताव णं से चित्ते विसंवएज्जा, जाव णं से चित्ते विसंवएज्जा ताव णं से देहे मएणं अद्धासेज्जा, जाव णं से देहे मएणं अद्धासेज्जा ताव णं से दरविदरे इह-परलोगावाए पम्हुसेज्जा, जाव णं से दर-विदरे इह-परलोगावाए पम्हुसेज्जा ताव णं चिच्चा लज्जं भयं अयसं अकित्तिं मेरं उच्च-ठाणाओ नीय-द्वाणं ठाएज्जा, जाव णं उच्च-ठाणाओ नीय-द्वाणं ठाएज्जा ताव णं वच्चेज्जा असंखेयाओ समयावलियाओ, जाव णं नीइंति असंखेज्जाओ समयावलियाओ ताव णं जं पढम समयाओ कम्मठिइं तं बीयसमयं पडुच्चा तइया दियाणं समयाणं संखेज्जं असंखेज्जं अनंतं वा अनुक्कमसो कम्मठिइं संचिणिज्जा, जाव णं अनुक्कमसो अनंतं कम्मठिइं संचिणइ ताव असंखेज्जाइं अवसप्पिणी-ओसप्पिणी-कोडिलक्खाइं जावएणं कालेणं परिवत्तंति, तावइयं कालं दोसुं चेव निरयतिरिच्छासुं गतीसुं उक्कोस-द्वित्तयं कम्मं आसंकलेज्जा, जाव णं उक्कोसद्वितीयं कम्ममासंकलेज्जा ताव णं से विवण्ण-जुइं विवण्ण-कंतिं वियलिय-लावण्ण-सिरीयं निन्नद्वित्ति-तेयं बौदी भवेज्जा, जाव णं चुय-कंति-लावण्ण-सिरीयं नित्तेय-बौदी भवेज्जा ताव णं से सीएज्जा फरिसिंदिए, जाव णं सीएज्जा फरिसिंदिए ताव णं सव्वट्ठा विवड्ढेज्जा सव्वत्थ चक्खुरागे,

जाव णं सव्वत्थ विवड्ढेज्जा चक्खुरागे ताव णं रागारुणे नयन-जुयले भवेज्जा जाव णं रागारुणे य नयनजुयले भवेज्जा ताव णं रागंधत्ताए न गणेज्जा सुमहंत-गुरु-दोसे वयभंगे, न गणेज्जा सुमहंत-गुरु दोसे नियम-भंगे, न गणेज्जा सुमहंत-घोर-पाव-कम्म-समायरणं सील-खंडणं, न गणेज्जा सुमहंत-सव्व-गुरु-पाव-कम्म-समायरणं संजमविराहणं, न गणेज्जा घोरंधयार परलोग-दुक्खभयं, न गणेज्जा आयई, न गणेज्जा सकम्म-गुणद्वाणगं, न गणेज्जा ससुरासुरस्सा वि णं जगस्स अलंघणिज्जं आणं, न गणेज्जा अनंतहुत्तो चुलसीइजोणिलक्ख-परिवत्त-गब्भ-परंपरं अलद्धणिमि-सद्ध-सोक्खं चउगइ-संसार-दुक्खं, न पासिज्जा जं पासिज्जं न पासिज्जा जं अपासिज्जं, सव्व-जन-समूह-मज्झ-

सन्निविद्वुद्वियाणिवण्णचक्कमिय-निरिक्खिज्जमाणी वा दिप्पंत-किरण-जाल-दस-दीसी-पयासिय-तवंत-
तेयरासी-सूरिए वि तहा वि णं पासेज्जा सुण्णंधयारे सव्वे दिसा भाए ।

जाव णं रागंधत्ताए न गणेज्जा सुमहल्लगुरु-दोसे-वय-भंगे नियम-भंगे सील -खंडणे संजम-
अज्झयणं-२, उद्देसो-३

विराहणे परलोग-भए-आणा-भंगाइक्कमे अनंत-संसार-भए पासेज्जा अपासणिज्जे, सव्व-जन-पयड-दिनयरे
वि णं मन्निज्जा णं सुण्णंधयारे सव्वे दिसा भाए [जाव णं भवे न गणेज्जा सुमहल्लगुरुदोसे वय-भंगे
सील-खंडणिज्जा] ताव णं भवेज्जा अच्चंत-निब्भट्ट-सोहग्गाइसए विच्छाए रागारुण-पंडुरे दुद्धंसणिज्जे
अनिरिक्खणिज्जे वयण-कमले भवेज्जा, जाव णं अच्चंत निब्भट्ट-सोहग्गाइसए विच्छाए रागारुण-पंडुरे
दुद्धंसणिज्जे अनिरिक्खणिज्जे वयण-कमले भवेज्जा ताव णं फुरुफुरेज्जा सणियं सणियं बौद-पुड-नियंब-
वच्छोरुह-बाहुलइ-उरु-कंठ-पएसे, जाव णं फुरफुरेति बौद-पुड-नियंब-वच्छोरु-बाहुलइ-उरु-कंठप्पएसे ताव णं
मोहायमाणी अंगपालियहिं निरुवलक्खे वा सोवलक्खे वा भंजेज्जा सव्वंगोवंगे जाव णं मोहायमाणी
अंगपालियाहिं भंजेज्जा सव्वंगोवंगे ताव णं मयणसरसन्निवाएणं जज्जरियसंभिन्ने सव्वरोम-कूवे तनू
भवेज्जा, जाव णं मयण-सर-सन्निवाएणं विद्धसिए बौदी भवेज्जा ताव णं तहा परिणमेज्जा तनू जहा णं
मनगं पयलंति धातूओ, जाव णं मनगं पयलंति धातूओ ताव णं अच्चत्थं वाहिज्जंति पोग्गल-नियंबोरु-
बाहुलइयाओ, जाव णं अच्चत्थं वाहिज्जइ नियंबो ताव णं दुक्खेणं धरेज्जा गत्त-जट्ठिं ।

जाव णं दुक्खेणं धरेज्जा गत्त-जट्ठिं ताव णं से नोवलक्खेज्जा अत्तीयं सरीरावत्थं, जाव णं
नोवलक्खेज्जा अत्तीयं सरीरावत्थं ताव णं दुवालसेहिं समएहिं दर-निच्चेट्ठं भवे बौदी, जाव णं दुवालसेहिं
दर-निच्चेट्ठं भवे बौदी ताव णं पडिखलेज्जा से ऊसासा-नीसासे, जाव णं पडिखलेज्जा ऊसासा-नीसासे ताव
णं मंदं मंदं ऊससेज्जा मंदं मंदं नीससेज्जा, जाव णं एयाइं एत्तियाइं भावंतरं अवत्थंतराइं विहारेज्जा ताव
णं जहा गहग्घत्थे केइ पुरिसे इ वा इत्थि इ वा विसुंठुलाए पिसायाए भारतीए असंबद्धं संलवियं विसंखुलंतं
अव्वत्तं उल्लवेज्जा ।

एवं सिया णं इत्थीयं विसामावत्त-मोहण-मम्मणुल्लावेणं पुरिसे, दिट्ठ-पुव्वे इ वा अदिट्ठ
पुव्वे इ वा, कंतरूवे इ वा अंकतरूवे इ वा गय जोव्वणे इ वा पडुप्पन्न जोव्वणे इ वा, महासत्ते इ वा
हीनसत्ते इ वा, सप्पुरिसे इ वा कापुरिसे इ वा, इड्ढिमंते इ वा, अणिड्ढिमंते इ वा, विसयाउरे इ वा
निव्विण्णकामभोगे इ वा, समणे इ वा माहणे इ वा जाव णं अन्नयरे वा केइ निंदियाहम-हीन-जाईए इ
वा, अज्झत्थेणं ससज्झसेणं आमंतेमाणी उल्लावेज्जा जाव णं संखेज्ज-भेदभिन्नेणं सरागेणं सरेणं दिट्ठीए
इ वा पुरिसे उल्लावेज्जा निज्झाएज्ज वा ताव णं जं तं असंखेज्जाइं अवसप्पिणी-ओसप्पिणी-कोडी-लक्खाइं
दोसुं नरय-तिरिच्छासुं गतीसुं उक्कोस-द्वितीयं कम्मं आसंकलियं आसिओ तं निबंधेज्जा, नो णं बद्ध-पुट्ठं
करेज्जा, से वि णं जं समयं पुरिसस्स णं सरिरावयव-फरिसणाभिमुहं भवेज्जा नो णं फरिसेज्जा, तं समयं
चेव तं कम्म-ठिइं बद्ध-पुट्ठं करेज्जा नो णं बद्ध-पुट्ठ-निकायं ति ।

[३८८] एवायसरम्मि उ गोयमा संजोगेणं संजुज्जेज्जा से वि णं संजोए पुरिसायत्ते पुरिसे
वि णं जे णं न संजुज्जे से धन्ने जे णं संजुज्जे से अधन्ने ।

[३८९] से भयवं केणं अट्ठेणं एवं वुच्चइ जहा पुरिसे वि णं जे णं न संजुज्जे से णं धन्ने
जे णं संजुज्जे से अधन्ने ? गोयमा ! जे य णं से तीए इत्थीए पावाए बद्ध-पुट्ठ-कम्म-द्विइं चिट्ठइ, से णं
पुरिस-संगेणं निकाइज्जइ तेणं तु बद्ध-पुट्ठ-निकाइएणं कम्मेणं सा वराई, तं तारिसं अज्झवसायं पडुच्चा

एगिंदियत्ताए पुढवादीसु गया समाणी अनंत-काल-परियट्टेण वि णं नो पावेज्जा बेइंदियत्तणं एवं कह कह वि बहुकेसेण अनंत-कालाओ एगिंदियत्तणं खविय बेइंदियत्तं एवं तेइंदियत्तं चउरिंदियत्तमवि केसेण वेयइत्ता पंचिंदियत्तेणं आगया समाणी ।

अज्झयणं-२, उद्देसो-३

दुब्भित्थिय-पंड-तेरिच्छ-वेयमाणी हा-हा-भूय-कट्ट-सरणा सिविणे वि अदिट्ट-सोक्खा निच्चं संतावुवेविया, सुहिसयण-बंधव-विवज्जिया, आजम्मं कुच्छणिज्जं गरहणिज्जं निंदणिज्जं खिस-णिज्जं बहु-कम्मंतेहिं अनेग-चाडु-सएहिं लद्धोदरभरणा सव्व-लोग-परिभूया, चउ-गतीए संसरेज्जा, अन्नं च णं गोयमा ! जावइयं तीए पाव-इत्थीए बद्ध-पुट्टनिकाइयं कम्म-ट्टिइं समज्जियं, तावइयं इत्थियं अभिलसिउकामे पुरिसे उक्किट्ट-किट्टयरं अनंतं कम्म-ट्टिइं बद्ध-पुट्ट-निकाइयं समज्जिणेज्जा, एतेणं अट्टेणं एवं वुच्चइ, जहा णं पुरिसे वि णं जे णं नो संजुज्जे से णं धन्ने जे णं संजुज्जे से णं अधन्ने ।

[३९०] भयवं केसणं पुरिसे स णं पुच्छा जाव णं धन्नं वयासि ? गोयमा! छव्विहे पुरिसे नेए तं जहा-अहमाहमे, अहमे, विमज्झमे, उत्तमे, उत्तमुत्तमे, सव्वुत्तमुत्तमे ।

[३९१] तत्थ णं जे सव्वुत्तमुत्तमे पुरिसे से णं पंचंगुब्भडजोव्वण-सव्वुत्तम-रूव-लावण्ण-कंति-कलियाए वि इत्थीए नियंबारूढो वाससयं पि चिट्ठिज्जा नो णं मनसा वि तं इत्थियं अभिलसेज्जा ।

[३९२] जे णं तु से उत्तमुत्तमे से णं जइ कहवि तुडी-तिहाएणं मनसा समयमेककं अभिलसे तहा वि बीय समये मनं सन्निरुंभिय अत्ताणं निंदेज्जा गरहेज्जा न पुणो बीएणं तज्जम्मे इत्थीयं मनसा वि उ अभिलसेज्जा,

जे णं से उत्तमे से णं जइ कह वि खणं मुहुत्तं वा इत्थियं कामिज्जमाणिं पेक्खेज्जा तओ मनसा अभिलसेज्जा जाव णं जामद्ध-जामं वा नो णं इत्थीए समं विकम्मं समायरेज्जा ।

[३९३] जइ णं बंधयारी कयपच्चक्खाणाभिग्गहे, अहा णं नो बंधयारी नो कयपच्चक्खाणाभिग्गहे तो णं निय-कलत्तभयणा न तु णं तिव्वेसु कामेसु अभिलासी भवेज्जा, तस्स एयस्स णं गोयमा ! अत्थि बंधो किंतु अनंत-संसारियत्तणं नो निबंधेज्जा ।

[३९४] जे णं से विमज्झमे से णं निय-कलत्तेणं सद्धिं विकम्मं समायरेज्जा नो णं परकलत्तेणं, एसे य णं जइ पच्छा उग्ग-बंधयारी नो भवेज्जा तो णं अज्झवसाय-विसेसं तं तारिसमंगीकाऊणं अनंत-संसारियत्तणे भयणा । जओ णं जे केइ अभिगय-जीवाइ-पयत्थे सव्व-सत्ते आगमानुसारेणं सुसाहूणं धम्मोवड्ढंभ-दानाइ-दान-सील-तव-भावनामइए चउव्विहे धम्म-खंधे समनुट्टेज्जा ।

से णं जइ कहवि नियम-वयभंगं न करेज्जा, तओ णं साय-परंपरणं सुमानुसत्त-सुदेवत्ताए जाव णं अपरिवडिय-सम्मत्ते निसग्गेण वा अभिग्गेण वा जाव अट्टारससीलंग-सहस्सधारी भवित्ताणं निरुद्धासवदारे, विहूय-रयमले पावयं कम्मं खवित्ताणं सिज्जेज्जा ।

[३९५] जे य णं से अहमे से णं स-पर-दारासत्त-मानसे अनुसमयं कूरज्झव-सायज्झवसिय-चित्ते हिंसारंभ-परिग्गहाइसु अभिरए भवेज्जा, तहा णं जे य से अहमाहमे से णं महा-पाव-कम्मं सव्वाओ इत्थीओ वाया मनसा य कम्मणा तिविहं तिविहेणं अनुसमयं अभिलसेज्जा तहा अच्चंतकूरज्झवसाय-अज्झवसिएहिं चत्ते हिंसारंभ-परिग्गहासत्ते कालं गमेज्जा, एएसिं दोणं पि णं अनंत-संसारियत्तणे नेयं ।

[३९६] भयवं जे णं से अहमे जे वि णं से अहमाहमे पुरिसे तेसिं च दोण्हं पि अनंत-संसारियत्तणं समक्खायं तो णं एगे अहमे एगे अहमाहमे, एतेसिं दोण्हं पि पुरिसावत्थाणं के पइविसेसे ? गोयमा! जे णं से अहम-पुरिसे से णं जइ वि उ स-पर-दारासत्त-मानसे कूरज्झवसायज्झवसिएहिं चित्ते हिंसारंभ-परिग्गहासत्त-चित्ते तहा वि णं दिक्खियाहिं साहुणीहिं अन्नयरासुं च सील-संरक्खण-पोसहोववास-अज्झयणं-२, उद्देसो-३

निरयाहिं दिक्खियाहिं गारत्थीहिं वा सद्धिं आवडिय-पेल्लियामंतिए वि समाणे नो वियम्मं समायरेज्जा । जे य णं से अहमाहमे पुरिसे से णं निय-जननि-पभिईए जाव णं दिक्खियाईहिं साहुणीहिं पि समं वियम्मं समायरेज्जा, ते णं चेव से महा-पाव-कम्मं सव्वाहमाहमे समक्खाए, से णं गोयमा पइ-विसेसे ।

तहा य जे णं से अहम्म-पुरिसे से णं अनंतेणं कालेणं बोहिं पावेज्जा, जे य उ ण से अहमाहमे महा-पावकारी दिक्खियाहिं पि साहुणीहिं पि समं वियम्मं समायरिज्जा से णं अनंत-हुत्तो वि अनंत-संसारमाहिंडिऊणं पि बोहिं नो पावेज्जा, एसे य गोयमा! बितिए पइ-विसेसे ।

[३९७] तत्थ णं जे से सव्वुत्तमे से णं छउमत्थ-वीयरागे नेए, जेणं तु से उत्तमुत्तमे से णं अणिइडिपत्त-पभितीए जाव णं उवसामग-खवए ताव णं निओयणीए, जेणं च से उत्तमे से णं अप्पमत्तसंजए नेए, एवमेएसिं निरूवणा कुज्जा ।

[३९८] जे उण मिच्छदिट्ठी भवित्ताणं उग्गबंभयारी भवेज्जा हिंसारंभ-परिग्गहाईणं विरए, से णं मिच्छ-दिट्ठी चेव नेए नो णं सम्मदिट्ठी, तेसिं च णं अविइय जीवाइ-पयत्थ-सब्भावाणं गोयमा ! नो णं उत्तमत्ते अभिनंदणिज्जे पसंसणिज्जे वा भवइ जओ तेणं ते अनंतर-भविए दिव्वोरालिए विसए पत्थेज्जा, अन्नं च कयादी ते दिव्वित्थियादओ संचिक्खिय तओ णं बंभवयाओ परिभंसेज्जा नियाणकडे वा हवेज्जा ।

[३९९] जे य णं से विमज्झमे, से णं तं तारिसमज्झवसायमंगीकिच्चाणं विरयाविरए दइव्वे ।

[४००] तदा णं जे से अहमे, जे य णं से अहमाहमे, तेसिं तु णं एगंतेणं जहा इत्थीसुं तहा णं नेए जाव णं कम्म-द्विइं समज्जेज्जा नवरं पुरिसस्स णं संचिक्खणगेसुं वच्छरुहोवरतल-पक्खएसुं लिंगे य अहिययरं रागमुप्पज्जे, एवं एते चेव छप्पुरिसविभागे ।

[४०१] कासिं चि इत्थीणं गोयमा ! भव्वत्तं सम्मत्त-दढत्तं च अंगी-कारुणं जाव णं सव्वुत्तमे पुरिसविभागे ताव णं चिंतणिज्जे, नो णं सव्वेसिमित्थीणं ।

[४०२] एवं तु गोयमा ! जीए इत्थीए -ति कालं पुरिससंजोग-संपत्ती न संजाया अहा णं पुरिस-संजोग-संपत्तीए वि साहीणाए जाव णं तेरसमे चोद्धसमे पन्नरसमे णं च समएणं पुरिसेणं सद्धिं न संजुत्ता नो वियम्मं समायरियं, से णं जहा घन-कट्ठ-तण-दारु-समिद्धे केई गामे इ वा नगरे इ वा रण्णे इ वा संपलित्ते चंडानिल-संधुक्किए पयलित्ताणं पयलित्ताणं निडज्झिय निडज्झिय चिरेणं उवसमेज्जा ।

एवं इगवीसमे बावीसमे जाव णं सत्ततीसइमे समए जहा णं पदीव-सिहा वावन्ना पुनरवि सयं वा तहाविहेणं चुण्ण-जोगेणं वा पयलिज्जा वा, एवं सा इत्थी-पुरिस-दंसणेण वा पुरिसालावग-सवणेण वा मदेणं कंदप्पेणं कामग्गिए पुनरवि उ पयलेज्जा ।

[४०३] एत्थं च गोयमा ! जं इत्थीयं भएण वा लज्जाए वा कुलंकुसेण वा जाव णं धम्म-सद्धाए वा तं वेयणं अहियासेज्जा नो वियम्मं समायरेज्जा, से णं धन्ना से णं पुन्ना से य णं वंदा से णं पुज्जा से णं दद्वच्चा से णं सव्व-लक्खणा से णं सव्व-कल्लाण-कारया से णं सव्वुत्तम-मंगल-निहि से णं सुयदेवता से णं सरस्सती से णं अंबहुंडी से णं अच्चुया से णं इंदाणी से णं परमपवित्तुत्तमा सिद्धी मुत्ती सासया सिवगइ त्ति ।

अज्झयणं-२, उद्देसो-३

[४०४] जामित्थियं तं वेयणं नो अहियासेज्जा वियम्मं वा समायरेज्जा, से णं अधन्ना से णं अपुन्ना से णं अवंदा से णं अपुज्जा से णं अदद्वच्चा से णं अलक्खणा से णं भग्ग-लक्खणा से णं सव्व अमंगल-अकल्लाण-भायणा, से णं भद्द-सीला से णं भद्दायारा से णं परिभद्द-चारित्ता से णं निंदनीया से णं गरहणीया से णं खिंसणिज्जा से णं कुच्छणिज्जा से णं पावा से णं पावा-पावा से णं महापावा-पावा से णं अपवित्ति त्ति ।

एवं तु गोयमा चडुलत्ताए भीरुत्ताए कायरत्ताए लोलत्ताए उम्मायओ वा दप्पओ वा कंदप्पओ वा अणप्प-वसओ वा आउट्टियाए वा, जमित्थियं संजमाओ परिभस्सिय दूरद्धाणे वा गामे वा नगरे वा रायहाणीए वा वेस-ग्गहणं अच्छइडिय-पुरिसेणं सद्धिं वियम्मं समायरेज्जा भूओ भूओ पुरिसं कामेज्ज वा रमेज्ज वा अहा णं तमेव दोयत्थियं कज्जं इइ परिकप्पेत्ता णं तमाईवेज्जा, तं चेव आईवमाणी पस्सियाणं उम्मायओ वा दप्पओ वा कंदप्पओ वा अणप्पवसओ वा आउट्टियाए वा ।

केइ आयरिए इ वा सामण्ण-संजए इ वा राय-संसिए इ वा वाय-लद्धिजुत्ते इ वा तवो-लद्धिजुत्ते इ वा जोगचुण्णलद्धिजुत्ते इ वा विण्णाणलद्धिजुत्ते इ वा जुगप्पहाणे इ वा पवयणप्पभावगे इ वा, तमित्थियं अन्नं वा रामेज्ज वा कामेज्ज वा अभिलसेज्ज वा भुंजेज्ज वा परिभुंजेज्ज वा जाव णं वियम्मं वा समायरेज्जा, से णं दुरंत-पंत-लक्खणे अहन्ने अवंदे अदद्वच्चे अपवित्ते अपसत्थे अकल्लाणे अमंगले निंदणिज्जे गरहणिज्जे खिंसणिज्जे कुच्छणिज्जे, से णं पावे से णं पाव-पावे से णं महापावे-से णं महापाव-पावे से णं भद्द-सीले से णं भद्दायारे से णं निब्भद्दचारित्ते महा-पाव-कम्मकारी ।

जइ णं पायच्छित्तमभुट्टेज्जा तओ णं मंदरतुंगेणं वइरेणं सरीरेणं उत्तमेणं संघयणेणं उत्तमेणं पोरुसेणं उत्तमेणं सत्तेणं उत्तमेणं तत्त-परिण्णाणेणं उत्तमेणं वीरियसामत्थेणं उत्तमेणं संवेगेणं उत्तमाए धम्म-सद्धाए उत्तमेणं आउक्खएणं तं पायच्छित्तमनुचरेज्जा, ते णं तु गोयमा ! साहूणं महानुभागाणं अट्टारस-परिहार-ट्टाणाइं नव-बंधे-गुत्तीओ वागरिज्जंति ।

[४०५] से भयवं ! किं पच्छित्तेणं सुज्जेज्जा ? गोयमा ! अत्थेगे जे णं सुज्जेज्जा अत्थेगे जे णं नो सुज्जेज्जा, से भयवं ! केणं अट्टेणं एवं वुच्चइ ? जहा णं गोयमा ! अत्थेगे जे णं सुज्जेज्जा, अत्थेगे जे णं नो सुज्जेज्जा, गोयमा ! अत्थेगे जे णं नियडी-पहाणे सढ-सीले वंक-समायारे, से णं ससल्ले आलोइत्ताणं ससल्लेण चेव पायच्छित्तमनुचरेज्जा से णं अविमुद्ध-सकलुसासए नो सुज्जेज्जा ।

अत्थेगे जे णं उज्जू पद्धर-सरल-सहावे जहा-वत्तं नीसल्लं नीसकं सुपरिफुडं आलोइत्ताणं जहोवइडं चेव पायच्छित्तमनुचिट्टेज्जा से णं निम्मल-निक्कलुस-विसुद्धासए वि सुज्जेज्जा, एतेणं अट्टेणं एवं वुच्चइ जहा णं गोयमा ! अत्थेगे जे णं सुज्जेज्जा, अत्थेगे जे णं नो सुज्जेज्जा ।

[४०६] तहा णं गोयमा ! इत्थीयं नाम पुरिसाणं अहमाणं सव्व-पाव-कम्माणं वसुहारा तम-रय-पंक-खाणी सोग्गइ-मग्गस्स णं अग्गला नरयावयारस्स णं समयरण-वत्तणी, अभूमयं विसकंदलिं

अणग्गियं चड्डुलिं अभोयणं विसूइयं अनामियं वाहिं अवेयणं मुच्छं अनोवसग्गं मारिं अनियलिं गुत्तिं अरज्जुए पासे अहेउए मच्चू, तथा य णं गोयमा इत्थि-संभोगे पुरिसाणं मनसा वि णं अचिंतणिज्जे अणज्झवसणिज्जे अपत्थणिज्जे अनीहणिज्जे अवियप्पणिज्जे असंकप्पणिज्जे अनभिलसणिज्जे असंभरणिज्जे तिविहं तिविहेणं ति ।

जओ णं इत्थियं नाम पुरिसस्स णं गोयमा ! सव्वप्पगारेसुं पि दुस्साहिय-विज्जं पि व अज्झयणं-२, उद्देशो-३

दोसुप्पायणिं सारंभ-संजणगं पि व पुणो असंजमायरणं अपुद्धधम्म खलियचारित्तं पिव अनालोइयं अनिंदियं अगारहियं अकय-पायच्छित्तज्झवसायं पडुच्च अनंत-संसार-परियट्टण-दुक्खसंदोहं, कय-पायच्छित्त-विसोहिं पि व पुणो असंजमायरणं महंत-पाव-कम्म-संचयं हिंसं व सयल-तेलोक्क-निंदियं, अदिट्ट-परलोग-पच्चवाय-घोरंधयार-नरय-वासो इव-निरंतरागेण-दुक्ख-निहिं त्ति ।

[४०७] अंग-पच्चंग-संठाणं चारुल्ल विय-पेहियं ।

इत्थीणं तं न निज्जाए काम-राग-विवड्डणं ॥

[४०८] तथा य इत्थीओ नाम गोयमा ! पलय-कगाल-रयणी-मिव सव्व-कालं तमोवलित्ताओ भवंति, विज्जु इव खणदिट्ट-नट्ट-पेम्माओ भवंति, सरणागय-घायगो इव एकक-जम्मियाओ तक्खण-पसूय-जीवंत-मुद्ध-निय-सिसु-भक्खीओ इव महा-पाव-कम्माओ भवंति, खर-पवणुच्चालिय-लवणोवहि-वेलाइव बहु-विह-विकप्प-कल्लोलमालाहिं णं खणं पि एगत्थ हि असंठिय-मानसाओ भवंति सयंभुरमणोवहिममिव दुरवगाह-कइतवाओ भवंति, पवणो इव चडुल-सहावाओ भवंति ।

अग्गी इव सव्व-भक्खाओ वाऊ इव सव्व-फरिसाओ तक्करो इव परत्थलोलाओ साणो इव दानमेत्तमेत्तीओ मच्छो इव हव्व-परिचत्त-नेहाओ, एवमाइ-अनेग-दोस-लक्ख-पडिपुन्न-सव्वंगोवंग-सब्भितर-बाहिराणं महापाव-कम्माणं अविनय-विस-मंजरीणं तत्थुप्पन्न-अनत्थ-गंथ-पसूईणं इत्थीणं, अनवरय-निज्झरंतदुग्गंधाऽसुइ-चिलीण-कुच्छणिज्ज-निंदणिज्ज-खिंसणिज्ज-सव्वंगोवंगाणं सब्भंतर-वाहिराणं, परमत्थओ महासत्ताणं निव्विण्णकाम-भोगाणं गोयमा! सव्वुत्तमुत्तमपुरिसाणं के नाम सयण्णे सुविण्णाय-धम्माहम्मे खणमवि अभिलासं गच्छिज्जा ।

[४०९] जासिं च णं अभिलसित्ताओ पुरिसे तज्जोणिं समुच्छिम पंचिंदियाणं एकक पसंगेणं चेव नवणहं सय-सहस्साणं नियमाओ उद्वगे भवेज्जा ते य अच्चंत-सुहुमत्ताओ मंस-चक्खुणो न पासिया ।

[४१०] एए णं अट्टेणं एवं वुच्चइ जहा णं गोयमा! नो इत्थीयं आलवेज्जा नो संलवेज्जा नो उल्लवेज्जा नो इत्थीणं अंगोवंगाइं संनिरिक्खेज्जा जाव णं नो इत्थीए सद्धिं एगे बंभयारी अद्धानं पडिवज्जेज्जा ।

[४११] से भयवं ! किमित्थिए संलावुल्लावंगोघंग-निरिक्खणं वज्जेज्जा से णं उयाहु मेहुणं ? गोयमा! उभयमवि से भयवं किमित्थि-संजोग-समायरणे मेहुणे परिवज्जिया उयाहु णं बहुविहेसुं सचित्ताचित्तवत्थु-विसएसुं मेहुण-परिणामे तिविहं तिविहेणं मनो-वइ-काय-जोगेणं सव्वहा सव्व-कालं जावज्जीवाए त्ति गोयमा ! सव्वहा विवज्जेज्जा ।

[४१२] से भयवं ! जे णं केई साहू वा साहुणी वा मेहुणमासेवेज्जा से णं वंदेज्जा ? गोयमा! जे णं केई साहू वा साहुणी वा मेहुणं सयमेव अप्पणा सेवेज्ज वा परेहि उवइसेत्तुं सेवावेज्जा वा सेविज्जमाणं समणुजाणेज्जा वा दिव्वं वा माणुसं वा तिरिक्ख-जोणियं वा जाव णं करकम्माइं

सचित्ताचित्तं-वत्थुविसयं वा विविहज्झवसाएण कारिमाकारिमोवगरणेणं मनसा वा वायसा वा काएण वा
से णं समणे वा समणी वा दूरंत-पत-लक्खण-अदट्टवे अमग्ग-समायारे महापाव-कम्मं नो णं वंदेज्जा नो
णं वंदावेज्जा नो णं वंदिज्जमाण वा समणुजाणेज्जा तिविहं जाव णं विसोहिकालं ति,

से भयवं जे वंदेज्जा से किं लभेज्जा ?, गोयमा ! जे तं वंदेज्जा से अट्टारसण्हं सीलंग-
सहस्सधारीणं महानुभागाणं तित्थयरादीणं महतीं आसायणं कुज्जा, जे णं तित्थयरादीणं आसायणं कुज्जा,
अज्झयणं-२, उद्देसो-३

से णं अज्झवसायं पडुच्चा जाव णं अनंत-संसारियत्तणं लभेज्जा ।

- [४१३] विप्पहिच्चित्थियं सम्मं, सव्वहा मेहुणं पि य ।
अत्थेगे गोयमा ! पाणी जे नो चइय परिग्गहं ॥
- [४१४] जावइयं गोयमा ! तस्स सचित्ताचित्तोभयत्तणं ।
पभूयं चानुजीवस्स भवेज्जा उ परिग्गहं ॥
- [४१५] तावइएणं तु सो पाणी ससंगो मोक्ख-साहणं ।
नाणादि-तिगं न आराहे तम्हा वज्जे परिग्गहं ॥
- [४१६] अत्थेगे गोयमा ! पाणी जे पयहित्ता परिग्गहं ।
आरंभं नो विवज्जेज्जा जं चीयं भवपरंपरा ॥
- [४१७] आरंभे पत्थियस्सेग-वियल-जीवस्स वइयरे ।
संघट्टणाइयं कम्मं जं बद्धं गोयमा ! सुण ॥

[४१८] एगे बेइंदिए जीवे एगं समयं अनिच्छमाणे बलाभिओगेणं हत्थेण वा पाएण वा
अन्नयरेण वा सलागाइ-उवगरण-जाएणं जे केइ पाणी अगाढं संघट्टेज्जा वा संघट्टावेज्ज वा संघट्टिज्जमाणं
वा अगाढं परेहिं समणुजाणेज्जा, से णं गोयमा ! जया तं कम्मं उदयं गच्छेज्जा तया णं महया केसेणं
छम्मासेणं वेदेज्जा गाढं दुवालसहिं संवच्छरेहिं, तमेव अगाढं परियावेज्जा वास-सहस्सेणं गाढं दसहिं वास-
सहस्सेहिं, तमेव अगाढं किलामेज्जा वास-लक्खेणं गाढं दसहिं वासलक्खेहिं, अहा णं उद्वेज्जा तओ वास-
कोडिए एवं ति-चउ-पंचिंदिएसु दट्टव्वं ।

- [४१९] सुहुमस्स पुढवि-जीवस्स जत्थेगस्स विराहणं ।
अप्पारंभं तयं बेति गोयमा ! सव्व-केवली ॥
- [४२०] सुहुमस्स पुढवि-जीवस्स वावत्ती जत्थ संभवे ।
महारंभं तयं बेति गोयमा ! सव्व-केवली ॥
- [४२१] एवं तु सम्मिलंतेहिं कम्मुकुरुडेहिं गोयमा ! ।
से सोट्टब्भेअनंतेहिं जे आरंभे पवत्तए ॥
- [४२२] आरंभे वट्टमाणस्स बद्ध-पुट्ट-निकाइयं ।
कम्मं बद्धं भवे जम्हा तम्हारंभं विवज्जए ॥
- [४२३] पुढवाइ-अजीव-कायं ता सव्व-भावेहिं सव्वहा ।
आरंभा जे नियट्टेज्जा, से अइरा जम्म-जरा-मरण ।
सव्व-दारिद्ध-दुक्खाणं विमुंचइ त्ति ॥
- [४२४] अत्थेगे गोयमा ! पाणी जे एयं परिबुज्झिउं ।

एगंत-सुह-तल्लिच्छे न लभे सम्मग्गवत्तणिं ॥

- [४२५] जीवे संमग्ग-मोइण्णे घोर-वीरतवं चरे ।
अचयंतो इमे पंच कुज्जा सव्वं निरत्थयं ॥
- [४२६] कुसीलोसण्ण-पासत्थे सच्छंदे सबले तहा ।
दिट्ठीए वि इमे पंच गोयमा ! न निरिक्खए ॥

अज्झयणं-२, उद्देशो-३

- [४२७] सव्वन्नु-देसियं मग्गं सव्व-दुक्ख-पणासगं ।
साया गारव-गरुए वि अन्नहा भणिउमुज्झए ॥
- [४२८] पयमक्खरं पि जो एगं सव्वन्नूहिं पवेदियं ।
न रोएज्ज अन्नहा भासे मिच्छ-दिट्ठी स निच्छियं ॥
- [४२९] एयं नाऊण संसग्गिं दरिसणालाव संथवं ।
सवासं च हियाकंखी सव्वोवाएहिं वज्जए ॥
- [४३०] भयवं! निब्भट्ठ-सीलाणं दरिसणं तं पि नेच्छसि ।
पच्छित्तं वागरेसी य इति उभयं न जुज्जए ॥
- [४३१] गोयमा! भट्ठ-सीलाणं दुत्तरे संसार-सागरे ।
धुवं तमनुकंपित्ता पायच्छित्ते पदरिसिए ॥
- [४३२] भयवं! किं पायच्छित्तेणं छिंदिज्जा नारगाउयं ? ।
अनुचरिऊण पच्छित्तं बहवे दुग्गइं गए ॥
- [४३३] गोयमा! जे समज्जेज्जा अनंत-संसारियत्तणं ।
पच्छित्तेणं धुवं तं पि छिंदे किं पुणो नरयाउयं ? ॥
- [४३४] पायच्छित्तस्स भुवणेत्थ नासज्झं किंचि विज्जए ।
बोहिलाभं पमोत्तूणं हारियं तं न लब्भए ॥
- [४३५] तं चाउकाय-परिभोगे तेउकायस्स निच्छियं ।
अबोहिलाभियं कम्मं बज्जए मेहुणेण य ॥
- [४३६] मेहुणं आउ-कायं च तेउ-कायं तहेव य ।
तम्हा तओ वि जत्तेणं वज्जेज्जा संजइंदिए ॥
- [४३७] से भयवं गारत्थीणं सव्वमेवं पवत्तई, ता जइ अबोही ।
भवेज्ज एसु तओ सिक्खा-गुणा ऽणुव्वयधरणं तु निप्फलं ॥
- [४३८] गोयमा! दुविहे पहे अक्खाए सुस्समणे य सुसावए ।
महव्वय-धरे पढमे बीए ऽणुव्वय-धारए ॥
- [४३९] तिविहं तिविहेणं समणेहिं सव्व-सावज्जमुज्झियं ।
जावज्जीवं वयं घोरं पडिवज्जियं मोक्ख-साहणं ॥
- [४४०] दुविहेग-विहं तिविहं वा थूलं सावज्जमुज्झियं ।
उद्धिद्ध-कालियं तु वयं देसेणं न संवसे गारत्थीहिं ॥
- [४४१] तहेव तिविहं तिविहेणं इच्छारंभं-परिग्गहं ।

	वोसिरंति अनगारे जिनलिंगं तु धरंति ते	॥
[४४२]	इयरे उणं अनुज्झित्ता इच्छारंभ-परिग्गहं	
	सदाराभिरए स गिही जिन-लिंगं तु पूयए न धारयं ति	॥
[४४३]	तो गोयमेग-देसस्स पडिक्कंते गारत्थे भवे	
	तं वयमनुपालयंताणं नो सिं आसायणं भवे	॥

अज्झयणं-२, उद्देशो-३

[४४४]	जे पुण सव्वस्स पडिक्कंते धारे पंच-महव्वए	
	जिनलिंगं तु समुव्वहइ तं तिगं नो विवज्जए	॥
[४४५]	तो महयासायणं तेसिं इत्थि-ग्गी-आउ-सेवणे	
	अनंतनाणी जिने जम्हा एयं मनसा वि ना	sभिलसे ॥
[४४६]	ता गोयमा ! सहियएणं एवं वीमसिउं दढं	
	विभावय जइ बंधेज्जा गिहि नो उ अबोहिलाभियं	॥
[४४७]	संजए पुण निबंधेज्जा एयाहिं हेऊहिं य	
	आणाइक्कम-वय-भंगा तह उम्मग्ग-पवत्तणा	॥
[४४८]	मेहुणं चायुकायं च तेउकायं तहेव य	
	हवइ तम्हा तितयं ति जत्तेणं वज्जेज्जा सव्वहा मुनी	॥
[४४९]	जे चरंते व पच्छित्तं मणेणं संकिलिस्सए	
	जह भणियं वाहणाणुडे निरयं सो तेण वच्चए	॥
[४५०]	भयवं मंदसद्धेहिं पायच्छित्तं न कीरई	
	अह काहिंति किलिद्ध-मणे तो अनुकंप विरुज्झए	? ॥
[४५१]	नारायादीहिं संगामे गोयमा ! सल्लिए नरे	
	सल्लुद्धरणे भवे दुक्खं नानुकंपा विरुज्झए	॥
[४५२]	एवं संसार-संगामे अंगोवंगंत-बाहिरं	
	भाव-सल्लुद्धरिताणं अनुकंपा अनोवमा	॥
[४५३]	भयवं! सल्लंमि देहत्थे दुक्खिए होंति पाणिणो	
	जं समयं निप्पिडे सल्लं तक्खणा सो सुही भवे	॥
[४५४]	एवं तित्थयरे सिद्धे साहू-धम्मं विवंचिउं	
	जमकज्जं कयं तेणं निसिरिएणं सुही भवे	? ॥
[४५५]	पायच्छित्तेणं को तत्थ कारिएणं गुणो भवे	?
	जेणं थेवस्स वी देसि दुक्करं दुरनुच्चरं	॥
[४५६]	उद्धरिउं गोयमा ! सल्लं वण-भंगे जाव नो कये	
	वण-पिंडीपट्ट-बंधं च ताव नो किं परुज्झए	? ॥
[४५७]	भावसल्लस्स वण-पिंडिं पट्ट-भूओ इमो भवे	
	पच्छित्तो दुक्खरोहं पि पाव-वणं खिप्पं परोहए	॥
[४५८]	भयवं! किमनुविज्जंते सुव्वंते जाणिए इ वा	

	सोहेइ सव्व-पावाइं पच्छित्ते सव्वण्णु-देसिए	?	॥
[४५९]	सुसाउ-सीयले उदगे गोयमा ! जाव नो पिबे		
	नरे गिम्हे वियाणंते, ताव तण्हा न उवसमे		॥
[४६०]	एवं जाणित्तु पच्छित्तं असढ-भावे न जा चरे		
	ताव तस्स तयं पावं वड्ढए उ न हायए		॥

अज्झयणं-२, उद्देसो-३

[४६१]	भयवं! किं तं वड्ढेज्जा जं पमादेण कत्थई		
	आगयं? पुणो आउत्तस्स तेत्तियं किं न ड्वायए		॥
[४६२]	गोयमा! जह पमाएणं अनिच्छंतो ऽहि-डंकिए?		
	आउत्तस्स जहा पच्छा विसं वड्ढे तह चेव पावगं		॥
[४६३]	भयवं! जे विदिय-परमत्थे सव्व-पच्छित्त-जाणगे		
	ते किं परेसिं साहिंति नियम-कज्जं जहड्डियं	?	॥
[४६४]	गोयमा-मंत-तंतेहिं दियहे जो कोडिमुट्ठवे		
	से वि दट्ठे विनिच्चेट्ठे धारियण्णेहिं भल्लिए		॥
[४६५]	एवं सीलुज्जले साहू पच्छित्तं तु दढव्वए		
	अन्नेसिं निउण-लद्धं सोहे ससीसं व ण्हावीओ जह त्ति		॥

◦ बीए अज्झयणे तइओ उद्देसो समत्तो

◦ बीअं अज्झयणं समत्तं ◦

[४६६] एएसिं तु दोण्हं पि अज्झयणाणं विहिपुव्वगेणं सव्व-सामण्णं वायणं ति ।

◦ तइयं अज्झयणं - कुसीललकखणं ◦

[४६७]	अओ परं चउक्कण्णं सुमहत्थाइसयं परं		
	आणाए सद्धहेयव्वं सुत्तत्थं जं जह-ड्डियं		॥
[४६८]	जे उग्धाडं परुवेज्जा देज्जा व अजोगस्स उ		
	वाएज्ज अबंभयारी वा अविहीए अनुदिट्ठं पि वा		॥
[४६९]	उम्मायं व लभेज्जा रोगायकं व पाउणे दीहं		
	भंसेज्ज संजमाओ समरनंते वा नया वि आराहे		॥
[४७०]	एत्थं तु जं विही-पुव्वं पढमज्झयणे परुवियं		
	तीए चेव विहिए तं वाएज्जा सेसाणिमं विहिं		॥
[४७१]	बीयज्झयणेम्बिले पंच-नवुद्देसा तहिं भवे		
	तइए सोलस उद्देसे अट्ठ-तत्थेव अंबिले		॥
[४७२]	जं तइए तं चउत्थे वि पंचमम्मि छायंबिले		
	छट्ठे दो सत्तमे तिन्नि अट्ठमे आयंबिले दस		॥
[४७३]	अनिक्खित्त-भत्त-पाणेण संघट्टेणं इमो महा		
	निसीह-वर-सुयक्खंधं वोढव्वं च आउत्तग-पानगेणं ति		॥

[४७४]	गंभीरस्स महा-मइणो उज्जुयस्स तवो-गुणे	
	सुपरिक्खियस्स कालेणं सय-मज्झेगस्स वायणं	
[४७५]	खेत्त-सोहीए निच्चं तु उवउत्तो भविया जया	
	तया वाएज्जा एयं तु अन्नहा उ छलिज्जई	
[४७६]	संगोवंग-सुथस्सेयं नीसंदं तत्तं-परं	

अज्झयणं-३, उद्देशो-

	महा-निहि व्व अविहीए गिण्हंते णं छलिज्जए	
[४७७]	अहवा सव्वाइं सेयाइं बहु-विग्घाइं भवंति उ	
	सेयाण परं सेयं सुयक्खंधं निच्चिग्घं	
[४७८]	जे धन्ने पुन्ने महानुभागे से वाइया	
	से भयवं ! केरिसं तेसिं कुसीलादीण लक्खणं	?
	सम्मं विन्नाय जेणं तु सव्वहा ते विवज्जए	
[४७९]	गोयमा! सामन्नओ तेसिं लक्खणमेयं निबोधय	
	जे नच्चा तेसि संसग्गी सव्वहा परिवज्जए	
[४८०]	कुसीले ताव दुस्सयहा ओसन्ने दुविहे मुणे	
	पसत्थे नाणमादीणं सबले बाइसई विहे	
[४८१]	तत्थ जे ते उ दुसयहा उ वोच्छं तो ताव गोयमा	
	कुसीले जेसिं संसग्गीदोसेणं भस्सई मुनी खणा	

[४८२] तत्थ कुसीले ताव समासओ दुविहे नेए-परंपर-कुसीले य अपरंपर-कुसीले य ।

तत्थ णं जे ते परंपर-कुसीले ते वि उ दुविहे नेए-सत्त-द्व-गुरु-परंपर-कुसीले एग-दु-ति-गुरु-परंपर-कुसीले य ।

[४८३] जे वि य ते अपरंपर-कुसीले ते वि उ दुविहे नेए-आगमओ नो आगमओ य ।

[४८४] तत्थ-आगमओ-गुरु-परंपरणं आवलियाए न केई कुसीले आसी उ, ते चेव कुसीले भवंति ।

[४८५] नो आगमओ अनेगविहा तं जहा नाण-कुसीले दंसण-कुसीले चरित्त-कुसीले तव-कुसीले वीरय-कुसीले ।

[४८६] तत्थ णं जे से नाण-कुसीले से णं तिविहे नेए पसत्थापसत्थ-नाण-कुसीले, अपसत्थनाण-कुसीले, सुपसत्थनाण-कुसीले ।

[४८७] तत्थ जे से पसत्थापसत्थ-नाण-कुसीले से दुविहे नेए आगमओ नोआगमओ य तत्थ आगमओ विहंगनाणी पन्नविय पसत्थापसत्थयत्थ-जाल-अज्झयणज्झावण-कुसीले । नो आगमओ अनेगहा पसत्थापसत्थ-पर-पासंड-सत्थ-जालाहिज्जण-अज्झावण-वायणाऽनुपेहणकुसीले ।

[४८८] तत्थ जे ते अपसत्थ-नाण-कुसीले ते एगूणतीसइविहे दद्व्वे, तं जहा-सावज्ज-वाय-विज्जा-मंत-तंत-पउंजण-कुसीले, विज्जा-मंत-तंताहिज्जण-कुसीले, वत्थु-विज्जा पउंजणा हिज्जण-कुसीले, गहरिक्ख-चार-जोइस-सत्थ-पउंजणाहिज्जण-कुसीले, निमित्त-लक्खण-पउंजणाहिज्जण कुसीले सउण-लक्खण-पउंजणाहिज्जण-कुसीले, हत्थि-सिक्खा-पउंजणाहिज्जण-कुसीले, धनुव्वेय-पउंजणाहिज्जण कुसीले,

गंधव्वेय-पउंजणाहिज्जण-कुसीले, पुरिस-इत्थी-लक्खण-पउंजणज्झावण-कुसीले, काम-सत्थ-
 पउंजणाहिज्जण-कुसीले, कुहुगिंद जाल-सत्थ-पउंजणाहिज्जण-कुसीले, आलेक्ख-विज्जाहिज्जण-कुसीले,
 लेप्प-कम्म-विज्जा-हिज्जण-कुसीले, वमन-विरेयण-बहुवेल्लि जाल-समुद्धरण-कढण-काढण-वणस्सइ-वल्लि
 मोडण-तच्छणाइ बहुदोस-विज्जग सत्थ-पउंजणाहिज्ज-नज्झावण-कुसीले एवं जाण-जोग-पडिजोग-चुण्ण-
 वण्ण-धाउव्वाय राय-दंडनीई सत्थ-असणि-पव्व अग्घकंड-रयणपरीक्खा रसवेह-सत्थ समच्च-सिक्खा गूढ-
 अज्झयणं-३, उद्देशो-

मंत-तंत काल-देस-संधि-विग्गहो-वएस-सत्थ-सम्म-जाण-ववहार निरुवणऽत्त-सत्थ-पउंजणाहिज्जण-अपसत्थ
 नाणकुसीले, एवमेएसिं चेव पाव-सुयाणं वायणा पेहणा परावत्तणा अनुसंधणा सवणाऽयण्णण-अपसत्थ-
 नाण-कुसीले ।

[४८९] तत्थ जे य ते सुपसत्थ-नाण-कुसीले ते वि य दुविहे नेए आगमतो नोआगमओ य
 तत्थ य आगमओ सुपसत्थं पंच-प्पयारं नाणं असायंते सुपसत्थ-नाण-धरे इ वा आसायंते सुपसत्थ-नाण
 कुसीले ।

[४९०] नो आगमओ य सुपसत्थ-नाण-कुसीले अट्ठहा नेए तं जहा-अकालेणं सुपसत्थ-
 नाणाहिज्जणऽज्झावण-कुसीले, अविनएणं सुपसत्थ नाणाहिज्जणज्झावण कुसीले, अबहुमानेनं सुपसत्थ
 नाणाहिज्जणकुसीले अनोवहाणेणं सुपसत्थ नानाहिज्जणऽज्झावण-कुसीले, जस्स य सयासे सुपसत्थ
 सुत्तत्थोभयमहीयं तं निन्हवण-सुपसत्थ-नाण-कुसीले, सर-वंजण-हीनक्खरिय-ऽच्चक्खरिया हीयऽज्झावण
 सुपसत्थ नाण-कुसीले, विवरीय सुत्तत्थोभयाहीयज्झावण सुपसत्थ-नाण-कुसीले संदिद्ध-सुत्तत्थोभयाहीय
 ज्झावण सुपसत्थनाण-कुसीले ।

[४९१] तत्थ एएसिं अट्ठण्हं पि पयाणं गोयमा! जे केइ अनोवहाणेणं सुपसत्थं नाण-महीयंति
 अज्झावयंति वा अहीयंते इ वा अज्झावयंते इ वा समणुजाणंति वा ते णं महा-पावकम्मं महती सुपसत्थ-
 नाणस्सासायणं पकुव्वंति ।

[४९२] से भयवं! जइ एवं ता किं पंच-मंगलस्स णं उवहाणं कायव्वं?, गोयमा ! पढमं नाणं
 तओ दया दयाए य सव्व-जग-जीव-पाण-भूय-सत्ताणं अत्तसम-दरिसित्तं, सव्व-जग-जीव-पाण-भूय-सत्ताणं
 अत्तसम दंसणाओ य तेसिं चेव संघट्टण-परियावण-किलावणोद्दावणाइ-दुक्खु-पायण-भय विवज्जणं, तओ
 अनासवो अनासवाओ य संवुडासवदारत्तं संवुडासव-दारत्तेणं च दमो पसमो, तओ य सम-सत्तु-मित्त-
 पक्खया सम-सत्तु-मित्त-पक्खयाए य अराग-दोसत्तं तओ य अकोहया अमानया अमायया अलोभया
 अकोह-मान-माया-लोभयाए य अकसायत्तं, तओ य सम्मत्तं समत्ताओ य जीवाइ-पयत्थ-परिन्नाणं तओ
 य सव्वत्थ-अपडिबद्धत्तं सव्वत्थापडिबद्धत्तेण य अन्नाण-मोह-मिच्छत्तक्खयं, तओ विवेगो विवागाओ य
 हेय-उवाएय-वत्थु-वियालेणे-गंत-बद्ध-लक्खत्तं तओ य अहिय-परिच्चाओ हियायरणे य अच्चंतमभुज्जमो
 तओ य परम पवित्तुत्तम-खंतादिदसविह-अहिंसा-लक्खण-धम्माणुद्धानेक्क करण-कारावणासत्तचित्तयाए ।

तओ य खंतादि दसविह अहिंसा लक्खण धम्माणुद्धानेक्क करण कारावणा सत्त-चित्तयाए
 य सव्वुत्तमा खंती सव्वुत्तमं मिउत्तं सव्वुत्तं अज्जव-भावत्तं सव्वुत्तमं सबज्झभंत्तरं सव्व-संग-
 परिच्चागं सव्वुत्तमं सबज्झभंत्तर-दुवालसविह-अच्चंत-घोर-वीरुग्ग-कट्ठ-तव-चरणाणुद्धानाभिरमणं सव्वुत्तमं
 सत्तरसविह-कसिण-संजमाणुद्धान परिपालणेक्क बद्ध-लक्खत्तं सव्वुत्तमं सच्चगिरणं छक्काय-हियं
 अनिगूहिय बल-वीरिय-पुरिसक्कार परक्कमपरितोलणं च । सव्वुत्तम-सज्झायझाण-सलिलेणं पावकम्म-

मल-लेव-पक्कालणं ति सव्वुत्तमुत्तमं आकिंचणं सव्वुत्तममुत्तमं परम-पवित्तुत्तम-सव्व-भाव-भावंतरेहिं णं सुविसुद्ध सव्व दोस विप्पमुक्क नवगुत्ती-सणाह अट्टारस-परिहारट्टाण परिवेढिय सुद्धुद्धर-घोर-बंधवय-धारणंति ।

तओ एसिं चैव सव्वुत्तम-खंती-मद्धव-अज्जव-मुत्ती तव संजम-सच्च-सोय-आकिंचण सुद्धुद्धर-बंधवय-धारण-समुट्टाणेणं च सव्व-समारंभ-विवज्जणं, तओ य-पुढवि दगा-गणि-वाऊ-वणप्फई बि-ति-चउ-पंचिदियाणं तहेव अजीव-काय संरंभ-समारंभारंभाणं च मनो-वइ-काय-तिएणं तिविहं तिविहेणं अज्झयणं-३, उद्देसो-

सोइंदियादि-संवरण आहारादि-सण्णा विप्पजढत्ताए वोसिरणं, तओ य अट्टारस-सीलंग-सहस्स-धारित्तं अमलिय-अट्टारस-सीलंग-सहस्स-धारणेणं च अखलिय-अखंडिय-अमलिय अविराहिय-सुद्धुग्गुग्गयर-विचित्ताभिग्गह-निव्वाहणं, तओ य सुर-मनुय-तिरिच्छोईरिय-घोर परिसहोवसग्गाहियासणं समकरणेणं ।

तओ य अहोरायाइ-पडिमासुं महा-पयत्तं, तओ निप्पडिकम्म-सरीरया निप्पडिकम्म-सरीरत्ताए य सुक्कज्झाणे निप्पकंपत्तं, तओ य अनाइ-भव-परंपर-संचिय-असेस-कम्मट्ट-रासि-खयं अनंत-नाण-दंसण-धारित्तं च चउगइ-भव-चारगाओ निप्फेडं सव्व-दुक्ख-विमोक्खं मोक्ख-गमनं च, तत्थ अदिट्ट-जम्म जरा-मरणाणिट्ट संपओगिट्ट वियोय-संतावुव्वेवगय-अयसब्भक्खाणं महवाहि-वेयणा रोग-सोग-दारिद्ध दुक्ख भय-वेमनस्सत्तं, तओ य एगंतिय अचंचंतियं सिव-मलयमक्खयं धुवं परम-सासयं निरंतरं सव्वुत्तमं सोक्खं ति, ता सव्वमेवेयं नाणाओ पवत्तेज्जा ।

ता गोयमा एगंतिय-अचंचंतिय-परम-सासय-धुव-निरंतर-सव्वुत्तम-सोक्ख-कंखुणा पढमयरमेव तावायरेणं सामाइयमाइयं लोग-बिंदुसार-पज्जवसाणं दुवालसंगं सुयनाणं, कालंबिलादि-जहुत्त-विहिणोवहाणेणं हिंसादीयं च तिविहं तिविहेणं पडिककंतेणं य, सर-वंजण-मत्ता-बिंदुपय-क्खरानूनगं पयच्छेद-घोस-बद्धयाणुपुव्वि-पुव्वाणुपुव्वी अनानुपुव्वीए सुविसुद्धं अचोरिककायएणं एगत्तणेणं सुविण्णेयं, तं च गोयमा ! अनिहनोरपार-सुविच्छिन्न-चरमोयहि मियसुदुरवगाहं सयल-सोक्ख-परम-हेउ-भूयं च, तस्स य सयल-सोक्ख-हेउ-भूयाओ न इट्ट-देवया-नमोक्कारविरहिए केई पारं गच्छेज्जा, इट्ट-देवयाणं च नमोक्कारं पंचमंगलमेव गोयमा ! णो न मण्णंति, ता नियमओ पंचमंगलस्सेव पढमं ताव विनओवहाणं कायव्वं ति ।

[४९३] से भयवं कयराए विहिए पंच-मंगलस्स णं विनओवहाणं कायव्वं ?, गोयमा इमाए विहिए पंचमंगलस्स णं विनओवहाणं कायव्वं, तं जहा-सुपसत्थे चैव सोहणे तिहि-करण-मुहुत्त-नक्खत्त-जोग-लग्ग-ससीबले, विप्पमुक्क-जायाइमयासंकेण संजाय-सद्धा-संवेग-सुत्तिव्वतर-महं-तुल्लसंत-सुहज्जवसायानुगयभत्ती-बहुमान-पुव्वं निण्णियाण दुवालस-भत्त-ट्टिएणं, चेइयालये जंतुविरहि-ओगासे, भत्तिभर-निब्भरुद्धुसिय-ससीसरोमावली पप्फुल्ल-वयण-सयवत्त पसंत-सोम-थिर-दिट्ठी नव-नव-संवेग-समुच्छलंत संजाय-बहल घन-निरंतर अचिंत-परम-सुह-परिणाम विसेसुल्लासिय, सजीव वीरियाणु-समय-विवड्ढंत पमोय सुविसुद्ध सुनिम्मल विमल थिर-दढयरंतकरणेणं, खितिनिहिय-जाणु ण सि-उत्तमंग-कर-कमल-मउल सोहंजलि-पुडेणं, सिरि-उसभाइ पवर-वर धम्म-तित्थयर पडिमा-बिंब विनिवेसिय-नयन-मानसेगग्ग-तग्गयज्जवसाएणं, समयण्णुदढचरित्तादि गुण-संपओववेय गुरु-सद्धत्थथाणुट्टाण करणेक्क-बद्ध-लक्ख तवाहिय गुरुवयण-विनिग्गयं विनयादि-बहुमान परिओसाऽनु-कंपोवलद्धं, अनेग-सोग संता-वुव्वेवग-महवा-धिवेयणा घोर-दुक्ख दारिद्ध-किलेस रोग-जम्म-जरा-मरण गब्भ वास निवासाइ-दुट्ट-सावगागाह-भीम-भवोदहि-तरंडग-भूयं इणमो ।

सयलागम-मज्झ-वत्तगस्स मिच्छत्त-दोसावहय विसिद्ध बुद्धी-परिकप्पिय-कुभणिय-अघडमान असेस-हेउ दिट्ठंत-जुत्ती-विद्धंस निक्क-पच्चल पोढस्स पंच-मंगल-महासुयक्खंधस्स पंचज्झयणेग-चूला-परिक्खित्तस्स पवर-पवयण-देवयाहि-द्वियस्स, तिपद-परिच्छिन्नेगालावग सत्तक्खर-परिमाणं अनंतगम-पज्जवत्थ-पसाहगं, सव्व-महामंत-पयर-विज्जाणं परम-बीय-भूयं, **नमो अरहंताणं** ति, पढमज्झयणं अहिज्जेयव्वं, तद्धियहे य आयंबिलेणं पारेयव्वं ।

तहेव बीय-दीने अनेगाइ-सय-गुण-संपओववेयं अनंतर-भणियत्थ-पसाहगं अनंतरुत्तेणेव अज्झयणं-३, उद्देशो-

कमेणं दुपय परिच्छिन्नेगालावग पंचक्खर-परिमाणं **नमो सिद्धाणं** ति बीयमज्झयणं अहिज्जेयव्वं ति, तद्धियहे य आयंबिलेण पारेयव्वं,

एवं अनंतर-भणिएणेव कमेणं अनंतरुत्तत्थ पसाहगंति पय-परिच्छिन्नेगालावगं सत्तक्खर-परिमाणं **नमो आयरियाणं** ति तइयं अज्झयणं आयंबिलेणं अहिज्जेयव्वं, तथा य अनंतरुत्थ पसाहगं ति पय परिच्छिन्नेगालावगं सत्तक्खर परिमाणं **नमो उवज्झायाणं** ति चउत्थं अज्झयणं चउत्थ-दिने आयंबिलेण एव, तहेव अनंतर भणियत्थ पसाहगं पंचपय-परिच्छिन्नेगालवग-नवक्खरपरिमाणं **नमो लोए सव्वसाहूणं** ति पंचमज्झयणं पंचम दिने आयंबिलेण ।

तहेव तं अत्थानुगामियं एक्कारस-पय-परिच्छिन्न-तियालावगा-तेत्तीस अक्खर-परिमाणं **एसो पंचनमोक्कारो, सव्व-पाव-प्पणासणो, मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं** । इति चूलं ति छड्ड-सत्तम-द्वम-दिने तेणेव कम-विभागेण आयंबिलेहिं अहिज्जेयव्वं एवमेयं पंचमंगल-महा-सुयक्खंधं सर-वत्तय-रहियं पयक्खर-बिंदु मत्ता-विसुद्धं गुरु-गुणोववेय-गुरुवइडं कसिणमहिज्जित्ता णं तथा कायव्वं जहा पुव्वाणुपुव्वीए पच्छाणुपुव्वीए अनानुपुव्वीए जीहग्गे तरेज्जा,

तओ तेनेवानंतरभणिय-तिहि करण-मुहुत्त-नक्खत्त जोग लग्ग ससी-बल जंतु-विरहिओगासे चेइयालगाइकमेणं अद्वम-भत्तेणं समणुजाणाविऊणं गोयमा ! महया पबंधेण सुपरिफुडं निउणं असंदिद्धं सुत्तत्थं अनेगहा सोऊण अवधारेयव्वं । एयाए विहीए पंचमंगलस्स णं गोयमा ! विनओवहाणे कायव्वे ।

[४९४] से भयवं ! किमेयस्स अचिंत-चिंतामणि-कप्प-भूयस्स णं पंचमंगल-महासुयक्खंधस्स सुत्तत्थं पन्नत्तं ? गोयमा ! इयं एयस्स अचिंत-चिंतामणी-कप्प-भूयस्स णं पंचमंगल-महासुयक्खंधस्स णं सुत्तत्थं-पन्नत्तं तं जहा-जे णं एस पंचमंगल-महासुयक्खंधे से णं सयलागमंतरो ववत्ती तिल-तेल-कमल-मयरंद-व्व-सव्वलोए पंचत्थिकायमिव, जहत्थ किरियानुगय-सब्भूय-गुणुक्कित्तणे, जहिच्छिय-फल-पसाहगे चेव परम थुइवाए, से य परमथुई केसिं कायव्वा ? सव्व-जगुत्तमाणं सव्वजगुत्तमुत्तमे य जे केई भूए जे केई भविंसु जे केई भविस्संति ते सव्वे चेव अरहंतादओ चेव नो नमण्णे त्ति । ते य पंचहा-अरहंते सिद्धे आयरिए उवज्झाए साहवो य ।

तत्थ एएसिं चेव गब्भत्थ-सब्भावो इमो, तं जहा-स-नरामरासुरस्स णं सव्वस्सेव जगस्स अद्व-महा-पाडिहेराइ-पूयाइसओवलक्खियं अनन्न-सरिसमचिंतपमप्पमेयं केवलाहिद्वियं पवरुत्तमत्तं अरहंति त्ति । अरहंता असेस-कम्म-क्खणं निद्वड्ढ-भवंकुरत्ताओ न पुणेह भवंति जम्मं ति उव्वज्जंति वा अरुहंता वा । निम्महिय निहय-निद्वलिय-विलूय-निद्वविय-अभिभूय-सुदुज्जयासेस-अद्व-पयारकम्मरि-उत्ताओ वा अरि-हंते इ वा ।

एवमेते अनेगहा पन्नविज्जंति परुविज्जंति आघविज्जंति पट्टविज्जंति दंसिज्जंति उवदंसिज्जंति ।

तहा-सिद्धाणि परमानंद-महूसव महकल्लाण-निरुवम-सोक्खाणि निप्पकंप-सुक्कज्झाणाइ अचिंत-सत्ति-सामत्थओ सजीववीरिएयं जोग-निरोहाइणा मह-पयत्तेणित्ति सिद्धा । अट्ट-प्पयार-कम्मक्खएण वा सिद्धं सज्झमेतेसिं ति सिद्धा, सिय-माज्झायमेसिमिति वा सिद्धि, सिद्धे निट्ठिए पहीणे सयल-पओयण-वाय-कयंबमेतेसिमिति वा सिद्धा । एवमेते इत्थी-पुरिस-नपुंस सलिंग-अन्नलिंग-गिहिलिंग-पत्तेयबुद्ध बुद्धबोहिय जाव णं कम्म-क्खय-सिद्धा य भेदेहि णं अनेगहा पन्नविज्जंति ।
अज्झयणं-३, उद्देसो-

तहा-अट्टारस-सीलंग-सहस्साहिट्ठिय-तनू छत्तीसइविहमायारं जह-ट्ठियम-गिलाए-महण्णिस अनुसमयं आयरंति पवत्तयंति त्ति आयरिया, परमप्पणय हियमायरंति त्ति आयरिया, भव्व सत्त-सीस-गणाणं वा हियमायरंति आयरिया, पाण-परिच्चाए वि उ पुढवादीणं समारंभं नायरंति नायरंभंति नाणुजाणंति वा आयरिया, सुमहावरद्धे वि न कस्सई मनसा वि पावमायरंति त्ति वा आयरिया, एवमेते नाम-ठवणादीहिं अनेगहा पन्नविज्जंति ।

तहा-सुसंवुडासव-दारे-मनो-वइ-काय-जोगत्त-उवउत्ते विहिणा सर-वंजण-मत्ता-बिंदु-पयक्खर-विसुद्ध-दुवालसंग-सुय-नाणज्झयण-ज्झावणेणं परमप्पणो य मोक्खोवायं ज्झायंति त्ति उवज्झाए ।

थिर-परिचियमनंत-गम-पज्जवत्थेहिं वा दुवालसंगं सुयनाणं चिंतंति अनुसरंति एगग्ग-मानसा ज्झायंति त्ति वा उवज्झाए एवमेते हि अनेगहा पन्नविज्जंति ।

तहा-अच्चंत-कट्ट उग्गुग्गयर-घोरतव-चरणाइ-अनेगवय-नियमो-ववास-नानाभिग्गह-विसेस-संजम-परिवालण सम्मं-परिसहोवसग्गाहियासणेणं सव्व-दुक्ख-विमोक्खं मोक्खं साहयंति त्ति साहवो ।

अयमेव इमाए चूलाए भाविज्जइ एतेसिं नमोक्कारो ।

एसो पंच नमोक्कारो किं करेज्जा ? सव्वं पावं नाणावरणीयादि-कम्म-विसेसं तं पयरिसेणं दिसोदिसं नासयइ सव्व-पाव-प्पणासणो एस चूलाए पढमो उद्देसओ ।

एसो पंच नमोक्कारो सव्व-पाव-प्पणासणो किं विहेउ ? मंगो निव्वाण-सुह-साहणेक्क-खमो सम्म-दंसणाइ आराहओ अहिंसा-लक्खणो धम्मो तं मे लाएज्जा त्ति मंगल । ममं भवाओ संसारओ गलेज्जा तारेज्जा वा मंगलं । बद्ध-पुट्टनिकाइय-ट्टप्पगार-कम्म-रासिं मे गालेज्जा विलेज्जे त्ति वा मंगलं । एएसिं मंगलाणं अन्नेसिं च मंगलाणं सव्वेसिं किं पढमं आदीए अरहंताइणं थुई चेव हवइ मंगलं ति ।

एस समासत्थो वित्थरत्थं तु इमं तं जहा-ते णं काले णं त णं समए णं गोयमा ! जे केइ पुट्ठिं वावण्णिय-सद्धत्थे अरहंते भगवंते धम्म-तित्थकरे भवेज्जा, से णं परमपुज्जाणं पि पुज्जयरे भवेज्जा जओ णं ते सव्वे वि एयलक्खण-समण्णिए भवेज्जा तं जहा-अचिंत-अप्पमेय-निरुवमाणणण सरिस-पवर-वरुत्तम-गुणोहाहिट्ठियत्तेणं तिण्हं पि लोगाणं संजणिय-गरुय-महंत-मानसानंदे ।

तहा य जम्मंतर-संचिय-गरुय-पुन्न-पब्भार-संविट्ठ-तित्थयर-नाम-कम्मोदएणं दीहर-गिम्हायव-संताव-किलंत-सिहि-उलाणं वा पढम-पाउस-धारा-भर-वरिसंत-घन-संघायमिव परम-हिओवएस-पयाणाइणा घन-राग-दोस-मोह-मिच्छत्ताविरति-पमाय-दुट्ट-किलिडुज्झवसायाइ-समज्जियासुह-घोर-पाव-कम्मायव-संतावस्स निण्णासगे भव्व-सत्ताणं, अनेग जम्मंतर-संविट्ठ-गरुय-पुन्न-पब्भाराइसय-बलेणं समज्जियाउल बल-वीरिए सरियं सत्तं-परक्कमाहिट्ठियतणू, सुकंत-दित्त-चारु-पायंगुट्टुग्ग-रूवाइसएणं सयल-

गह-नक्खत्त-चंदपंतीणं सूरिए इव पयड पयाव दस-दिसि-पयास विप्फुरंत-किरण-पब्भारेण नियतेयसा विच्छायगे सयल सविज्जाहर-नरामराणं सदेव-दानविंदाणं सुरलोगाणं, सोहग्ग-कंति-दित्ति-लावण्ण-रूव-समुदय-सिरिए, साहाविय-कम्मक्खय-जनिय-दिव्वकय-पवर-निरुवमाणण्ण सरिस-विसेस साइसयाइ-सयसयल कला-कलाव विच्छडुपरिदंसणेणं, भवणवइ-वाणमंतर-जोइस-वेमाणियाहमिंद सइंदच्छरा-सकिन्नर-नर-विज्जाहरस्स ससुरासुरस्सा वि णं जगस्स, अहो अहो अहो! अज्ज अदिट्ठपुव्वं दिट्ठमम्हेहिं ।

इणमो सविसेसाउल-महंताचिंत-परमच्छेरय-संदोहं सम-गाल मेवेगइसमुइयं दिट्ठं ति अज्झयणं-३, उद्देशो-

तक्खणुप्पन्न-घन-निरंतर-बहलमप्पमेयाचिंत अंतोसहरिस-पीयाणुरायवस-पवियंभंताणु समय-अहिणवा-हिणव-परिणाम-विसेसत्तेणं मह मह महं ! ति जंपिर-परोप्पराणं विसायमुवगयं ह ह ह ! धी धिरत्थु ! अधन्ना अपुन्ना वयं इइ णिंदिर-अत्ताणगम, नंतर-संखुहिय-हियय-मुच्छिर-सुलद्ध-चेयण सुण्ण-वुण्ण-सिढिलिय-सगत्त-आउंचण-पसारणा उम्मेस-निमेसाइ-सारिरिय-वावार-मुक्क-केवलं अनोवलक्ख-खलंत-मंद-मंद-दीह-हूंकार विमिस्स-मुक्क दीहुणह-बहल-नीसासेगत्तेणं अइअभिनिविट्ठ बुद्धीसुनिच्छिय-मनस्स णं जगस्स, किं पुण तं तवमनुचेद्वेमो जेणेरिसं पवररिद्धिं लभेज्ज ? त्ति तग्गय-मनस्स णं, दंसणा चेव निय-निय-वच्छत्थल-निहिप्पंत-करयलुप्पाइय-महंत-मानस-चमक्कारे ।

ता गोयमा! णं एवमाइ-अनंत-गुणगणाहिट्ठिय-सरीराणं तेसिं सुगहिय-नामधेज्जाणं अरहंताणं भगवंताणं धम्मतित्थगराणं संतिए गुण-गणोहरयण-संदोहोह-संधाए अहण्णिसानुसमयं जीहा-सहस्सेणं पि वागरंतो सुरवई वि अन्नयरे वा केई चउनाणी महाइसईय-छउमत्थेणं सयंभुरमणोवहिस्स व वास-कोडीहिं पि नो पारं गच्छेज्जा, जओ णं अपरिमिय-गुण-रयणे गोयमा ! अरहंते भगवंते धम्मतित्थगरे भवंति ता किमित्थं भण्णउ ? जत्थ य णं तिलोग-नाहाणं जग-गुरुणं-भुवनेक्क-बंधूणं तेलोक्क-लग्गणखंभ-पवर-वर-धम्मतित्थगराणं केइ सुरिंदाइ-पायंगुडुग्ग-एग-देसाओ अनेगगुण-गणालं-करियाओ भत्ति-भरणिब्भरिक्क-रसियाणं ।

सव्वेसिं पि वा सुरीसाणं अनेग-भवंतर-संचिय अनिडु -दुडु-दुक्कम्म-रासी-जनिय-जोगच्च-दोमनसादि-दुक्ख-दारिद्व-किलेस-जम्म-जरा-मरण-रोग-सोग संता-वुव्वेग-वाहिवेयणाईण खयट्ठाए एग-गुणस्सानंत-भागमेगं भणमाणाणं जमग-समगमेव दिनयरकरे इ वानेग-गुण-गणोहे जीहग्गे वि फुरंति, ताइं च न सक्कासिंदा वि देवगणा समकालं भाणिऊणं किं पुण अकेवली मंस-चक्खुणो ? ता गोयमा ! णं एस एत्थ परमत्थे वियाणेयव्वं ।

जहा-णं जइ तित्थगराणं संतिए गुण-गणोहे तित्थयरे चेव वायरंति न उण अन्ने जओ णं सातिसया तेसिं भारती, अहवा गोयमा ! किमेत्थ पभूय-वागरणेणं ? सारत्थं भण्णए ।

- [४९५] नामं पि सयल-कम्मडु-मल-कलंकेहिं विप्पमुक्काणं ।
तियसिंद च्चिय-चलणाण जिन-वरिंदाण जो सरइ ॥
- [४९६] तिविह-करणोवउत्तो खणे खणे सील-संजमुज्जुत्तो ।
अविराहिय वय-नियमो सो वि हु अइरेण सिज्जेज्जा ॥
- [४९७] जो उण दुह-उव्विग्गो सुह-तण्हालू अलि व्व कमल-वने ।
थय-थुइ-मंगल-जय-सद्ध वावडो रुणु रुणे किंचि ॥
- [४९८] भत्ति-भर-निब्भरो जिन-वरिंद पायारविंद-जुग-पुरओ ।

भूमी-निद्विविय-सिरो कयंजली-वावडो चरित्तड्डो ॥
 [४९९] एककं पि गुणं हियए धरेज्ज संकाइ-सुद्ध-सम्मत्तो ।
 अक्खंडिय-वय-नियमो तित्थयरत्ताए सो सिज्जे ॥
 [५००] जेसिं च णं सुगहिय-नामग्गहणाणं तित्थयराणं गोयमा ! एस जग-पायडे
 महच्छेरयभूए भुयणस्स वि पयडपायडे महंताइसए पवियंभे तं जहा--
 [५०१] खीणट्ट-कम्म-पाया मुक्का बहु-दुक्ख-गब्भवसहीणं ।
 अज्झयणं-३, उद्देसो-

पुनरवि अ पत्तकेवल-मनपज्जव-नाण-चरितमणू ॥
 [५०२] मह जोइणो वि बहु दुक्ख मयर-भव-सागरस्स उच्चिग्गा ।
 दडूणरहाइसए भवहुत्तमणा खणं जंति ॥
 [५०३] अहवा चिद्वउ ताव सेसवागरणं गोयमा! एयं चेव धम्मतित्थंकरे त्ति नाम-सन्निहियं
 पवरक्खरुव्वहणं तेसिमेव सुगहियनाम-धेज्जाणं भुवनेक्क बंधूणं अरहंताणं भगवंताणं जिनवरिं- दाणं
 धम्मतित्थंकराणं छज्जे, न अन्नेसिं जओ य नेगजम्मंतरऽब्भत्थ-महोवसम-संवेग-निव्वेयानुकंपा
 अत्थित्ताभिवत्तीसलणक्खण-पवर-सम्म-दंसणुल्लसंत-विरियानिगूहिय-उग्ग-कट्ट-घोरदुक्कर-तव निरंतर-
 ज्जिय उत्तुंग -पुन्न-खंध-समुदय-महपब्भार-संविदत्त-उत्तम-पवर-पवित्त-विस्स-कसिण-बंधु-नाह सामिसाल
 अनंत-वत्त-भव-भाव छिन्न-भिन्न-पावबंधणेक्क-अबिइज्ज-तित्थयर-नामकम्म-गोयणिसिय-सुकंत-दित्त-
 चारु-रुव दस-दिसि-पयास निरुवमट्ट-लक्खण-सहस्समंडियजगुत्तमुत्तम-सिरि निवास-वासवाइ-देव-मनुय-
 दिद्व-मेत्तत-क्खणंतं करण-लाइय चमक्क-नयन-मानसाउल-महंत-विम्हय-पमोय-कारय असेस-कसिण-
 पावकम्म मल-कलंक-विप्प-मुक्कसमचउरंस-पवर-वर-पढम-वज्जरिसभ-नाराय-संघयणाहिद्विय परम-
 पवित्तुत्तम मुत्ति धरे ते चेव भगवंते महायसे महासत्ते महानुभागे परमेट्टी-सद्धम्म-तित्थकरे भवंति ।
 [५०४] सयल-नरामर तियसिंद सुंदरी रूव कंति लावण्णं ।
 सव्वं पि होज्ज जइ एगरासिं-सपिंडियं कह वि ॥
 [५०५] ता तं जिन-चलणंगुदुग्ग-कोडि-देसेग-लक्ख-भागस्स ।
 सन्निज्जे वि न सोहइ जह छार-उडं कंचनगिरिस्स त्ति ॥
 [५०६] अहवा नाऊण गुणंतराइं अन्नेसिऊण सव्वत्थ ।
 तित्थयर गुणाणमनंत भागमलब्भंतमन्नत्थ ॥
 [५०७] जं तिहुयणं पि सयलं एगीहोऊणमुब्बमेगदिसं ।
 भागे गुणाहिओ ऽम्हं तित्थयरे परमपुज्जे त्ति ॥
 [५०८] ते च्चिय अच्चे वंदे पूए आराहे गइ-मइ-सरण्णे य ।
 जम्हा तम्हा ते चेव भावओ नमह धम्मतित्थयरे ॥
 [५०९] लोगे वि गाम-पुर-नगर विसय-जणवय समग्ग-भरहस्स ।
 जो जेत्तियस्स सामी तस्साणत्तिं ते करिंति ॥
 [५१०] नवरं गामाहिवई सुट्टु सुतुट्टेक्क गाम-मज्झाओ ।
 किं देज्ज जस्स नियगं छेलाए तेत्तियं पुंछं ॥
 [५११] चक्कहरो लीलाए सुट्टु सुथेवं पि देइ जमगण्णं ।

- तेण य कमागय-गुरु दरिद्र-नामं स नासेइ ॥
- [५१२] सामंता चक्कहरं चक्कहरो सुरवइत्तणं कंखे, इंदो तित्थयरत्तं ।
तित्थयरे उण जगस्सा वि जहिच्छिय-सुह-फलए ॥
- [५१३] तम्हा जं इंदेहिं वि कंखिज्जइ एग-बद्ध-लक्खेहिं ।
अइसाणुराय-हियएहिं उत्तमं तं न संदेहो ॥
- [५१४] ता सयल देव-दानव गह-रिक्ख सुरिंद-चंदमादीणं ।

अज्झयणं-२, उद्देसो-३

- तित्थयरे पुज्जयरे ते च्चिय पावं पणासेंति ॥
- [५१५] तेसि य तिलोग-महियाण धम्मतित्थंकराणं जग-गुरुणं ।
भावच्चण दव्वच्चण भेदेण दुह ऽच्चणं भणियं ॥
- [५१६] भावच्चण-चारित्ताणुद्वाण कहुग्ग-घोर-तव-चरणं ।
दव्वच्चणविरयाविरय सील-पूया सक्कार दानादी ॥
- [५१७] ता गोयमा ! णं एसे ऽत्थ परमत्थे ! तं जहा-
भावच्चणमुग्ग-विहारया य दव्वच्चणं तु जिन-पूया ।
पढमा जतीण दोण्णि वि गिहीण पढम च्चिय पसत्था ॥

[५१८] एत्थं च गोयमा केई अमुणिय-समय-सब्भावे ओसन्न-विहारी नीयवासिणो अदिद्व-परलोग-पच्चवाए, सयंमती, इइदि-रस-साय-गारवाइमुच्छिण, राग-दोस-मोहाहंकार-ममी-कारइसु पडिबद्धे, कसिण संजम-सद्धाम्म-परम्ममुहे, निद्वय-नित्तिंस-निग्घिण-अकुलण-निक्किवे, पावाय-रणेक्क-अभिनिविद्व-बुद्धी एगंतेणं अइचंड-रोद्ध-कूराभिग्गहिय-मिच्छ-द्विद्विणो, कय-सव्व-सावज्ज-जोग-पच्चक्खाणे विप्प-मुक्कासेस-संगारंभ परिग्गहे तिविहं तिविहेणं पडिवण्ण-सामाइए य दव्वत्ताए न भावत्ताए नाम-मेत्तमुंडे अनगारे महव्वयधारी समणे वि भवित्ता णं एवं मण्णामाणे सव्वहा उम्मग्गं पवत्तंति, जहा-किल अम्हे अरहंताणं भगवंताणं गंध-मल्ल-पदीव-सम्मज्जणोवलेवण-विचित्त-वत्थ-बलि-धूयाइ-तेहिं पूया-सक्कारेहिं अनुदियहमब्भच्चणं पकुव्वाणा तित्थुच्छप्पणं करेमो, तं च वायाए वि नो णं तह त्ति समणु-जाणेज्जा ।

से भयवं ! केणं अट्टेणं एवं वुच्चइ, जहा णं तं च नो णं तह त्ति समणुजाणेज्जा ? गोयमा!
तयत्थानुसारेणं असंजम-बाहुल्लं असंजम-बाहुल्लेणं च थूलं कम्मासवं थूल-कम्मासवाओ
य अज्झवसायं पडुच्चा थूलेयर-सुहासुह-कम्मपयडी-बंधो सव्व-सावज्ज-विरयाणं च वय-भंगो, वय-
भंगेणं च आणा इक्कमे आणाइक्कमेणं तु उम्मग्ग-गामित्तं उम्मग्ग-गामित्तेणं च सम्मग्ग-विप्पलो-
यणं उम्मग्ग-पवत्तणं [च], सम्मग्ग-विप्पलोयणेणं उम्मग्ग-पवत्तणेणं च जतीणं महती आसायणा तओ
य अनंत-संसाराहिंडणं, एएणं अट्टेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ-जहा णं गोयमा ! नो णं तं तह त्ति
समणुजाणेज्जा ।

- [५१९] दव्वत्थवाओ भावत्थयं तु दव्वत्थओ बहु गुणो भवउ तम्हा ।
अबुहजने बुद्धीयं छक्कायहियं तु गोयमा ऽणुद्वे ॥
- [५२०] अकसिण-पवत्तगाणं विरया ऽविरयाण एस खलु जुत्तो ।
जे कसिण-संजमविऊ पुप्फादीयं न कप्पए तेसिं [तु] ॥
- [५२१] किं मन्ने गोयमा ! एस बत्तीसिंदाणु चिद्विए ।

- जम्हा तम्हा उ उभयं पि अनुद्वेज्जेत्थ नु बुज्झसी ॥
 [५२२] विनिओगमेवं तं तेसिं भावत्थवासंभवो तहा ।
 भावच्चणा य उत्तमयं दसण्णभद्वेण पायडे ।
 जहेव दसण्णभद्वेण उयाहरणं तहेव य ॥
 [५२३] चक्कहर-भानु-ससि-दत्त दमगादीहिं विनिद्विसे ।
 पुव्वं ते गोयमा ! ताव जं सुरिंदेहिं भत्तिओ ॥

अज्झयणं-३, उद्वेसो-

- [५२४] सव्विड्ढिए अनन्न-समे पूया-सक्कारे कए ।
 ता किं तं सव्व-सावज्जं तिविहं विरएहि ऽनुद्वियं ॥
 [५२५] उयाहु सव्व-थामेसुं सव्वहा अविरएसु उ ? ।
 ननु भयवं सुरवरिंदेहिं सव्व-थामेसु सव्वहा ॥
 [५२६] अविरएहिं सुभत्तीए पूया-सक्कारे कए ।
 ता जइ एवं तओ बुज्झ गोयमा ! नीसंसयं ।
 देस-विरय-अविरयाणं तु विनिओगमुभयत्थ वि ॥
 [५२७] सयमेव सव्व-तित्थंकरेहिं जं गोयमा ! समायरियं ।
 कसिणद्ध-कम्मकखय-कारयं तु भावत्थयमणुद्वे ॥
 [५२८] भव-भीओ गमागम-जंतु फरिसणाइ-पमद्वणं जत्थ ।
 स-पर-हिओवरयाणं न मनं पि पवत्तए तत्थ ॥
 [५२९] ता स-परहिओवरएहिं सव्वहा ऽनेसियव्वं विसेसं ।
 जं परमसारभूयं विसेसवंतं च अनुद्वेयं ॥
 [५३०] ता परमसार-भूयं विसेसवंतं च साहुवग्गस्स ।
 एगंत-हियं पत्थं सुहावहं पयडपरमत्थं [तं जहा] ॥
 [५३१] मेरुत्तुंगे मणि-मंडिएक्क कंचणगए परमरम्मे ।
 नयन-मनाऽऽनंदयरे पभूय-विण्णाण-साइसए ॥
 [५३२] सुसिलिद्ध-विसिद्ध-सुलद्ध छंद-सुविभत्त-मुनि-वेसे ।
 बहुसिंघयण्ण-घंटा धयाउले पवरतोरण-सनाहे ॥
 [५३३] सुविसाल-सुवित्थिन्ने पए पए पेच्छियव्व-सिरीए ।
 मघ-मघ-मघंत-डज्झंत अगलु-कप्पूर-चंदणामोए ॥
 [५३४] बहुविह-विचित्त-बहुपुप्फमाइ पूयारुहे सुपूए य ।
 निच्च-पणच्चिर नाडय-सयाउले महुर-मुख-सद्दाले ॥
 [५३५] कुद्वंत-रास-जन-सय-समाउले जिन-कहा-खित्त-चित्ते ।
 पकहंत-कहग-नच्चंत छत्त-गंधव्व-तूर-निग्घोसे ॥
 [५३६] एमादि-गुणोवेए पए पए सव्वेमेइणी वद्वे ।
 निय-भुय-विद्वत्त-पुन्नज्जिएण नायागएण अत्थेण ॥
 [५३७] कंचन-मणिसोमाणे थंभ-सहस्सुसिए सुवण्णतले ।

- जो कारवेज्ज जिनहरे तओ वि तव-संजमो अनंत-गुणो ॥
 [५३८] तव-संजमेण बहु-भव-समज्जियं पाव-कम्म-मल-लेवं ।
 निद्धोविऊण अइरा अनंत-सोक्ख वए मोक्खं ॥
 [५३९] काउं पि जिनाययणेहिं मंडियं सव्वमेइणी-वट्ठं ।
 दानाइ-चउक्केणं सुट्ठु वि गच्छेज्ज अच्चुयगं ॥
 [५४०] न परओ गोयमा ! गिहि त्ति ।

अज्झयणं-३, उद्देशो-

- जइ ता लवसत्तम-सुर-विमाणवासी वि परिवडंति सुरा ।
 सेसं चिंतिज्जंतं संसारे सासयं कयरं ? ॥
 [५४१] कह तं भण्णउ सोक्खं सुचिरेण वि जत्थ दुक्खमल्लियइ ।
 जं च मरणावसाणं सुथेव-कालीय-तुच्छं तु ? ॥
 [५४२] सव्वेण वि कालेणं जं सयल-नरामराण भवइ सुहं ।
 तं न घडइ सयमनुभूयामोक्ख-सोक्खस्स ऽनंत-भागे वि ॥
 [५४३] संसारिय-सोक्खाणं सुमहंताणं पि गोयमा ! नेगे ।
 मज्झे दुक्ख-सहस्से घोर-पयंडेणुभुंजंति ॥
 [५४४] ताइं च साय-वेओयएण न याणंति मंदबुद्धीए ।
 मणि-कनगसेलमयलोढ गंगले जह व वणि-धूया ॥
 [५४५] मोक्ख-सुहस्स उ धम्मं सदेव-मनुयासुरे जगे एत्थं ।
 नो भाणिऊण सक्का नगर-गुणे जहेव य पुलिंदो ॥
 [५४६] कह तं भण्णउ पुन्नं सुचिरेण वि जस्स दीसए अंतं ।
 जं च विरसावसाणं जं संसारानुबंधिं च ॥
 [५४७] तं सुर-विमान-विहवं चिंतिय-चवणं च देवलोगाओ ।
 अइवलियं चिय हिययं जं न वि सय-सिक्करं जाइ ॥
 [५४८] नरएसु जाइं अइदूसहाइं दुक्खाइं परम-तिकखाइं ।
 को वण्णेही ताइं जीवंतो वास-कोडिं पि ? ॥
 [५४९] ता गोयम ! दसविह धम्म-घोर-तव-संजमाणुठाणस्स ।
 भावत्थवमिति नामं तेणेव लभेज्ज अक्खयं सोक्खं-ति ॥
 [५५०] नारग-भव-तिरिय-भवे अमर-भवे सुरइत्तणे वा वि ।
 नो तं लब्भइ गोयम ! जत्थ व तत्थ व मनुय-जम्मे ॥
 [५५१] सुमहऽच्चंत-पहीणेसु संजमावरण-नामधेज्जेसु ।
 ताहे गोयम ! पाणी भावत्थय जोगयमुवेइ ॥
 [५५२] जम्मंतर-संचिय गरुय-पुन्न पब्भार-संविढत्तेण ।
 मानुस-जम्मेण विना नो लब्भइ उत्तमं धम्मं ॥
 [५५३] जस्सानुभावओ सुचरियस्स निस्सल्ल दंभरहियस्स ।
 लब्भइ अउलमनंतं अक्खय-सोक्खं तिलोयगगे ॥

- [५५४] तं बहु-भव-संचिय तुंग-पाव-कम्मद्व-रासि दहणद्वं ।
लद्धं मानुस-जम्मं विवेगमादीहिं संजुत्तं ॥
- [५५५] जो न कुणइ अत्तहियं सुयानुसारेण आसवनिरोहं ।
छ-तिग्ग-सीलंग-सहस्स धारणेणं तु अपमत्ते ॥
- [५५६] सो दीहर-अव्वोच्छिन्न घोर-दुक्खग्गि-दाव-पज्जलिओ ।
उव्वेविय संतत्तो अनंतहुत्तो सुबहुकालं ॥

अज्झयणं-३, उद्देशो-

- [५५७] दुग्गंधाऽमेज्झ-चिलीण खार-पित्तोज्झ सिंभ-पडहच्छे ।
वस-जलुस-पूय-दुद्धिन चिलिच्चिल्ले रुहिर-चिक्खल्ले ॥
- [५५८] कढ-कढ-कढंत चल-चल-चलस्स टल-टल-टलस्स रज्झंतो ।
संपिंडियंगमंगो जोणी-जोणी वसे गब्भे ।
एक्केक्क-गब्भ-वासेसु जंतियंगो पुनरवि भमेज्जा ॥
- [५५९] ता संतावुव्वेग जम्म-जरा-मरण गब्भ-वासाई ।
संसारिय-दुक्खाणं विचित्त-रूवाण भीएणं ॥
- [५६०] भावत्थवानुभावं असेस-भव-भय-खयंकरं नाउं ।
तत्थेव महंता भुज्जमेणं दढमच्चंतं पयइयव्वं ॥
- [५६१] इय विज्जाहर-किन्नर-नरेण ससुरा ऽसुरेण वि जगेण ।
संथुव्वंते दुविहत्थवेहिं ते तिहुयणेक्कीसे ॥
- [५६२] गोयमा! धम्मतित्थंकरे जिने अरहंते त्ति ।
अह तारिसे वि इड्ढी-पवित्थरे सयल-तिहुयणाउलिए ।
साहीणे जग-बंधू मनसा वि न जे खणं लुद्धे ॥
- [५६३] तेसिं परमीसरियं रूव-सिरी-वण्ण-बल-पमाणं च ।
सामत्थं जस-कित्ती सुर-लोग-चुए जहेह अवयरिए ॥
- [५६४] जह काऊण ऽन्न-भवे उग्गतवं देवलोगमनुपत्ते ।
तित्थयर-नाम-कम्मं जह बद्धं एगाइ-वीसइ-थामेसु ॥
- [५६५] जह सम्मत्तं पत्तं सामण्णाराहणा य अन्न-भवे ।
जह य तिसला उ सिद्धत्थ-धरिणी चोद्धस-महा-सुमिण-लंभं ॥
- [५६६] जह सुरहि-गंध-पक्खेवगब्भ वसहीए असुहमवहरणं ।
जह सुरनाहो अंगुडुपव्वं नमियं महंत-भत्तीए ॥
- [५६७] अमयाहारं भत्तीए देइ संथुणइ जाव य पसूओ ।
जह जाय-कम्म-विनिओग कारियाओ दिसा कुमारीओ ॥
- [५६८] सव्वं निय कत्तव्वं निव्वत्तंती जहेव भत्तीए ।
बत्तीस-सुर-वरिंदा गरुय-पमोएण सव्व-रिद्धीए ॥
- [५६९] रोमंच-कंचु पुलइय भत्तिब्भर मोइय-सगत्ते ।
मन्नंते सकयत्थं जम्मं अम्हाण मेरुगिरि-सिहरे ॥

- [५७०] होही खणं अप्फालिय सूसर-गंभीर-दुंदुहि-निग्घोसा ।
जय-सद्द-मुहल-मंगल-कयंजली जह य खीर-सलिलेणं ॥
- [५७१] बहु-सुरहि-गंधवासिय कंचन-मणि तुंग-कलसेहिं ।
जम्माहिसेय-महिमं करैति जह जिनवरो गिरिं चाले ॥
- [५७२] जह इंदं वायरणं भयवं वायरइ अद्द-वरिसो वि ।
जह गमइ कुमारत्तं परिणे बोहिंति जह व लोगंतिया देवा ॥

अज्झयणं-३, उद्देशो-

- [५७३] जह-वय-निक्खमण-महं करैति सव्वे सुरीसरा मुइया ।
जह अहियासे घोरे परीसहे दिव्व-माणुस-तिरिच्छे ॥
- [५७४] जह घन-घाइचउक्कं कम्मं दहइ घोरतव-ज्झाण-जोग्ग-अग्गीए ।
लोगाऽलोग-पयासं उप्पाए जहव केवलन्नाणं ।
- [५७५] केवल-महिमं पुनरवि काऊणं जह सुरीसराइया ।
पुच्छंति संसए धम्म नाय-तव-चरणमाईए ।
- [५७६] जह व कहेइ जिणिंदो सुर-कय-सीहासनोवविट्ठो य ।
तं चउविह-देव-निकाय-निम्मियं जह व वर-समवसरणं ।
तुरियं करैति देवा जं रिद्धीए जगं तुलइ ॥
- [५७७] जत्थ समोसरिओ सो भुवनेक्क-गुरु महायसो अरहा ।
अद्दमह-पाडिहेरय-सुचिंधियं वहइ तित्थयं नामं ॥
- [५७८] जह निद्धलह असेसं मिच्छत्तं चिक्कणं पि भव्वाणं ।
पडिबोहिरुण मग्गे ठवेइ जह गणहरा दिक्खं ॥
- [५७९] गिण्हंति महा-मइणो सुत्तं गंथंति जह व य जिणिंदो ।
भासे कसिणं अत्थं अनंत-गम-पज्जवेहिं तु ॥
- [५८०] जह सिज्झइ जग-नाहो महिमं नेव्वाण-नामियं जहं य ।
सव्वे वि सुर-वरिंदा असंभवे तह वि मुच्चंति ॥
- [५८१] सोगत्ता पगलंतंसु धोय-गंडयल-सरसइ-पवाहं ।
कलुणं विलाव-सद्दं हा सामि ! कया अनाह ! त्ति ॥
- [५८२] जह सुरहि-गंध-गब्भिन महंत-गोसीस-चंदन-दुमाणं ।
कट्ठेहिं विही-पुव्वं सक्कारं सुरवरा सव्वे ॥
- [५८३] काऊणं सोगत्ता सुण्णे दस-दिसि-वहे पलोयंता ।
जह खीर-सागरे जिन-वराण अट्ठी पक्खालिऊणं च ॥
- [५८४] सुर-लोए-नेऊणं आलिंपेऊण पवर-चंदन-रसेणं ।
मंदार-पारियायय सयवत्त-सहस्सपत्तेहिं ॥
- [५८५] जह अच्चेऊणं सुरा निय-भवनेसु जह व य थुणंति ।
[तं सव्वं महया वित्थरेण अरहंत-चरियाभिहाणे] ।
अंतगडदसानंत-मज्झाओ कसिणं विन्नेय ॥

- [५८६] एत्थं पुण जं पगयं तं मोत्तु जइ भणेह तावेयं ।
हवइ असंबद्धगुरुयं गंथस्स य वित्थरमनंतं ॥
- [५८७] एयं पि अपत्थावे सुमहंतं कारणं समुवइस्स ।
जं वागरियं तं जाण भव्व-सत्ताण अनुग्गहट्टाए ॥
- [५८८] अहवा जत्तो जत्तो भक्खिज्जइ मोयगो सुसंकरिओ ।
तत्तो तत्तो वि जने अइगरुयं माणसं पीइं ॥

अज्झयणं-३, उद्देसो-

- [५८९] एवमिह अपत्थावे वि भत्ति-भर-निब्भराण परिओसं ।
जणयइ गरुयं जिन-गुण गहणेएक्क-रसक्खित्त-चित्ताणं ॥

[५९०] एयं तु जं पंचमंगल-महासुयक्खंधस्स वक्खाणं तं महया पबंधेणं अनंत-गम-
पज्जवेहिं सुत्तस्स य पिहब्भूयाहिं निज्जुत्ती-भास-चुण्णीहिं जहेव अनंत-नाण-दंसण-धरेहिं तित्थ-यरेहिं
वक्खाणियं तहेव समासओ वक्खाणिज्जं तं आसि, अहण्णया काल-परिहाणि-दोसेणं ताओ निज्जुत्ती-भास
चुण्णीओ वोच्छिन्नाओ इओ य वच्चंतेणं काल समएणं महिइढी-पत्ते पयाणुसारी वइरसामी नाम
दुवालसंगसुयहरे समुप्पन्ने, तेणे यं पंच-मंगल-महा-सुयक्खंधस्स उदारो मूल-सुत्तस्स मज्झे लिहिओ,
मूलसुत्तं पुण सुत्तत्ताए गणहरेहिं अत्थत्ताए अरहंतेहिं भगवंतेहिं धम्म-तित्थंकरेहिं तिलोग-महिएहिं वीर-
जिणिंदेहिं पन्नवियं ति, एस वुइढसंपयाओ ।

[५९१] एत्थ य जत्थ पयं पण्णा ऽणुलग्गं सुत्तालावगं न संपज्जइ तत्थ तत्थ सुयहरेहिं
कुलिहिय-दोसो न दायव्वो त्ति, किंतु जो सो एयस्स अचिंत-चिंतामणी-कप्पभूयस्स महानिसीह-
सुयक्खंधस्स पुव्वायरिसो आसि, तहिं चेव खंडाखंडीए उद्देहियाइएहिं हेऊहिं बहवे पन्नगा परिसडिया, तहा
वि अच्चंत-सुमहत्थाइसयं ति इमं महानिसीह-सुयक्खंधं कसिण-पवयणस्स परम-सार-भूयं परं तत्तं महत्थं
ति कलिरुणं, पवयण-वच्छल्लत्तणेणं बहु-भव्व-सत्तोवयारियं च काउं तहा य आय-हियद्वयाए आयरिय-
हरिभद्रेणं जं तत्थाऽऽयरिसे दिट्ठं तं सव्वं स-मतीए साहिरुणं लिहियं ति, अन्नेहिं पि सिद्धसेन दिवाकर-
वुइढवाइ-जक्खसेन-देवगुत्त-जसवद्धण-खमासमण-सीस-रविगुत्त-नेमिचंद-जिनदासगणि-खमग सच्चरिसि-
पमुहेहिं जुगप्पहाण-सुयहरेहिं बहुमन्नियमिणं ति ।

[५९२] से भयवं ! एवं जहुत्तविनओहवहाणेणं पंचमंगल-महासुयक्खंधमहिज्जित्ताणं
पुव्वानुपुव्वीए पच्छानुपुव्वीए अनानुपुव्वीए सर-वंजण-मत्ता-बिंदु-पयक्खर-विसुद्धं थिर-परिचियं काऊणं
महया पबंधेणं सुत्तत्थं च विन्नाय तओ य णं किमहिज्जेज्जा ? गोयमा ! इरियावहियं,

से भयवं ! केणं अट्टेणं एवं वुच्चइ जहा णं पंचमंगल-महासुयक्खंधमहिज्जित्ता णं पुणो
इरियावहियं अहीए ? जे एस आया से णं जया गमना ऽगमनाइ परिणए अनेग-जीव-पाण-भूय-सत्ताणं
अनोवउत्त-पमत्ते-संघट्टण अवद्दावण-किलामणं-काउणं अनालोइय-अपडिक्कंते चेव असेसकम्मक्खयद्वयाए
किंचि चिइ-वंदन सज्झाय-ज्झाणाइएसु अभिरमेज्जा तया से एग-चित्ता समाही भवेज्जा न वा ।

जओ णं गमनागमनाइ-अनेग-अन्न-वावार-परिणामासत्त-चित्तत्ताए केई पाणी तमेव
भावंतरमच्छड्डिय-अट्ट-दुहट्टज्झवसिए कं चि कालं खणं विरत्तेज्जा ताहे तं तस्स फलेणं विसंवएज्जा,
जया उ न कहिं चि अन्नाण-मोह-पमाय-दोसेण सहसा एगिंदियादीणं संघट्टणं परियावणं वा कयं भवेज्जा,
तया य पच्छा हा हा हा ! दुइ कयमम्महेहिं ! ति घनराग-दोस-मोह-मिच्छत्त-अन्नाणंधेहिं अदिट्ट-

परलोगपचवाएहिं कूर-कम्मनिग्घिणेहिं ! ति परम-संवेगमावन्ने, सुपरीफुडं आलोएत्ताणं निंदित्ताणं गरहेत्ताणं पायच्छित्तमनुचरेत्ताणं नीसल्ले अनाउलचित्ते असुर-कम्मक्खयद्वा किंचि आय-हियं चिइ-वंदणाइ अनुद्वेज्जा, तथा तयद्वे चेव उवउत्ते से भवेज्जा ! जया णं से तयत्थे उवउत्ते भवेज्जा तथा तस्स णं परमेगग-चित्तसमाही हवेज्जा, तथा चेव सव्व-जग-जीव-पाण-भूय-सत्ताण जहिद्व-फलसंपत्ती-भवेज्जा ।

ता गोयमा ! णं अप्पडिक्कंताए इरियावहियाए न कप्पइ चेव काउं किंचि चिइवंदन-सज्झायाइयं फलासायमभिकंखुगाणं, एतेणं अद्वेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ जहा णं गोयमा ! ससुत्तत्थोभयं अज्झयणं-३, उद्वेसो-

पंचमंगल-थिर-परिचियं-काऊणं तओ इरियावहियं अज्झीए ।

[५९३] से भयवं ! कयराए विहीए तं इरियावहियमहिए ? गोयमा! जहा णं पंचमंगल-महासुयक्खंधं ।

[५९४] से भयवं इरियावहियमहिज्जित्ता णं तओ किमहिज्जे ? गोयमा! सक्कत्थयाइयं चेइय-वंदन-विहाणं नवरं सक्कत्थयं एगद्वम-बत्तीसाए आयंबिलेहिं अरहंतत्थयं एगेणं चउत्थेणं तिहिं आयंबिलेहिं चउवीसत्थयं एगेणं छद्वेणं एगेण य चउत्थेणं पणुवीसाए आयंबिलेहिं नाणत्थयं एगेणं चउत्थेणं पंचहिं आयंबिलेहिं, एवं सर-वंजण-मत्ता बिंदु-पयच्छेय-पयक्खर-विसुद्धं अविच्चामेलियं अहीएत्ता णं गोयमा!

तओ कसिणं सुत्तत्थं विन्नेयं जत्थ य संदेहं भवेज्जा तं पुणो पुणो वीमंसिय नीसंकमवधारेऊणं नीसंदेहं करेज्जा ।

[५९५] एवं स सुत्तत्थोभयत्तगं चिइ-वंदना-विहाणं अहिज्जेत्ता णं तओ सुपसत्थे सोहने तिहि-करण-मुहुत्त-नक्खत्त-जोग-लग्ग-ससी-बले, जहा सत्तीए जग-गुरूणं संपाइय-पूओवयारेणं पडिलाहिय-साहुवग्गेण य भत्तिब्भरनिब्भरेणं रोमंच-कंचुपुलइज्जमाणतनू सहरिसविसट्ट वयणारविंदेणं सद्धा-संवेग-विवेग-परम-वेरग्ग-मूलं विनिहय-घनराग-दोस-मोह-मिच्छत्त-मलकलंकेण, सुविसुद्ध-सुनिम्मल-विमल-सुभ-सुभयरऽनुसमय-समुल्लसंत-सुपसत्थज्झवसाय-गएणं भुवन-गुरु-जिनयंद पडिमा विनिवेसिय-नयन-मानसेणं अनन्न-मानसेगग्ग-चित्तयाए य, धन्नो हं पुन्नो हं ति जिन-वंदणाइ-सहलीकयजम्मो त्ति इइ मन्नमानेणं विरइय-कर-कमलंजलिणा हरिय-तण-बीय जंतु-विरहिय-भूमीए निहिओभय-जाणुणा सुपरिफुड-सुविइय-नीसंक जहत्थ-सुत्तत्थोभयं पए पए भावेमाणेणं, दढचरित्त-समयन्नु-अप्पमायाइ-अनेग-गुण-संपओववेएणं गुरुणा सद्धिं साहु-साहुणि-साहम्मिय असेस-बंधु-परिवग्ग-परियरिएणं चेव पढमं चेइए वंदियव्वे तयनंतरं च गुणइडे य साहुणो य ।

तहा साहम्मिय-जनस्स णं जहा-सत्तीए पणावाए जाए णं सुमहग्घ मउय-चोक्ख-वत्थ-पयाणाइणा वा महासम्मणो कायव्वो, एयावसरम्मि सुविइय-समय-सारेणं गुरुणा पबंधेणं अक्खेव-विक्खेवाइएहिं, पबंधेहिं संसार-निव्वेय-जननिं सद्धा संवेगुप्पायगं धम्म-देसणं कायव्वं ।

[५९६] तओ परम-सद्धा-संवेगपरं नाऊणं आजम्माभिग्गहं च दायव्वं । जहा णं, सहलीकयसुलद्ध-मनुय भव भो भो देवाणुप्पिया ! तए अज्जप्पभितीए जावज्जीवंति-कालियं अनुदिनं अनुलावलेगग्गचित्तेणं चेइए वंदेयव्वे, इणमेव भो मनुयत्ताओ असुइ-असासय-खणभंगुराओ सारं ति, तत्थ पुव्वणहे ताव उदग-पानं न कायव्वं जाव चेइए साहु य न वंदिए, तहा मज्झणहे ताव असन-किरियं न

कायव्वं जाव चेइए न वंदिए, तहा अवरणहे चव तहा कायव्वं जहा अवंदिएहिं चेइएहिं नो संझायालमइक्कमेज्जा ।

[५९७] एवं चाभिग्गहबंधं काऊणं जावज्जीवाए, ताहे य गोयमा ! इमाए चव विज्जाए अहिमंतियाओ सत्त-गंध-मुट्टीओ तस्सुत्तमंगे नित्थारग पारगो भवेज्जासि ! त्ति उच्चारेमाणेणं गुरुणा धेतव्वाओ ...[वद्धमाण विज्जा].....

अओम् णम्ओ भगवओ अरहओ सइज्ज उ म्ए भगवती महा विज् ज् आ । व् ई र् ए म ह् आ व् ई र् ए ज य व् ई र् ए स् ए ण् अ व् ई र् ए वद्ध म् आ ण व् ई र् ए । ज य् अं त् ए अ प र् आ ज् इ ए स् व् आ हा

अज्झयणं-३, उद्देसो-

[ओम् नमो भगवओ अरहओ सिज्जउ मे भगवती महाविज्जा वीरे महावीरे जयवीरे सेणवीरे वद्धमाणवीरे जयंते अपराजिए स्वाहा] ।

उपचारो चउत्थभत्तेणं साहिज्जइ । एयाए विज्जाए सव्वगओ नित्थारगपारगो होइ । उवद्वावणाए वा गणिस्स वा अणुन्नाए वा सत्त वारा परिजवेयव्वा नित्थारग-पारगो होइ । उत्तिमद्द-पडिवण्णे वा अभिमंतिज्जइ आराहगो भवति, विग्घविणायगा उवसमंति, सूरु संगामे पविसंतो अपराजिओ भवति, कप्प-समत्तीए मंगलवहणी खेमवहणी हवइ ।

[५९८] तहा साहु-साहुणि-समणोवासग-सइडिगा ऽसेसा सण्ण-साहम्मियजन-चउव्विहेणं पि समण-संघेणं नित्थारग-पारगो भवेज्जा धन्नो संपुन्न-सलक्खणो सि तुमं, ति उच्चारेमाणेणं गंध-मुट्टीओ धेतव्वाओ, तओ जग-गुरुणं जिणिंदाणं पूएग-देसाओ गंधइडाऽमिलाण-सियमल्लदामं गहाय स-हत्थेणोभय-खंधेसुमारोवयमाणेणं गुरुणा नीसंदेहमेवं भाणियव्वं जहा, भो भो ! जम्मंतर-संचिय-गुरुय-पुन्न-पब्भार सुलब्भ-सुविदत्त-सुसहल-मनुयजम्मं! देवाणुप्पिया! ठइयं च नरय-तिरिय-गइ-दारं तुज्जं ति । अबंधगो य अयस-अकित्ती-नीया-गोत्त-कम्म-विसेसाणं तुमं ति भवंतर-गयस्सा वि उ न दुलहो तुज्जं पंच नमोक्कारो, भावि-जम्मंतरेसु पंच-नमोक्कार-पभावाओ य जत्थ जत्थोववज्जेज्जा तत्थ तत्थुत्तमा जाई उत्तमं च कुल-रूरोगग-संपयं ति एयं ते निच्छयओ भवेज्जा ।

अन्नं च पंचनमोक्कार-पभावओ न भवइ दासत्तं न दारिद्ध-दूहग हीनजोणियत्तं न विगलिंदियत्तं ति, किं बहुएणं गोयमा ! जे केइ एयाए विहीए पंच-नमोक्कारादि-सुयनाण-महीएत्ताण तयत्थानुसारेणं पयओ सव्वावस्सगाइ निच्चानुट्टणिज्जेसु अट्टारस-सीलंगसहस्सेसु अभिरमेज्जा से णं सरागत्ताए जइ णं न निव्वुडे, तओ गेवेज्जऽनुत्तरादीसुं चिरमभिरमेऊणेहउत्तम-कुलप्पसूई उक्किट्टलट्टसव्वंगसुंदरत्तं सव्वं-कला-पत्तट्ट-जनामनानंदयारियत्तणं च पाविऊणं, सुरिंदे विव महरिद्धए एगंतेणं च दयानुकंपापरे निव्विण्ण-काम-भोगे सद्धम्ममनुट्टेऊणं विहुय-रय-मले सिज्जेज्जा ।

[५९९] से भयवं! किं जहा पंचमंगलं तहा सामाइयाइयमसेसं पि सुयनाणमहिज्जिणेयव्वं ? गोयमा! तहा चव विनओवहाणेणं महीएयव्वं नवरं अहिज्जिणिउकामेहिं अट्टविहं चव नाणायारं सव्व-पयत्तेणं कालादी रक्खेज्जा, अन्नहा महया आसायणं ति, अन्नं च दुवालसंगस्स सुयनाणस्स पढम-चरिमजाम-अहन्निसं अज्झयण-ज्झावणं पंचमंगलस्स सोलस-द्धजामियं च अन्नं च, पंच-मंगलं कय-सामाइए इ वा अकय-सामाइए इ वा अहीए सामाइयमाइयं तु सुयं चत्तारंभपरिग्गहे जावज्जीवं कय-

सामाङ्ग अहीज्जिणेइ न उ णं सारंभ-परिग्गहे अकय-सामाङ्ग, तथा पंचमंगलस्स आलावगे आलावगे आयंबिलं तथा सक्कत्थवाइसु वि दुवालसंगस्स पुण सुय-नाणस्स उद्देसगऽज्झयणेसु ।

[६००] से भयवं सुदुक्करं पंच-मंगल-महासुयक्खंधस्स विनओवहाणं पन्नत्तं महती य एसा नियंतणा कहं बालेहिं कज्जइ ? गोयमा! जे णं केइ न इच्छेज्जा एयं नियंतणं अविनओवहाणेणं चैव पंचमंगलाइं सुय-नाणमहिज्जिणे अज्झावेइ वा अज्झावयमाणस्स वा अणुण्णं वा पयाइ से णं न भवेज्जा पिय-धम्मं न हवेज्जा दढ-धम्मं न भवेज्जा भत्ती-जुए हीलेज्जा सुत्तं हीलेज्जा अत्थं हीलेज्जा सुत्त-त्थ-उभए हीलेज्जा गुरुं, जे णं हीलेज्जा सुत्तत्थो ऽभए जाव णं गुरुं से णं आसाएज्जा अतीताऽनागय-वट्टमाणे तित्थये आसाएज्जा आयरिय-उवज्झाय-साहुणो ।

जे णं आसाएज्जा सुयनाण-मरिहंत-सिद्ध-साहू से तस्स णं सुदीहयालमनंत-संसारसागर-अज्झयणं-३, उद्देसो-

माहिंडेमाणस्स तासु तासु संकुड वियडासु चुल-सीइ-लक्ख-परिसंखाणासु सीओसिणमिस्सजोणीसु तिमिसंझधयार दुग्गंधाऽमेज्झाचिलीण-खारमुत्तोज्झ-सिंभ पडहच्छवस-जलुल-पूय-दुद्धिण-चिलिच्चिल-रुहिर-चिकखल्ल-दुद्धंसण-जंबाल-पंक-वीभच्छघोर-गब्भवासेसु कढ-कढ-कढेंत-चल-चल-चलस्स टल-टल-टलस्स रज्झंतसंपिंडियंगमंगस्स सुइरं नियंतणा, जे उण एयं विहिं फासेज्जा नो णं मणयं पि अइयरेज्जा जहुत्त-विहाणेणं चैव पंच-मंगल-पभिइ-सुय-नाणस्स विनओवहाणं करेज्जा ।

से णं गोयमा! नो हीलेज्जा सुत्तं नो हीलेज्जा अत्थं नो हीलेज्जा सुत्तत्थोभए, से णं नो आसाएज्जा तिकाल-भावी-तित्थकरे नो आसाएज्जा तिलोग सिहरवासी विहूय-रय-मत्ते सिद्धे नो आसाएज्जा आयरिय-उवज्झाय साहुणो, सुद्धुयं चैव-भवेज्जा पिय-धम्मं दढ-धम्मं भत्ती-जुत्ते एगंतेणं भवेज्जा सुत्तत्थानुरंजियमाणस-सद्धा-संवेगमावन्ने, से एस णं न लभेज्जा पुणो पुणो भव-चारगे गब्भ-वासाइयं अनेगहा जंतणं ति ।

[६०१] नवरं गोयमा! जे णं बाले जाव अविण्णाय-पुन्न-पावाणं विसेसे ताव णं से पंच-मंगलस्स णं गोयमा ! एगंतेणं अओग्गे, न तस्स पंचमंगल-महा-सुयक्खंधं दायव्वं न तस्स पंचमंगल-महासुयक्खंधस्स एगमवि आलावगं दायव्वं, जओ अनाइ-भवंतर-समज्जिया ऽसुह-कम्म-रासि-दहणद्धमिणं लभित्ता णं न बाले सम्मामाराहेज्जा लहुत्तं च आपेइ ता तस्स केवलं धम्म-कहाए गोयमा ! भत्ती समुप्पाइज्जइ, तओ नाऊणं पिय-धम्मं दढ-धम्मं भत्ति-जुत्तं ताहे जावइयं पच्चक्खाणं निव्वाहेउं समत्थो भवति तावइयं कारविज्जइ, राइ-भोयणं च दुविह-तिविह-चउव्विहेण वा जहा-सत्तीए पच्चक्खाविज्जइ ।

[६०२] ता गोयमा! णं पणयालाए नमोक्कार-साहियाणं चउत्थं चउवीसाए पोरुसीहिं बारसहिं पुरिमड्ढेहिं दसहिं अवड्ढेहिं तिहिं निव्वीइएहिं चउहिं एगट्ठाणगेहिं दोहिं आयंबिलेहिं एगेणं सुद्धत्थायंबि-लेणं, अक्कावारत्ताए रोद्धट्टज्जाण-विगहा-विरहियस्स सज्झाएगग्ग-चित्तस्स गोयमा! एगमेव-आयंबिलं मास-खवणं विसेसेज्जा, तओ य जावइयं तवोवहाणं वीसमंतो करेज्जा, तावइयं अनुगणेऊणं जाहे जाणेज्जा जहा णं एत्तियमेत्तेणं तवोवहाणेणं पंचमंगलस्स जोगीभूओ ताहे आउत्तो पडेज्जा न अन्नह त्ति ।

[६०३] से भयवं पभूयं कालाइक्कमं एयं, जइ कदाइ अवंतराले पंचत्तमुवगच्छेज्जा तओ नमोक्कार विरहिए कहमुत्तिमट्टं साहेज्जा? जं सयं चैव सुत्तोवयारनिमित्तेणं असढ-भावत्ताए जहा-सत्तीए किंचि तवमारभेज्जा, तं समयमेव तमहीय-सुत्तत्थोभयं दडुव्वं जओ णं सो तं पंच-नमोक्कारं सुत्तत्थोभयं न अविहीए गेण्हे किंतु तथा गेण्हे जहा भवंतरेसुं पि न विप्पनस्से एयज्झवसायत्ताए आराहगो भवेज्जा ।

[६०४] से भयवं ! जेण उण अन्नेसिमहीयमाणानं सुयायवरणक्खओवसमेणं कण्ण-
हाडित्तणेणं पंचमंगल-महीयं भवेज्जा, से वि उ किं तवोवहाणं करेज्जा ? गोयमा! करेज्जा । से भयवं! केण
अट्टेणं? गोयमा! सुलभ-बोहि-लाभ-निमित्तेणं, एवं चेयाइं अकुव्वमाणे नाणकुसीले नेए ।

[६०५] तहा गोयमा! णं पव्वज्जा दिवसप्पभिईए जहुत्त-विहिणो वहाणेणं जे केई साहू वा
साहुणी वा अपुव्व-नाण-गहणं न कुज्जा तस्सासइं चिराहीयं सुत्तत्थोभयं सरमाणे एगग्ग-चित्ते पढम-
चरम-पोरिसीसु दिया राओ य नाणु गुणेज्जा, से णं गोयमा ! नाण-कुसीले नेए ।

से भयवं ! जस्स अइगरुय नाणावरणोदएणं अहन्निसं पहोसेमाणस्स संवच्छरेणा वि
सिलोगबद्धमवि नो थिर-परिचियं भवेज्जा? से किं कुज्जा? गोयमा! तेणा वि जावज्जीवाभिग्गहेण सज्झाय-
सीलाणं वेयावच्चं, तहा अनुदिनं अड्ढाइज्जे सहस्से पंच मंगलाणं सुत्तत्थोभए सरमाणेगग्ग-
अज्झयणं-३, उट्ठेसो-

मानसे पहोसेज्जा । से भयवं केणं अट्टेणं गोयमा ! जे भिक्खु जावज्जीवाभिग्गहेणं चाउक्कालियं वायणाइ
जहा सत्तीए सज्झायं न करेज्जा, से णं नाण-कुसीले नेए ।

[६०६] अन्नं च-जे केई जावज्जीवाभिग्गहेणं अपुव्वं नाणाहिगमं करेज्जा तस्सासतीए
पुव्वाहियं गुणेज्जा तस्सावियासतीए पंचमंगलाणं अड्ढाइज्जे सहस्से परावत्ते से भिक्खू आराहगे तं च
नाणावरणं खवेत्तु णं तित्थयरे इ वा गणहरे इ वा भवेत्ता णं सिज्झेज्जा ।

[६०७] से भयवं! केण अट्टेण एवं वुच्चइ जहा णं चाउक्कालियं सज्झायं कायव्वं ?
[गोयमा !]

- [६०८] मण-वइ-कायाउत्तो नाणावरणं च खवइ अनुसमयं ।
सज्झाए वट्ठंतो खणे खणे जाइ वेरग्गं ॥
- [६०९] उड्ढमहे तिरियम्मि य जोइस-वेमाणिया य सिद्धी य ।
सव्वो लोगालोगो सज्झाय-विउस्स पच्चक्खो ॥
- [६१०] दुवालस-विहम्मि वि तवे सब्भितर-बाहिरे कुसल-दिट्ठे ।
न वि अत्थि न वि य होही सज्झाय-समं तवो-कम्मं ॥
- [६११] एग-दु-ति-मास-खमणं संवच्छरमवि य अनसिओ होज्जा ।
सज्झाय-झाण-रहिओ एगोवासप्फलं पि न लभेज्जा ॥
- [६१२] उग्गम-उप्पायण-एसणाहिं सुद्धं तु निच्च भुंजंतो ।
जइ तिविहेणाऽउत्तो अनुसमय-भवेज्ज सज्झाए ॥
- [६१३] तो तं गोयम ! एगग्ग माणसत्तं न उवमिउं सक्का ।
संवच्छरखवणेणं वि जेण तहिं निज्जारानंता ॥
- [६१४] पंच-समिओ ति-गुत्तो खंतो दंतो य निज्जरापेही ।
एगग्ग-मानसो जो करेज्ज सज्झायं सो मुनी भण्णे ॥
- [६१५] जो वागरे पसत्थं सुयनामं जो सुणेइ सुह-भावो ।
ठइयासवदारत्तं तक्कालं गोयमा ! दोण्हं ॥
- [६१६] एगमवि जो दुहत्तं सत्तं पडिबोहिउं ठवियमग्गे ।
ससुरासुरम्मि वि जगे तेण इहं घोसिओ अणाघाओ ॥

- [६१७] धाउपहाणो कंचनभावं न य गच्छई किया-हीणो ।
 एवं भव्वो वि जिनोवएस-हीनो न बुज्जेज्जा ॥
- [६१८] गय-राग-दोस-मोहा धम्म-कहं जे करेति समयणू ।
 अनुदियहमवीसंता सव्वपावाण मुच्चंति ॥
- [६१९] निसुणंति य भयणिज्जं एगंतं निज्जरं कहंताणं ।
 जइ अन्नहा न सुत्तं अत्थं वा किंचि वाएज्जा ॥

[६२०] एएणं अट्टेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ जहा णं जावज्जीवं अभिग्गहेणं चाउक्कालियं सज्झायं कायव्वंति, तहा य गोयमा ! जे भिक्खू विहीए सुपसत्थनाणमहिज्जेऊण नाणमयं करेज्जा, से वि नाण-कुसीले, एवमाइ नाण-कुसीले अनेगहा पन्नविज्जंति ।

अज्झयणं-३, उद्देशो-

[६२१] से भयवं! कयरे ते दंसण-कुसीले ? गोयमा! दंसण-कुसीले दुविहे नेए आगमओ नो आगमओ य तत्थ आगमओ सम्म-दंसणं, संकंते कंखंते विदुगुंछंते दिट्ठीमोहं गच्छंते अणोववूहए परिवडिय-धम्मसद्धे सामण्णमुज्झिउकामाणं अथिरीकरणेणं साहम्मियाणं अवच्छल्लत्तणेणं अप्पभावनाए, एत्तेहिं अट्ठहिं पि थाणंतरेहिं कुसीले नेए ।

[६२२] नो आगमओ य दंसण-कुसीले अनेगहा तं जहा-चक्खु-कुसीले घाण-कुसीले सवण-कुसीले जिब्भ-कुसीले सरीर-कुसीले तत्थ चक्खुकुसीले तिविहे नेए तं जहा-पसत्थ-चक्खु-कुसीले पसत्थापसत्थ-चक्खु-कुसीले अपसत्थ-चक्खुकुसीले जत्थ-जे केइ-पसत्थं उसभादि-तित्थयर-बिंबं-पुरओ चक्खु-गोयर-द्वियं तमेव पासेमाणे अन्नं किं पि मनसा अपसत्थमज्झवसे से णं पसत्थ-चक्खु-कुसीले, तहा जे पसत्थापसत्थ-चक्खु-कुसीले तित्थयर-बिंबं हियएणं अच्छीहिं-किं पि पेहेज्जा से णं पसत्थापसत्थ चक्खु-कुसीले तहा पसत्थापसत्थाइं दव्वाइं काग बग-ढेक-तित्तिर-मयूराइं सुकंत-दित्तित्थियं वा दट्ठुणं तयहुत्तं चक्खुं विसज्जे से वि पसत्थापसत्थ-चक्खु-कुसीले, तहा अपसत्थ-चक्खु-कुसीले तिसट्ठिहिं पयारेहिं अपसत्था सरागा चक्खू त्ति ।

से भयवं! कयरे ते अपसत्थे तिसट्ठी-चक्खु-भेए? गोयमा! इमे तं जहा सब्भू कडक्खा, तारा, मंदा, मंदालसा, वंका, विवंका, कुसीला, अद्धिक्खिया, काणिक्खिया, भामिया, उब्भामिया, चलिया, वलिया, चलवलिया, उद्धम्मिल्ला, मिलिमिला, मानुसा, पासवा, पक्खा, सरीसिवा, असंता, अपसंता, अथिरा, बहुविगारा, सानुरागा, रागो, ईरणी, रागजण्णा, मयुप्पायणी, मयणी, मोहणी, वम्मोहणी, भओइरणी, भयजण्णा, भयंकरी, हियय-भेयणी, संसयावहरणी, चित्त-चमक्कुप्पायणी, निबद्धा, अनिबद्धा, गया, आगया, गयागया, गय-पच्चागया, निद्धाडणी, अहिलसणी, अरइकरा, रइकरा, दीना, दयावणा, सूरा, धरा, हणणी, मारणी, तावणी, संतावणी कुद्धापकुद्धा, घोरामहा-धोरा, चंडा, रोद्धा, सुरोद्धा, हा हा भूयसरणा, रुक्खा, सणिद्धा, रुक्खसणिद्ध त्ति ।

महिला णं चलणंगुट्ट-कोडी-नह-कर-सुविलिहिया दिन्नालत्तं गायं च नह-मणि-किरण-निबद्धसक्क-चावं कुम्मण्णय-चलणं सम्मग्ग-निमुग्ग-वट्ट-गूढजाणुं, जंघा-पिहुल-कडियड-भोगा जहण-नियंब-नाही थण-गुज्झंतर कट्ठा-भूया-लट्ठीओ अहरोट्ट-दसणपंती कण्ण-नासा नयन-जुयल भमुहा-निडाल-सिररुह-सीमंतया-मोडया-पट्टितिलगं-कुंडल-कवोलकज्जल-तमाल-कलाव-हार-कडि-सुत्तगणेउरर-बहुरक्खग-मणि-रयण-

कडग कंकण-मुद्रियाइ सुकंत-दित्ता-भरण दुग्गुल्ल-वसन-नेवच्छा कामग्गि-संधुक्कणी निरय-तिरिय-गतीसुं अनंत-दुक्ख-दायगा एसा साहिलास-सराग-दिट्ठी त्ति । एस चक्खु-कुसीले ।

[६२३] तहा घाण-कुसीले जे केइ सुरहि-गंधेसु संगं गच्छइ दुरहिगंधे दुगुछे से णं घाण-कुसीले तहा सवण-कुसीले दुविहे नेए-पसत्थे अपसत्थे य तत्थ जे भिक्खू अपसत्थाइं काम-राग-संधुक्खणुद्धिवण-उज्जालण-पज्जालण-संदिवणाइं गंधव्व-नट्ट-धनुव्वेद-हत्थिसिक्खा काम-रती -सत्थाइंणि गंथाणि सोऊणं नालोएज्जा जाव णं नो पायच्छित्तमनुचरेज्जा से णं अपसत्थ-सवण-कुसीले नेए । तहा जे भिक्खू पसत्थाइं सिद्धंताचरिय-पुराण-धम्म-कहाओ य अन्नाइं च गंथसत्थाइं सुणेत्ता णं न किंचि आय-हियं अनुट्ठे नाण-मयं वा करेइ, से णं पसत्थ-सवणकुसीले नेए ।

तहा जिब्भा-कुसीले से णं अनेगहा तं जहा-तित्त-कडुय-कसाय-महुरंबिल-लवणाइं-रसाइं आसायंते अदिट्ठाऽसुयाइं इह-परलोगो-भय- विरुद्धाइं सदोसाइं मयार-जयारुच्चारणाइं अयसऽब्भ-क्खाणा अज्झयणं-३, उट्ठेसो-

असंताभिओगाइं वा भणंते, असमयण्णू धम्मदेसना पवत्तणेण य जिब्भा-कुसीले नेए,

से भयवं किं भासाए विभासियाए कुसीलत्तं भवति? गोयमा! भवइ । से भयवं जइ एवं ता धम्म-देसणं-कायव्वं? गोयमा!

[६२४] सावज्जऽणवज्जाणं वयणाणं जो न जाणइ विसेसं ।

वोत्तुं पि तस्स न खमं किमंग पुणदेसणं काउं ॥

[६२५] तहा सरीर-कुसीले दुविहे चेट्ठा-कुसीले विभूसा-कुसीले य, तत्थ जे भिक्खू एयं किमि-कुल-निलयं सउण-साणाइ-भत्तं सडण-पडण-विद्धंसण-धम्मं असुइं असासयं असारं सरीरगं आहरादीहिं निच्चं चेट्ठेज्जा, नो णं इणमो भव-सय-सुलद्ध-नाण-दंसणाइ-समण्णिणं सरीरेणं अच्चंत-घोर-वीरुग्ग-कट्ट-घोर-तव-संजम-मणुट्ठेज्जा से णं चेट्ठा कुसीले ।

तहा जे णं विभूसा कुसीले से वि अनेगहा तं जहा- तेलाब्भंगण-विमदण संबाहण-सिणाणुव्वट्टण-परिहसण-तंबोल-धूवण-वासण - दसणुग्घसण - समालहण - पुप्फोमालण-केस-समारण-सोवाहण-दुवियइट्टगइ-भणिर-हसिरउवविट्ठुट्ठिय सण्णिवण्णेक्खिय-विभूसावत्ति-सविगार-नियंसणुत्तरीय-पाउरण-दंडग-गहणमाई सरीर-विभूसा-कुसीले नेए एते य पवयण-उड्डाह-परे दुरंत-पंत-लक्खणे अदट्टव्वे महा पावकम्मकारी विभूसा कुसीले भवंति । गए दंसण कुसीले ।

[६२६] तहा चारित्तकुसीले अनेगहा-मूलगुण उत्तरगुणेसुं । तत्थ मूलगुणा पंच-महव्वयाणी राई-भोयण-छट्ठाणि, तेसुं जे पमत्ते भवेज्जा । तत्थ पाणाइवायं पुढवि-दगागनिमारुय-वणप्फती-बिति-चउ-पंचेदियाईणं संघटण-परियावण-किलामणोद्धवणे । मुसावायं सुहुमं बायरं च, तत्थ सुहुमं पयला-उल्ला मरुए एवमादि, बादरो कन्नालीगादि । अदिन्नादानं सुहुमं बादरं च, तत्त सुहुमं तण-डगल-च्छार-मल्लगादिणं गहणे, बादरं हिरण्ण-सुवण्णादिणं । मेहुणं दिव्वोरालियं मनोवइ-काय-करण-कारावणानुमइभेदेणं अट्टरसहा, तहा करकम्मादी सचित्ताचित्त-भेदेणं नवगुत्ति-विराहणेण वा विभूसावत्तिण वा । परिग्गहं सुहुमं बादरं च तत्थ सुहुमं कप्पट्टगरक्खणममत्तो, बादरं हिरण्णमादीणं गहणे धारणे वा । राईभोयणं दिया गहियं दिया भुत्तं दिया गहियं राई भुत्तं राओ गहियं दिया भुत्तं, एवमादि, [उत्तर-गुणा] ।

[६२७] पिंडस्स जा विसोहि समितीओ भावना तवो दुविहो ।

पडिमा अभिग्गहा वि य उत्तरगुण मो विययाहि ॥

- [६२८] तत्थ पिंडविसोहि :-
 [६२९] सोलस उग्गम दोसा सोलस उप्पायणा य दोसा उ ।
 दस एसणाए दोसा संजोयण-माइ पंचेव ॥
- [६३०] तत्थ उग्गम-दोसा :-
 [६३१] आहाकम्मदुत्तिसिय पूईकम्ममे य मीसजाए य ।
 ठवणा पाहुडियाए पाओयर-कीय-पामिच्चे ॥
 [६३२] परियट्टिए अभिहडे उब्भियण्णे मालोहडे इ य ।
 अच्चेज्जे अनिसट्टे अज्झोयरए य सोलसमे ॥
- [६३३] इमे उप्पायणा-दोसा :-
 [६३४] धाई दूई निमित्ते आजीव-वणीमगे तिगिच्छाय ।

अज्झयणं-३, उद्देसो-

कोहे माने माया लोभे य हवंति दस एए ॥

- [६३५] पुत्विं पच्छा-संथव-विज्जा-मंते य चुण्ण-जोगे य ।
 उप्पायणाए दोसा सोलसमे मूल-कम्ममे य ॥

[६३६] एसणादोसा :-

- [६३७] संकिय-मक्खिय-निक्खित्त पिहिय-साहरिय दायगुम्मीसे ।
 अपरिणय-लित्त-छड्डिय एसण दोसा दस हवंति ॥

[६३८] तत्थुग्गमदोसे गिहत्थ-समुत्थे उप्पायणा दोसे साहुसमुत्थे, एसणादोसे उभय-
 समुत्थे । संजोयणा पमाणे इंगाले धूम कारणे पंचमंडलीय दोसे भवंति । तत्थ संजोयणा-उवगरण
 भत्तपाण-सब्भंतर-बहि-भेएणं पमाणं ।

- [६३९] बत्तीसं किर-कवले आहारो कुच्छि-पूरओ भणिओ ।
 रागेण सइंगालं दोसेण सधूमगं ति नायव्वं ॥

[६४०] कारणं :-

- [६४१] वेयण-वेयावच्चे इरिय-ट्टाए य संजम-ट्टाए ।
 तह पाण-वत्तियाए छट्ठं पुण धम्म-चिंताए ॥
 [६४२] नत्थि छुहाए सरिसिया वियणा भुंजेज्जा तप्पसमणट्टा ।
 छाओ वेयावच्चं न तरइ काउं अओ भुंजे ॥
 [६४३] इरियं पि न सोहिस्सं पेहाईयं च संजमं काउं ।
 थामो वा परिहायइ गुणणऽणुपेहासु य असत्तो ॥

[६४४] पिंडविसोही गया ।

इयाणिं समितीओ पंच तं जहा :- इरिया-समिई, भासा-समिई, एसणा-समिई, आयाण भंड-
 मत्त-निक्खेवणा-समिती, उच्चार-पास-वण-खेल-सिंधाण-जल्ल-पारिट्टा-वणिया-समिती ।

तहा गुत्तीओ तिन्नि मन-गुत्ती, वइ-गुत्ती, काय-गुत्ती ।

तहा भावनाओ दुवालस, तं जहा अनिच्चत्त-भावना, असरणत्त-भावना, एगत्त-भावना,
 अन्नत्त-भावना, असुइ-भावना, विचित्त संसार-भावना, कम्मासव-भावना, संवर-भावना, विनिज्जरा-भावना,

लोगवित्थरभावना, धम्मं सुयक्खायं सुपन्नत्तं तित्थयरेहिं ति भावना, तत्तचिंता भावना, बोहि-सुदुल्लभा-जम्मंतर-कोडीहिं वि त्ति भावणा । एवमादि-थाणंतरेसुं जे पमायं कुज्जा, से णं चारित्त-कुसिले नेए ।

[६४५] तहा तव-कुसीले दुविहे नेए, बज्झ-तव-कुसीले, अब्भितरतवकुसीले य तत्थ जे केई विचित्त-अनसन, ऊनोदरिया, वित्ती-संखेवण, रस-परिच्चाय, कायकिलेस, संलीणयाए त्ति छद्वाणेसुं न उज्जमेज्जा से णं बज्झ-तव-कुसीले । तहा जे केइ विचित्तपच्छित्त-विनय-वेयावच्च-सज्झाय-झाण-उसग्गम्मि चेएसुं छद्वाणेसुं न उज्जमेज्जा से णं अब्भितर-तव-कुसीले ।

[६४६] तह पडिमाओ बारस तं जहा :-

[६४७] मासादी सत्तंता एग दुग ति-सत्तराइ दिना तिन्नि ।
अहराति एगराती भिक्खू पडिमाणं बारसगं ॥

[६४८] तह अभिग्गहा दव्वओ खेत्तओ कालओ भावओ । तत्थ दव्वे कुम्मासाइयं दव्वं अज्झयणं-३, उद्देसो-

गहेयव्वं, खेत्तओ गामे बहिं वा गामस्स, कालओ पढमपोरिसिमाईसु, भावओ कोहमाइसंपन्नो जं देहि इमं गहिस्सामि । एवं उत्तर-गुणा संखेवओ सम्मत्ता । सम्मत्तो य संखेवेणं चरित्तायारो । तवायारो वि संखेवेणेहंतर-गओ । तहा विरियायारो । एएसु चेव जा अहाणी, एएसुं पंचसु आयाराइयारेसुं जं आउट्टियाए दप्पओ पमायओ कप्पेण वा अजयणाए वा जयणाए वा पडिसेवियं, तं तहेवालोइत्ताणं जं मग्ग-विउ-गुरु-उवइसंति तं तहा पायच्छित्तं नानुचरेइ । एवं अट्टारसण्हं सीलंग-सहस्साणं जं जत्थ पए पमत्ते भवेज्जा, से णं तेणं तेणं पमाय-दोसेणं कुसीले नेए ।

[६४९] तहा ओसन्नेसु जाणे नित्थं लिहीज्झइ । पासत्थे नाणमादिणं सच्छंदे उस्सुत्तुमग्गगामी सबले नेत्थं लिहिज्जंति गंथ-वित्थरभयाओ । भगवया उण एत्थं पत्थावे कुसीलादी महया पबंधेणं पन्नविए एत्थं च जा जा कत्थइ अन्नन्नवायणा, सा सुमुणिय-समय-सारेहिंतो पओसेयव्वा जओ मूलादरिसे चेव बहुं गंथं विप्पणइ । तहिं च जत्थ संबंधानुलग्गं गंथं संबज्झइ तत्थ तत्थ बहुएहिं सुयहरेहिं सम्मिलिऊणं संगोवंग दुवालसंगाओ सुय-समुद्दाओ अन्न-मन्न-अंग-उवंग-सुयक्खंध-अज्झयणुद्देसगाण समुच्चिणिऊणं किंचि किंचि संबज्झमाणं एत्थं लिहियं, न उण सकव्वं कयं ति ।

[६५०] पंचेए सुमहा-पावे जे न वज्जेज्ज गोयमा ! ।

संलावादीहिं कुसीलादी भमिही सो सुमती जहा ॥

[६५१] भव-काय-द्वितीए संसारे घोर-दुक्ख-समोत्थओ ।

अलभंतो दसविहे धम्मो बोहिमहिंसाइ-लक्खणे ॥

[६५२] एत्थं तु किर-दिट्ठंतं संसग्गी-गुण-दोसओ ।

रिसि-भिल्ला समवासे णं निप्फन्नं गोयमा ! मुणे ॥

[६५३] तम्हा कुसीलसंसग्गी सव्वोवाएहिं गोयमा ! ।

वज्जेज्जा य हियाकंखी अंडज-दिट्ठंत-जाणगे ॥

◦ तइयं अज्झयणं समत्तं ◦

◦ चउत्थमज्झयणं - कुसीलसंसग्गी ◦

[६५४] से भयवं! कहं पुण तेण समुइणा कूसील-संसग्गी कया आसी उ, जीए अ एरिसे अइदारुणे अवसाणे समक्खाए जेण-भव-कायद्वितीए अनोर-पारं भव-सायरं भमिही ? से वराए दुक्ख-संतत्ते अलभंते सव्वन्नुवएसिए अहिंसा-लक्खण खंतादि-दसविहे धम्मो बोहिं ? ति गोयमा ! णं इमे तं जहा-अत्थि इहेव भारहे वासे मगहा नाम जनवओ । तत्थ कुसत्थलं नाम पुरं । तम्मि य उवलद्ध-पुन्न-पावे सुमुणिय-जीवाजीवादि-पयत्थे सुमती-नाइल नामधेज्जे दुवे सहोयरे महिइढीए सइढगे अहेसि ।

अहण्णया अंतराय-कम्मोदएणं वियलियं विहवं तेसिं न उणं सत्त-परक्कमं ति । एवं तु अचलिय-सत्त-परक्कमाणं तेसिं अच्चंतं परलोग-भीरुणं विरय-कूड-कवडालियाणं पडिवण्ण-जहोवइडु-दानाइ-चउक्खंध-उवासग-धम्ममाणं अपिसलुणाऽमच्छरीणं अमायावीणं किं बहुना ? गोयमा! ते उवासगा णं आवसहं गुणरयणाणं पभवा, खंतीए निवासे सुयण-मेत्तीणं । एवं तेसिं-बहु-वासर-वण्णणिज्ज-गुण-रयणाणं पि जाहे असुह-कम्मोदएणं न पहुप्पए संपया ताहे न पहुप्पंति अट्ठाहिया-महिमादओ इडुदेवयाणं जहिच्छिए पूया-सक्कारे साहम्मिय-सम्माणे बंधुयण-संववहारे य ।

अज्झयणं-४, उट्टेसो-

[६५५] अह अन्नया अचलंतेसुं अतिहि-सक्कारेसुं अपूरिज्जमाणेसुं पणइयण-मनोरहेसुं विहडंतेसु य सुहिसयणमित्त बंधव-कलत्त-पुत्त-नत्तुयगणेसुं विसायमुवगएहिं गोयमा ! चिंतियं तेहिं सइढगेहिं तं जहा :-

[६५६] जा विहवो ता पुरिसस्स होइ आणा-वडिच्छओ लोओ ।
गलिओदयं घनं विज्जुला वि दूरं परिच्चयइ ॥

[६५७] एवं-चिंतिऊणावरोप्परं भणिउमारद्धे तत्थ पढमो :-

[६५८] पुरिसेण मान-धन-वज्जिएण परिहीन भागधिज्जेणं ।
ते देसा गंतत्त्वा जत्थ स-वासा न दीसंति ॥

[६५९] तहा बीओ :-

[६६०] जस्स धनं तस्स जनो जस्सत्थो तस्स बंधवा बहवे ।
धन-रहिओ हु मनूसो होइ समो दास-पेसेहिं ॥

[६६१] अह एवमवरोप्परं संजोज्जेऊण गोयमा! कयं देसपरिच्चाय-निच्छयं तेहिं ति । जहा वच्चामो देसंतरं ति । तत्थ णं कयाइ पुज्जंति चिर-चिंतिए मनोरहे हवइ य पव्वज्जाए सह संजोगो जइ दिव्वो बहुमन्नेज्जा जाव णं उज्जिऊणं तं कमागयं कुसत्थलं । पडिवन्नं विदेसगमनं ।

[६६२] अहन्नया अनुपहेणं गच्छमाणेहिं दिट्ठा तेहिं पंच साहुणो छडुं समणोवासगं ति । तओ भणियं नाइलेण जहा भो सुमती ! भद्धमुह पेच्छ केरिसो साहु सत्थो ? ता एएणं चेव साहु-सत्थेणं गच्छामो, जइ पुणो वि नूनं गंतत्त्वं । तेण भणियं एवं होउ त्ति । तओ सम्मिलिया तत्थ सत्थे-जाव णं पयाणगं वहंति ताव णं भणिओ सुमती नातिलेणं जहा णं भद्धमुह ! मए हरिवंस-तिलय-मरग-यच्छविणो सुगहिय-नामधेज्जस्स बावीसइम-तित्थगरस्स णं अरिइनेमि नामस्स पाय-मूले सुहनिसन्नेणं एवमवधारियं आसी, जहा जे एवंविहे अनगार-रूवे भवंति ते य कुसीले, जे य कुसीले ते दिट्ठीए वि निरक्खितं न कप्पंति ।

ता एते साहुणो तारिसे मनागं न कप्पए एतेसिं समं अम्हाणं गमन-संसग्गी ता वयंतु एते, अम्हे अप्पसत्थेणं चेव वइस्सामो, न कीरइ तित्थयर-वयणस्सातिवक्कमो, जओ णं ससुरासुरस्सा वि

जगस्स अलंघणिज्जा तित्थयर-वाणी अन्नं च-जाव एतेहिं समं गम्मइ ताव णं चिद्धउ ताव दरिसणं आलावादी नियमा भवंति, ता किमम्हेहिं तित्थयर-वाणिं उल्लंघित्ताणं गंतव्वं ? एवं तमनुभाणिऊणं तं सुमतिं हत्थे गहाय निव्वडिओ नाइलो साहु-सत्थाओ ।

[६६३] निविद्धो य चक्खुविसोहिए फासुग-भूपएसे तओ भणियं सुमइणा जहा-

[६६४] गुरूणो माया-वित्तस्स जेद्ध-भाया तहेव भइणीणं ।

जत्थुत्तरं न दिज्जइ हा देव ! भणामि किं तत्थ ? ॥

[६६५] आएसमवीमाणं पमाणपुव्वं तह त्ति नायव्वं ।

मंगलममंगुलं वा वत्थ वियारो न कायव्वो ॥

[६६६] नवरं एत्थ य मे दायव्वं अज्ज-मुत्तरमिमस्स ।

खर-फरुस-कक्कसाऽनिद्ध दुद्ध-निद्धुर सरेहिं तु ॥

[६६७] अहवा कह उत्थल्लउ जीहा मे जेद्ध-भाउणो पुरतो ? ।

अज्झयणं-४, उद्देशो-

जस्सुच्छंगे विनियंसणोऽहं, रमिओऽसुइ विलित्तो ॥

[६६८] अहवा कीस न लज्जइ एस सयं चेव एव पभणंतो ।

जदं नु कुसीले एते दिद्धीए वी न दद्धवे ॥

[६६९] साहुणो? त्ति जाव न एवइयं वायरे ताव णं इंगियागार-कुसलेणं मुणियं नाइलेणं-जहा णं अलिय-कसाइओ एस मनगं सुमती, ता किमहं पडिभणामि? त्ति चिंतिउं समाढत्तो ।

[६७०] कज्जेण विना अकंडे एस पकुविओ हु तव संचिद्धे ।

संपइ अणुणिज्जंतो न याणिणो किं च बहु मन्ने ॥

[६७१] ता किं अणुणेमिमिणं उयाहु बोलउ खणद्धतालं वा ।

जेणुवसमिय-कसाओ पडिवज्जइ तं तहा सव्वं ॥

[६७२] अहवा पत्थावमिणं एयस्स वि संसयं अवहरेमि ? ।

एस न याणइ भद्धं जाव विसेसं नऽपरिकहियं ॥

[६७३] त्ति चिंतिऊणं भणित्तमाढत्तो :-

[६७४] नो देमि तुब्भ दोसं न यावि कालस्स देमि दोसमहं ।

जं हिय-बुद्धीए सहोयरा वि भणिया पकुप्पंति ॥

[६७५] जीवाणं चिय एत्थं दोसं कम्मद्व-जाल-कसियाणं ।

जे चउगइ-निप्फिडणं हिओवएसं न बुज्झंति ॥

[६७६] घन-राग-दोस-कुग्गाह मोह-मिच्छत्त-खवलिय-मणाणं ।

भाइ विसं कालउडं हिओवएसामय पइण्णं ति ॥

[६७७] एवमायणिऊण तओ भणियं सुमइणा । जहा तुमं चेव सत्थवादी भणसु एयाइं नवरं न जुत्तमेयं जं साहूणं अवण्णवायं भासिज्जइ । अन्ने तु किं न पेच्छसि तुमं एएसिं महानुभागाणं चेद्वियं? छद्ध-डम-दसम दुवालस-मास-खमणाईहिं आहारग्गहणं गिम्हायावणद्वाए वीरासन-उक्कुड्डयासण-नाणाभिग्गह-धारणेणं च कद्ध-तवोणुचरणेणं च पसुक्खं मंस-सोणियं ति ? महाउवासगो सि तुमं, महा-भासा-समिती विइया तए जेणेरिस-गुणोवउत्ताणं पि महानुभागाणं साहूणं कुसीले त्ति नामं संकप्पियंति ।

तओ भणियं नाइलेणं जहा मा वच्छ ! तुमं एतेणं परिओसमुवयासु, जहा अहयं आसवारेणं परिमुसिओ । अकाम-निज्जराए वि किंचि कम्मक्खयं भवइ, किं पुण जं बाल-तवेणं ? ता एते बाल-तवस्सिणो दद्वुवे जओ णं किं किंचि उस्सुत्तमग्गयारित्तमेएसिं पइसे ।

अन्नं च-वच्छ सुमइ ! नत्थि ममं इमाणोवरिं को वि सुहुमो वि मनसावि उ पओसो जेणाहमेएसिं दोस-गहणं करेमि, किं तु मए भगवओ तित्थयरस्स सगासे एरिसमवधारियं, जहा कुसीले अदद्वुवे । ताहे भणियं सुमइणा जहा जारिसो तुमं निबुद्धीओ तारिसो सो वि तित्थयरो जेण तुज्जमेयं वायरियं ति । तओ एवं भणमाणस्स सहत्थेणं झंपियं मुह-कुहरं सुमइस्स नाइलेणं भणिओ य । जहा- मा जग्गेक्कगुरुणो तित्थयरस्सासायणं कुणसु, मए पुण भणसु जहिच्छियं नाहं ते किंचि पडिभणामि ।

तओ भणियं सुमइणा जहा जइ एते वि साहुणो कुसीला ता एत्थं जगे न कोई सुसीलो अत्थि। तओ भणियं नाइलेणं। जहा-भद्दमुह सुमइ! एत्थं जयालंघणिज्ज वक्कस्स भगवओ वयणमायरेयवं जं च ऽत्थिक्कयाए न विसंवयेज्जा, नो णं बालतवस्सीणं चेद्धियं, जओ णं जिनचंदवय- अज्झयणं-४, उद्देशो-

णेणं नियमओ ताव कुसीले इमे दीसंति पव्वज्जाए गंधं पि नो दीसए एसिं, जेणं पेच्छ पेच्छ ? तावेयस्स साहुणो, बिइज्जियं मुहनंतगं दीसइ, ता एस ताव अहिग-परिग्गह-दोसेणं कुसीलो ।

न एयं साहूणं भगवयाऽऽइदं जमहिय-परिग्गह-विधारणं कीरे ता, वच्छ हीन-सत्तोऽहन्नो एसेवं मनसाज्झवसे जहा जइ ममेयं मुहनंतगं विप्पनस्सिहिइ ता बीयं कत्थ कहं पावेज्जा ? न एवं चिंतेइ मूढो जहा अहिगाऽनुवओगोवही-धारणेणं मज्झं परिग्गह-वयस्स भंगं होही। अहवा किं संजमेऽभिरओ एस मुहनंतगाइसंजमोवओग धम्मोवगरणेणं वीसीएज्जा ? नियमओ न विसीए । नवरमत्ताणयं हीन-सत्तोऽहमिइ पायडे उम्मग्गायरणं च पयंसेइ पवयणं च मइलेइ त्ति ।

एसो उ न पेच्छसि ? सामन्नचत्तो एएणं कल्लं तीए विनियंणाइ-इत्थीए अंगयद्धिं निज्झाइऊण जं नालोइयं न पडिक्कंतं तं किं तए न विण्णायं ? एस उ न पेच्छसि ? परूढ-विप्फोडग-विम्हियाणणो एतेणं संपयं चेव लोयद्वाए सहत्थेणमदिन्न-छार-गहणं कयं । तए वि दिद्वमेयं ति । एसो उ न पेच्छसि ? संघडिय कल्लो एएणं, अनुग्गए सूरिए उद्देह ! वच्चामो, उग्गयं सूरियं ति तथा विहसियमिणं । एसो उ न पेच्छसीमेसिं जिइ-सेहो । एसो अज्ज रयणीए अनोवउत्तो पसुत्तो विज्जुक्काए फुसिओ । न एतेणं कप्प-गहणं कयं । तहा पभाए हरिय-तणं वासा-कप्पंचलेणं संघट्टियं । तहा बाहिरोदगस्स परिभोगं कयं । बीयकायस्सोवरेणं परिसक्किओ अविहिए एस खार-थंडिलाओ महरं थंडिलं संकमिओ । तहा-पह पडिवण्णेण साहुणो कम-सयाइक्कमे इरियं पडिक्कमियवं ।

तहाचरेयवं तहा चिद्वेयवं तहा भासेयवं तहा सएयवं जहा छक्कायमइगयाणं जीवाणं सुहुम-बायर-पज्जत्तापज्जत्त-गमागम-सव्वजीवपाणभूय-सत्ताणं संघट्टण-परियावण-किलामण-उद्वणं वा न भवेज्जा । ता एतेसिं एवइयाणं एयस्स एक्कमवी न एत्थं दीसए । जं पुण मुहनंतगं पडिलेहमाणो अज्जं मए एस चोइओ । जहा एरिसं पडिलेहणं करे जे णं वाउक्कायं फडफडस्स संघट्टेज्जा । सारियं च पडिलेहणाए संतियं कारिय ति, जस्सेरिसं जयणं एरिसं सोवओगं हुंकाहिसि संजमं, न संदेहं जस्सेरिसमाउत्तत्तणं तुज्जं ति । एत्थं च तए हं विनिवारिओ जहा णं मूगोवाहि न अम्हाणं साहूहिं समं किंचि भणेयवं कप्पे । ता किमेयं ते विसुमरियं ?

ता भद्रमुह! एएणं समं संजमत्थानंतराणं एगमवि नो परिक्खियं, ता किमेस साहू भणेज्जा जस्सेरिसं पमत्तत्तणं ? न एस साहू जस्सेरिसं निद्धम्म-संपलत्तणं भद्रमुह ! पेच्छ पेच्छ सूणो इव नित्तिंसो छक्काय-निमद्वणो कहाभिरमे एसो । अहवा वरं सूणो जस्स णं सुहुमं वि नियम-वय-भंगं नो भवेज्जा, एसो उ नियम-भंगं करेमाणो केणं उवमेज्जा ? ता वच्छ ! सुमइ भद्रमुह ! न एरिस कत्तव्वायरणाओ भवंति साहू, एतेहिं च कत्तव्वेहिं तित्थयर-वयणं सरेमाणो को एतेसिं वंदनगमवि करेज्जा?

अन्नं च एएसिं संसग्गेणं कयाई अम्हाणं पि चरण-करणेसुं सिढिलत्तं भवेज्जा, जे णं पुणो पुणो आहिंडेमो घोरं भवपरंपरं । तओ भणियं सुमइणा जहा-जइ एए कुसीले जई सुसीले तथा वि मए एएहिं समं गंतव्वं जाव एएसिं समं पव्वज्जा कायव्वा । जं पुण तुमं करेसि तमेव धम्मं नवरं को अज्ज तं समायरित्तं सक्का? ता मुयसु करं, मए एतेहिं समं गंतव्वं जाव णं नो दूरं वयंति से साहुणो त्ति । तओ भणियं नाइलेणं भद्रमुह ! सुमइ नो कल्लाणं एतेहिं समं गच्छमाणस्स तुज्झं ति । अहयं च तुब्भं हिय-वयणं भणामि एवं ठिए जं चेव बहु-गुणं तमेवानुसेवयं, नाहं ते दुक्खेणं धरेमि ।

अह अन्नया अनेगोवाएहिं पि निवारिज्जंतो न ठिओ, गओ सो मंद-भागो सुमती गोयमा ! अज्झयणं-४, उद्देसो-

पव्वइओ य । अह अन्नया वच्चंतेणं मास-पंचगेणं आगओ महारोरवो दुवालस-संवच्छरिओ दुब्भिक्खो । तओ ते साहुणो तक्कालदोसेणं अनालोइय-पडिक्कंते मरिऊणोववन्ने भूय-जक्ख-रक्खस-पिसायादीणं वाणमंतरदेवाणं वाहणत्ताए । तओ वि चविऊणं मिच्छजातीए कुणिमाहार-कूरज्झवसाय-दोसओ सत्तमाए, तओ उव्वट्ठिऊणं तइयाए चउवीसिगाए सम्मत्तं पाविहिंति । तओ य सम्मत्त-लंभ-भवाओ तइय-भवे चउरो सिज्झिहिंति । एगो न सिज्झिहिइ जो सो पंचमगो सव्व-जेट्ठो, जओ णं सो एगंत मिच्छदिट्ठी अभव्वो य । से भयवं! जे णं सुमती से भव्वे उयाहु अभव्वे ? गोयमा भव्वे । से भयवं ! जइ-णं भव्वे, ता णं मए समाणे कहिं समुप्पन्ने ? गोयमा ! परमाहम्मियासुरेसुं ।

[६७८] से भयवं किं भव्वेपरमाहम्मियासुरेसुं समुप्पज्जइ ? गोयमा ! जे केई घन-राग-दोस-मोह-मिच्छत्तोदएणं सुववसियं पि परम-हिओवएसं अवमन्नेत्ताणं दुवालसंगं च सुय-नाणमप्पमाणी करीअ अयाणित्ता य समय-सब्भावं अनायारं पसंसिया णं तमेव उच्छपेज्जा जहा सुमइणा उच्छप्पियं । न भवंति एए कुसीले साहुणो, अहा णं एए वि कुसीले ता एत्थं जगे न कोई सुसीलो अत्थि, निच्छियं मए एतेहिं समं पव्वज्जा कायव्वा तथा जारिसो तं निबुद्धीओ तारिसो सो वि तित्थयरो त्ति एवं उच्चारमाणेणं से णं गोयमा महंतंपि तवमनुद्वेमाणे परमाहम्मियासुरेसु उववज्जेज्जा । से भयवं ! परमाहम्मिया सुरदेवाणं उव्वट्ठे समाणे से सुमती कहिं उववज्जेज्जा ? गोयमा ! तेणं मंद-भागेणं अनायार-पसंसुच्छप्पनं-करेमाणेणं सम्मग्ग-पणासंगं अभिनंदियं तक्कम्मदोसेणं-अनंत-संसारियत्तणमज्जियंतो केत्तिए उववाए तस्स साहेज्जा जस्स णं अनेग-पोग्गल-परियट्ठेसु वि नत्थि चउगइ-संसाराओ अवसानं ति तथा वि संखेवओ सुणसु गोयमा !

इणमेव जंबुद्धीवे दीवं परिक्खिविऊणं ठिए जे एस लवणजलही एयस्स णं जं ठामं सिंधू महानदी पविट्ठा, तप्पएसओ दाहिणेणं दिसा-भागेणं पणपण्णाए जोयणेसुं वेइयाए मज्झंतरं अत्थि पडिसंताव-दायगं नाम अद्धतेरस-जोयण-पमाणं हत्थिकुंभायारं थलं । तस्स य लवण-जलोवरेणं अद्धु-जोयणाणी उस्सेहो । तहिं च णं अच्चंत-घोर-तिमिसंधयाराओ घडियालगसंठाणाओ सीयालीसं गुहाओ, तासुं

च णं जुगं जुगेणं निरंतरे जलयारीणो मनुया परिवसंति, ते य वज्ज-रिसभ-नाराय-संघयणे महाबलपरक्कमे अद्धतेरस-रयणी-पमाणेणं संखेज्ज-वासाऊ महु-मज्ज-मंसप्पिए सहावओ इत्थिलोले परम-दुव्वण्ण-सुउमाल-अनिद्ध-खर-फरुसिय-तनू मायंगवइ-कयमुहे सीह-घोरदिट्ठी-कयंत-भीसणे अदाविय पट्ठी असणि व्व निद्धुर-पहारी दप्पुद्धरे य भवंति ।

तेसिं ति जाओ अंतरंड-गोलियाओ ताओ गहाय चमरीणं संतिएहिं सेय-पुंछवालेहिं गुंथिऊणं जे केइ उभय-कण्णेसुं निबंधिऊण महग्घुत्तम-जच्च-रयणत्थी सागरमनुपविसेज्जा से णं जलहत्थि-महिस-गोहिग-मयर-महामच्छ-तंतु-सुंसुमार-पभितीहिं दुद्ध-सावतेहिं अभेसिए चेव सव्वं पि सागर-जलं आहिंडिऊण जहिच्छाए जच्च-रयण-संगहं करिय अहय-सरीरे आगच्छे, ताणं च अंतरंडगोलियाणं संबधेणं ते वराए ! गोयमा अनोवमं सुघोरं दारुणं दुक्खं पुव्वज्जिय रोद्ध-कम्म-वसगा अनुभवन्ति ।

से भयवं केण अट्टेणं गोयमा ! तेसिं जीवमाणेणं कोस-मज्झे ताओ गोलियाओ गहेउं जे जया उण ते धिप्पन्ति तथा बहुविहाहिं नियंतणाहिं महया साहसेणं सन्नद्ध-बद्ध-करवाल-कुंत-चक्काइ-पहरणाडोवेहिं बहु-सूर-धीर-पुरिसेहिं बुद्धीपुव्वगेणं सजीविय-डोलाए धेप्पन्ति । तेसिं च धेप्पमाणेणं जाइं सारीर-माणसाइं दुक्खाइं भवंति ताइं सव्वेसुं नारय-दुक्खेसु जइ परं उवमेज्जा ।

अज्झयणं-४, उद्देसो-

से भयवं को उण ताओ अंतरंड-गोलियाओ गेणहेज्जा ? गोयमा! तत्तेव लवण-समुद्धे अत्थि रयण-दीवं नाम अंतर-दीवं, तस्सेव पडिसंताव-दायगाओ थलाओ एगतीसाए जोयण-सएहिं तं निवासिणो मणुया भवंति । भयवं ! कयरेणं पओगेणं? खेत्त-सभाव-सिद्ध-पुव्वपुरिस-सिद्धेणं च विहाणेणं ?

से भयवं कयरे उ ण से पुव्व-पुरिस-सिद्धे विही तेसिं? ति गोयमा ! तहियं रयण-दीवे अत्थि वीसं-एगूण-वीसं अट्टारस, दसद्ध-सत्त-धनू-पमाणाइं घरद्धसंठाणाइं वरवइर-सिला-संपुडाइं ताइं च विघाडेऊणं ते रयणदीवनिवासिणो मनुया पुव्व-सिद्ध-खेत्त-सहाव-सिद्धेणं चेव जोगेणं पभूय-मच्छिया-महूए अब्भंतरओ अच्चंत-लेवाडाइं काऊणं तओ तेसिं पक्क-मंस-खंडाणि बहूणि जच्च-महु-मज्ज-भंडगाणि पक्खिं वन्ति, तओ एयाइं करिय सुरंद-दीह-महद्दुम-कट्टेहिं आरुंभित्ताणं सुसाउ-पोराण-मज्ज-मच्छिगा महूओ य पडिपुन्ने बहूए लाउगे गहाय पडिसंतावदायग थलमागच्छंति जाव णं तत्थागए समाणे ते गुहावासिणो मनुया पेच्छंति ताव णं तेसिं रयणदीवग-निवासिमनुयाणं वहाय पडिधावन्ति तओ ते तेसिं य महूपडिपुन्नं लाउगं पयच्छिऊणं अब्भत्थ पओगेणं तं कट्ट-जाणं जइणयर-वेगं दुवं खेविऊणं रयणदीवाभिमुहं वच्चन्ति। इयरे य तं महूमासादियं पुणो सुद्धुरं तेसिं पिट्ठीए धावन्ति, ताहे गोयमा ! जाव णं अच्चासण्णे भवंति ताव णं सुसाउ-महु-गंध-दव्व-सक्कारिय-पोराण-मज्जं लाउगमेगं पमोत्तूणं पुणो वि जइणयरवेगेण रयणदीव-हुत्तो वच्चन्ति, इयरे य तं सुसाउ-महु-गंध-दव्व-संसक्करिय पोराण-मज्जमासाइयं पुणो सुदक्खयरे तेसिं पिट्ठीए धावन्ति, पुणो वि तेसिं महूपडिपुन्नं लाउगमेगं मुंचति ।

एवं ते गोयमा महु-मज्ज-लोलीए संपलग्गे तावाणयन्ति जाव णं ते घरद्ध-संठाणे वइरसिला-संपुडे । ता जाव णं तावइयं भू-भागं संपरावन्ति ताव णं जमेवासण्णं वइरसिला संपुडं जंभायमाणपुरिसमुहागारं विहाडियं चिद्धइ, तत्थेव जाइं महु-मज्ज-मंस-पडिपुन्नाइं समुद्धरियाइं सेस-लाउगाइं ताइं तेसिं पिच्छमाणेणं ते तत्थ मोत्तूणं निय-निय-निलएसु वच्चन्ति । इयरे य महु-मज्ज-लोलीए जाव णं तत्थ पविसंति ताव णं गोयमा ! जे ते पुव्व-मुक्के पक्क-मंस-खंडे जे य ते महु-मज्ज-पडिपुन्ने भंडगे जं च महूए चेवालित्तं सव्वं तं सिला-संपुडं पेक्खंति ताव णं तेसिं महंतं परिओसं महंतं तुट्ठिं महंतं पमोदं

भवइ । एवं तेसिं महु-मज्ज-पक्क-मंस परिभुंजेमाणेणं जाव णं गच्छंति सत्तद्व-दस-पंचेव वा दिनानि, ताव णं ते रयणदिव-निवासी-मनुया एगे सन्नद्ध-बद्ध-साउह-करग्गा तं वइरसिलं वेढिऊणं सत्तद्व-पंतीहिं णं ठंति । अन्ने तं घरद्व-सिला-संपुडमायालित्ताणं एगद्वं मेलंति ।

तंमि य मेलिज्जमाणे गोयमा ! जइ णं कहिं चि तुडितिभागओ तेसिं एककस्स दोण्हं पि वा निप्फेडं भवेज्जा तओ तेसिं रयणदीवनिवासि-मनुयाणं स-विडवि-पासाय-मंदिरस्स चुप्पयाणं तक्खणा चेव तेसिं हत्था संघार-कालं भवेज्जा एवं तु गोयमा ! तेसिं-तेणं-वज्ज-सिला-घरद्व-संपुडेणं गिलियाणंपि तहियं चेव जाव णं सव्वद्विए दलिऊणं न संपीसिए सुकुमालिया य ताव णं तेसिं नो पाणाइक्कमं भवेज्जा ते य अट्ठी वइरमिव दुदुले तेसिं तु, तत्थ य वइर-सिला-संपुडं कण्हग-गोणगेहिं आउत्तमादरेणं अरहद्व-घरद्व-खर-सण्हिग-चक्कमिव परिमंडलं भमालियं ताव णं खंडंति जाव णं संवच्छरं ।

ताहे तं तारिसं अच्चंत-घोर-दारुणं सारीर-मानसं महा-दुक्ख-सन्निवायं समनुभवेमाणेणं पाणाइक्कमं भवइ, तहा वि ते तेसिं अट्ठिगे नो फुडंति नो दो फले भवंति नो संदलिज्जंति नो विद्वलिज्जंति नो पधरिसंति, नवरं जाइं काइं वि संधि-संधाण-बंधणाइं ताइं सव्वाइं विच्छुडेत्ता णं विय जज्जरी भवंति । तओ णं इयरुवल-घरद्वस्सेव परिसवियं चुण्णमिव किंचि अंगुलाइयं अट्ठि-खंडं दद्वूणं अज्झयणं-४, उद्देसो-

ते रयणदिवगे परिओसमुव्वहंते सिला-संपुडाइं उच्चियाडिऊणं ताओ अंतरंड-गोलियाओ गहाय जे तत्थ तुच्छहणे ते अनेग-रित्थ संघाएणं विक्किणंति, एतेणं विहाणेणं गोयमा ते रयणदीव-निवासिणो मणुया ताओ अंतरंड-गोलियाओ गेण्हंति ।

से भयवं ! कहं ते वराए तं तारिसं अच्चंतघोर-दारुण-सुदूसहं दुक्ख-नियरं विसहमाणो निराहार-पाणगे संवच्छरं जाव पाणे वि धारयंति ? गोयमा! सकय-कम्माणुभावओ । सेसं तु पण्हावागरणवुद्धविवरणादवसेयं ।

[६७९] से भयवं ! तओ वी मए समाणे से सुमती जीवे कहं उववायं लभेज्जा ? गोयमा ! तत्थेव पडिसंतावदायगथले तेणेव कमेणं सत्त-भवंतरे तओ वि दुद्व-साणे तओ वि कण्हे तओ वि वाणमंतरे तओ वि लिंबत्ताए वणस्सईए । तओ वि मणुएसुं इत्थित्ताए तओ वि छट्ठीए तओ वि मनुयत्ताए कुट्ठी तओ वि वाणमंतरे तओ वि महाकाए जूहाहिवती गए तओ वि मरिऊणं मेहुणासत्ते अनंत-वनप्फतीए तओ वि अनंत-कालाओ मणुएसुं संजाए । तओ वि मणुए महानेमिस्सि तओ वि सत्तमाए तओ वि महामच्छे चरिमोयहिम्मि तओ सत्तमाए तओ वि गोणे तओ वि मणुए तओ वि विडव-कोइलियं तओ वि जलोयं वि महामच्छे तओ वि तंदुलमच्छे तओ वि सत्तमाए । तओ वि रासहे तओ वि साणे तओ वि किमी तओ वि ददुरे तओ वि तेउकाइए, तओ वि कुंथू तओ वि महुरे, तओ वि चडए, तओ वि उद्देहियं तओ वि वणप्फतीए तओ वि अनंत कालाओ मणुएसु इत्थीरयणं तओ वि छट्ठीए ।

तओ कणेरु तओ वि वेसामंडियं नाम पट्टणं-तत्थोवज्जाय-गेहासण्णे लिंबत्तेणं वणस्सई तओ वि मणुएसुं खुज्जित्थी तओ वि मणुयत्ताए पंडगे, तओ वि मणुयत्तेणं दुग्गए, तओ वि दमए, तओ वि पुढवादीसुं भव-काय-द्वितीए पत्तेयं, तओ मणुए तओ बाल-तवस्सी, तओ वाणमंतरे तओ वि पुरोहिणं तओ वि सत्तमीए, तओ वि मच्छे तओ वि सत्तमाए, तओ वि गोणे तओ वि मणुए महासम्मद्विटीए अविरए चक्कहरे, तओ पढमाए तओ वि इब्भे तओ वि समणे अनगारे, तओ वि अनुत्तरसुरे तओ वि

चक्कहरे महा-संघयणी भवित्ता णं निव्विण्ण-काम-भोगे जहोवइडं संपुन्नं संजमं काऊण गोयमा ! से णं सुमइ-जीवे परिनिव्वुडेज्जा ।

[६८०] तथा य जे भिक्खू वा भिक्खूणी वा परपासंडीणं पसंसं करेज्जा, जे या वि णं निण्हगाणं पसंसं करेज्जा, जे णं निण्हगाणं अनुकूलं भासेज्जा जे णं निण्हगाणं आययणं पविसेज्जा जे णं निण्हगाणं गंध-सत्थ-पयक्खरं वा परूवेज्जा, जे णं निण्हगाणं संतिए काय-किलेसाइए तवे इ वा संजमे इ वा नाणे इ वा विण्णाणे इ वा सुए इ वा पंडिच्चे इ वा अभिमुह-मुद्ध-परिसा-मज्झ-गए सलाहेज्जा, से वि य णं परमाहम्मिएसुं उववज्जेज्जा जहा सुमती ।

[६८१] से भयवं तेणं सुमइ जीवेणं तक्कालं समणत्तं अनुपालियं तथा वि एवंविहेहिं नारय-तिरिय-नरामर विचित्तोवाएहिं एवइयं संसाराहिंडणं ? गोयमा! णं जमागम-बाहाए लिंगगहणं कीरइ तं दंभमेव केवलं सुदीहसंसारहेऊभूयं, नो णं तं परियायं संजमे लिक्खइ तेणेव य संजमं दुक्करं मन्ने अन्नं च समणत्ताए एसे य पढमे संजम-पए जं कुसील-संसग्गी-निरिहरणं अहा णं नो निरिहरे ता संजममेव न ठाएज्जा ता तेणं सुमइणा तमेवायरियं तमेव पसंसियं तमेव उस्सप्पियं तमेव सलाहियं तमेवाणुट्टियं ति। एयं च सुत्तमइक्कमित्ताणं एत्थं पए जहा सुमती तथा अन्नेसिमवि सुंदर-विउर-सुदंसण-सेहरणीलभद्ध-सभोमे य - खग्गधारी तेणग-समण-दुद्धंत-देवरक्खियं-मुनि-नामादीणं को संखाणे करेज्जा ? ता एयमइं विइत्ताणं

अज्झयणं-४, उद्देसो-

कुसीलसंभोगे सव्वहा वज्जणीए ।

[६८२] से भयवं किं ते साहूणो तस्स णं नाइल-सइढगस्स छंदेणं कुसीले उयाहु आगम-जुत्तीए ? गोयमा ! कहं सइढगस्स वरायस्सेरिसो सामत्थो ? जो णं तु सच्छंदत्ताए महानुभावाणं सुसाहूणं अवण्णवायं भासे ? तेणं सइढगेणं हरिवसं-तिलय-मरगयच्छविणो बावीसइ-धम्म-तित्थयर-अरिइनेमि नामस्स सयासे वंदण-वत्तियाए गएणं आयारंगं अनंत-गमपज्जवेहिं पन्नविज्जमाणं समवधारियं । तत्थ य छत्तीसं आयारे पन्नविज्जंति । तेसिं च णं जे केइ साहू वा साहूणी वा अन्नयरमायारमइक्कमेज्जा से णं गारत्थीहिं उवमेयं अहण्णहा समणुट्ठे वा सस्यरेज्जा वा पन्नवेज्जा वा तओ णं अनंत-संसारी भवेज्जा ।

ता गोयमा ! जे णं तु मुहंनंतगं अहिगं परिग्गहियं तस्स ताव पंचम महव्वयस्स भंगो, जे णं तु इत्थीए अंगोवंगाइं निज्झाइऊण नालोइयं तेणं तु बंभचेरगुत्ती विराहिया, तच्चिराहणेणं जहा एग-देसदइढो पडो दइढो भण्णइ तथा चउत्थ-महव्वयं भग्गं । जेण य सहत्थेणुप्पाडिऊणादिण्णा भूइं पडिसाहिया तेणं तु तइय-महव्वयं भग्गं । जे ण य अनुग्गओ वि सूरिओ उग्गओ भणिओ तस्स य बीय-वयं भग्गं । जेण उ ण अफासुगोदगेण अच्छीणि पहोयाणि तथा अविहीए पहथंडिल्लाणं संकमणं कयं, बीयं कायं च अक्कंतं, वासा-कप्पस्स अंचलग्गेणं हरियं संघट्टियं, विज्जूए फूसिओ मुहंनंतगेणं अजयणाए फडफडस्स वाउक्कायमुदीरियं, ते णं तु पढम-वयं भग्गं **तब्भंगे पंचण्हं पि महव्वयाणं भंगो कओ,** आगमजुत्तीए एते कुसीला साहूणो, जे उ णं उत्तरगुणाणं पि भंगं न इडं किं पुण जं मूल-गुणाणं ?

से भयवं ! ता एय नाएणं वियारिऊणं महव्वए घेतव्वे ? गोयमा ! इमे अट्ठे समट्ठे । से भयवं के णं अट्ठेणं ? गोयमा ! सुमणे इ वा सुसावए इ वा, न तइयं भेयंतरं, अहवा जहोवइडं सुसमणत्तमनुपालिया अहा णं जहोवइडं सुसावगत्तमनुपालिया, नो समणो सुसमणत्तमइयरेज्जा, नो

सावए सावगत्तमइयरेज्जा, निरइयारं वयं पसंसे तमेव य समणुद्धे ! नवरं जे समणधम्मसे से णं अच्चंत-घोर-दुच्चरे तेणं असेस-कम्मकखयं जहन्नेणं पि अट्ट भवब्भंतरे मोक्खो, इयरेणं तु सुद्धेणं देव-गइं सुमाणुसत्तं वा साय-परंपरेणं मोक्खो, नवरं पुणो वि तं संजमाओ । ता जे से समण-धम्मसे से अवियारे सुवियारे पन्न वियार तह त्ति मनुपालिया उवासगाणं पुण सहस्साणि विधाने, जो जं परिवाले तस्साइयारं च न भवे, तमेव गिण्हे ।

[६८३] से भयवं ! सो उण नाइल-सइडगो कहिं समुप्पन्नो ? गोयमा! सिद्धीए, से भयवं ! कहं ? गोयमा ! ते णं महानुभागेणं तेसिं कुसीलाणं संसग्गिं नितुद्धेऊणं तीए चेव बहु सावय-तरु-संड-संकुलाए घोर-कंताराडवीए सव्व-पाव-कलिमल-कलंक-विप्पमुक्क तित्थयर-वयणं परमहियं सुदुल्लहं भवसएसुं पि त्ति कलिऊणं अच्चंत-विसुद्धासएणं फासुद्धेसम्मि निप्पडिकम्मं निरइयारं पडिवण्णं पडिवण्णं पायवोगमणमनसनं ति । अहण्णया तेणेव पएसेणं विहरमाणो समागओ तित्थयरो अरिद्धनेमी । तस्स य अनुग्गहद्धाए तेणे य अचलिय-सत्तो भव्वसत्तो त्ति काऊणं उत्तिमद्ध-पसाहणी कया साइसया देसणा तमायण्णमाणो सजल-जलहर-निनाय-देव-दुंदुही-निग्घोसं तित्थयर-भारइं सुहज्झवसायपरो आरूढो-खवग-सेदीए अउव्वकरणेणं अंतगड-केवली-जाओ ।

एते णं अट्टेणं एवं वुच्चइ जहा णं गोयमा सिद्धीए ता गोयमा ! कुसील संसग्गीए विप्पहियाए एवइयं अंतरं भवइ त्ति ।

◦ चउत्थं अज्झयणं समत्तं ◦

अज्झयणं-४, उद्देशो-

[अत्र चतुर्थाध्ययने बहवः सैद्धान्तिकाः केचिदालापकान् न सम्यक् श्रद्धेत्येव, तैरश्रद्धानैरस्माकमपि न सम्यक् श्रद्धानं । इत्याह हरिभद्रसूरिः न पुनः सर्वमेवेमेदं चतुर्थाध्ययनं । अन्यानि वा अध्ययनानि, अस्यैव कतिपयैः परिमितैः आलापकैरश्रद्धानमित्यर्थः यत् स्थान समवाय जीवाभिगम प्रज्ञापनादिषु न कथंचिदिदमाचख्ये यथा प्रतिसंतापक स्थलमस्ति, तद् गुहावासिनस्तु मनुजास्तेषु च परमा ऽधार्मिकाणां पुनः पुनः सप्ताऽष्टवारान् यावदुपपातस्तेषां च तैः तैदारुणैर्वज्रशिला धरद्दु संपुटैर्गिलितानां परिपीड्य मानानामपि संवत्सरं यावत् प्राणव्याप्तिर्न भवति । वृद्धवादस्तु पुनर्यथा तावद् इदम् आर्षसूत्रं विकृतिर्न तावदत्र प्रविष्टा, प्रभूताश्चात्र श्रुतस्कंधे अर्थाः सुष्ठवतिशयेन गणधरोक्तानि चेह वचनानिर्गतदेवं स्थिते न किंचिद् आशंकनीयम् इति ।]

-----x-----x-----x-----

◦ पंचम अज्झयणं-नवनीयसारं ◦

[६८४] एवं कुसील-संसग्गिं सव्वोवाएहिं पयहिउं ।

उम्मग्ग-पट्टियं गच्छं जे वासे लिंग-जीविणं ॥

[६८५] से णं निव्विग्घमकिलिद्धं सामन्नं संजमं तवं ।

न लभेज्जा तेसिं याभावे मोक्खे दूरयरं ठिए ॥

[६८६] अत्थेगे गोयमा पाणी जे ते उम्मग्ग-पट्टियं ।

गच्छं संवासइत्ताणं भमती भव-परंपरं ॥

[६८७] जामद्ध-जाम-दिन-पक्खं मासं संवच्छरं पि वा ।

सम्मग्ग-पट्टिए गच्छे संवसमाणस्स गोयमा ॥

[६८८] लीलायऽलसमाणस्स निरुच्छाहास्स धीमणं ।

पेक्खो वक्खीए अन्नेसुं महानुभागाणं साहुणं ॥

[६८९] उज्जमं सव्व-थामेसुं घोर-वीर-तवाइयं ।

ईसक्खा-संक-भय-लज्जा तस्स वीरियं समुच्छले ॥

[६९०] वीरिएणं तु जीवस्स समुच्छलिएण गोयमा ।

जम्मंतरकए पावे पाणी हियएण निडुवे ॥

[६९१] तम्हा निउणं मइ भालेउं गच्छं संमग्गपट्टियं ।

निवसेज्ज तत्थ आजम्मं गोयमा संजए मुणी ॥

[६९२] से भयवं कयरे णं से गच्छे जे णं वासेज्जा ? एवं तु गच्छस्स पुच्छा जाव णं वयासी । गोयमा! जत्थ णं सम-सत्तु-मित्त-पक्खे अच्चंत-सुनिम्मल-विसुद्धंत-करणे आसायणा-भीरू सपरो-वयारमब्भुज्जए अच्चंत-छज्जीव-निकाय-वच्छले सव्वालंबन-विप्पमुक्के अच्चंतमप्पमादी सविसेस-बितिय-समय-सब्भावे रोद्ध-ज्झाण-विप्पमुक्के सव्वत्थ अनिगूहिय-बल-वीरिय-पुरिसक्कार-परक्कमे, एगंतेणं संजती-कप्प-परिभोग-विरए एगंतेणं धम्मंतराय-भीरू एगंतेणं तत्त-रुई एगंतेणं जहा सत्तीए अट्टारसण्हं सीलंग-सहस्साणं आराहगे सयलमहन्निसानुसमयमगिलाए जहोवइइ-मग्ग-परूवए बहु-गुण-कलिए मग्गट्टिए सपरोवयारमब्भुज्जए अच्चंतं अखलिय-सीले महायसे महासत्ते महानुभागे नाण-दंसण-चरण-गुणोववेए गणी ।

अज्झयणं-५, उद्देसो-

[६९३] से भयवं! किमेस वासेज्जा? गोयमा! अत्थेगे जे णं वासेज्जा अत्थेगे जे णं नो वासेज्जा? से भयवं! केणं अट्टेणं एवं वुच्चइ अत्थेगे जे णं वासेज्जा, अत्थेगे जे णं नो वासेज्जा ? गोयमा ! अत्थेगे जे णं आणाए ठिए जहा णं गोयमा ! अत्थेगे जे णं आणा-विराहगे । जे णं आणा-ठिए से णं सम्मदंसण-नाण-चारित्ताराहगे । जे णं सम्मदंसण-नाण-चरित्ताराहगे से णं गोयमा ! अच्चंत-विऊ सुपवरकम्मज्जए मोक्खमग्गे, जे य उ णं आणा-विराहगे से णं अनंतानुबंधी कोहे से णं अनंतानुबंधी माने से णं अनंतानुबंधी कइयवे से णं अनंतानुबंधी लोभे, जे णं अनंतानुबंधी कोहाइ कसाय-चउक्के से णं घन-राग-दोस-मोह-मिच्छत्त-पुंजे । जे णं घन-राग-दोस-मोह-मिच्छत्त-पुंजे से णं अनुत्तरे घोर-संसारे समुद्धे, जे णं अनुत्तर-घोर-संसार-समुद्धे से णं पुणो पुणो जम्मं पुणो पुणो जरा पुणो पुणो मच्चू, जे णं पुणो पुणो जम्म-जरा-मरणे से णं पुणो पुणो बहू भवंतर-परावत्ते, जे णं पुणो पुणो बहू भवंतर-परावत्ते से णं पुणो पुणो चुलसीइ-जोणि-लक्खमाहिंडणं ।

जे णं पुणो पुणो चुलसीइ-जोणि-लक्खमाहिंडणं से णं पुणो पुणो सुदूसहे घोर-तिमिसंधयारे रुहिर-चिलिच्चिल्ले वसा-पूय-वंत-पित्त-सिंभ-चिक्खल्ल-दुग्गंधासुइ-चिलीण-जंवाल-केस किव्विस खरंट पडिपुन्ने अनिद्ध-उव्वियणिज्ज-अइघोर-चंडमहारोद्धदुक्खदारुणे गब्भ-परंपरा-पवेसे, जे णं पुणो पुणो दारुणे गब्भ-परंपरा-पवेसे से णं दुक्खे से णं केसे से णं रोगायंके से णं सोग-संतावुव्वेयगे जे णं दुक्ख-केस-रोगायंके-सोग-संतावुव्वेयगे से णं अनिव्वुत्ती, जे णं अनिव्वुत्ती से णं जहिद्ध-मनोरहाणं असंपत्ती, जे णं जहिद्धमनोरहाणं असंपत्ती से णं ताव पंचप्पयार-अंतराय-कम्मोदए । जत्थ णं पंचप्पयार-अंतराय-कम्मोदए तत्थ णं सव्व-दुक्खाणं अग्गणीभूए पढमे ताव दारिद्धे, जे णं दारिद्धे से णं अयसब्भक्खाण अकित्ती-कलंकरासीणं मेलावगागमे ।

जे णं अयसब्भकखाण-अकित्ती-कलंक-रासीणं मेलावगागमे से णं सयल-जन-लज्जणिज्जे निंदणिज्जे गरहणिज्जे खिसणिज्जे दुगुंछणिज्जे सव्व-परिभूए जीविए । जे णं सव्व-परिभूए जीविए से णं सम्मदंसण-नाण-चारित्ताइगुणेहिं सुदूरयेरणं विप्पमुक्के चेव मणुय जम्मे अन्नहा वा सव्व परिभूए चेव न भवेज्जा, जे णं सम्मदंसण-नाण-चारित्ताइ गुणेहिं सुदूरयेरणं विप्पमुक्के चेव न भवे से णं अनिरुद्धासवदारत्ते चेव । जे णं अनिरुद्धासवदारत्ते चेव से णं बहल-थूल-पावकम्माययणे, जे णं बहल-थूल-पाव-कम्माययणे से णं बंधे से णं बंधी से णं गुत्ती से णं चारगे से णं सव्वमकल्लाणममंगल-जाले दुत्विमोक्खे कक्खड-घन-बद्ध-पुट्ट-निकाइए कम्म-गंठी ।

जे णं कक्खड-घन-बद्ध-पुट्ट-निकाइय-कम्म-गंठी से णं एगिंदियत्ताए बेइंदियत्ताए तेइंदियत्ताए चउरिंदियत्ताए पंचेदियत्ताए नारय-तिरिच्छ-कुमानुसेसुं अनेगविहं सारीर-मानसं दुक्खमनुभवमाणे णं वेइयव्वं । एएणं अट्टेणं एवं वुच्चइ जहा अत्थेगे जे णं वासेज्जा, अत्थेगे जे णं नो वासेज्जा ।

[६९४] से भयवं किं मिच्छत्ते णं उच्छाइए केइ गच्छे भवेज्जा ? गोयमा ! जे णं से आणा-विराहगे गच्छे भवेज्जा, से णं निच्छयओ चेव मिच्छत्तेणं उच्छाइए गच्छे भवेज्जा । से भयवं कयरा उ ण सा आणा जीए ठिए गच्छे आराहगे भवेज्जा ? गोयमा! संखाइएहिं थाणंतरेहिं गच्छस्स णं आणा पन्नत्ता, जीए ठिए गच्छे आराहगे भवेज्जा ।

[६९५] से भयवं किं तेसिं संखातीताणं गच्छमेरा थाणंतराणं अत्थि, केई अन्नयरे थाणंतरेण जे णं उसग्गेणं वा अववाएण वा कहं चिय पमाय-दोसेणं असई अइक्कमेज्जा अइक्कंतेणं वा अज्झयणं-५, उदेसो-

आराहगे भवेज्जा ? गोयमा निच्छयओ नत्थि । से भयवं के णं अट्टेणं एवं वुच्चइ ?

गोयमा! तित्थयरे णं ताव तित्थयरे तित्थे पुण चाउवण्णे समणसंघे, से णं गच्छेसुं पइट्टिए, गच्छेसुं पि णं सम्मदंसण-नाण-चारित्ते पइट्टिए । ते य सम्मदंसण-नाण-चारित्ते परमपुज्जाणं पुज्जयरे परम-सरण्णाणं सरण्णे परम-सेव्वाणं सेव्वयरे । ताइं च जत्थ णं गच्छे अन्नयरे ठाणे कत्थइ विराहिज्जंति से णं गच्छे समग्ग-पणासए उम्मग्ग-देसए । जे णं गच्छे सम्मग्ग-पणासगे उम्मग्ग-देसए से णं निच्छयओ चेव अनाराहगे । एएणं अट्टेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ जहा णं संखादीयाणं गच्छ-मेरा ठाणंतराणं जे णं गच्छे एगमन्नयरट्ठाणं अइक्कमेज्जा से णं एगंतेणं चेव आणाविराहगे ।

[६९६] से णं भयवं केवइयं कालं जाव गच्छस्स णं मेरा पन्नविया केवतियं कालं जाव णं गच्छस्स मेरा नाइक्कमेयव्वा? गोयमा! जाव णं महायसे महासत्ते महानुभागे दुप्पसहे णं अनगारे ताव णं गच्छमेरा पन्नविया जाव णं महायसे महासत्ते महानुभागे दुप्पसहे अनगारे ताव णं गच्छमेरा नाइक्कमेयव्वा ।

[६९७] से भयवं! कयरेहि णं लिंगेहिं वइक्कमियमेरं आसायणा-बहुलं उम्मग्ग-पट्टियं गच्छं वियाणेज्जा? गोयमा! जं असंठवियं सच्छंदयारिं अमुणियसमयसब्भावं लिंगोवजीविं पीढग फलहग-पडिबद्धं अफासु-बाहिर-पाणग-परिभोइं अमुणिय-सत्तमंडली-धम्मं सव्वावस्सग-कालाइक्कमयारिं आवस्सग-हानिकरं ऊणाइरित्ता-वस्सगपवित्तं, गणणा-पमाण-ऊणाइरित्त-रयहरण-पत्त-दंडग-मुहनंतगाइ-उवगरणधारिं गुरुवगरण-परिभोइं उतरगुणविराहगं गिहत्थच्छंदानुवित्ताइं सम्माणपवित्तं पुढवि-दगागणि-वाऊ-वणप्फती-बीय-काय-तस-पाण-बि-ति-चउ-पंचेदियाणं कारणे वा अकारणे वा असती पमाय-दोसओ संघट्टणादीसुं अदिट्ठ-

दोसं आरंभ-परिग्गह-पवित्तं अदिन्नालोयणं विग्गहा-सीलं अकालयारिं अविहि-संगहिओवगहिय-अपरिक्खिय
 पच्चा वि उवट्ठाविय-असिक्खाविय-दसविह-विनय-सामायारिं लिंणिणं इड्ढि-रस-साया-गारव जाइयमय
 चउक्कसाय ममकार-अहंकार कलि-कलह-झंझा-डमर रोद्धज्झाणोवगयं अठाविय-बहु-मयहरं दे देहि त्ति
 निच्छोडियकरं बहु-दिवस-कय-लोयं विज्जा-मंत-तंत-जोग-जाणाहिज्जनेक्क बद्धकक्खं अवूढ-मूल जोग-
 निओगं दुक्कालाई-आलंबणमासज्ज अकप्प-कीयगाइपरिभुंजणसीलं जं किं चि रोगायं कमालंबिय
 तिग्गिच्छाहिणंदणसीलं जं किं चि रोगायं कमासीय दिया-तुयट्ठण-सीलं कुसील-संभासणाणुवित्तिकरणसीलं
 अगीयत्थ-सुह-विणिग्गय-अनेग-दोस-पायइड्ढि-वयणाणुट्ठाण-सीलं असि धणु खग्ग-गंडिव-कौत-चक्काइ
 पहरण-परिग्गहिया-हिंडनसीलं साहुवेसुज्झिय अन्नवेस परिवत्तकयाहिंडणसीलं एवं जाव णं अद्दुट्ठाओ
 पयकोडिओ ताव णं गोयमा ! असंठवियं चव गच्छं वायरेज्जा ।

[६९८] तथा अन्ने इमे बहुप्पगारे लिंणे गच्छस्स णं गोयमा! समासओ पन्नविज्जंति । एते
 य णं पयरिसेणं गुरुगुणे विन्नेए, तं जहा-गुरु ताव सव्व-जग-जीव-पाण-भूय-सत्ताणं माया भवइ किं पुण
 जं गच्छ से णं सीस-गणाणं एगंतेणं हियं मियं पत्थं इह-परलोगसुहावहं आगमानुसारेणं हिओवएसं
 पयाइ । से णं देविंद-नरिंद रिद्धि लंभाणं पि पवरुत्तमे गुरुवएसप्पयाणं लंभे ।

तं च सत्ताणुकंपाए परम दुक्खिए जम्म जरा मरणादीहि णं इमे भव्वसत्ता कहं नु नाम
 सिव सुहं पावंतु त्ति काऊणं गुरुवएसं पयाइ, नो णं वसाणाहिभूए अहो णं गहग्घत्थे उम्मत्ते अत्थि एइ
 वा जहा णं मम इमेणं हिओवएस-पयाणेणं अमुग्ग-लाभं भवेज्जा, नो णं गोयमा गुरुसीसगाणं निस्साए
 संसारमुत्तरेज्जा नो णं परकएहिं सुहासुहेहिं कस्सइ संबंध अत्थि ।

अज्झयणं-५, उद्देशो-

[६९९] ता गोयमेत्थ एवं ठियम्मि जइ दढ-चरित्त-गीयत्थे ।

गुरु-गुण-कलिए य गुरु भणेज्ज असइं इमं वयणं ॥

[७००] मिणगोणसंगुलीए गणेहिं वा दंत-चक्कलाइं से ।

तं तहमेव करेज्जा कज्जंतु तमेव जाणंति ॥

[७०१] आगम-विऊ कयाई सेयं कायं भणेज्ज आयरिया ।

तं तथा सद्वहियव्वं भवियव्वं कारणेण तहिं ॥

[७०२] जो गिणहइ गुरु-वयणं भणंतं भावओ पसन्न-मनो ।

ओसहमिव पिज्जंतं तं तस्स सुहावहं होइ ॥

[७०३] पुन्नेहिं चोइया पुर-कएहिं सिरि-भायणा भविय सत्ता ।

गुरुं आगमेसि-भद्दा देवयमिव पज्जुवासंति ॥

[७०४] बहु-सोक्ख-सय-सहस्साण दायगा मोयगा दुह-सयाणं ।

आयरिया फुडमेयं केसि पएसीए ते हेऊ ॥

[७०५] नरय-गइ-गमन-परिहत्थए कए तए पएसिणा रन्ना ।

अमर-विमाणं पत्तं तं आयरियप्पभावेणं ॥

[७०६] धम्ममइएहिं अइसुमहुरेहिं कारण-गुणोवणीएहिं ।

पल्हायंतो हिययं सीसं चोएज्जा आयरिओ ॥

[७०७] एत्थं चारयियाणं पणपन्नं होंति कोडि-लक्खाओ ।

कोडि-सहस्से कोडि-सए य तह एत्तिए चेव ॥

[७०८] एतेसिं मज्झाओ एगे निव्वडइ गुण-गणाइण्णे ।

सव्वुत्तम भंगेणं तित्थयरस्साणुसरिस गुरु ॥

[७०९] से चेय गोयमा ! देयवयणा सूरित्थ नायसेसाइं ।

तं तह आराहेज्जा जह तित्थरे चउव्वीसं ॥

[७१०] सव्वमवी एत्थ पए दुवालसंगं सुयं भाणियव्वं ।

भवइ तहा वि मिणमो समाससारं परं भण्णे [तंजहा] ॥

[७११] मुणिणो संघं तित्थं गण-पवयण-मोक्ख-मग्ग-एगट्ठा ।

दंसण-नाण-चरित्ते घोरुग्ग-तवं चेव गच्छ-नामे य ॥

[७१२] पयलंति जत्थ धग धगधगस्स गुरुणा वि चोयए सीसे ।

राग-दोसेणं अह अनुसएण तं गोयम न गच्छं ॥

[७१३] गच्चं महानुभागं तत्थ वसंताण निज्जरा विउला ।

सारण-वारण-चोयणमादीहिं न दोस-पडिवत्ती ॥

[७१४] गुरुणो छंदणुवत्ते सुविनीए जिय-परीसहे धीरे ।

न वि थद्धे न वि लुद्धे न वि गारविए न वि गहसीले ॥

[७१५] खंते दंते मुत्ते गुत्ते वेरग्गं-मग्गमल्लीणे ।

दस-विह सामायारी आवस्सग संजमुज्जुत्ते ॥

अज्झयणं-५, उद्देशो-

[७१६] खर-फरुस-कक्कसानिद्ध-दुद्ध-निद्धुर-गिराए सयहुत्तं ।

निब्भच्छण-निद्धडणमाईहिं न जे पओसंति ॥

[७१७] जे य न अकित्ति-जणए नाजस-जणए नऽकज्जकारी य ।

न य पवयण-उड्डाहकरे कंठग्गय-पाण-सेसे वि ॥

[७१८] सज्झाय-झाण-निए धोरतव-चरण-सोसिय-सरीरे ।

गय-कोह-मान-कइयव दूरुज्झय राग-दोसे य ॥

[७१९] विनओवयारकुसले सोलसविह-वयण-भासणे कुसले ।

निरवज्ज-वयण-भणिरे न य बहु-भणिरे न पुणऽभणिरे ॥

[७२०] गुरुणा कज्जमकज्जे खर-कक्कस-फरुस-निद्धुरमनिद्धं ।

भणिरे तह त्ति इत्थं भणंति सीसे-तयं गच्छं ॥

[७२१] दूरुज्झय-पत्ताइसु ममत्तए निप्पिहे सरीरे वि ।

जाया-मायाहारे बायालीसेसणा कुसले ॥

[७२२] तं पि न रूव-रसत्थं भुंजंताणं न चेव दप्पत्थं ।

अक्खोवंग-निमित्तं संजम-जोगाण वहणत्थं ॥

[७२३] वेयण-वेयावच्चे इरियट्ठाए य संजमट्ठाए ।

तह पाण-वत्तियाए छट्ठं पुण धम्म-चिंताए ॥

[७२४] अपुव्व-नाण-गहणे थिर-परिचिय-धारणेक्कमुज्जुत्ते ।

सुत्तं अत्थं उभयं जाणंति अनुद्वयंति सया	॥
[७२५] अद्वुद्व-नाण-दंसण चारित्तायार नव-चउक्कंमि ।	
अनिगूहिय-बल-विरिए अगिलाए धणियमाउत्ते	॥
[७२६] गुरुणा खर-फरुसानिद्व दुद्व-निद्वुर-गिराए सयहुत्तं ।	
भणिरे नो पडिसूरिं ति जत्थ सीसे तयं गच्छं	॥
[७२७] तवसा अचिंत-उप्पन्न-लद्धि-साइसय-रिद्धि-कलिए वि ।	
जत्थ न हीलेंति गुरुं सीसे तं गोयमा ! गच्छं	॥
[७२८] तेसद्धि-ति-सय-पावाउयाण विजया विदत्त-जस-पुंजे ।	
जत्थ न हीलेंति गुरुं सीसे तं गोयमा ! गच्छं	॥
[७२९] जत्थाखलियममिलियं अच्चाइद्धं पयक्खर-विसुद्धं ।	
विनओवहाण-पुच्चं दुवालसंगं पि सुय-नाणं	॥
[७३०] गुरु-चलण-भत्ति-भर निब्भरेक्क-परिओस लद्धमालावे ।	
अज्झीयंति सुसीसा एगग्गमना स गोयमा ! गच्छे	॥
[७३१] स-गिलाण-सेह-बालाउलस्स गच्छस्स दसविहं विहिणा ।	
कीरइ वेयावच्चं गुरु-आणत्तीए तं गच्छं	॥
[७३२] दस-विह-सामायारी जत्थद्विए भव्व-सत्त-संघाए ।	
सिज्झंति य बुज्झंति य न य खंडिज्जइ तयं गच्छे	॥

अज्झयणं-५, उद्देशो-

[७३३] इच्छा मिच्छा तहक्कारो आवस्सिया य निसीहिया ।	
आउंछणा य पडिपुच्छा छंदणा य निमंतणा	।
उवसंपया य काले सामायारी भवे दस-विहाओ	॥
[७३४] जत्थ य जिद्व-कनिद्वो जाणज्जइ जेद्व-विनय-बहुमानं ।	
दिवसेणं वि जो जेद्वो नो हीलिज्जइ तयं गच्छं	॥
[७३५] जत्थ य अज्जा कप्पं पाण-च्चाए वि रोरव-दुब्भिकखे ।	
न य परिभुज्जइ सहसा गोयम गच्छं तयं भणियं	॥
[७३६] जत्थ य अज्जाहि समं थेरा वि न उल्लवंति गय-दसना ।	
न य निज्झायंतिथी अंगोवंगाइं तं गच्छं	॥
[७३७] जत्थ य संनिहि-उक्खड-आहड-मादीण नाम-गहणे वि ।	
पूइ-कम्माभीए आउत्ता कप्प तिप्पंति	॥
[७३८] जत्थ य पच्चंगुब्भड-दुज्जइ-जोव्वण-मरद्व-दप्पेणं ।	
वाहिज्जंता वि मुनी निक्खंति तिलोत्तमं पि तं गच्छं	॥
[७३९] वाया-मित्तेण वि जत्थ भद्व-सीलस्स निग्गहं विहिणा ।	
बहु-लद्धि-जुयस्सावी कीरइ गुरुणा तयं गच्छं	॥
[७४०] मउए निहुय-सहावे हास-दव-वज्जिए विगह-मुक्के ।	
असमंजसमकरेंते गोयर-भूमद्व विहरंति	॥

- [७४१] मुणिणो नाणाभिग्गह दुक्कर पच्छित्तमनुचरंताणं ।
जायइ चित्त-चमक्कं देविंदाणं पि तं गच्छं ॥
- [७४२] जत्थ य वंदन-पडिक्कमणमाइ मंडलि विहाणनिउण-ण्णू ।
गुरुणो अखलिय-सीले सययं कडुग्ग-तव-निरए ॥
- [७४३] जत्थ य उसभादीणं तित्थयराणं सुरिदमहियाणं ।
कम्मद्व-विप्पमुक्काण आणं न खलिज्जइ स गच्छो ॥
- [७४४] तित्थयरे तित्थयरे तित्थं पुण जाण गोयमा ! संघं ।
संघे य ठिए गच्छे गच्छ-ठिए-नाण-दंसण-चरित्ते ॥
- [७४५] नादंसणस्स नाणं दंसणनाणे भवंति सव्वत्थ ।
भयणा चारित्तस्स उ दंसण-नाणे धुवं अत्थि ॥
- [७४६] नाणी दंसण-रहिओ चरित्त-रहिओ उ भमइ संसारे ।
जो पुण चरित्त-जुत्तो सो सिज्जइ नत्थि संदेहो ॥
- [७४७] नाणं पगासयं सोहओ तवो संजमो उ गुत्तिकरो ।
तिण्हं पि समाओगे मोक्खो नेक्कस्स वि अभावे ॥
- [७४८] तस्स वि य संकंगाइं नाणादि-तिगस्स खंति-मादीणि ।
तेसिं चेक्केक्क-पयं जत्थाणुद्विजइ स गच्छो ॥
- [७४९] पुढवि-दगागणि-वाऊ-वणप्फई तह तसाण विविहाणं ।

अज्झयणं-५, उद्देसो-

- मरणंते वि न मनसा कीरइ पीडं तयं गच्छं ॥
- [७५०] जत्थ य बाहिर-पाणस्स बिंदु-मेत्तं पि गिम्ह-मादीसुं ।
तण्हा-सोसिय-पाणे मरणे वि मुनी न इच्छंति ॥
- [७५१] जत्थ य मूल-विसूइय-अन्नयरे वा विचित्त-मायंके ।
उप्पन्ने जलणुज्जालणाइं न करे मुनी तयं गच्छं ॥
- [७५२] जत्थ य तेरसहत्थे अज्जाओ परिहरंति नाण-धरे ।
मनसा सुय-देवयमिव सव्वमिवीत्थी परिहरंति ॥
- [७५३] इति-हास-खेइड-कंदप्प नाह-वादं न कीरण जत्थ ।
धोवण-डेवण-लंघण न मयार-जयार-उच्चरणं ॥
- [७५४] जत्थित्थी-कर-फरिसं अंतरियं कारणे वि उप्पन्ने ।
दिट्ठीविस-दित्तग्गी-विसं व वज्जिज्जइ स गच्छो ॥
- [७५५] जत्थित्थी-कर-फरिसं लिंगी अरहा वि सयमवि करेज्जा ।
तं निच्छयओ गोयम ! जाणिज्जा मूल-गुण-बाहा ॥
- [७५६] मूल-गुणेहिं उ खलियं बहु-गुण-कलियं पि लद्धि-संपन्नं ।
उत्तम-कुले वि जायं निद्धाडिज्जइ जहिं तयं गच्छं ॥
- [७५७] जत्थ हिरण्ण-सुवण्णे धण-धन्ने कंस-दूस-फलहाणं ।
सयणाणं आसणाणं य न य परिभोगो तयं गच्छं ॥

- [७५८] जत्थ हिरण्ण-सुवण्णं हत्थेण परागयं पि नो च्छिप्पे ।
कारण-समप्पियं पि हु खण-निमिसद्धं पि तं गच्छं ॥
- [७५९] दुद्धर-बंधव्वयपालणद्ध अज्जाण चवल-चित्ताणं ।
सत्त सहस्सा परिहार-ट्ठाण वी जत्थत्थि तं गच्छं ॥
- [७६०] जत्थुत्तरवडपडिउत्तरेहिं अज्जाओ साहुणा सद्धिं ।
पलवंति सुकुद्धा वी गोयम ! किं तेन गच्छेणं ? ॥
- [७६१] जत्थ य गोयम बहु विहविकप्प-कल्लोल-चंचल-मणाणं ।
अज्जाणमनुट्टिज्जइ भणियं तं केरिसं गच्छं ? ॥
- [७६२] जत्थेक्कंगसरीरो साहू अह साहूणि व्व हत्थ सया ।
उड्ढं गच्छेज्ज बहिं गोयमा ! गच्छंमि का मेरा ? ॥
- [७६३] जत्थ य अज्जाहि समं संलावुल्लाव-माइ-ववहारं ।
मोत्तुं धम्मवएसं गोयम ! तं केरिसं गच्छं ? ॥
- [७६४] भयवमनियत्त-विहारं नियय-विहार न ताव साहूणं ।
कारण नीयावासं जो सेवे तस्स का वत्ता ? ॥
- [७६५] निम्मम-निरहंकारे उज्जुत्ते नाण-दंसण-चरित्ते ।
सयलांरभ-विमुक्के अप्पडिबद्धे स-देहे वि ॥
- [७६६] आयारमायरंते एगक्खेत्ते वि गोयमा मुणिणो ।

अज्झयणं-५, उद्देसो-

- वास-सयं पि वसंते गीयत्थेऽऽराहगे भणिए ॥
- [७६७] जत्थ समुद्देस-काले साहूणं मंडलीए अज्जाओ ।
गोयम ! ठवंति पादे इत्थी-रज्जं न तं गच्छं ॥
- [७६८] जत्थ य हत्थ-सए वि य रयणीचारं चउण्हमूणाओ ।
उड्ढं दसण्णमसइं करंति अज्जाउं नो तयं गच्छं ॥
- [७६९] अववाएणं वि कारण-वसेण अज्जा चउण्हमूणाओ ।
गाऊयमवि परिसक्कंति जत्थ तं केरिसं गच्छं ॥
- [७७०] जत्थ य गोयम साहू अज्जाहिं समं पहम्मि अदूणा ।
अववाएण वि गच्छेज्ज तत्थ गच्छम्मि का मेरा ? ॥
- [७७१] जत्थ य ति-सद्धि-भेयं चक्खूरागग्गु दीरणिं साहू ।
अज्जाओ निरिक्खेज्जा तं गोयम ! केरिसं गच्छं ॥
- [७७२] जत्थ य अज्जा लद्धं पडिग्गहमादि-विविहमुवगरणं ।
परिभुज्जइ साहूहिं तं गोयमा ! केरिसं गच्छं ॥
- [७७३] अइदुलहं भेसज्जं बल-बुद्धि-विवद्धणं पि पुट्टिकरं ।
अज्जा लद्धं भुज्जइ का मेरा तत्थ गच्छम्मि ? ॥
- [७७४] सोऊण गई सुकुमालियाए तह ससग-भसग-भइणीए ।
ताव न वीससियव्वं सेयट्ठी धम्मिओ जाव ॥

- [७७५] दढचारित्तं मोत्तुं आयरियं मयहरं च गुण-रासिं ।
अज्जा अज्जावेइ तं अनगारं न तं गच्छं ॥
- [७७६] घन-गज्जिय हय-कुहुकुहुय-विज्जु-दुगेज्ज-मूढ-हिययाओ ।
होज्जा वावारियाओ इत्थी रज्जं न तं गच्छं ॥
- [७७७] पच्चक्खा सुयदेवी तव-लद्धीए सुराहिव-नुया वि ।
जत्थ रिएज्जेक्कज्जा इत्थीरज्जं न तं गच्छं ॥
- [७७८] गोयम! पंच-महव्वय गुत्तीणं तिण्हं पंच-समिईणं ।
दस-विह-धम्मस्सेक्कं कहवि खलिज्जइ न तं गच्छं ॥
- [७७९] दिण-दिक्खियस्स दमगस्स अभिमुहा अज्ज चंदणा अज्जा ।
नेच्छइ आसन-गहणं सो विनओ सव्व-अज्जाणं ॥
- [७८०] वास-सय-दिक्खियाए अज्जाए अज्ज-दिक्खिओ साहू ।
भत्तिब्भर-निब्भराए वंदन-विणएण सो पुज्जो ॥
- [७८१] अज्जिय-लाभे गिद्धा सएण लाभेण जे असंतुद्धा ।
भिक्खायरिया-भग्गा अन्नियउत्तं गिराहिति ॥
- [७८२] गय-सीस-गणं ओमे भिक्खायरिया-अपच्चलं थेरं ।
गणिहिति न ते पावे अज्जियलाभं गवेसंता ॥
- [७८३] ओमे सीस-पवासं अप्पडिबद्धं अजंगमत्तं च ।

अज्जयणं-५, उद्देशो-

- न गमेज्ज एगखित्ते गणेज्ज वासं निययवासी ॥
- [७८४] आलंबणाण भरिओ लोओ जीवस्स अजउकामस्स ।
जं जं पेच्छइ लोए तं तं आलंबनं कुणइ ॥
- [७८५] जत्थ मुणीण कसाए चमढिज्जंतेहिं पर-कसाएहिं ।
नेच्छेज्ज समुट्ठेउं सुनिविट्ठो पंगुलो व्व तयं गच्छं ॥
- [७८६] धम्मंतराय-भीए भीए संसार-गब्भ-वसहीणं ।
नोदीरिज्ज कसाए मुनी मुणीणं तयं गच्छं ॥
- [७८७] सील-तव-दान-भावन चउविह-धम्मंतराय भय-भीए ।
जत्थ बहू गीयत्थे गोयम गच्छं तयं वासे ॥
- [७८८] जत्थ य कम्मविवागस्स चेद्वियं चउगईए जीवाणं ।
नाऊण महवरद्धे वि नो पकुप्पंति तं गच्छं ॥
- [७८९] जत्थ य गोयम ! पंचण्हं कहवि सूणाण एक्कमवि होज्जा ।
तं गच्छं तिविहेणं वोसिरिय वएज्ज अन्नत्थ ॥
- [७९०] सूणारंभ-पवित्तं गच्छं वेसुज्जलं च न वसेज्जा ।
जं चारित्त-गुणेहिं तु उज्जलं तं निवासेज्जा ॥
- [७९१] तित्थयरसमे सूरी दुज्जय-कम्मट्ठ-मल्ल-पडिमल्ले ।
आणं अइक्कमंते ते कापुरिसे न सप्पुरिसे ॥

- [७९२] भट्टायारो सूरी भट्टायारानुवेक्खओ सूरि ।
उम्मग्ग-ठिओ सूरी तिन्नि वि मग्गं पणासेति ॥
- [७९३] उम्मग्गए-ठिए सूरिम्मि निच्छियं भव्व-सत्त-संघाए ।
जम्हा तं मग्गमनुसरंति तम्हा न तं जुत्तं ॥
- [७९४] एककं पि जो दुहत्तं सत्तं परिबोहिउं ठवे मग्गे ।
ससुरासुरम्मि वि जगे तेणेहं घोसियं अमाधायं ॥
- [७९५] भूए अत्थि भविस्संति केई जग-वंदनीय-कम-जुगले ।
जेसिं परहिय-करणेक्क-बद्ध-लक्खाण वोलिही कालं ॥
- [७९६] भूए अनाइ-कालेण केई होहिंति गोयमा ! सूरि ।
नामग्गहणेण वि जेसिं होज्ज नियमेणं पच्छित्तं ॥
- [७९७] एयं गच्छ-ववत्थं दुप्पसहानंतरं तु जो खंडे ।
तं गोयम जाण गणिं निच्छयओ ऽनंत-संसारी ॥
- [७९८] जं सयल-जीव जग-मंगलेक्क कल्लाण-परम-कल्लाणे ।
सिद्धि-पहे वोच्छिन्ने पच्छित्तं होइ तं गणिणो ॥
- [७९९] तम्हा गणिणा सम-सत्तु मित्त-पक्खेण परहिय-रणं ।
कल्लाण-कंखुणा अप्पणो य आणा न लंघेया ॥
- [८००] एवं मेरा णं लंघेयव्व त्ति,

|

अज्झयणं-५, उद्देसो-

- एयं गच्छ ववत्थं लंघेत्तु ति-गारवेहिं पडिबद्धे ।
संखाईए गणिणो अज्ज वि बोहिं न पाविति ॥
- [८०१] न लभेहिंति य अन्ने अनंत-हुत्तो वि परिभमंतेत्थं ।
चउ-गइ-भव-संसारे चेद्देज्जा चिरं सुदुक्खत्ते ॥
- [८०२] चोद्धस-रज्जू-लोगे गोयम ! वालग्ग-कोडिमेत्तं पि ।
तं नत्थि पएसं जत्थ अनंत-मरणे न संपत्ति ॥
- [८०३] चुलसीइ-जोणि-लक्खे सा जोणी नत्थि गोयमा ! इहइं ।
जत्त न अनंतहुत्तो सव्वे जीवा समुप्पन्ना ॥
- [८०४] सूईहिं अग्गि-वन्नाहिं संभिन्नस्स निरंतरं ।
जावइयं गोयमा ! दुक्खं गब्भे अट्ट-गुणं तयं ॥
- [८०५] गब्भाओ निप्फिडंतस्स जोणी-जंत-निपीलणे ।
कोडी-गुणं तयं दुक्खं कोडाकोडि-गुणं पि वा ॥
- [८०६] जायमाणेण जं दुक्खं मरमाणेण जंतूणं ।
तेणं दुक्ख-विवागेणं जाइं न सरंति अत्ताणिं ॥
- [८०७] नाणाविहासु जोणीसु परिभमंतेहिं गोयमा ! ।
तेण दुक्ख-विवाएणं संभरिएण न जिव्वए ॥

[८०८] जम्म-जरा-मरण-दोग्गच्च वाहीओ चिट्ठंतु ता ।
लज्जेज्जा गब्भ-वासेणं को न बुद्धो महामती ॥

[८०९] बहु-रुहिर-पूर्इ-जंबाले असुइ य कलिमल-पूरिए ।
अनिट्ठे य दुब्भिगंधे गब्भे को धिई लभे ? ॥

[८१०] ता जत्थ दुक्ख-विक्खिरणं एगंत-सुह-पावणं ।
से आणं नो खंडेज्जा आणा भंगे कुओ सुहं ? ॥

[८११] से भयवं ! अट्ठण्हं साहूणमसइं उस्सग्गेण वा अववाएण वा चउहिं अनगारेहिं समं गमनागमनं नियंठियं तथा दसण्हं संजईणं हेट्ठा उस्सग्गेणं, चउण्हं तु अभावे अववाएणं हत्थ-सयाओ उद्धं गमनं नाणुण्णायं । आणं वा अइक्कमंते साहू वा साहूणीओ वा अनंत-संसारिए समक्खाए । ता णं से दुप्पसहे अनगारे असहाए भवेज्जा, सा वि य विण्हुसिरी अनगारी असहाया चेव भवेज्जा । एवं तु ते कहं आराहगे भवेज्जा? गोयमा! णं दुस्समाए परियंते ते चउरो जुगप्पहाणे खाइग-सम्मत्त-नाण-दंसण-चारित्त-समणिए भवेज्जा । तत्थ णं जे से महायसे महानुभागे दुप्पसहे अनगारे से णं अच्चंत विसुद्ध-सम्म-दंसण-नाण-चारित्त-गुणेहिं उववेए सुदिट्ठ-सुगइ-मग्गे आसायणा-भीरू अच्चंत-परम-सद्धा-संवेग-वेरग्ग-संमग्गट्ठिए निरब्भ-गयणामल-सरय-कोमुइ-पुन्निमायंद-कर-विमल-पर-परम-जसे, वंदाणं परम-वंदे पूयाणं परमपूए भवेज्जा ।

तहा सा वि य सम्मत्तं-नाण-चारित्त-पडागा, महायसा, महासत्ता, महानुभागा, एरिस-गुण-जुत्ता चेव सुगहियनामधिज्जा विण्हुसिरी अनगारी भवेज्जा, तं पि णं जिनदत्त-फग्गुसिरी नामं सावग-मिहुणं बहु-वासर-वण्णणिज्जगुणं चेव भवेज्जा । तथा तेसिं सोलस-संवच्छराइं परमं आउं अट्ठ य अज्झयणं-५, उट्ठेसो-

परियाओ आलोइय-नीसल्लाणं च पंचनमुक्कार-पराणं चउत्थं-भत्तेणं सोहम्मं कप्पे उववाओ । तयनंतरं च हिट्ठिम-गमनं । तथा वि ते एयं गच्छ-ववत्थं नो विलंघिंसु ।

[८१२] से भयवं ! केणं अट्ठेणं एवं वुच्चइ जहा णं तथा वि ते एयं गच्छ ववत्थं नो विलंघिंसु ? गोयमा ! णं इओ आसन्न-काले णं चेव महायसे महासत्ते महानुभागे सेज्जंभवे नामं अनगारे महातवस्सी महामई दुवाल-संग-सुयधारी भवेज्जा । से णं अपक्खवाएणं अप्पाउक्खे भव्व-सत्ते-सुयअतिसएणं विण्णाय एक्करसण्हं अंगाणं चोद्धसण्हं पुव्वाणं परमसार-नवणीय-भूयं सुपउणं सुपद्धरुज्जयं सिद्धिमग्गं दसवेयालियं नाम सुयक्खंधं निरुहेज्जा, से भयवं किं पडुच्च? गोयमा! मनगं पडुच्चा जहा कहं नाम ? एयस्स णं मनगस्स पारंपरिएणं थेवकालेणेव महंत-घोर-दुक्खागराओ चउ-गइ-संसार-सागराओ निप्फेडो भवतु, भवदुगुंछेवन न विना सव्वन्नुवएसेणं, से य सव्वन्नुवएसे अनोरपारे दुरवगाढे अनंत-गमपज्जवेहिं नो सक्का अप्पेणं कालेणं अवगाहिउं । तथा णं गोयमा ! अइसए णं एवं चिंतेज्जा । एवं से णं सेज्जंभवे जहा ।

[८१३] अनंतपारं बहु जाणियव्वं, अप्पो य कालो बहुले य विग्घे ।
जं सारभूयं तं गिण्हियव्वं, हंसो जहा खीरमिवंबु मीसं ॥

[८१४] तेणं इमस्स भव्व-सत्तस्स मनगस्स तत्त-परिन्नाणं भवउ त्ति काऊणं जाव णं दसवेयालियं सुयक्खंधं निज्जुहेज्जा, तं च वोच्छिण्णेणं तक्काल-दुवालसंगेणं गणिपिडगेणं जाव णं दूसमाए परियंते दुप्पसहे ताव णं सुत्तत्थेणं वाएजा, से य सयलागम-निस्संदं दसवेयालिय-सुयक्खंधं सुत्तओ

अज्झीहीय गोयमा! से णं दुप्पसहे अनगारे तओ तस्स णं दसवेयालिय-सुत्तस्सानुगयत्थानुसारेणं तहा चेव पवत्तेज्जा, नो णं सच्छंदयारी भवेज्जा तत्थ । य दसवेयालिय-सुयक्खंधे तक्कालमिणमो दुवालसंगे सुयक्खंधे पइद्विए भवेज्जा । एएणं अद्वेणं एवं वुच्चइ जहा तहा वि णं गोयमा ! ते एवं गच्छ-ववत्थं नो विलंघिसु ।

[८१५] से भयवं जइ णं गणिणो वि अच्चंत-विसुद्ध-परिणामस्स वि केइ दुस्सीले सच्छंदत्ताए इ वा गारवत्ताए इ वा जायाइमयत्ताए इ वा आणं अइक्कमेज्जा, से णं किमाराहगे भवेज्जा ? गोयमा ! जे णं गुरु सम सत्तुमित्त-पक्खो गुरु-गुणेषुं ठिए सययं सुत्तानुसारेणं चेव विसुद्धासए विहरेज्जा, तस्साणमइक्कंतेहिं नव-नउएहिं चउहिं सएहिं साहूणं जहा तहा चेव अनाराहगे भवेज्जा ।

[८१६] से भयवं कयरे णं ते पंच सए एक्क विवज्जिए साहूणं जेहिं च णं तारिस-गुणोववेयस्स महानुभागस्स गुरुणो आणं अइक्कमिउं नाराहियं? गोयमा! णं इमाए चेव उसभ-चउवीसिगाए अतीताए तेवीसइमाए चउवीसिगाए जाव णं परिनिव्वुडे चउवीसइमे अरहा ताव णं अइक्कंतेणं केवइएणं कालेणं गुण-निप्फन्ने कम्मसेल-मुसुमूरणे महायसे महासत्ते महानुभागे सुगहिय-नामधेज्जे, वइरे नामं गच्छाहिवई भूए । तस्स णं पंच-सयं गच्छं निग्गंथीहिं विना निग्गंथीहिं समं दो सहस्से य अहेसि । ता गोयमा! ताओ निग्गंथीओ अच्चंत परलोग भीरुयाओ सुविसुद्ध निम्मलंतकरणाओ खंताओ दंताओ मुत्ताओ जिइंदियाओ अच्चंत भणिरीओ निय-सरीरस्सा वि य छक्काय-वच्छलाओ जहोवइइ-अच्चंतघोर-वीर-तव-चरण-सोसिय-सरीराओ जहा णं तित्थयरेणं पन्नवियं तहा चेव अदीन-मनसाओ माया-मय-अहंकार-ममाकार रतिहास-खेइड-कंदप्प-नाहवाय-विप्पमुक्काओ तस्सायरियस्स सगासे सामण्णमनुचरंति ।

ते य साहूणो सव्वे वि गोयमा! न तारिसे मनागा, अहण्णया गोयमा ते साहूणो त आयरियं अज्झयणं-५, उद्वेसो-

भणंति जहा जइ णं भयवं ! तुमं आणवेहिं ता णं अम्हेहिं तित्थरजत्तं करिय चंदप्पह-सामियं वंदिय धम्म-चक्कं गंतूणमागच्छामो, ताहे गोयमा ! अदीनमनसा अनुत्तावल-गंभीर-महुराए भारतीए भणियं तेनायरिएणं जहा इच्छायारेणं न कप्पइ तित्थजत्तं गंतुं सुविहियाणं ता जाव णं बोलेइ जत्तं ताव णं अहं तुम्हे चंदप्पहं वंदावेहामि । अन्नं च-जत्ताए गएहिं असंजमे पडिवज्जइ । एएणं कारणेणं तित्थयत्ता पडिसेहिज्जइ । तओ तेहिं भणियं जहा भयवं ! केरिसो उण तित्थयत्ताए गच्छमाणाणं असंजमो भवइ सो पुण इच्छायारेणं बिइज्ज-वारं एरिसं उल्लावेज्जा बहु-जनेणं वाउलगो भणिहिंसि । ताहे गोयमा ! चिंतियं तेणं आयरिएणं जहा णं ममं वइक्कमिय निच्छयओ एए गच्छिंहिति तेणं तु मए समयं चडुत्तरेहिं वयंति ।

अहण्णया सुबहुं मनसा संधरेऊणं चेव भणियं तेणं आयरिएणं - जहा णं तुब्भे किंचि वि सुत्तत्थं वियाणह च्चिय, ता जारिसं तित्थयत्ताए गच्छमाणाणं असंजमं भवइ तारिसं सयमेव वियाणेह, किं एत्थ बहु-पलविएणं ? अन्नं च-विदियं तुम्हेहिं पि संसारसहावं जीवाइयपत्थ-तत्तं च ।

अहण्णया बहु उवाएहिं णं विनिवारितस्स वि तस्सायरियस्स गए चेव ते साहूणो णं कुद्वेणं कयंतेणं पेरिए तित्थयत्ताए, तेसिं च गच्छमाणाणं कत्थइ अनेसनं, कत्थइ हरिय-काय-संघट्टणं कत्थइ बीयक्कमणं कत्थइ पिवीलियादीणं तसाणं संघटण-परितावणोद्ववणाइ-संभवं, कत्थइ बइडुपडिक्कमणं कत्थइ न कीरए चेव चाउक्कालियं सज्झायं, कत्थइ न संपाडेज्जा मत्तभंडोवगरणस्स विहीए उभय-कालं पेह-पमज्जण-पडिलेहण-पक्खोडणं, किं बहुना ? गोयमा ! केत्तियं भणिहिई अट्टारसण्हं सीलंगसहस्साणं,

सत्तरस विहस्स णं संजमस्स, दुवालसविहस्स णं सब्भंतरबाहिरस्स तवस्स जाव णं खंताइ-अहिंसा-लक्खणस्सेव य दस-विहस्सानगार-धम्मस्स, जत्थेक्केक्कपयं चैव सुबहुएणं पि कालेणं थिर-परिचिएण दुवालसंग-महासुयक्खंधेणं बहु-भंग-सय-संघत्तणाए दुक्खं निरइयारं परिवालिऊणं जे, एयं च सव्वं जहा-भणियं निरइयारमनुद्वेयं ति ।

एवं संसरिऊण चिंतियं तेण गच्छाविहइणा जहा णं मे विप्परोक्खेणं ते दुट्ठ-सीसे मज्झं अनाभोग-पच्चएणं सबहुं असंजमं काहिति, तं च सव्वं मे मच्छंतियं होही जओ णं हं तेसिं गुरु, ता हं तेसिं पट्टीए गंतूणं ते पडिजागरामि, जेणाहमेत्थ पर पायच्छित्तेणं नो संवज्जेज्ज त्ति वियप्पिऊणं गओ सो आयरिओ तेसिं पट्टीए जाव णं दिट्ठो तेणं असमंजसेणं गच्छमाणे ।

ताहे गोयमा सुमहुर-मंजुलालावेणं भणियं तेणं गच्छाहिवइणा । जहा-भो भो ! उत्तमकुल-निम्मल-वंस-विभूसणा अमुग-पमुगाइ-महासत्ता साहू ! उप्पहपडिवन्नाणं पंच-महव्वया-हिद्विय-तणूणं महाभागाणं साहु-साहुणीणं सत्तावीसं सहस्साइं थंडिलाणं सव्वदंसीहिं पन्नताइं ते य सुउवउत्तेहिं विसोहिज्जंति न उणं अनोवउत्तेहिं । ता किमेयं सुन्नासुन्नीए अनोवउत्तेहिं गम्मइ इच्छायारेणं ? उवओगं देह, अन्नं च-इणमो सुत्तत्थं किं तुम्हाणं विसुमरियं भवेज्जा जं सारं सव्व-परम-तत्ताणं ? जहा एगे बेइंदिए पाणी एगं सयमेव हत्थेण वा पाएण वा अन्नयरेण वा सलागाइ-अहिगरण-भूओवगरण-जाएण जे णं केई संघट्टेज्जा संघट्टावेज्जा वा, एवं संघट्टियं वा परेहिं समनुजाणेज्जा,

से णं तं कम्मं जया उदिण्णं भवेज्जा तया जहा उच्छु-खंडाइं जंते तहा निप्पीलिज्जमाणा छम्मासेणं खवेज्जा, एवं गाढे दुवालसेहिं संवच्छरेहिं तं कम्मं वेदेज्जा । एवं अगाढपरियावणे वास-सहस्सं गाढपरियावणे दस-वास-सहस्से एवं अगाढ-किलावणे वास-लक्खं गाढ-किलावणे दस-वास-लक्खाइं उद्ववणे वास-कोडी । एवं तेइंदियाईसुं पि नेयं । ता एवं च वियाणमाणा मा तुम्हे मुज्झह त्ति, एवं च गोयमा ! अज्झयणं-५, उद्वेसो-

सुत्तानुसारेणं सारयंतस्सावि तस्सायरियस्स ते महा-पावकम्मं गम-गम-हल्लप्फलेणं हल्लोहल्लीभूएणं तं आयरियाणं वयणं असेस-पाव-कम्मइ-दुक्ख-विमोयगं न बहु मन्नंति ।

ताहे गोयमा मुणियं तेणायरिएणं जहा-निच्छयओ उम्मगपट्टिए सव्वपगारेहिं चैव इमे पावमई दुट्ठ-सीसे, ता किमइमहमिमेसिं पट्टीए लल्ली-वागरणं करेमाणो अनुगच्छमाणो य सुक्खाए गय-जलाए नदीए उबुज्झं ? एए गच्छंतु दस-दुवारेहिं अहयं तु तावाय-हियमेवानुचिद्वेमो । किं मज्झं पर-कएणं सुमहंतेणावि पुन्न-पब्भारेणं ? थैवमवि किंचि परित्ताणं भवेज्जा । स-परक्कमेणं चैव मे आगमुत्त-तव-संजमानु-ट्टाणेणं भवोयही तरेयव्वो । एस उणं तित्थयराएसो [जहा]

[८१७] अप्पहियं कायव्वं जइ सक्का परहियं पि पयरेज्जा ।

अत्त-हिय-पर-हियाण अत्त-हियं चैव कायव्वं

॥

[८१८] अन्नं च-जइ एते तव-संजम-किरियं अनुपालेहिंति तओ एतेसिं चैव सेयं होहिइ, जइ न करेहिंति तओ एएसिं चैव दुग्गइ-गमनमनुत्तरं हवेज्जा । नवरं तहा वि मम गच्छो समप्पिओ, गच्छाहिवई अहयं भणामि अन्नं च-

जे तित्थयरेहिं भगवंतेहिं छत्तीसं आयरियगुणे समाइद्वे तेसिं तु अहयं एक्कमवि नाइक्कमामि जइ वि पाणोवरमं भवेज्जा । जं च आगमे इह-परलोग-विरुद्धं तं नायरामि न कारयामि न कज्जमाणं समणुजाणामि । तामेरिसगुण-जुत्तस्सावि जइ भणियं न करंति ताहमिमेसिं वेसग्गहणा

उद्दालेमि, एवं च समए पन्नत्ती जहा-जे केई साहू वा साहूणी वा वायामेत्तेणा वि असंजममनुचिद्वेज्जा से णं सारेज्जा से णं वारेज्जा से णं चोएज्जा पडिचोएज्जा, से णं सारिज्जंते वा वारिज्जंते वा चोइज्जंते वा पडिचोइज्जंते वा, जे णं तं वयणमवमणिय अलसायमाणे इ वा अभिनिविद्वे इ वा न तह त्ति पडिवज्जिय इच्छं पंजित्ताणं तत्थाओ पडिक्कमेज्जा से णं तस्स वेसग्गहणं उद्दालेज्जा ।

एवं तु आगमुत्तणाएणं गोयमा जाव तेणायरिएणं एगस्स सेहस्स वेसग्गहणं उद्दालियं ताव णं अवसेसे दिसोदिसिं पणद्वे ताहे गोयमा ! सो आयरिओ सणियं सणियं तेसिं पट्टीए जाउमारद्धो, नो णं तुरियं तुरियं । से भयवं किमद्वं तुरियं-नो पयाइ ? गोयमा ! खाराए भूमीए जो महुरं संकमेज्जा महुराए खारं किण्हाए पीयं पीयाओ किण्हं जलाओ थलं थलाओ जलं संकमेज्जा, तेणं विहिए पाए पमज्जिय पमज्जिय संकमेयव्वं नो पमज्जेज्जा तओ दुवालस-संवच्छरियं पच्छित्तं भवेज्जा । एएणमद्वेणं गोयमा ! सो आयरिओ न तुरियं तुरियं गच्छे ।

अहण्णया सुया-उत्त-विहिए थंडिल-संकमणं करेमाणस्स णं गोयमा ! तस्सायरिस्स आगओ बहु-वासर-खुहा-परिगय-सरीरो वियडदाढा-कराल-कयत-भासुरो पलय-कालमिव-घोर-रूवो केसरी । मुणियं च तेन महानुभागेणं गच्छाहिवइणा जहा-जइ दुयं गच्छिज्जइ ता चुक्किज्जइ इमस्स । नवरं दुयं गच्छमाणेणं असंजमं ता वरं सरीरोवोच्छेयं न असंजम-पवत्तणं ति चिंतिऊणं विहिए उवद्वियस्स सेहस्स जमुद्दालियं वेसग्गहणं तं दाऊणं ठिओ निप्पडिकम्मं-पायवोवगमनानसणेणं, सो वि सेहो तहेव ।

अहण्णया अच्चंत-विसुद्धंतकरणे पंचमंगलपरे सुहज्जवसायत्ताए दुवे वि गोयमा ! वावईए तेण सीहेणं, अंतगडे केवली जाए अद्वप्पयार-मल-कलंक-विप्पमुक्के सिद्धे य ।

ते पुण गोयमा एकूणे पंच सए साहूणं तक्कम्म-दोसेणं जं दुक्खमनुभवमाणे चिद्वंति जं चानुभूयं जं चानुभविहिति अनंत-संसार-सागरं परिभमंते तं को अनंतेणं पि कालेणं भाणिऊं समत्थो ? एए अज्झयणं-५, उद्देसो-

ते गोयमा ! एगूणे पंच-सए साहूणं, जेहिं च णं तारिस-गुणोववेतस्स णं महानुभागस्स गुरुणो आणं अइक्कमियं नो आराहियं अनंत-संसारीए जाए ।

[८१९] से भयवं ! किं तित्थयर-संतियं आणं नाइक्कमेज्जा उयाहु आयरिय-संतियं ? गोयमा चउव्विहा आयरिया भवंति तं जहा-नामायरिया ठवणायरिया दव्वायरिया भावायरिया, तत्थ णं जे ते भावायरिया ते तित्थयर-समा चेव दद्ववा तेसिं संतियास्सणं आणा नाइक्कमेज्जा ।

[८२०] से भयवं ! कयरे णं ते भावायरिया भण्णंति ? गोयमा! जे अज्ज-पव्वइए वि आगमविहिए पयं पएणानुसंचरंति ते भावायरिए । जे उणं वास-सय-दिक्खिए वि होत्ताणं वायामेत्तेणं पि आगमओ बाहिं करिंति ते नामद्ववणाहिं निओइयव्वे । से भयवं ! आयरिया-णं केवइयं पायच्छित्तं भवेज्जा जमेगस्स साहूणो तं आयरिय-मयहर-पवत्तिणीए य सत्तरसगुणं, अहा णं सील खलिए भवंति तओ ति-लक्ख-गुणं, जं अइदुक्करं नो जं सुकरं, तम्हा सव्वहा सव्व-पयारेहिं णं आयरिय-मयहर-पवत्तिणीए य अत्ताणं पायच्छित्तस्स संरक्खेयव्वं अखलिय-सीलेहिं च भवेयव्वं ।

[८२०R] से भयवं ! जे णं गुरु सहस्साकारेणं अन्नयर-द्वाने चुक्केज्ज वा खलेज्ज वा से णं आराहगे न वा ? गोयमा! गुरुणं गुर-गुणोसु वट्टमाणो अक्खलिय-सीले अप्पमादी अनालस्सी सव्वालंबनविप्पमुक्के सम-सत्तु-मित्त-पक्खे सम्मग्ग-पक्खवाए जाव णं कहा-भणिरे सद्धम्म-जुत्ते भवेज्जा, नो णं उम्मग्ग-देसए अहम्मानुरए भवेज्जा । सव्वहा सव्व-पयारेहिं णं गुरुणा ताव अप्पमत्तेणं

भवियत्वं नो णं पमत्तेणं, जे उण पमादी भवेज्जा से णं दुरंत-पंत-लक्खणे अदद्व्वे महा-पावे । जईणं सबीए हवेज्जा ता णं नियय-दुच्चरियं जहावत्तं स-पर-सीस-गणाणं पक्खाविय जहा दुरंत-पंत-लक्खणे अदद्व्वे महा-पाव-कम्मकारी समग्ग-पणासओ अहयं ति । एवं निंदित्ताणं गरहित्ताणं आलोइत्ताणं च जहा-भणियं पायच्छित्तमनुचरेज्जा । स णं किंचुद्देसेणं आराहगे भवेज्जा, जइ णं नीसल्ले नियडी-विप्पमुक्के न पुणो संमग्गाओ परिभंसेज्जा, अहा णं परिभस्से तओ नाराहेइ ।

[८२१] से भयवं ! केरिस-गुणजुत्तस्स णं गुरुणो गच्छ-निक्खेवं कायव्वं ? गोयमा! जे णं सुव्वए जे णं सुसीले जे णं दढ-व्वए जे णं दढ-चारित्ते जे णं अनिंदियंगे जे णं अरहे जे णं गयरगे जे णं गय-दोसे जे णं निद्विय-मोह-मिच्छित्त-मल-कलंके जे णं उवसंते जे णं सुविण्णाय-जग-द्वितीए जे णं सुमहा-वेरग्गमग्गमल्लीणे जे णं इत्थि-कहा-पडिनीए जे णं भत्त-कहा-पडिनीए जे णं तेण-कहा पडिनीए जे णं रायकहा पडिनीए जे णं जनवय-कहा-पडिनीए, जे णं अच्चंतमनुकंप-सीले जे णं परलोग-पच्चवाय-भीरू जे णं कुसील-पडिनीए जे णं विण्णाय-समय-सब्भावे जे णं गहिय-समय-पेयाले जे णं अहण्णिसानुसमयं ठिए खंतादि-अहिंसा-लक्खण-दस-विहे समण-धम्मं जे णं उज्जुत्ते अहण्णिसानु-समयं दुवालस-विहे तवो-कम्मं, जे णं सुओवउत्ते समयं पंचसमितीसु जे णं सुगुत्ते सययं तीसु गुत्तीसुं, जे णं आराहगे स-सत्तीए अद्वारसणं सीलंग-सहस्साणं जे णं अविराहगे एगंतणं स-सत्तीए सत्तरस-विहस्स णं संजमस्स, जे णं उस्सग्ग-रूई जे णं तत्त-रूई, जे णं सम-सत्तु-मित्त-पक्खे,

जे णं सत्त-भय-द्व्वाण-विप्पमुक्के जे णं अद्व-मय-द्व्वाण विप्पजढे जे णं नवणं बंभचेर-गुत्तीणं विराहणा-भीरू, जे णं बहु-सूए जे णं आरिय-कुलुप्पन्ने, जे णं अदीने जे णं अकिविणे जे णं अनालसिए, जे णं संजई-वग्गस्स पडिवक्खे, जे णं सययं धम्मोवएस-दायगे जे णं सययं ओहसामायारी-परूवगे जे णं मेरावद्विए, जे णं असामायारी-भीरू जे णं आलोयणारिहे जे णं पायच्छित्त-दाम-पयच्छ-अज्झयणं-५, उद्देसो-

णक्खमे, जे णं वंदन-मंडलि-विराहण-जाणगे जे णं सज्झाय-मंडलि-विराहण-जाणगे जे णं वक्खाण-मंडलि-विराहण-जाणगे जे णं आलोयणा-मंडलि-विराहण-जाणगे जे णं उद्देस-मंडलि-विराहण-जाणगे जे णं समुद्देस-मंडलि-विराहण-जाणगे, जे णं पव्वज्जा-विराहण-जाणगे जे णं उवद्वावणा-विराहणा-जाणगे जे णं उद्देस-समुद्देसाणुण्णा-विराहण-जाणगे,

जे णं काल-खेत्त-दव्व-भाव-भावंतरंतर-वियाणगे,

जे णं काल-खेत्त-दव्व-भावालंबन-विप्पमुक्के, जे णं स-बाल-वुड्ढ-गिलाण-सेह-सिक्खग-साहम्मिय-अज्झावद्वावण-कुसले, जे णं परूवगे नाण-दंसण-चारित्त-तवो गुणाणं, जे णं चरए धरए पभावगे नाण-दंसण-चारित्त-तवो गुणाणं जे णं दढ-सम्मत्ते, जे णं सययं अपररिसाई जे णं धीइमा जे णं गंभीरे जे णं सुलोमलेसे जे णं दिनयरमिव अनभिभवणीए तवतेणं, जे णं सरीरोवरमे वि छक्काय-समारंभ-विवज्जी, जे णं सील-तव-दान-भावनामय-चउव्विह-धम्मंतरायं-भीरू, जे णं सव्वासायणा भीरू जे णं इड्ढि-रस-सायगारव-रोद्वुज्झाण-विप्पमुक्के, जे णं सव्वावस्सगमुज्जुत्ते, जे णं सविसेस-लद्धि जुत्ते, जे णं आवडिय-पेल्लियामंतिओ वि नायरेज्जा अयज्जं, जे णं नो बहु निद्वो जे णं नो बहु भोइ, जे णं सव्वावस्सग-सज्झाण-पडिमाभिग्गह-घोर-परीसहोवसग्गेषु जिय-परीसमे, जे णं सुपत्त-संगह-सीले, जे णं अपत्त-परिद्वावणविहिण्णू, जे णं अनुद्धय-बौदी जे णं परसमय-ससमय-सम्मं-वियाणे जे णं कोह-मान-माया-

लोभ-ममकारादि इतिहास-खेड-कंदप्पनाहियवादविप्पमुक्के धम्मकहा-संसार-वास-विसयाभिलासादीणं वेरग्गुप्पायगे पडिबोहगे भव्व-सत्ताणं,

से णं गच्छ-निकखेवण-जोगो, से णं गणी, से णं गणहरे, से णं तित्थे, से णं तित्थयरे, से णं अरहा, से णं केवली, से णं जिणे, से णं तित्थुब्भासगे, से णं वंदे से णं पुज्जे से णं नमंसणिज्जे, से णं ददुव्वे से णं परम-पवित्ते से णं परम-कल्लाणे से णं परम-मंगल्ले, से णं सिद्धी से णं मुत्ती से णं सिवे से णं मोक्खे, से णं ताया से णं संमग्गे से णं गती से णं सरण्णे, से णं सिद्धे मुत्ते पारगए-देवदेवे । एयस्स णं गोयमा ! गण-निकखेवं कुज्जा, एयस्स णं गणनिकखेवं कारवेज्जा, एयस्स णं गणनिकखेवं समणुजाणेज्जा, अन्नहा णं गोयमा! आणा-भंगे ।

[८२२] से भयवं केवतियं कालं जाव एस आणा पवेइया ? गोयमा! जाव णं महायसे महासत्ते महानुभागे सिरिप्पभे अनगारे, से भयवं ! केवतिएणं काले णं से सिरिप्पभे अनगारे भवेज्जा ? गोयमा! होही दुरंत-पंत-लक्खणे अददुव्वे रोद्धे चंडे पयंडे उग्ग-पयंडे दंडे निम्मरे निक्किवे निग्घिणे नित्तिंसे कूरयर-पाव-मती अनारिए मिच्छदिट्ठी कक्की नाम रायाणे । से णं पावे पाहुडियं भमाडिउ-कामे सिरि-समण-संघं कयत्थेज्जा, जाव णं कयत्थे इ ताव णं गोयमा ! जे केई तत्थ सीलइडे महानुभागे अचलिय-सत्ते तवो हणे अनगारे तेसिं च पाडिहेरियं कुज्जा सोहम्मं कुलिसपाणी एरावणगामी सुर-वरिंदे । एवं च गोयमा! देविंद-वंदिए दिट्ठ-पच्चए णं सिरि-समण-संघे ।

निट्ठिज्जा णं कुणयपासंड-धम्मं जाव णं गोयमा ! एगे अबिइज्जे अहिंसा-लक्खण-खंतादि-दस-विहे धम्मं, एगे अरहा देवाहिदेवे एगे जिनालए एगे वंदे पूए दक्खे सक्कारे सम्माने महायसे महासत्ते महानुभागे दढ-सील-व्वय-नियम-धारए तवोहणे साहू । तत्थ णं चंदमिव सोमलेसे सूरिए इव तव-तेय-रासी पुढवी इव परीसहोवसग्ग-सहे मेरुमंदर-धरे इव निप्पकंपे ठिए अहिंसा-लक्खण-खंतादि दस-विहे धम्मं ! से णं सुसमण-गण-परिवुडे निरब्भ-गयणामल-कोमुई-जोग-जुत्ते इव गह-रिक्ख-परियरिए अज्झयणं-५, उद्देसो-

गहवई चंदे अहिययरं विराएज्जा, से णं सिरिप्पभे अनगारे, एवइयं कालं जाव एसा आणा पवेइया ।

[८२३] से भयवं! उड्डं पुच्छा । गोयमा ! तओ परेण उड्डं हायमाणे काल-समए तत्थ णं जे केई छक्काय-समारंभ-विवज्जी से णं धन्ने पुन्ने वंदे पूए नमंसणिज्जे, सुजीवियं जीवियं तेसिं ।

[८२४] से भयवं ! सामण्णे पुच्छा, जाव णं वयासि । गोयमा ! अत्थेगे जे णं जोगे अत्थेगे जे णं नो जोगे । से भयवं! के णं अट्ठेणं एवं वुच्चइ जहा णं अत्थेगे जे णं नो जोगे ? गोयमा! ! अत्थेगे जेसिं णं सामण्णे पडिकुट्ठे अत्थेगे जेसिं च णं सामण्णे नो पडिकुट्ठे । एएणं अट्ठेणं एवं वुच्चइ जहा णं अत्थेगे जे णं जोगे अत्थेगे जे णं नो जोगे ।

से भयवं! कयरे ते जेसिं णं सामण्णे पडिकुट्ठे ? कयरे वा ते जेसिं च णं नो परियाए पडिसेहिए? गोयमा! अत्थेगे जे णं विरुद्धे अत्थेगे जे णं नो विरुद्धे, जे णं से विरुद्धे से णं पडिसेहिए जे णं नो विरुद्धे से णं नो पडिसेहिए ।

से भयवं के णं से विरुद्धे के वा णं अविरुद्धे ? गोयमा ! जे जेसुं देसेसुं दुगुंछणिज्जे जे जेसुं देसेसुं दुगुंछिए जे जेसुं देसेसुं पडिकुट्ठे से णं तेसुं देसेसुं विरुद्धे । जे य णं जेसुं देसेसुं नो दुगुंछणिज्जे जे य णं जेसुं देसेसुं नो दुगुंछिए जे य णं जेसुं देसेसुं नो पडिकुट्ठे से णं तेसुं देसेसुं नो

विरुद्धे, तत्थ गोयमा ! जे णं जेसुं जेसुं देसेसुं विरुद्धे से णं नो पच्चावए, जे णं जेसुं देसेसुं नो विरुद्धे से णं पच्चावए ।

से भयवं ! के कत्थ देसे विरुद्धे के वा नो विरुद्धे ? गोयमा ! जे णं केई पुरिसे इ वा इत्थिए इ वा, रागेण वा दोसेण वा अनुसएण वा कोहेण वा लोभेण वा अवरारहेण वा अनवरारहेण वा, समणं वा माहणं वा, मायरं वा पियरं वा भायरं वा भइणिं वा भाइणेयं सुयं वा सुयसुयं वा धूयं वा नत्तुयं वा सुणहं वा जामाउयं वा, दाइयं वा गोत्तियं वा, सजाइयं वा विजाइयं वा, सयणं वा असयणं वा संबंधियं वा असंबंधियं वा, सनाहं वा असनाहं वा इइडिमंतं वा अनिइडिमंतं वा, सएसियं वा विएसियं वा आरियं वा अनारियं वा, हणेज्ज वा हणावेज्ज वा उद्वेज्ज वा उद्ववावेज्ज वा,

से णं परियाए अओग्गे, से णं पावे से णं निंदिए से णं गरहिए से णं दुगुंछिए से णं पडिकुट्टे से णं पडिसेहिए, से णं आवई से णं विग्घे से णं अयसे से णं अकित्ती से णं उम्मग्गे से णं अनायारे, एवं रायदुट्टे एवं तेणे एवं पर-जुवइ-पसत्ते एवं अन्नयरे इ वा केई वसणाभिभूए एवं अयसकिलिट्ठे एवं छुहाणडिए एवं रिणोवद्दुए अविण्णाय जाइ-कुल-सील-सहावे एवं बहु-वाहि-वेयणा-परिगय-सरीरे एवं रस-लोलुए एवं बहु-निद्धे एवं इतिहास-खेइड-कंदप्प-नाह-वायचच्चरि-सीले एवं बहु-कोऊहले एवं बहु-पोसवग्गे जाव णं मिच्छद्धि-पडिनीय-कुलुप्पन्ने इ वा ।

से णं गोयमा ! जे केई आयरिए इ वा मयहरए इ वा गीयत्थे इ वा अगीयत्थे इ वा आयरिय-गुण-कलिए इ वा मयहर-गुण कलिए इ वा भविस्सायरिए इ वा भविस्स-मयहरएइ वा, लोभेण वा गारवेण वा दोणहं गाउय-सयाणं अब्भंतरं पच्चावेज्जा, से णं गोयमा ! वइक्क-मिय-मेरे से णं पवयण-वोच्छित्तिकारए से णं तित्थ-वोच्छित्तिकारए से णं संघ-वोच्छित्ति कारए, से णं वसनाभिभूए से णं अदिट्ठ-परलोग-पच्चवाए से णं अनायार-पवित्ते से णं अकज्जयारी से णं पावे से णं पाव-पावे से णं महा-पाव-पावे, से णं गोयमा ! अभिग्गहिय-चंड-रुद्ध-कूर-मिच्छद्धिदी ।

[८२५] से भयवं के णं अट्ठेणं एवं वुच्चइ ? गोयमा ! आयारे मोक्ख-मग्गे नो णं अज्झयणं-५, उद्देसो-

अनायारे मोक्खमग्गे, एएणं अट्ठेणं एवं वुच्चइ ।

से भयवं कयरे से णं आयारे कयरे वा से णं अनायारे ? गोयमा ! आयारे आणा अनायारे णं तप्पडिवक्खे तत्थ जे णं आणा-पडिवक्खे से णं एगंते सव्व पयारेहिं णं सव्वहा वज्जणिज्जे, जे य णं नो आणा-पडिवक्खे से णं एगंते णं सव्व-पयारेहिं णं सव्वहा आयर-णिज्जे, तथा णं गोयमा ! जं जाणेज्जा जहा णं एस णं सामण्णं विराहेज्जा, से णं सव्वहा विवज्जेज्जा ।

[८२६] से भयवं केह परिकखा ? गोयमा ! जे केइ पुरिसे इ वा इत्थियाओ वा, सामण्णं पडिवज्जिउ-कामे कंपेज्ज वा थरहेज्ज वा निसीएज्ज वा छइडिं वा पकरेज्ज वा सगेण वा परगेण वा आसंतिए इ वा संतिए इ वा तदहुत्तं गच्छेज्ज वा अवलोइज्ज वा पलोएज्ज वा वेसग्गहणे ढोइज्जमाणे कोई उप्पाए इ वा असुहे दोन्निमित्ते इ वा भवेज्जा, से णं गीयत्थे गणी अन्नयरे इ वा मयहरादी महया नेउण्णेणं निरुवेज्जा, जस्स णं एयाइं परतक्केज्जा से णं नो पच्चावेज्जा, से णं गुरु-पडिनीए भवेज्जा, से णं निद्धम्म-सबले भवेज्जा से णं सव्वहा सव्व-पयारेसु णं केवलं एगंतेणं अयज्ज-करणुज्जए भवेज्जा । से

पं जेणं वा तेणं वा सुएण वा विण्णाणेण वा गारविए भवेज्जा, से पं संजई-वग्गस्स चउत्थ-वय-खंडण-सील भवेज्जा, से पं बहुरूवे भवेज्जा ।

[८२७] से भयवं कयरे पं से-बहु-रूवे-वुच्चइ ? जे पं ओसन्न-विहारीणं ओसन्ने उज्जय-विहारीणं उज्जय-विहारी निद्धम्म-सबलाणं निद्धम्म-सबले बहुरूवी रंग-गए चारणे इव नडे ।

[८२८] खणेण रामे खणेण लक्खणे खणेण दसगीव-रावणे खणेणं ।

टप्पर-कण्ण-दंतुर-जरा-जुण्ण-गत्ते पंडर-केस-बहु-पवंच भरिए विदूसगे ॥

[८२९] खणेणं तिरियं च जाती वानर-हनुमंत-केसरी ।

जह पं एस गोयमा ! तहा पं से बहुरूवे ॥

[८३०] एवं गोयमा! जे पं असई कयाई केई चुक्क-खलिएणं पच्चावेज्जा, से पं दूरद्धाण ववहिए करेज्जा से पं सन्निहिए नो धरेज्जा से पं आयरेणं नो आलवेज्जा, से पं भंडमत्तोवगरणेणं आयरेणं नो पडिलाहावेज्जा, से पं तस्स गंथसत्थं नो उद्धिसेज्जा से पं तस्स गंथ-सत्थं नो अनुजाणेज्जा, से पं तस्स सद्धिं गुज्झ-रहस्सं वा अगुज्झ-रहस्सं वा नो मंतेज्जा । एवं गोयमा ! जे केई एय दोस-विप्पमुक्के से पं पच्चावेज्जा । तहा पं गोयमा! मिच्छ-देसुप्पन्नं अनारियं नो पच्चावेज्जा । एवं वेसा-सुयं नो पच्चावेज्जा एवं गणिगं नो पच्चावेज्जा, एवं चक्खु-विगलं एवं विगप्पिय-कर-चरण एवं छिन्न-कण्ण-नासोद्वं एवं कुट्ट-वाहीए गलमाण-सडहडंतं एवं पंगुं अयंगमं मूयं बहिरं, एवं अच्चुक्कड-कसायं एवं बहु पासंड-संसद्वं, एवं घन-राग-दोस-मोह-मिच्छत्त-मल-खवलियं एवं उज्झिय उत्तयं, एवं पोराण निक्खुडं एवं जिनालगाई बहु देव-बलीकरण-भोइयं चक्कयरं, एवं नड-नट्ट-छत्त-चारणं, एवं सुयजडं चरण-करण-जडं जडकायं नो पच्चावेज्जा । एवं तु जाव पं नाम-हीनं थाम-हीनं कुल-हीनं बुद्धि-हीनं पण्णा-हीनं गामउड-मयहरं वा गामउड-मयहरसुयं वा अन्नयरं वा निंदियाहम-हिन-जाइयं वा-अविण्णाय कुल-सहावं वा गोयमा ! सव्वहा नो दिक्खे नो पच्चावेज्जा ।

एएसिं तुं पयाणं अन्नयर-पए खलेज्जा जो सहसा-देसूण-पुव्वकोडी-तवेणं गोयमा ! सुज्जेज्ज वा न वा वि ।

[८३१] एवं गच्छववत्थं तह त्ति पालेत्तु तहेव जं जहा भणियं ।

अज्झयणं-५, उद्देशो-

रय-मल-किलेस मुक्के गोयमा ! मोक्खं गएऽनंतं ॥

[८३२] गच्छंति गमिस्संति य ससुरासुर-जग-नमंसिए वीरे ।

भुयणेक्क-पायड-जसे जह भणिय-गुणद्विए गणिणो ॥

[८३३] से भयवं ! जे पं केइ अमुणिय-समय-सब्भावे होत्था विहिए इ वा अविहिए इ वा, कस्स य गच्छायारस्स य मंडलि-धम्मस्स वा छत्तीसइविहस्स पं सप्पभेय-नाण-दंसण-चरित्त-तव-वीरियायारस्स वा मनसा वा वायाए वा कहिं चि अन्नयरे ठाणे केई गच्छाहिवई आयरिए इ वा, अंतो विसुद्ध परिणामे वि होत्था-पं असई चुक्केज्ज वा खलेज्ज वा परूवेमाणे वा अनुडेमाणे वा, से पं आराहगे उयाहु अनाराहगे? गोयमा! अनाराहगे, से भयवं! केणं अट्टेणं एवं वुच्चइ जाव अनाराहगे ?

गोयमा! पं इमे दुवालसंगे सुय-नाणे अणप्पवसिए अनाइ-निहणे सब्भूयत्थ-पसाहगे अनाइ-संसिद्धे से पं देविंद-वंद-वंदाणं अतुल-बल-वीरिएसरिय-सत्त-परक्कम-महापुरिसायार कंति-दित्ति-लावण्ण-रूव-सोहग्गाइ-सयल कला-कलाव-विच्छइड मंडियाणं अनंत-नाणीयं सयंसंबुद्धाणं जिन-वराणं अनाइसिद्धाणं

अनंताणं वट्टमाणं-समय-सिज्झमाणानं अन्नेसिं च आसन्न-पुरेक्खडाणं अनंताणं सुगहिय-नाम-धेज्जाणं महायसाणं महासत्ताणं महानुभागाणं तिहुयणेक्क-तिलयाणं तेलोक्क-नाहाणं जगपवराणं-जगेक्क-बंधूणं जग-गुरूणं सव्वन्नूणं सव्व-दरिसीणं पवर-वर-धम्म-तित्थंकराणं अरहंताणं भगवंताणं भूयभव्व-भविस्साईयानागय-वट्टमाण-निखि-लासेस-कसिण-सगुण-सपज्जय सव्ववत्थुविदिय-सब्भावाणं असहाए पवरे एक्कमेक्कमग्गे से णं सुत्तत्ताए अत्थत्ताए गंथत्ताए ।

तेसिं पि णं जहद्विए चेव पन्नवणिज्जे जहद्विए चवानुद्वणिज्जे जहद्विए चेव भासणिज्जे जहद्विए चेव वायणिज्जे जहद्विए चेव परूवणिज्जे जहद्विए चेव वायणिज्जे जहद्विए चेव कहणिज्जे, से णं इमे दुवालसंगे गणिपिडगे तेसिं पि णं देविंद-वंदाणं निखिल-जग-विदिय-सदव्व-सपज्जव-गइ-आगइ-हास-वुड्ढि-जीवाइ-तत्त-जाव णं वत्थु-सहावाणं अलंघणिज्जे अनाइक्क-मणिज्जे अनासायणिज्जे अनुमोयणिज्जे तथा चेव इमे दुवालसंगे सुयनाणे सव्व-जग-जीव-पाण-भूय-सत्ताणं एगंतेणं हिए सुहे खेमे नीसेसिए आनुगामिए पारगामिए पसत्थे महत्थे महागुणे महानुभावे महापुरिसाणुचिन्ने परमरिसिदेसिए दुक्खक्खयाए मोक्खयाए संसारुत्तारणाए ति कट्टु उवसंपज्जित्ताणं विहरिंसु ।

किमुत्त-मन्नेसिं ? ति, ता गोयमा ! जे णं केइ अमुणिय-समय-सब्भावे इ वा विइय-समय-सारे इ वा विहिए इ वा अविहीए इ वा गच्छाहिवई वा आयरिए इ वा अंतो विसुद्ध-परिणामे वि होत्था गच्छायारं मंडलि-धम्मा छत्तीसइविह आयारादि जाव णं अन्नयरस्स वा आवस्सगाइ करणिज्जस्स णं पवयण-सारस्स असती चुक्केज्ज वा खलेज्ज वा ते णं इमे दुवालसंगे सुयनाणे अन्नहा पयरेज्जा जे णं इमे दुवालसंगं-सुय-नाण-निबद्धंतरोवगयं एक्क पयक्खरमवि अन्नहा पयरे से णं उम्मग्गे पयंसेज्जा जे णं उम्मग्गे पयंसे से णं अनाराहगे भवेज्जा, ता एणं अट्टेणं एवं वुच्चइ जाव एगंतेणं अनाहारगे ।

[८३४] से भयवं ! अत्थि केई जेणमिणामो परम-गुरूणं पी अलंघणिज्जं परमसरणं फुडं पयडं-पयड पयडं परम-कल्लाणं कसिण-कम्मद्व-दुक्ख-निद्ववणं पवयणं अइक्कमेज्ज वा वइक्कमेज्ज वा लंघेज्ज वा-खंडेज्ज वा विराहेज्ज वा आसाएज्ज वा, से मनसा वा वयसा वा कायसा वा जाव णं वयासी गोयमा ! णं अनंतेणं कालेणं परिवट्टमाणेणं संपयं दस-अच्छेरगे भविंसु । तत्थ णं असंखेज्जे अभव्वे असंखेज्जे मिच्छादिद्वि असंखेज्जे सासायणे दव्व-लिंगमासीय सढत्ताए दंभेणं सक्करिज्जंति एत्थेए अज्झयणं-५, उद्देसो-

धम्मिग त्ति काऊणं बहवे अदिद्व-कल्लाणे जइणं पवयणमब्भुवगमंति तमब्भुवगामिय रस-लोलत्ताए विसय-लोलत्ताए दुद्वंतिदियं-दोसेणं अनुदियहं जहद्वियं मग्गं निद्ववंति, उम्मग्गं च उस्सप्पयंति, ते य सव्वे तेणं कालेणं इमं परम-गुरूणं पि अलंघणिज्जं पवयणं जाव णं आसायंति ।

[८३५] से भयवं ! कयरे णं ते णं काले णं दस अच्छेरगे भविंसु ? गोयमा ! णं इमे ते अनंतकाले णं दस अच्छेरगे भवंति, तं जहा तित्थयराणं उवसग्गे, गब्भ-संकमणे, वामा तित्थयरे, तित्थयरस्स णं देसणाए अभव्व समुदाएण परिसा-बंधि, सविमाणानं चंदाइच्चाणं तित्थयरसमवसरणे, आगमने वासुदेवा णं संखज्झुणीए अन्नयरेणं वा राय-कउहेणं परोप्पर-मेलावगे, इहइं तु भारहे खेत्ते हरिवंस-कुलुप्पत्तीए, चमरुप्पाए, एग समएणं अट्टसय-सिद्धिगमनं, असंजयाणं पूया-कारगे त्ति ।

[८३६] से भयवं ! जे णं केई कहिंचि कयाई पमाय-दोसाओ पवयणमासाएज्जा से णं किं आयरियं पयं पावेज्जा ? गोयमा ! जे णं केई कहिंवि कयाई पमायदोसओ असई कोहेण वा मानेण वा मायाए वा लोभेण वा, रागेण वा दोसण वा, भएण वा हासेण वा, मोहेण वा अन्नन्न-दोसेण वा,

पवयणस्स णं अन्नयरे द्वाणे वइमित्तेणं पि अनायारं असमायारी परूवेमाणे वा अनुमन्नेमाणे वा, पवयणमासाएज्जा । से णं बोहिं पि नो पावे किमंगं आयरियपयलंभं ? से भयवं किं अभव्वे मिच्छादिट्ठी आयरिए भवेज्जा ? गोयमा ! भवेज्जा । एत्थं च णं इंगालमद्दगाई नेए ।

से भयवं ! किं मिच्छादिट्ठी निक्खमेज्जा ? गोयमा ! निक्खमेज्जा ।

से भयवं! कयरेणं लिंगेणं से णं वियाणेज्जा जहा णं धुवमेस मिच्छादिट्ठी ? गोयमा ! जे णं कय-सामाइए सव्व-संग-विमुत्ते भवित्ताणं अफासु-पानगं परिभुज्जेजा, जे णं अनगार-धम्मं पडिवज्जित्ताणमसई सोइरियं वा पुरोइरियं वा तेउकायं सेवेज्ज वा सेवावेज्ज वा तेउकायं सेविज्जमाणं अन्नेसिं समणुजाणेज्ज वा, तहा नवण्हं बंभचेर-गुत्तीणं जे केई साहू वा साहूणी वा एक्कमवि खंडेज्ज वा विराहेज्ज वा खंडिज्जमाणं वा विराहिज्जमाणं वा बंभचेर-गुत्ती परेसिं समणुजाणेज्जा वा, मणेण वा वायाए वा कारण वा से णं मिच्छादिट्ठी, न केवलं मिच्छादिट्ठी अभिग्गहियमिच्छादिट्ठी वियाणेज्जा ।

[८३७] से भयवं ! जे णं केई आयरिए इ वा मयहरए इ वा असई कहिंचि कयाई तहाविहं संविहाणगमासज्ज इणमो निग्गंथं पवयणमन्नहा पन्नवेज्जा से णं किं पावेज्जा ? गोयमा ! जं सावज्जायरिएणं पावियं ।

से भयवं! कयरे णं से सावज्जयरिए किं वा तेणं पावियं ? ति । गोयमा ! णं इओ य उसभादि-तित्थंकर-चउवीसिगाए अनंतेणं कालेणं जा अतीता अन्ना चउवीसिगा तीए जारिसो अहयं तारिसो चेव सत्त-रयणी-पमाणेणं जगच्छेरय-भूयो देविंद-विंदवंदिओ पवर-वर-धम्मसिरी नाम चरम-धम्मतित्थंकरो अहेसि । तस्स य- तित्थे सत्त अच्छेरगे पभूए, अहण्णया परिनिव्वुडस्स णं तस्स तित्थंकरस्स कालक्कमेणं असंजयाणं सक्कार-कारवणे नाम अच्छेरगे वहिउमारद्धे, तत्थ णं लोगानुवत्तीए मिच्छत्त-वइयं असंजय-पूयानुरयं बहु-जन-समूहं ति वियाणिऊणं तेणं कालेणं तेणं समएणं अमुणिय-समय-सम्भावेहिं ति-गारव-मइरा-मोहिएहिं नाम-मेत्त-आयरियमयहरेहिं सइढाईणं सयासाओ दविण-जायं पडिग्गहिय-थंभ-सहस्सूसिए सक-सके ममत्तिए चेइयालगे काराविऊणं ते चेव दुरंत-पंत-लक्खणाहमाहमेहिं आसईए ते चेव चेइयालगे मासीय गोविऊणं च बल-वीरिय-पुरिसक्कार-परक्कमे संते बले संते वीरिए संते पुरिसक्कार-परक्कमे चइऊण उग्गाभिग्गहे अनियय-विहारं नीयावासमासइत्ता णं सिढिलिहोऊणं संजमाइसुद्धिए पच्छा अज्झयणं-९, उद्देसो-

परिचिच्चाणं इहलोग-परलोगावायं अंगीकाऊणं य सुदीह-संसारं तेसुं चेव मढ-देवलेसुं अच्छत्थं गढिरे मुच्चिरे ममीकाराहंकारेहि णं अभिभूए सयमेव विचित्तमल्ल दामाईहिं णं देवच्चणं काउमब्भुज्जए, जं पुण समय-सारं परं-इमं सव्वन्नु-वयणं तं दूर-सुदूरयरेणं उज्झियंति ।

तं जहा-सव्वे जीवा सव्वे पाणा सव्वे भूया सव्वे सत्ता न हंतव्वा न अज्जावेयव्वा न परियावेयव्वा न परिधेतव्वा न विराहेयव्वा न किलामेयव्वा न उद्वेयव्वा, जे केई सुहमा जे केई बायरा जे केई तसा जे केई थावरा, जे केई पज्जत्ता जे केई अपज्जत्ता, जे केई एगेंदिया जे केइ बेइंदिया जे केई तेइंदिया जे केई चउरिंदिया जे केई पंचेंदिया, तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए कारणं, जं पुण गोयमा ! मेहुणं तं एगंतेणं निच्छयओ बाढं तहा आउ-तेउ-समारंभं च सव्वहा सव्वपयारेहिं णं सययं विवज्जेज्जा मुनीति । एस धम्ममे धुवे सासए नीरए समेच्च लोगं खेयण्णूहिं पवेइयं ति ।

[८३८] से भयवं! जे णं केई साहू वा साहूणी वा निग्गंथे अनगारे दव्वत्थयं कुज्जा से णं किमालावेज्जा ? गोयमा ! जे णं केई साहू वा साहूणी वा निग्गंथे अनगारे दव्वत्थयं कुज्जा से णं अजये

इ वा असंजएइ वा, देव-भोइए इ वा देवच्चगे इ वा जाव णं उम्मग्गपए इ वा, दूरुज्झिय सीले इ वा कुसीले इ वा सच्छंदयारिए इ वा आलवेज्ज ।

[८३९] एवं गोयमा ! तेषिं अनायार-पवत्ताणं बहूणं आयरिय-मयहरादीणं एगे मरगयच्छवी कुवलयप्पहाभिहाणे नाम अनगारे महा-तवस्सी अहेसि, तस्स णं महा-महंते जीवाइ-पयत्थेसु तत्त-परिण्णामे सुमहंत चेव संसार-सागरे-तासुं तासुं जोणीसुं संसरण-भयं-सव्वहा सव्व-पयारेहिं णं अच्चंतं आसायणा-भीरुयत्तणं तक्कालं तारिसे वी असमंजसे अनायारे बहु-साहम्मिय-पवित्तए । तथा वी सो तित्थयराणमाणं नाइक्कमेइ, अहन्नया सो अनिगूहिय-बल-वीरिय-पुरिसक्कार-परक्कमे सुसीम-गण-परियरिओ सव्वन्नु-पणीयागम-सुत्तत्थो-भयाणुसारेणं ववगय-राग-दोस-मोह-मिच्छत्तममकारहंकारो सव्वत्थपडिबद्धो किं बहुणा सव्वगुणगणाहिद्विय-सरीरो अनेग गामागर-नगर-पुर-खेड-कब्बड-मडंब-दोणमुहाइ-सन्नियेस विसेसेसुं अनेगेसुं भव्व-सत्ताणं संसारचारग-विमोक्खणिं सद्धम्म-कहं परिकहेहिंतो विहरिंसु एवं च वच्चंति दियहा ।

अन्नया णं सो महानुभागो विहरमाणो आगओ, गोयमा ! तेषिं नीयविहारीणमावासगे तेषिं च महा-तवस्सी काऊण सम्मानिओ किइक्कमासण-पयाणाइणा सुविनएणं एवं च सुह-निसण्णो चिद्वित्ताणं धम्म-कहाइणा विणोएणं पुणो गंतुं पयत्तो ।

ताहे भणिओ सो महानुभागो गोयमा ! तेषिं दुरंत-पंत-लक्खणेहिं लिंगोवजीवीहि णं भद्वायारुम्मग्ग-पवत्तगाभिगगीय-मिच्छादिद्वीहिं । जहा णं भयवं जइ तुममिहइं एककं वासा-रत्तियं चाउम्मासियं पंजियंताणमेत्थं एत्तिगे एत्तिगे चेइयालगे भवंति नूनं तुज्झाणत्तीए, ता किरउ-मनुग्गहम्महाणं इहेव चाउम्मासियं । ताहे भणियं तेण महानुभागेणं गोयमा ! जहा भो भो पियंवए ! जइ वि जिनालए तथा वि सावज्जमिणं, नाहं वाया-मित्तेणं पि एयं आयरिज्जा, एयं च समय-सार-परं तत्तं जहद्वियं अविवरियं नीसंकं भणमाणेणं तेषिं मिच्छादिद्वि-लिंगीणं साहुवेस-धारीणं मज्झे गोयमा ! आसंकलियं तित्थयर-नाम-कम्म-गोयं तेणं कुवलयप्पभेणं एगभवाव-सेसीकओ भवोयही । तत्थ य दिद्वी अणुल्लवणिज्ज नाम संघ मेलावगो अहेसि । तेषिं च बहुहिं पावमइंहिं लिंगिण-लिंगणियाहिं परोप्परमेग मयं काऊणं गोयमा ! तालं दाउयं विप्पलोइयं चेव तं तस्स महानुभाग सुमह तवस्सिणो कुवलयप्प-हाभि-हाणं कयं च से सावज्जायरियाभिहाणं सद्धकरणं गयं च पसिद्धीए । एवं च सद्धिज्जामाणो वि सो तेणाप-अज्झयणं-९, उद्वेसो-

सत्थ-सद्ध-करणेणं तथा वि गोयमा ! ईसिं पि न कुप्पे ।

[८४०] अहन्नया तेषिं दुरायाराणं सद्धम्म-परंमुहाणं अगार-धम्मानगार-धम्मोभयभद्वाणं लिंग-मेत्त-नाम-पव्वइयाणं कालक्कमेणं संजाओ परोप्परं आगम-वियारो, जहा णं सइढा-गाणमसई संजया चेव मढ-देउले पडिजागरेंति खंड-पडिए य समारावयंति, अन्नं च जाव करणिज्जं तं पइ समारंभे कज्जमाणे जइस्सावि णं नत्थि दोस-संभवं । एवं च केई भणंति संजम-मोक्ख-नेयारं अन्ने भणंति जहा णं पासायवडिंसए पूया-सक्कार-बलि-विहाणाईसुं न तित्थुच्छप्पणा चेव मोक्ख-गमनं एवं तेषिं अविइय-परमत्थाणं पाव-कम्माणं जं जेण सिद्धं सो तं चेवुद्वामुस्सिंखलेणं मुहेणं पलवति ताहे समुद्वियं वाद-संघट्टं । नत्थि य कोई तत्थ आगम कुसलो तेषिं मज्झे जो तत्थ जुत्ता-जुत्तं वियारेइ, जो पमाण-मुवइस्सइ तथा एगे भणंति जहा-अमुगो अमुगत्थामे चिट्ठे । अन्ने भणंति अमुगो अन्ने भणंति किमत्थ बहुणा पलविणं

सर्व्वेसिं अण्हाणं ? सावज्जायरीओ एत्थ पमाणं ति तेहिं भणियं जहा एवं होउ त्ति हक्कारावेह लहु । तओ हक्काराविओ गोयमा!

सो तेहिं सावज्जायरीओ आगओ दूरदेसाओ अप्पडिबद्धत्ता विहरमाणो, सत्तहिं मासेहिं जाव णं दिट्ठो एगाए अज्जाए, सा य तं कडुग्ग-तव-चरण-सोसिय-सरीरं चम्मट्ठि-सेस तणुं अच्चंतं तव-सिरिए दिप्पंतं सावज्जायरियं पेच्छिय सुविम्हियंतक्करणा वियक्किउं पयत्ता अहो किं एस महानुभागो णं सो अरहा किं वा णं धम्मो चेव मुत्तिमंतो ? किं बहुना-तियसिंदवंदाणं पि वंदणिज्ज-पाय-जुओ एस त्ति चिंतिरुणं भत्ति-भरणिब्भरा आयाहिण-पयाहिणं काऊणं उत्तिमंगेणं संघट्टेमाणी इत्ति निवडिया चलणेसुं गोयमा ! तस्स णं सावज्जायरीयस्स, दिट्ठो य सो तेहिं दुरायारेहिं पणमिज्जमाणो, अन्नया णं सो तेसिं तत्थ जहा जग-गुरुहिं उवइडं तहा चेव गुरुवएसानुसारेणं आनुपुव्वीए जह-ट्ठियं सुत्तत्थं वागरेइ । ते वि तहा चेव सद्वहंति अन्नया ताव वागरियं गोयमा ! जाव णं एक्कारसण्हमंगाणं चोद्धसण्हं पुव्वाणं दुवालसंगस्स णं सुयणाणस्स नवनीयसारभूयं सयल-पाव-परिहारइ-कम्म-निम्महण आगयं इणमेव गच्छ-मेरा-पन्नवणं महानिसीह-सुयक्खंधस्स पंचममज्झयणं ।

एत्थेव गोयमा ! ताव णं वक्खाणियं जाव णं आगया इमा गाहा :-

[८४१] जत्थिथी-कर-फरिसं अंतरियं कारणे वि उप्पन्ने ।

अरहा वि करेज्ज सयं तं गच्छं मूल गुण-मुक्कं

॥

[८४२] तओ गोयमा अप्प-संकिणं चेव चिंतियं तेन सावज्जायरिएणं जहा णं-जइ इह एयं जहट्ठियं पन्नवेमि तओ जं मम वंदनगं दाउमाणीए तीए अज्जाए उत्तिमंगेणं चलणग्गे पुट्ठे तं सर्व्वेहिं पि दिट्ठमेएहिं ति । ता जहा मम सावज्जायरियाहिहाणं कयं तहा अन्नमवि किंचि एत्थ मुद्धकं काहिंति, अहन्नहा सुत्तत्थं पन्नवेमि ता णं महती आसायणा, ता किं करियव्वमेत्थं ? ति किं एयं गाहं पओवयामि किं वा णं अन्नहा पन्नवेमि ? अहवा हा हा न जुत्तमिणं उभयहा वि अच्चंतगरहियं आयहियट्ठीणमेयं, जओ न-मेस समयाभिप्पाओ जहा णं जे भिक्खू दुवालसंगस्स णं सुयणाणस्स असई चुक्कक्खलियपमायासंकादी-सभयत्तेणं पयक्खरमत्ता-बिंदुमवि एककं पओवेज्जा अन्नहा वा पन्नवेज्जा, संदिद्धं वा सुत्तत्थं वक्खाणेज्जा, अविहीए अओगस्स वा वक्खाणेज्जा । से भिक्खू अनंतसंसारी भवेज्जा, ता किं रेत्यं जं होही तं च भवउ, जहट्ठियं चेव गुरुवएसानुसारेणं सुत्तत्थं पवक्खामि त्ति चिंतिरुणं गोयमा ! पवक्खाया निखिलावयविसुद्धा सा तेन गाहा ।

अज्झयणं-५, उट्टेसो-

एयावसरंमि चोइओ गोयमा ! सो तेहिं दुरंत-पंत-लक्खणेहिं जहा जइ एवं ता तुमं पि ताव मूल-गुण-हीनो जाव णं संभरेसु तं जं तद्विवसं तीए अज्जाए तुज्झं वंदनगं दाउकामाए पाए उत्तिमंगेणं पुट्ठे । ताहे इह-लोइगायस-हीरू खरसत्थरीहूओ । गोयमा ! सो सावज्जायरीओ चिंतिओ जहा जं मम सावज्जायरियाहिहाणं कयं इमेहिं तहा तं किं पि संपयं काहिंति । जे णं तु सर्व्व-लोए अपुज्जो भविस्सं, ता किमेत्थं पारिहारगं दाहामि ? त्ति चिंतमाणेणं संभरियं तित्थयर-वयणं जहा णं जे केई आयरिए इ वा मयहरए इ वा गच्छाहिवई सुयहरे भवेज्जा, से णं जं किंचि सर्व्वन्नू अनंत-नाणीहिं पावाववाय-ट्ठाणं पडिसेहियं तं सर्व्वं सुयानुसारेणं विन्नायं सर्व्वहा सर्व्व-पयारेहि णं नो समायरेज्जा नो णं समायरिज्जमाणं समनुजाणेज्जा । से कोहेण वा माणेण वा मायाए वा लोभेण वा, भएण वा हासेण वा, गारवेण वा दप्पेण वा पमाणेण वा, असती-चुक्क-खलिएण वा, दिया वा राओ वा, एगओ वा, परिसागओ वा, सुत्ते वा

जागरमाणे वा, तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं एतेसिमेवपयाणं । जे केइ विराहगे भवेज्जा से णं भिक्खू भूओ भूओ निंदणिज्जे गरहणिज्जे खिंसणिज्जे दुगुंछणिज्जे सव्व-लोग-परिभूए बहू-वाहि-वेयणा-परिगय-सरीरे-उक्कोसद्धितीए अनंत-संसार-सागरं परिभमेज्जा, तत्थ णं परिभममाणे खणमेक्कं पि न कहिंचि कयाइ निव्वुई संपावेज्जा, ता पमाय-गोयर-गयस्स णं मे पावाहमाहम-हीन-सत्त-काउरिसस्स इहइं चेव समुद्धियाए महंता आवई, जेणं न सक्को अहमेत्थं जुत्ती-खमं किंचि पडिउत्तरं पयाउं जे ।

तहा परलोगे य अनंत-भव-परंपरं भममाणो घोर-दारुणानंत-सोय-दुक्खस्स भागी भवीहामि हं मंदभागो त्ति । चिंतयंतो ऽवलक्खिओ सो सावज्जायरिओ गोयमा ! तेहिं दुरायार-पाव-कम्म-दुद्ध-सोयारेहिं जहा णं अलिय-खर-सत्थरीभूओ एस, तओ संखुद्धमणं खर-सत्थरी भूयं कलिऊणं च भणियं तेहिं दुद्ध-सोयारेहिं जहा-जाव णं नो छिन्नमिणमो संसयं ताव णं उड्डं वक्खाणं अत्थि । ता एत्थं तं परिहारगं वायरेज्जा, जं पोढ-जुत्ती-खमं कुग्गाह-निम्महण-पच्चलं ति ।

तओ तेन चिंतियं जहा नाहं अदिन्नेणं पारिहारगेणं चुक्किमोमेसिं, ता किमेत्थ पारिहारगं दाहामि त्ति चिंतयंतो पुणो वि गोयमा! भणिओ सो तेहिं दुरायारेहिं जहा किमद्वं चिंता-सागरे निमज्जिऊणं ठिओ? सिग्घमेत्थं किंचि पारिहारगं वयाहि, नवरं तं पारिहारगं भणेज्जा । जं बहुत्तत्थकियाए अव्वभिचारी, ताहे सुइरं परितप्पिऊणं हियएणं भणियं सावज्जारिएणं जहा एएणं अत्थेणं जग-गुरुहिं वागरियं जं अओगस्स सुत्तत्थं न दायव्वं [जहा] ।

[८४३] आमे धडे निहित्तं जहा जलं तं घडं विनासेइ ।

इय सिद्धंत-रहस्सं अप्पाहारं विनासेइ

॥

[८४४] ताहे पुणो वि तेहिं भणियं जहा किमेयाइं अरड-बरडाइं असंबद्धाइं दुब्भासियाइं पलवह ? जइ पारिहारगं णं दाउं सक्के ता उप्फिड, मुयसु आसनं, ऊसर सिग्घं, इमाओ ठाणाओ । किं देवस्स रूसेज्जा, जत्थ तुमं पि पमाणीकाऊणं सव्व-संघेणं समय-सब्भावं वायरेउं जे समाइडो, तओ पुणो वि सुइरं परितप्पिऊणं गोयमा ! अन्नं पारिहारगं अलभमाणेणं अंगीकाऊण दीहं संसारं भणियं च सावज्जायरिएणं जहा णं उस्सग्गाववाएहिं आगमो ठिओ तुब्भे न याणहेयं । एगंतो मिच्छंत्तं जिणाणमाणा मनेगंता । एयं च वयणं गोयमा ! गिम्हायव-संताविएहिं सिहिउलेहिं च अहिनव-पाउस-सजलघनोरल्लिमिव सबहुमानं समाइच्छियं तेहिं दुद्ध-सोयारेहिं ।

तओ एग-वयण-दोसेणं गोयमा ! निबंधिऊणानंत-संसारियत्तणं अप्पडिक्कमिऊणं च तस्स अज्झयणं-५, उद्देसो-

पाव-समुदाय-महाखंधमेलावगस्स मरिऊणं उववन्नो वाणमंतरेसुं सो सावज्जायरिओ । तओ चुओ समाणो उववन्नो पवसिय-भत्ताराए पडिवासुदेव-पुरोहिय-धूयाए कुच्छिंसु ।

अहन्नया वियाणियं तीए जननीए पुरोहिय-भज्जाए जहा णं हा हा हा ! दिन्नं मसि-कुच्चयं सव्व-नियकुलस्स इमीए दुरायाराए मज्झ धूयाए । साहियं च पुरोहियस्स, तओ संतप्पिऊणं सुइरं बहुं च हियएणं साहारिउं निव्विसया कया सा तेणं पुरोहिणं एमहंता-असज्झदुन्निवार-अयस-भीरुणा । अहन्नया थेव कालंतरेणं कहिं वि थाममलभमाणी सी-उण्ह-वाय-विज्झडिया खु-क्खाम-कंठा दुब्भिक्ख दोसेणं पविट्ठा दासत्ताए रस-वाणिज्जगस्स गेहे, तत्थ य बहूणं मज्ज-पानगाणं संचियं साहरेइ अनुसमयमुच्चिद्वगं ति

अन्नया अनुदिणं साहरमाणीए तमुच्चिद्वगं ददूणं च बहु-मज्ज-पानगे मज्जमावियमाणे पोग्गलं च समुद्धिसंते तहेव तीए मज्ज-मंसस्सोवरिं दोहलगं समुप्पन्नं । जाव णं जं तं बहुमज्ज-पानगं

नड-नट्ट-छत्त चारण-भडोड्ड-चेड-तक्करा-सरिस-जातीसु मुज्झियं खुर-सीस-पुंछ-कण्ण-द्विमयगयं उच्चिदं वल्लूरखंडं तं समुद्धिसिउं समारद्धा तहा तेसु चेव उच्चिद्व-कोडियगेसुं जं किंचि नाहीए मज्झं वित्थक्के तमेवासाइउमारद्धा । एवं च कइवय-दिणाइक्कमेणं मज्जमंसोवरिं दढं गेही संजाया । ताहे तस्सेव रस-वाणिज्जगस्स गेहाओ परिमुसिऊणं किंचि-कंस-दूस-दविण-जायं अन्नत्थ विक्किणिऊणं मज्जं मंसं परिभुंजइ, ताव णं विण्णायं तेण रसवाणिज्जगेणं साहियं च नरवइणो, तेणा वि वज्झा-समाइद्धा ।

तत्थ य रायउले एसो गोयमा ! कुल-धम्मो, जहा णं जा काइ आवण्ण-सत्ता नारी अवर्राह-दोसेणं सा जाव णं नो पसूया ताव णं नो वावायव्वा, तेहिं विनिउत्त-गणिगितगेहिं सगेहे नेऊण पसूइ समयं जाव नियंतिया रक्खेयव्वा ।

अहन्नया नीया तेहिं हरिएस-जाईहिं स-गेहं, कालक्कमेण पसूया य दारगं तं सावज्जायरिय जीवं, तओ पसूयमेत्ता चेव तं बालयं उज्झिऊण पणद्धा मरणभयाहितत्था सा गोयमा ! दिसिमेक्कं गंतूणं वियाणियं च तेहिं पावेहिं, जहा-पणद्धा सा पाव-कम्म, साहियं च नरवइणो सूणाहिवइणा । जहा णं देव पणद्धा सा दुरायारा कयली-गब्भोवमं दारगमुज्झिऊणं, रण्णा वि पडिभणियं जहा णं जइ नाम सा गया ता गच्छउ तं बालयं पडिवालेज्जासु सव्वहा तहा कायव्वं जहा तं बालगं न वावज्जे । गिण्हेसु इमे पंच-सहस्सा दविण-जायस्स तओ नरवइणो संदंसेणं सुयमिव परिवालिओ सो पंसुली-तणओ ।

अन्नया कालक्कमेणं मओ सो पाव-कम्मो सूणाहिवई, तो रण्णा समणुजाणियं तस्सेव बालगस्स घरसारं, कओ पंचणहं सयाणं अहिवई, तत्थ य सुणाहिवइ पए पइद्विओ समाणो ताइं तारिसाइं अकरणिज्जाइं समणुद्वित्ताणं गओ सो गोयमा ! सत्तमीए पुढवीए अपइद्धाण-नामे निरयावासे सावज्जायरिय-जीवो । एवं तं तत्थ तारिसं घोर-पचंड-रोद्धं सुदारुणं दुक्खं तेत्तीसं सागरोवमे जाव कह कहवि किलेसेणं समनुभविऊणं इहागओ समाणो उववन्नो अंतरदीवे एगोरुयजाई ।

तओ वि मरिऊणं अववन्नो तिरिय-जोणीए महिसत्ताए तत्थ य जाइं काइं वि नारग-दुक्खाइं

तेसिं तु सरिस-नामाइं अनुभविऊणं छव्वीसं संवच्छराणि । तओ गोयमा ! मओ समाणो उववन्नो मनुएसु, तओ वासुदेवत्ताए सो सावज्जायरिय-जीवो । तत्थ वि अहाऊयं परिवालिऊणं अनेग-संगामारंभ-परिग्गह-दोसेणं मरिऊणं गओ सत्तमाए । तओ वि उव्वट्टिऊणं सुइर-कालाओ उववन्नो गय-कण्णो नाम मनुय-जाई । तओ वि कुणिमाहारदोसेणं कूरज्झ-वसायमईगओ मरिऊणं पुणो वि सत्तमाए, तेहिं चेव अपइद्धाणे अज्झयणं-५, उद्देसो-

निरय-वासे तओ वि उव्वट्टिऊणं पुणो वि उववन्नो तिरिएसु महिसत्ताए ।

तत्था वि णं नरगोवमं दुक्खमनुभवित्ता णं मओ समाणो उववन्नो बाल-विहवाए पंसुलीए माहण-धूयाए कुच्छिसि । अहन्नया निउत्त-पच्छन्न-गब्भ-साडण-पाडणे खार-चुण्ण जोगदोसेणं अनेगवाहि-वेयणा-परिगय-सरीरो सिडिहिडंत-कुड्ड-वाहिए परिगलमाणो सलसलित्त-किमिजालेणं खज्जंतो नीहरिओ नरओवमं घोर-दुक्ख-निवासो गब्भवासाओ गोयमा ! सो सावज्जायरियजीवो ।

तओ सव्व-लोगेहिं निदिज्जमाणो गरहिज्जमाणो खिसिज्जमाणो दुगुंछिज्जमाणो सव्व-लोअपरिभूओ पान-खान-भोगोवभोग-परिवज्जिओ गब्भवास-पभित्तीए चेव विचित्तसारीर-मानसिग-घोर-दुक्ख-संतत्तो सत्त-संवच्छरसयाइं दो मासे य चउरो दिने य जावज्जीविऊणं मतो समाणो उववन्नो वाणमंतरेसुं

तओ चुओ उववन्नो मनुएसुं, पुणो वि सूणाहिवइत्ताए, तओ वि तक्कम्मदोसेणं सत्तमाए, तओ वि उव्वट्टेऊणं उववन्नो तिरिएसुं चक्कियघरंसि गोणत्ताए ।

तत्थ य चक्क-सगड-लंगलायट्टणेणं अहन्निसं जूवारोवणेणं पच्चिऊणं कुहियाउव्वियं खंधं सम्मुच्छिए य किमी, ताहे अक्खमीहूयं खंध-जूव-धरणस्स विण्णाय पट्टीए वाहिउमारद्धो तेणं चक्किएणं । अहन्नया कालक्कमेणं जहा खंधं तहा पच्चिऊण कुहिया पट्टी, तत्था वि सम्मुच्छिए किमी, सडिऊण विगयं च पट्टि-चम्मं, ता अकिंचियरं निप्पओयणं ति नाऊणं मोक्कलियं, तेणं चक्किएणं, तं सलसलितं किमि जालेहिं णं खज्जमाणं बड्लं सावज्जायरिय-जीवं, तओ मोक्कल्लिओ समाणो परिसडिय पट्टि-चम्मो बहु काय-साण-किमि-कुलेहिं सबज्जभंभंतरे विलुप्पमाणो एकूणतीसं संवच्छराइं जावाहाउगं परिवालेऊण मओ समाणो उववन्नो अनेग-वाहि-वेयणा-परिगय-सरीरो मनुएसुं महाधनस्स णं इब्भ-गेहे ।

तत्थ वमन-विरेयण-खार-कडु-तित्त-कसाय-तिहला-मुग्गुल-काढगे आवीयमाणस्स निच्च-विसोसणाहिं च असज्जाणुवसम्म-घोर-दारुण-दुक्खेहिं पज्जालियस्सेव गोयमा ! गओ निप्फलो तस्स मनुयजम्मो । एवं च गोयमा ! सो सावज्जायरिय-जीवो चोद्दस-रज्जुयलोगं जम्मण-मरणेहिं णं निरंतरं पडिजरिऊणं सुदीहनंतकालाओ सम्पुप्पन्नो मनुयत्ताए अवरविदेहे तत्थ य भाग-वसेणं लोगानुवत्तीए गओ तित्थयरस्स वंदण-वत्तियाए, पडिबुद्धो य, पव्वइओ, सिद्धो य । इहतेवीसइम-तित्थयरस्स पास-नामस्स काले । एयं तं गोयमा ! सावज्जायरिएणं पावियं ति ।

से भयवं ! किं पच्चइयं तेनानुभूयं एरिसं दूसहं घोर-दारुणं महादुक्ख-सन्निवाय-संघट्टमेत्तियकालं ति ? गोयमा ! जं भणियं तक्काल-समयम्मि जहा णं उस्सग्गाववाएहिं आगमो ठिओ, एगंतो मिच्छत्तं जिणाण आणा अनेगंतो त्ति एय-वयणपच्चइयं ।

से भयवं ! किं उस्सग्गाववाएहिं णं नो ठियं आगमं एगंतं च पन्नविज्जइ ? गोयमा ! उस्सगाववाएहिं चेव पवयणं ठियं अनेगंतं च पन्नविज्जइ नो णं एगंतं नवरं आउक्काय-परिभोगं तेउ-कायसमारंभं मेहुणासेवणं च, एते तओ थाणंतरे एगंतेणं निच्छयओ बाढं सव्वहा सव्व-पयारेहिं णं आय-हियट्टीणं निसिद्धं ति । एत्थं च सुत्ताइक्कमे संमग्ग-विप्पनासणं उम्मग्ग-पयरिसणं, तओ य आणा-भंगं आणा-भंगाओ अनंत संसारी ।

से भयवं ! किं ते णं सावज्जायरिएणं मेहुणमासेवियं ? गोयमा ! सेवियासेवियं नो सेवियं नो असेवियं । से भयवं ! केणं अट्टेणं एवं वुच्चइ ? गोयमा ! जं तीए अज्जाए तक्कालं उत्तिमंगेणं पाए फरिसिए फरिसिज्जमाणे य नो तेण आउंटिउं संवरिए, एएणं अट्टेणं गोयमा ! वुच्चइ ।

अज्झयणं-५, उद्देसो-

से भयवं एद्दए-मेत्तस्स वि णं एरिसे घोरे दुव्विमोक्खे बद्ध-पुट्ट-निकाइए कम्म-बधे ? गोयमा ! एवमेयं न अन्नह त्ति ।

से भयवं तेण तित्थयरनाम-कम्मगोयं आसंकलियं एग-भवावसेसीकओ आसी भवोयहि, ता किमेयमनंत-संसाराहिडंणं ति ? गोयमा ! नियय-पमाय-दोसेणं तम्हा एयं वियाणित्ता भवविरहमिच्छ-माणेणं गोयमा ! सुद्धिड-समय-सारेणं गच्छाहिवइणा सव्वहा सव्व-पयारेहिं णं सव्वत्थामेसु अच्चत्तं अप्पमत्तेणं भवियव्वं, ति बेमि ।

◦ दुवालसंग-सुय-नाणस्स नवनीयसारं नामं पंचमं अज्झयणं समत्तं ◦

◦ छट्टं अज्झयणं-गीयत्थविहार ◦

[८४५] भगवं जो रत्ति-दियहं सिद्धंतं पढई सुणे वक्खाणे चिंतए सततं सो किं
अनायारमायरे सिद्धंत-गयमेगं पि अक्खरं जो वियाणई सो गोयम मरणंते वी अनायारं नो समायरे ।

- [८४६] भयवं! ता कीस दस-पुव्वी नंदिसेण-महायसे ।
पव्वज्जं चेच्चा गणिकाए गेहं पविट्ठो पमुच्चइ ॥
- [८४७] तस्स पविट्ठं मे भोगऽहलं खलिय-कारणं ।
भव-भय-भीओ तहा वि दुयं सो पव्वज्जमुवागओ ॥
- [८४८] पायालं अवि उड्ढमुहं सग्गं होज्जा अहो-मुहं ।
नो उणो केवलि-पन्नत्तं वयणं अन्नहा भवे ॥
- [८४९] अन्नं सो बहूवाए वा सुय-निबद्धे वियारिउं ।
गुरुणो पामूले मोत्तूणं लिंगं निव्विसओ गओ ॥
- [८५०] तमेव वयणं सरमाणो दंत-भग्गो स-कम्मुणा ।
भोगहलं कम्मं वेदेइ बद्ध-पुट्ठ-निकाइयं ॥
- [८५१] भयवं! ते केरिसोवाए सुय-निबद्धे वियारिए ।
जेणुज्झिऊणं सामन्नं अज्ज वि पाणे धरेइ सो ? ॥
- [८५२] एते ते गोयमोवाए केवलीहिं पवेइए ।
जहा विसय-पराभूओ सरेज्जा सुत्तमिमं मुनी [तं जहा-] ॥
- [८५३] तवमद्वगुणं घोरं आढवेज्जा सुदुक्करं ।
जया विसए उदिज्जंति पडणासण-विसं पिबे ॥
- [८५४] काउं बंधिऊण मरियव्वं नो चरित्तं विराहए ।
अह एयाइं न सक्किज्जा ता गुरुणो लिंगं समप्पिया ॥
- [८५५] विदेसे जत्थ नागच्छे पउत्ती तत्थ गंतूण ।
अनुव्वयं पालेज्जा नो णं भविया निद्धंधसे ॥
- [८५६] ता गोयम ! नंदिसेनेणं गिरि-पडणं जाव पत्थुयं ।
ताव आयासे इमा वाणी पडिओ वि नो मरिज्ज तं ॥

अज्झयणं-६, उद्देसो-

- [८५७] दिसा-मुहाइं जा जोए ता पेच्छे चारणं-मुनिं ।
अकाले नत्थि ते मच्चू-विसमवि स मादितुं गओ ॥
- [८५८] ताहे वि अण-हियासेहिं विसएहिं जाव पीडिओ ।
ताव चिंता समुप्पन्ना जहा किं जीविण मे ॥
- [८५९] कुंदेदु-निम्मलय-रागं तित्थं पावमती अहं ।
उड्डाहेतो य सुज्झिस्सं कत्थ गंतुमनारिओ ॥
- [८६०] अहवा स-लंछणो चंदो कुंदस्स उण का पहा ? ।

कलि-कलुस-मल-कलंकेहिं वज्जियं जिन-सासनं	॥
[८६१] ता एयं सयल-दालिद्ध दुह-किलेस-क्खयंकरं । पवयणं खिंसावितो कत्थ गंतूणं सुज्झिहं	? ॥
[८६२] दुग्गड्ढं गिरिं रोढुं अत्ताणं चुन्निमो धुवं । जाव विसय-वसेणाहं किंचिस्तुड्डाहं करं	॥
[८६३] एवं पुणो वि आरोढुं ढंकुच्छिण्णं गिरीयडं । संवरे किल निरागारं गयणे पुनरवि भाणियं	॥
[८६४] अयाले नत्थि ते मच्चू चरिमं तुज्झ इमं तनुं । ता बद्ध-पुढं भोगहलं वेइत्ता संजमं कुरु	॥
[८६५] एवं तु जाव बे वारा चारण-समणेहिं सेहिओ । ताहे गंतूणं सो लिंगं गुरु-पामूले निवेदिउं	॥
[८६६] तं सुत्तत्थं सरेमाणो दूरं देसंतरं गओ । तत्थाहार निमित्तेणं वेसाए घरमागओ	॥
[८६७] धम्म-लाभं जा भणइ अत्थ-लाभं विमग्गिओ । तेणा वि सिद्धि-जुत्तेणं एवं भवउ त्ति भाणियं	॥
[८६८] अद्ध-तेरस-कोडीओ दविण-जायस्स जा तहिं । हिरण्ण-वुद्धिं दावेउं मंदिरा पडिगच्छइ	॥
[८६९] उत्तुंग-थोर-थणवट्टा गणिया आलिंगिउं दढं । भन्ने किं जासिमं दविणं अविहीए दाउं	? चुल्लुगा ! ॥
[८७०] तेन वि भवियच्चयं एयं कलिऊणेयं पभाणियं । जहा-जा ते विही इट्टा तीए दव्वं पयच्छसु	॥
[८७१] गहिऊणाभिग्गहं ताहे पविट्ठो तीए मंदिरं । एयं जहा न ताव अहयं न भोयण-पान-विहिं करे	॥
[८७२] दस-दस न बोहिए जाव दियहे अनूनगे । पडण्णा जा न पुन्नेसा काइय-मोक्खं न ता करे	॥
[८७३] अन्नं च न मे दायव्वा पव्वज्जोवट्ठिस्स वि । जारिसगं तु गुरुलिंगं भवे सीसं पि तारिसं	॥

अज्झयणं-६, उद्देसो-

[८७४] अक्खीणत्थं निही-काउं लुंचिओ खोसिओ वि सो । तहाराहिओ गणिगाए बद्धो जह पेम-पासेहिं ॥
[८७५] आलावाओ पणओ पणयाओ रती रतीए वीसंभो । वीसंभाओ नेहो पंचविहं वड्ढे पेम्मं ॥
[८७६] एवं सो पेम्म-पासेहिं बद्धो वि सावगत्तणं । जहोवड्ढं करेमाणो दस अहिए वा दिने दिने ॥
[८७७] पडिबोहिऊणं संविग्गे गुरु पामूलं पवेसई ।

- संपयं बोहिओ सो वि दुम्मुहेण जहा तुमं ॥
- [८७८] धम्मं लोगस्स साहेसि अत्त-कज्जम्मि मुज्झसि ।
नूनं विक्केणुयं धम्मं जं सयं नाणुचेद्वसि ॥
- [८७९] एवं सो वयणं सोच्चा दुम्मुहस्स सुभासियं ।
थरथरस्स कंपंतो निंदितं गरहितं चिरं ॥
- [८८०] हा ! हा ! हा ! अकज्जं मे भट्ट-सीलेण किं कयं ।
जेणं तु मुत्तोऽघसरे गुंडिओऽसुइ किमी जहा ॥
- [८८१] धी धी धी ! अहन्नेणं पेच्छ जं मेऽनुचिद्वियं ।
जच्च-कंचण-समऽत्ताणं असुइ-सरिसं मए कयं ॥
- [८८२] खण-भंगुरस्स देहस्स जा विवत्ती णं मे भवे ।
ता तित्थयरस्स पामूलं पायच्छित्तं चरामिऽहं ॥
- [८८३] एस मा-गच्छती एत्थं चिद्वंताणेव गोयमा ! ।
घोरं चरिऊणं पच्छित्तं संविग्गोऽम्हेहिं भासितं ॥
- [८८४] घोर-वीर-तवं काउं असुहं-कम्मं खवेत्तु य ।
सुक्कज्झाणे समारुहितं केवलं पप्प सिज्झिही ॥
- [८८५] ता गोयममेय-नाएणं बहु-उवाए वियारिया ।
लिंगं गुरुस्स अप्पेउं नंदिसेनेणं जहा कयं ॥
- [८८६] उस्सग्गं ता तुमं बुज्झ सिद्धंतेयं जहद्वियं ।
तवंतरा उदयं तस्स महंतं आसि गोयमा ! ॥
- [८८७] तहा वि जा विसए उइण्णे तवे घोरं महातवं ।
अट्टगुणं तेणमनुचिण्णं तो वी विसए न निज्जिए ॥
- [८८८] ताहे विस-भक्खणं पडणं अनसनं तेन इच्छियं ।
एयं पि चारण-समणेहिं बे वारा जाव सेहिओ ॥
- [८८९] ताव य गुरुस्स रयहरणं अप्पियण्णं देसंतरं गओ ।
एते ते गोयमोवाए सुय-निबद्धे वियाणिए ॥
- [८९०] जाव गुरुणो न रयहरणं पव्वज्जा य न अल्लिया ।
तावाकज्जं न कायव्वं लिंगमवि जिन-देसियं ॥

अज्झयणं-६, उद्देसो-

- [८९१] अन्नत्थ न उज्झियव्वं गुरुणो मोत्तूण अंजलिं ।
जइ सो उवसासितं सक्को गुरु ता उवसासइ ॥
- [८९२] अह अन्नो उवसासितं सक्को तो वि तस्स कहिज्जइ ।
गुरुणा वि य तं ण अन्नस्स गिरावेयव्वं कयाइ वि ॥
- [८९३] जो भविया वीइय परमत्थो जग-द्विय-वियाणगो ।
एयाइं तु पयाइं जो गोयमा ! णं विडंबए ॥
- [८९४] माया-पवंच-दंभेणं सो भमिही आसडो जहा ।

- भयवं ! न याणिमो को वि माया सीलो हु य आसडो ॥
- [८९५] किंवा निमित्तमुवरिउं सो भमे बहु-दुहडिओ ।
चरिमस्सण्णस्स तित्थयंमि गोयमा ! कंचन-च्छवी ॥
- [८९६] आयरिओ आसि भूइक्खो तस्स सीसो स आसडो ।
महव्वयाइं घेत्तूणं अह सुत्तत्थं अहिज्जिया ॥
- [८९७] ताव कोऊहलं जायं नो णं विसएहिं पीडिओ ।
चिंतेइ य जह सिद्धंते एरिसो दंसिओ विही ॥
- [८९८] ता तस्स पमाणेणं गुरुयणं रंजिउं दढं ।
तवं चऽद्वगुणं काउं पडणाणसरणं विसं ॥
- [८९९] करेहामि जहाऽहं पी देवयाए निवारिओ ।
दीहाऊ नत्थि ते मच्चू भोगे भुंज जहिच्छिए ॥
- [९००] लिंगं गुरुस्स अप्पेउं अन्नं देसतरं वय ।
भोगहलं वेइया पच्छा घोर वीर-तवं चर ॥
- [९०१] अहवा हा ! हा ! अहं मूढो आयसल्लेण सल्लिओ ।
समणाणं नेरिसं जुत्तं समयमवी मनसि धारिउं ॥
- [९०२] एत्था उ मे पच्छित्तं आलोएत्ता लहुं चरे ।
अहवा णं न आलोउं मायावी भण्णिमो पुणो ॥
- [९०३] ता दस वासे आयामं मास-खमणस्स पारणे ।
वीसयंबिलमादीहिं दो दो मासाण पारणे ॥
- [९०४] पणुवीसं वासे तत्थ चंदायण-तवेण य ।
छट्ठम-दसमाइं अट्ठ वासे अनूनगे ॥
- [९०५] मह-घोरेरिस पच्छित्तं सयमेवेत्थानुच्चरं ।
गुरु-पामूलेऽवि एत्थेयं पायच्छित्तं मे न अग्गलं ॥
- [९०६] अहवा तित्थयरेणेस किमद्वं वाइओ विही ? ।
जेणेयं अहीयमानोऽहं पायच्छित्तस्स मेलिओ ॥
- [९०७] सो च्चिय जाणेज्जा सव्वन्नू पच्छित्तं अनुचरामहं ।
जमेत्थं दुट्ठु चिंतिययं तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

अज्झयणं-६, उद्देसो-

- [९०८] एवं तं कद्वं घोरं पायच्छित्तं सयं-मती ।
काऊणं पि ससल्लो सो वाणमंतरयं गओ ॥
- [९०९] हेड्ढिमोवरिम-गेवेय विमाने तेन गोयमा ! ।
वयंतो आलोएत्ता जइ तं पच्छित्तं कुव्विया ॥

[अहीं लूलथी ९१० ने बएले क्कमांड १००० छपाई गयेल छे, वय्ये कोई ज गाथा के सूत्र रही गयेल नथी]

- [१०००] वाणमंतर-देवत्ता चङ्कणं गोयमासडो ।
रासहत्ताए तेरिच्छेसुं नरिंद-घरमागओ ॥
- [१००१] निच्यं तत्थ वडवाणं संघट्टण-दोसा तहिं ।
वसने वाही समुप्पन्ना किमी एत्थ समुच्छिए ॥
- [१००२] तओ किमिएहिं खज्जंतो वसन-देसम्मि गोयमा ।
मुक्काहारो खिइं लेढे वियणत्तो ताव साहुणो ॥
- [१००३] अदूरेण पवोलिते दडूणं जाइं सरत्तु य ।
निदिउं गरहिउं आया अनसनं पडिवज्जिया ॥
- [१००४] काग-साणेहि खज्जंतो सुद्ध-भावेण गोयमा ।
अरहंताण ति सरमाणो सम्मं उज्झियं तनूं ॥
- [१००५] कालं काऊण देविंद महाघोस-समाणिओ ।
जाओ तं दिव्वं इड्ढिं समणुभोत्तुं तओ चुओ ॥
- [१००६] उववन्नो वेसत्ताए जा सा नियडी न पयडिया ।
तओ वि मरिऊणं बहू अंत-पंत-कुलेऽडिओ ॥
- [१००७] कालक्कमेण महराए सिवइंदस्स दियाइणो ।
सुओ होऊण पडिबुद्धो सामन्नं काउं निव्वुडो ॥
- [१००८] एयं तं गोयमा ! सिद्धं नियडी-पुंजं तु आसडं ।
जे य सव्वन्नु-मुह-भणिए वयणे मनसा विडंबिए ॥
- [१००९] कोऊहलेण विसयाणं न उणं विसएहिं पीडिओ ।
सच्छंद पायच्छित्तेण भमियं भव-परंपरं ॥
- [१०१०] एयं नाऊणमेक्कं पि सिद्धंतिगमालावगं ।
जाणमाणे हु उम्मग्गं कुज्जा जे से वियाणिही ॥
- [१०११] जो पुण सव्व-सुयन्नाणं अडुं वा थेवयं पि वा ।
नच्चा वएज्जा मग्गेणं तस्स अही न वज्झती ।
एवं नाऊण मनसा वि उम्मग्गं नो पवत्तए-त्तिबेमी ॥
- [१०१२] भयवं! अकिच्चं काऊणं पच्छित्तं जो करेज्ज वा ।
तस्स लड्डयरं पुरओ जं अकिच्चं न कुव्वए ॥

अज्झयणं-६, उद्देशो-

- [१०१३] ताऽजुत्तं गोयममिणमो वयणं मनसा वि धारिउं ।
जहा काउमकत्तव्वं पच्छित्तेणं तु सुज्झिहं ॥
- [१०१४] जो एयं वयणं सोच्चा सद्धे अनुचरेइ वा ।
भट्टसीलाण सव्वेसिं सत्थवाहो स गोयमा ! ॥
- [१०१५] एसो काउं पि पच्छित्तं पाण-संदेह कारयं ।
आणा-अवराह पदीव-सिहं पविसे सलभो जहा ॥
- [१०१६] भगवं! जो बलविरियं पुरिसयार-परक्कमं ।

- अनिगूहंतो तवं चरइ पच्छित्तं तस्स किं भवे ॥
 [१०१७] तस्सेयं होइ पच्छित्तं असढ-भावस्स गोयमा ! ।
 जो तं थामं वियाणित्ता वेरि-सेण्णमवेक्खिया ॥
 [१०१८] जो बलं वीरियं सत्तं पुरिसयारं निगूहए ।
 सो सपच्छित्त अपच्छित्तो सढ-सीलो नराहमो ॥
 [१०१९] नीया-गोत्तं दुहं घोरं नरए उक्कोसिय-द्वितिं ।
 वेदित्तो तिरिय-जोणीए हिंडेज्जा चउगईए सो ॥
 [१०२०] से भगवं पावयं कम्मं परं वेइय समुद्धरे ।
 अननुभूएण नो मोक्खं पायच्छित्तेणं किं तहिं ? ॥
 [१०२१] गोयमा! वास-कोडीहिं जं अनेगाहिं संचियं ।
 तं पच्छित्त-रवी-पुट्टं पावं तुहिणं व विलीयई ॥
 [१०२२] घनघोरंधयारतमतिमिस्सा जहा सूरस्स गोयमा ! ।
 पायच्छित्त-रविस्सेवं पाव-कम्मं पणंस्सए ॥
 [१०२३] नवरं जइ तं पच्छित्तं जह भणियं तह समुच्चरे ।
 असढ-भावो अनिगूहिय-बल-विरिय-पुरिसायार-परक्कमे ॥
 [१०२४] अन्नं च-काउ पच्छित्तं सव्वं थेवं नमुच्चरे ।
 जो दरुद्धियसल्लोच्चे सो दिहं चाउग्गइयं अडे ॥
 [१०२५] भयवं! कस्सालोएज्जा पच्छित्तं को वदेज्ज वा ।
 कस्स व पच्छित्तं देज्जा आलोयावेज्ज वा कहं ? ॥
 [१०२६] गोयमास्सलोयणं ताव केवलीणं बहूसुं वि ।
 जोयण-सएहिं गंतूणं सुद्धभावेहिं दिज्जए ॥
 [१०२७] चउनाणीणं तयाभावे एवं ओहि-मई-सुए ।
 जस्स विमलयरे तस्स तारतम्मेण दिज्जई ॥
 [१०२८] उस्सग्गं पन्नवेत्तस्स ऊसग्गे पट्टियस्स य ।
 उस्सग्ग-रुइणो चेव सव्व-भावंतरेहि णं ॥
 [१०२९] उवसंतस्स दंतस्स संजयस्स तवस्सिणो ।
 समिती-गुत्ति-पहाणस्स दढ-चारित्तस्सासढभाविणो ॥

अज्झयणं-६, उद्देसो-

- [१०३०] आलोएज्जा पडिच्छेज्जा देज्जा दविज्ज वा परं ।
 अहन्निसं तदुद्धिं पायच्छित्तं अनुच्चरे ॥
 [१०३१] से भयवं केत्तियं तस्स पच्छित्तं हवइ निच्छियं ।
 पायच्छित्तस्स ठाणाइं, केवतियाइं कहेहि मे ? ॥
 [१०३२] गोयमा! जं सुसीलाणं समणाणं दसण्हं उ ।
 खलियागय-पच्छित्तं संजइ तं नवगुणं ॥
 [१०३३] एक्का पावेइ पच्छित्तं जइ सुसीला दढ-व्वया ।

- अह सीलं विराहेज्जा ता तं हवइ सयगुणं ॥
- [१०३४] तीए पंचिंदिया जीवा जोणी-मज्झ-निवासिणो ।
सामण्णं नव लक्खाइं सव्वे पासंति केवली ॥
- [१०३५] केवल-नाणस्स ते गम्मा नोऽकेवली ताइं पासती ।
ओहीनाणी वियाणेए नो पासे मनपज्जवी ॥
- [१०३६] ते पुरिसं संघट्टेती कोल्हुगम्मि तिले जहा ।
सव्वे मुम्मुरावेइ रत्तुम्मत्ता अहन्निया ॥
- [१०३७] चक्कमंती य गाढाइं काइयं वोसिरंति या ।
वावइज्जा उ दो तिन्नि सेसाइं परियावई ॥
- [१०३८] पायच्छित्तस्स ठाणाइं संखाइयाइं गोयमा ! ।
अनालयंतो हु एक्कं पि ससल्लमरणं मरे ॥
- [१०३९] सयसहस्स नारीणं पोहं फालेत्तु निग्घिणो ।
सत्तट्ठमासिए गब्भे चडफडंते निगितइ ॥
- [१०४०] जं तस्स जेत्थियं पावं तेत्थियं तं नवं गुणं ।
एक्कसित्थी पसंगेणं साहू बंधिज्ज मेहुणा ॥
- [१०४१] साहुणीए सहस्सगुणं मेहुणेक्कसिं सेविए ।
कोडिगुणं तु बिइज्जेणं तइए बोही पनस्सई ॥
- [१०४२] एयं नाऊण जो साहू इत्थियं रामेहिई ।
बोहिलाभा परिब्भट्ठो कहं वराओ सोहिइ ॥
- [१०४३] अबोहिलाभियं कम्मं संजओ अह संजई ।
मेहुणे सेविए आऊ-तेउक्काए पबंधई ॥
- [१०४४] जम्हा तीसु वि एएसु अवरज्झंतो हु गोयमा ! ।
उम्मग्गमेव वद्धारे मग्गं निट्ठवइ सव्वहा ॥
- [१०४५] भगवं! ता एएण नाएणं, जे गारत्थी मउक्कडे । ।
रतिं दिया न छइडंति, इत्थीयं तस्स का गइं ? ॥
- [१०४६] ते सरीरं सहत्थेणं छिंदिऊणं तिलं तिलं ।
अग्गिए जइ वि होमंति तो वि सुद्धी न दीसइ ॥

अज्झयणं-६, उट्ठेसो-

- [१०४७] तारिसो वि निवित्तिं सो परदारस्स जई करे ।
सावग-धम्मं च पालेइ गइं पावेइ मज्झिमं ॥
- [१०४८] भयवं! सदार-संतोसे जइ भवे मज्झिमं गइं ।
ता सरीरे वि होमंतो कीस सुद्धिं न पावई ? ॥
- [१०४९] सदारं परदारं वा इत्थी पुरीसो व्व गोयमा ! ।
रमतो बंधए पावं नो णं भवइ अबंधगो ॥
- [१०५०] सावग-धम्मं जहुत्तं जो पाले पर-दारं चए ।

जावज्जीवं तिविहेणं तमनुभावेण सा गई ॥

[१०५१] नवरं नियम-विहूणस्स परदार-गमनस्स उ ।

अनियत्तस्स भवे बंधं निवत्तिए महाफलं ॥

[१०५२] सुथेवाणं पि निवित्तिं जो मनसा वि य विराहए ।

सो मओ दोग्गइं गच्छे मेघमाला जहज्जिया ॥

[१०५३] मेघमालज्जियं नाहं जाणिमो भुवन-बंधवा ।

मनसावि अनुनिवित्तिं जा खंडियं दोग्गइं गया ॥

[१०५४] वासुपुज्जस्स तित्थम्मि भोला कालगच्छवी ।

मेघमालज्जिया आसि गोयमा ! मन-दुब्बला ॥

[१०५५] सा नियममागास-पक्खंदा काउं भिक्खाए निग्गया ।

अन्नओ नत्थि नीसारं मंदिरोवरि संठिया ॥

[१०५६] आसन्नं मंदिरं अन्नं लंधित्ता गंतुमिच्छुगा ।

मनसाभिनंदेवं जा ताव पज्जलिया दुवे ॥

[१०५७] नियम-भंगं तय सुहुमं तीए तत्थ न निंदियं ।

तं नियम-भंग-दोसेणं डज्जेत्ता पढमियं गया ॥

[१०५८] एयं नाउं सुहुमं पि नियमं मा विराहिह ।

जे छिज्जा अक्खयं सोक्खं अनंतं च अनोवमं ॥

[१०५९] तव-संजमे वएसुं च नियमो दंड-नायगो ।

तमेव खंडेमाणस्स न वए नो व संजमे ॥

[१०६०] आजम्मेणं तु जं पावं बंधेज्जा मच्छबंधगो ।

वय-भंग-काउमाणस्स तं चेवडुगुणं मुणे ॥

[१०६१] सय-सहस्स-स-लद्धीए जोवसामित्तु निक्खमे ।

वयं नियममखंडेतो जं सो तं पुन्नमज्जिने ॥

[१०६२] पवित्ता य निवित्ता य गारत्थी संजमे तवे ।

जमणुद्धिया तयं लाभं जाव दिक्खा न गिण्हिया ॥

[१०६३] साहु-साहुणी-वग्गेणं विण्णायव्वमिह गोयमा ! ।

जेसिं मोत्तूण ऊसासं नीसासं नानुजाणियं ॥

अज्झयणं-६, उद्देसो-

[१०६४] तमवि जयणाए अणुण्णायं वि जयणाए न सव्वहा ।

अजयणाए ऊससंतस्स कओ धम्मो कओ तवो ? ॥

[१०६५] भयवं! जावइयं दिट्ठं तावइयं कहनुपालिया ।

जे भवे अवीय-परमत्थे किच्चाकिच्चमयाणगे ॥

[१०६६] एगंतेण हियं वयणं गोयमा ! दिस्संती केवली ।

नो बलमोडीए कारेंति हत्थे धेत्तूण जंतुणो ॥

[१०६७] तित्थयर-भासिए वयणे जे तह त्ति अनुपालिया ।

- सिंदा देव-गणा तस्स पाए पणमंति हरिसिया ॥
 [१०६८] जे अविइय परमत्थे किच्चाकिच्चमजाणगे ।
 अंधो अंधी एतेसिं समं जल-थलं गड्ड-टिक्कुरं ॥
 [१०६९] गीयत्थो य विहारो बीओ गीयत्थो-मीसओ ।
 समणुण्णाओ सुसाहूणं नत्थि तइयं वियप्पणं ॥
 [१०७०] गीयत्थे जे सुसंविग्गे अनालसी दढव्वए ।
 अखलिय-चारित्ते सययं राग-दोस-विवज्जिए ॥
 [१०७१] निट्ठविय अट्ठमय-ट्ठाणे समिय-कसाए जिइंदिए ।
 विहरेज्जा तेसिं सद्धिं तु ते छउमत्थे वि केवली ॥
 [१०७२] सुहुमस्स पुढवि-जीवस्स जत्थेगस्स किलामणा ।
 अप्पारंभं तयं बैति गोयमा ! सव्व-केवली ॥
 [१०७३] सुहुमस्स पुढवि-जीवस्स वावत्ती जत्थ संभवे ।
 महारंभं तयं बैति गोयमा ! सव्वे वि केवली ॥
 [१०७४] पुढवि-काइय एककं दरमल्लेत्तस्स गोयमा ! ।
 असाय-कम्म-बंधो हु दुव्विमोक्खे ससल्लिए ॥
 [१०७५] एवं च आऊ-तेऊ वाऊ-तह वणस्सती ।
 तसकाय-मेहुणे तह य चिक्कणं चिणइ पावगं ॥
 [१०७६] तम्हा मेहुण-संकप्पं पुढवादीण विराहणं ।
 जावज्जीवं दुरंत-फलं तिविहं तिविहेण वज्जए ॥
 [१०७७] ता जे अविदिय-परमत्थे गोयमा ! नो य जे मुने ।
 तम्हा ते विवज्जेज्जा दोग्गई-पंथ-दायगे ॥
 [१०७८] गीयत्थस्स उ वयणेणं विसं हलाहलं पि वा ।
 निव्विकप्पो पभक्खेज्जा तक्खणा जं समुद्दवे ॥
 [१०७९] परमत्थओ विसं तोसं अमयरसायणं खु तं ।
 निव्विकप्पं न संसारे मओ वि सो अमयस्समो ॥
 [१०८०] अगीयत्थस्स वयणेणं अमयं पि न घोट्टए ।
 जेण अयरामरे हविया जह किलाणो मरिज्जिया ॥

अज्झयणं-६, उट्ठेसो-

- [१०८१] परमत्थओ न तं अमयं विसं तं हलाहलं ।
 न तेन अयरामरो होज्जा तक्खणा निहणं वए ॥
 [१०८२] अगीयत्थ-कुसीलेहिं संगं तिविहेण वज्जए ।
 मोक्ख-मग्गस्सिमे विग्घे पहम्मी तेणगे जहा ॥
 [१०८३] पज्जलियं हुयवहं दट्ठुं नीसंको तत्थ पविसिउं ।
 अत्ताणं पि इहेज्जासि नो कुसीलं समल्लिए ॥
 [१०८४] वास-लक्खं पि सूलीए संभिन्नो अच्छिया सुहं ।

- अगीयत्थेण समं एककं खणद्धं पि न संवसे ॥
- [१०८५] विणा वि तंत-मंतेहिं घोर-दिट्ठीविसं अहिं ।
डसंतं पि समल्लीया नागीयत्थं कुसीलाहमं ॥
- [१०८६] विसं खाएज्ज हालाहलं तं किर मारेइ तक्खणं ।
न करेऽगीयत्थ-संसग्गिं विट्ठवे लक्खं पि जइ तहिं ॥
- [१०८७] सीहं वग्घं पिसायं वा घोर-रूवं भयंकरं ।
उगिलमाणं पि लीएज्जा न कुसीलमगीयत्थं तथा ॥
- [१०८८] सत्तजम्मंतरं सत्तुं अवि मन्नेज्जा सहोयरं ।
वय-नियमं जो विराहेज्जा जनयं पिक्खे तयं रिउं ॥
- [१०८९] वरं पविट्ठो जलियं हुयासणं न या वि नियमं सुहुमं विराहियं ।
वरं हि मच्चू सुविसुद्ध-कम्मणो न यावि नियमं भंतूण जीवियं ॥
- [१०९०] अगीयत्थत्तदोसेणं गोयमा ! ईसरेण उ ।
जं पत्तं तं निसामित्ता लहुं गीयत्थो मुनी भवे ॥
- [१०९१] से भयवं नो वियाणेहं ईसरो को वि मुनिवरो ? ।
किं वा अगीयत्थ-दोसेणं पत्तं तेण ? कहेहि णे ॥
- [१०९२] चउवीसिगाए अन्नाए एत्थ भरहम्मि गोयमा ! ।
पढमे तित्थंकरे जइया विही-पुव्वेण निव्वुडे ॥
- [१०९३] तइया नेव्वाण-महिमाए कंत-रूवे सुरासुरे ।
निवयंते उप्पयंते दट्ठुं पच्चंतवासिओ ॥
- [१०९४] अहो! अच्छेरयं अज्जं मच्चलोयम्मि पेच्छिमो ।
न इंदजालं सुमिणं वा वि दिट्ठं कत्थई पुणो ॥
- [१०९५] एवं वीहाऽपोहाए पुव्वं जातिं सरित्तु सो ।
मोहं गंतूण खणमेक्कं मारुया ऽऽसासिओ पुणो ॥
- [१०९६] थर-थर-थरस्स कंपतो निंदित्तं गरहित्तं चिरं ।
अत्ताणं गोयमा ! धणियं सामन्नं गहिउमुज्जओ ॥
- [१०९७] अह पंचमुट्ठियं लोयं जावाऽऽढवइ महायसो ।
सविनयं देवया तस्स रयहरणं ताव ढोयई ॥

अज्झयणं-६, उट्ठेसो-

- [१०९८] उग्गं कट्ठं तवच्चरणं तस्स दट्ठूण ईसरो ।
लोओ पूयं करेमाणो जाव उ गंतूण पुच्छई ॥
- [१०९९] केण तं दिक्खिओ कत्थ उप्पन्नो को कुलो तव ।
सुत्तत्थं कस्स पामूले सासियं हो समज्जियं ॥
- [११००] सो पच्चेगबुद्धो वा सव्वं तस्स वि वागरे ।
जाई कुलं दिक्खा सुत्तं अत्थ जह य समज्जियं ॥
- [११०१] तं सोऊण अहन्नो सो इमं चिंतेइ गोयमा ।

- अलिया अनारिओ एस लोगं दंभेण परिमुसे ॥
- [११०२] ता जारिसमेस भासेइ तारिसं सो वि जिनवरो ।
न किंचेत्थ वियारेणं तुण्हक्के ई वरं ठिए ॥
- [११०३] अहवा नहि नहि सो भगवं ! देवदानव-पणमिओ ।
मनोगयं पि जं मज्झं तं पि छिन्नेज्ज संसयं ॥
- [११०४] तावेस जो होउ सो होउ किं वियारेण एत्थ मे ? ।
अभिनंदामीह पव्वज्जं सव्व-दुक्ख-विमोक्खणिं ॥
- [११०५] ता पडिगओ जिणिंदस्स सयासे जा तं न अक्खई ।
भुवनेसं जिनवरं तो वी गणहरं आसी य द्विओ ॥
- [११०६] परिनिव्वयंमि भगवंते धम्म-तित्थंकरे जिने ।
जिनाभिहियं सुत्तत्थं गणहरो जा परूवती ॥
- [११०७] तावमालावगं एयं वक्खाणंमि समागयं ।
पुढवी काइगमेगं जो वावाए सो असंजओ ॥
- [११०८] ता ईसरो विचिंतेइ सुहुमे पुढविकाइए ।
सव्वत्थ उद्विज्जंति को ताइं रक्खिउं तरे ? ॥
- [११०९] हलुई करेइ अत्ताणं एत्थं एस महायसो ।
असद्धेयं जने सयले किमद्वेयं पवक्खई ? ॥
- [१११०] अच्चंत-कडयडं एयं वक्खाणं तस्स वी फुडं ।
कंठसोसो परं लाभे एरिसं कोऽनुचिड्डइ ? ॥
- [११११] ता एयं विप्पमोत्तूणं सामन्नं किंचि मज्झिमं ।
जं वा तं वा कहे धम्मं ता लोओऽम्हाणाउड्डई ॥
- [१११२] अहवा हा हा ! अहं मूढो पाव-कम्मी नराहमो ।
नवरं जइ नाणुचिद्वामि अन्नोऽनुचेद्वती जनो ॥
- [१११३] जेणेयमनंत-नाणीहिं सव्वन्नूहिं पवेदियं ।
जो एयं अन्नहा वाए तस्स अट्ठो न बज्झइ ॥
- [१११४] ताहमेयस्स पच्छित्तं धोरमइदुक्करं चरं ।
लहुं सिग्घं सुसिग्घयरं जावमच्चू न मे भवे ॥

अज्झयणं-६, उद्वेसो-

- [१११५] आसायणा कयं पावं आसुं जेण विहुव्वती ।
दिव्वं वास-सयं पुन्नं अह सो पच्छित्तमनुचरे ॥
- [१११६] तं तारिसं महा-घोरं पायच्छित्तं सयं-मती ।
काउं पच्चेयबुद्धस्स सयासे पुणो वि गओ ॥
- [१११७] तत्था वि जा सुणे वक्खाणं तावऽहिगारम्मिमागयं ।
पुढवादीणं समारंभं साहू तिविहेण वज्जए ॥
- [१११८] दढ-मूढो हुत्थ जोई ता ईसरो मुक्खमब्भुओ ।

- विचिंतेवं जहेत्थ जए को न ताइं समारभे ? ॥
- [१११९] पुढवीए ताव एसेव समासीनो वि चिद्धइ ।
अग्गीए रद्धयं खायइ सव्वं बीय समुब्भवं ॥
- [११२०] अन्नं च-विना पाणेणं खणमेक्कं जीवए कहं ? ।
ता किं पि तं पवक्खे स जं पच्चुयमत्थंतियं ॥
- [११२१] इमस्सेव समागच्छे न उणेयं कोइ सद्धे ।
तो चिद्धउ ताव एसेत्थं वरं सो चेव गणहरो ॥
- [११२२] अहवा एसो न सो मज्झं एक्को वी भणियं करे ।
अलिया एवंविहं धम्मं किंचुद्धेसेण तं पि य ॥
- [११२३] साहिज्जइ जो सवे किंचि न वुण मच्चंत-कडयडं ।
अहवा चिद्धंतु तावेए अहयं सयमेव वागरं ॥
- [११२४] सुहं सुहेण जं धम्मं सव्वो वि अनुद्धए जनो ।
न कालं कडयडस्सज्जं धम्मस्सिति जा विचिंतइ ॥
- [११२५] घडहडंतोसणी ताव निवडिओ तस्सोवरिं ।
गोयम ! निहणं गओ ताहे उववन्नो सत्तमाए सो ॥
- [११२६] सासन-सुय-नाण-संसग्ग पडिनीयत्ताए ईसरो ।
तत्थ तं दारुणं दुक्खं नरए अनुभविउं चिरं ॥
- [११२७] इहागओ समुद्धंमि महामच्छो भवेउ णं ।
पुणो वि सत्तमाए य तेत्तीसं सागरोवमे ॥
- [११२८] दुव्विसहं दारुणं दुक्खं अनुहविऊनेहागओ ।
तिरिय-पक्खीसु उववन्नो कागत्ताए स ईसरो ॥
- [११२९] तओ वि पढमियं गंतुं उव्वट्टित्ता इहागओ ।
दुद्ध-साणो भवेत्ताणं पुनरवि पढमियं गओ ॥
- [११३०] उव्वट्टित्ता तओ इहइं खरो होउं पुणो मओ ।
उववन्नो रासहत्ताए छब्भव-गहणे निरंतरं ॥
- [११३१] ताहे मनुस्स-जाईए समुप्पन्नो पुणो तओ ।
उववन्नो वणयरत्ताए मानुसत्तं समागओ ॥

अज्झयणं-६, उद्देसो-

- [११३२] तओ मरिउं समुप्पन्नो मज्जारत्तए स ईसरो ।
पुणो वि नरयं गंतुं इह सीहत्तेणं पुणो मओ ॥
- [११३३] उववज्जिउं चउत्थीए सीहत्तेण पुणो विह ।
मरिऊणं चउत्थीए गंतुं इह समायाओ ॥
- [११३४] तओ वि नरयं गंतुं चक्कियत्तेण ईसरो ।
तओ वि कुट्टी होऊणं बहु-दुक्खसद्धिओ मओ ॥
- [११३५] किमिएहिं खज्जमाणस्स पन्नासं संवच्छरे ।

जाऽकाम-निज्जरा जाया तीए देवेसुव्वज्जिओ ॥

[११३६] तओ इहइं नरीसत्तं लद्धुणं सत्तमिं गओ ।

एवं नरय-तिरिच्छेसुं कुच्छिय-मनुएसु ईसरो ॥

[११३७] गोयम! सुईरं परिब्भमिउं घोर-दुक्ख-सुदुक्खिओ ।

संपइ गोसालओ जाओ एस स वेवीसरज्जिओ ॥

[११३८] तम्हा एयं वियाणित्ता अचिरा गीयत्थे मुनी ।

भवेज्जा विदिय परमत्थे सारासारे परिन्नुए ॥

[११३९] सारासारमयाणित्ता अगीयत्थत्त-दोसओ ।

वय-मेत्तेणा वि रज्जाए पावगं जं समज्जियं ॥

[११४०] तेणं तीए अहण्णाए जा जा होही नियंतणा ।

नारय-तिरिय-कुमानुस्से तं सोच्या को धिइं लभे ॥

[११४१] से भयवं! का उण सा रज्जज्जिया? किंवा तीए अगीयत्थ-अत्त-दोसेणं वाया-मेत्तेणं पि पावं कम्मं समज्जियं, जस्स णं विवागऽयं सोऊणं नो धिइं लभेज्जा ? गोयमा ! णं इहेव भारहे वासे भदो नाम आयरिओ अहेसि, तस्स य पंच सए साहूणं महानुभागाणं दुवालस सए निग्गंथीणं । तत्थ य गच्छे चउत्थरसियं ओसावणं तिदंडोऽचित्तं च कढिओदगं विप्पमोत्तूणं चउत्थं न परिभुज्जई । अन्नया रज्जा नामाए अज्जियाए पुव्वकय-असुह-पाव-कम्मोदएण सरीरंग कुट्ट-वाहीए परिसडिऊणं किमिएहिं सुमदिसिउमारद्धं, अह अन्नया परिगलंत-पूइ-रुहिरतनूं तं रज्जज्जियं पासिया ताओ संजईओ भणंति, जहा हला हला ! दुक्करकारिगे किमेयं ? ति ।

ताहे गोयमा ! पडिभणियं तीए महापावकम्माए भग्गलक्खण-जम्माए रज्जज्जियाए जहा-एएण फासुग-पानगेणं आविज्जमाणेणं विनट्टं मे सरीरगं ति, जावेयं पलवे ताव णं संखुहियं हिययं गोयमा! सव्व-संजइ-समूहस्स जहा णं विवज्जामो फासुगपानगं ति तओ एगाए तत्थ चितियं संजतीए जहा णं-जइ संपयं चैव ममेयं सरीरगं एगनिमिसब्भंतरेव पडिसडिऊणं खंडखंडेहिं परिसडेज्जा, तहावि अफासुगोदगं एत्थ जम्मे न परिभुंजामि, फासुगोदगं न परिहरामि अन्नं च-किं सच्चमेयं जं फासुगोदगेणं इमीए सरीरगं विनट्टं ? सव्वहा न सच्चमेयं ! जओ णं पुव्वकय-असुह-पाव-कम्मोदएणं सव्वमेवविहं हवइ त्ति । सुदुयरं चित्तिउं पयत्ता जहा णं जहा-

भो! पेच्छ पेच्छ अन्नाण-दोसोवहयाए दढ-मूढ-हिययाए विगय लज्जाए इमीए महापावकम्माए संसार-घोर-दुक्ख-दायगं केरिसं दुट्टवयणं गिराइयं ? जं मम कण्ण-विवरेसुं पि नो अज्झयणं-६, उट्टेसो-

पविसेज्ज त्ति । जओ भवंतर-कएणं असुह-पाव-कम्मोदएणं जं किंचि दारिद्ध-दुक्ख-दोहग्ग-अयसब्भक्खाण कुट्टाइ-वाहि-किलेस-सन्निवायं देहम्मि संभवइ न अन्नह त्ति जे णं तु एरिसमागमे पडिज्जइ तं जहा :-

[११४२] को देइ कस्स दिज्जइ विवियं को हरइ हीरए कस्स ।

सयमप्पणो विट्ठत्तं अल्लियइ दुहं पि सोक्खं पि ॥

[११४३] चिंतमाणीए चैव उप्पन्नं केवलं नाणं, कया य देवेहिं केवलिमहिमा, केवलिणा वि नर-सुरासुराणं पनासियं संसय-तम-पडलं अज्जियाणं च, तओ भत्तिब्भरनिब्भराए पणाम-पुव्वं पुट्टो केवली रज्जाए जहा भयवं ! किमट्टमहं एमहंताणं महा-वाहि-वेयणाणं भायणं संवुत्ता ? ताहे गोयमा ! सजल-

जलहर-सुरदुंदुहि-निग्घोस-मनोहारि-गंभीर-सरेणं भणियं केवलिणा जहा- सुणसु दुक्करकारिए ! जं तुज्झ सरीर-विहडण-कारणं ति तए रत्त-पित्त-दूसिए अब्भंतरओ सरीरगे सिणिद्धाहारमाकंठाए कोलियग मीसं परिभुत्तं, अन्नं च एत्थ गच्छे एत्तिए सए साहु-साहुणीणं तहा वि जावइएणं अच्छीणि पक्खालिज्जंति तावइयं पि बाहिर-पानगं सागारियद्वाय निमित्तेणावि नो णं कयाइ परिभुज्जइ । तए पुण गोमुत्तं पडिग्गहणगयाए तस्स मच्छियाहिं भिणिहिणित्त-सिंघाणग-लाला-लोलिय-वयणस्स णं सड्ढगसुयस्स बाहिर-पानगं संघट्टिऊणं मुहं पक्खालियं, तेण य बाहिर-पानय-संघट्टण-विराहणेणं ससुरासुर-जग-वंदाणं पि अलंघणिज्जा गच्छ-मेरा अइक्कमिया, तं च न खमियं तुज्झ पवयण-देवयाए जहा-साहूणं साहूणीणं च पाणोवरमे वि न छिप्पे हत्थेणा वि जं कूव-तलाय-पोक्खरिणि-सरियाइ-मतिगयं उदगं ति केवलं तु जमेव विराहियं ववगय-सयल-दोसं फालुगं तस्स परिभोगं पन्नत्तं वीयरागेहिं ।

ता सिक्खवेमि ताव एसा हु दुरायारा जेण अन्नो को वि न एरिस-समायारं पवत्तेइ, त्ति चिंतिऊणं अमुगं अमुगं चुण्णजोगं समुद्धिसमाणाए पक्खित्तं असन-मज्झिम्मि ते देवयाए, तं च तेणोवल-क्खित्तं सक्कियं ति देवयाए चरियं, एएण कारणेणं ते सरीरं विहडियं ति, न उणं फासुदग-परिभोगेणं ति । ताहे गोयमा ! रज्जाए वि भावियं जहा एवमेयं न अन्नह त्ति चिंतिऊण विन्नविओ केवली जहा ।

भयवं! जइ अहं जहुत्तं पायच्छित्तं चरामि ता किं पन्नप्पइ मज्झं एयं तनुं ? तओ केवलिणा भणियं जहा-जइ कोइ पायच्छित्तं पयच्छइ ता पन्नप्पइ । रज्जाए भणियं ! जहा भयवं जइ तुमं चिय पायच्छित्तं पयच्छसि अन्नो को एरिसमहप्पा ? तओ केवलिणा भणियं जहा- दुक्करकारिए पयच्छामि अहं ते पच्छित्तं, नवरं पच्छित्तं एव नत्थि जेणं ते सुद्धी भवेज्जा । रज्जाए भणियं भयवं ! किं कारणं ? ति केवलिणा भणियं जहा जं ते संजइ-वंद-पुरओ गिराइयं जहा मम फासुग-पानपरिभोगेण सरीरगं विहडियं ति, एय च दुट्ठ-पाव-महा-समुद्धाएक्क-पिंडं तुह वयणं सोच्चा संखुद्धाओ सव्वाओ चैव इमाओ संजइओ, चिंतियं च एयाहिं जहा-निच्छयओ विमुच्चाओ फासुओदगं तयज्झवसायस्स आलोइयं निदियं गरहियं च एयाहिं दिन्नं च मए एयाण पायच्छित्तं । एत्थं च एतेव वयणदोसेणं जं ते समज्जियं अच्चंत कडु विरस-दारुणं बद्ध-पुट्ट निकाइयं तुंगं पावरासिं तं च तए कुट्ट-भगंदर-जलोदर-वाय-गुम्म-मास-निरोह-हरिसा गंडमालाइ-अनेग-वाहि-वेयणा-परिगय-सरीराए दारिद्ध-दुक्ख-दोहग्ग-अयस-अब्भक्खाणं-संताव-उव्वेग-संदीविय-पज्ज-लियाए अनंतेहिं भव-गहणेहिं सुदीह-कालेणं तु अहन्निसानुभवेयव्वं ।

एएण कारणेणं एस इमा गोयमा ! सा रज्जज्जिया जाए अगीयत्थत्त-दोसेणं वायामेत्तेणं एव एमहंतं दुक्खदायगं पाव-कम्मं समज्जियं ति ।

[११४४] अगीयत्थ-दोसेण भाव सुद्धिं न पावए ।

अज्झयणं-६, उद्देसो-

विना भावविसुद्धीए सकुलस-मनसो मुनी भवे ॥

[११४५] अनु-थेव-कलुस-हिययत्तं अगीयत्थत्तदोसओ ।

काऊणं लक्खणज्जाए पत्ता दुक्ख-परंपरा ॥

[११४६] तम्हा तं नाउ बुद्धेहिं सव्व-भावेण सव्वहा ।

गीयत्थेहिं भवित्ताणं कायव्वं निक्कलुसं मनं ॥

[११४७] भयवं! नाहं वियाणामि लक्खणदेवी हु अज्जिया ।

जा अनुकलुसमगीयत्थत्ता काउं पत्ता दुक्ख-परंपरं ॥

- [११४८] गोयमा! पंचसु भरहेसु एरवएसु उस्सप्पिणी ।
अवसप्पिणीए एगेगा सव्वयालं चउवीसिया ॥
- [११४९] सययमवोच्छित्तिए भूया तह य भविस्सती ।
अनाइ-निहणा एत्था एसा धुवं एत्थ जग-ट्टिई ॥
- [११५०] अतीय-काले असीइमा तहियं जारिसगे अहयं ।
सत्त-रयणी-पमाणेणं देव-दानव-पणमिओ ॥
- [११५१] चरिमो तित्थयरो जइया तया जंबू दाडिमो ।
राया भारिया तस्स सिरिया नाम बहु-सुया ॥
- [११५२] अन्नया सह दइएणं धूयत्थं बहू उवाइए करे ।
देवाणं कुल-देवीए चंदाइच्च-गहाण य ॥
- [११५३] कालक्कमेण अह जाया धूया कुवलय-लोयणा ।
तीए तेहिं कयं नामं लक्खणदेवी अहऽन्नया ॥
- [११५४] जाव सा जोव्वणं पत्ता ताव मुक्का सयंवरा ।
वरियंतीए वरं पवरं नयनानंद-कलाऽऽलयं ॥
- [११५५] परिणिय-मेत्तो मओ सो वि भत्ता सा मोहं गया ।
पयलंतंसु नयनेणं परियणेण य वारिया ॥
- [११५६] तालियंट-वाएणं दुक्खेणं आसासिया ।
ताहे हा हाऽऽकंदं करेऊणं हिययं सीसं च पिट्टिउं ।
अत्ताणं चोट्ट-फेट्टाहिं घट्टिउं दस-दिसासु सा ॥
- [११५७] तुण्हक्का बंधुवग्गस वयणेहिं तु स-सज्झसं ।
ठियाऽह कइवय-दिनेसुं अन्नया तित्थंकरो ॥
- [११५८] बोहिंतो भव्व-कमल-वने केवल-नाण-दिवायरो ।
विहरंतो आगओ तत्थ उज्जाणम्मि समोसढो ॥
- [११५९] तस्स वंदन-भत्तीए संतेउर-बल-वाहने ।
सव्विइढीए गओ राया धम्मं सोऊण पव्वइओ ॥
- [११६०] तहिं संतेउर-सुय-धूओ सुह-परिणामो अमुच्छिओ ।
उग्गं कट्ठं तवं घोरं दुक्करं अनुचिट्ठई ॥

अज्झयणं-६, उद्देसो-

- [११६१] अन्नया गणि-जोगेहिं सव्वे वि ते पवेसिया ।
असज्झाइल्लियं काउं लक्खणदेवी न पेसिया ॥
- [११६२] सा एगंते वि चिट्ठंती कीडंते पक्खिरूल्लए ।
दडूणेयं विचिंतेइ सहलमेयाण जीवियं ॥
- [११६३] जेणं पेच्छ चिडयस्स संघट्ठंती चिट्ठल्लिया ।
समं पिययमंगेसुं निव्वुई परम जने ॥
- [११६४] अहो तित्थंकरेणम्हं किमट्ठं चक्खु-दरिसणं ।

- पुरिसिन्धी रमंताणं सव्वहा वि निवारियं ॥
- [११६५] ता निदुक्खो सो अन्नेसिं सुह-दुक्खं न याणई ।
अग्गी दहण-सहाओ वि दिट्ठी दिट्ठो न निड्डहे ॥
- [११६६] अहवा न हि न हि भयवं ! आणावितं न अन्नहा ।
जेण मे ददूण कीडंति पक्खी पक्खुभियं मनं ॥
- [११६७] जाया पुरिसाहिलासा मे जा णं सेवामि मेहुणं ।
जं सिविणे वि न कायव्वं तं मे अज्ज विचिंतियं ॥
- [११६८] तहा य एत्थ जम्मम्मि पुरिसो ताव मणेण वि ।
नेच्छओ एत्तियं कालं सिविणंते वि कहिंचि वि ॥
- [११६९] ता हा हा ! दुरायारा पाव-सीला अहन्निया ।
अट्टमट्टाडं चिंतंती तित्थयर-मासाइमो ॥
- [११७०] तित्थयरेणावि अच्चंतं कट्ठं कडयडं वयं ।
अइदुद्धरं समादिट्ठं उग्गं घोरं सुदुक्करं ॥
- [११७१] ता तिविहेण को सक्को एयं अनुपालेऊणं ।
वाया-कम्मं समायरणे बे रक्खं नो तइयं मनं ॥
- [११७२] अहवा चिंतिज्जई दुक्खं कीरई पुण सुहेण य ।
ता जो मनसा वि कुसीलो स कुसीलो सव्व-कज्जेसु ॥
- [११७३] ता जं एत्थं इमं खलियं सहसा तुडि-वसेण मे ।
आगयं तस्स पच्छित्तं आलोइत्ता लहुं चरं ॥
- [११७४] सईण सील-वंताणं मज्झे पढमा महास्सरिया ।
धुरम्मि दियए रेहा एयं सग्गे वि घूसई ॥
- [११७५] तहा य पाय धूली मे सव्वो वि वंदए जनो ।
जहा किल सुज्झिज्जए मिमीए इति पसिद्धाए अहं जगे ॥
- [११७६] ता जइ आलोयणं देमि ता एयं पयडी-भवे ।
मम भायरो पिया-माया जाणित्ता हुंति दुक्खिए ॥
- [११७७] अहवा कहवि पमाणं जं मे मनसा विचिंतिय ।
तमालोइयं नच्चा मज्झ वग्गस्स को दुहो ? ॥

अज्झयणं-६, उट्टेसो-

- [११७८] जावेयं चिंतिउं गच्छे ता वुद्धंतीए कंटगं ।
फुडियं ठसत्ति पायतले ता निसण्णा पडुल्लिया ॥
- [११७९] चिंतेइ हो एत्थ जम्मम्मि मज्झ पायम्मि कंटगं ।
न कयाइ खुत्तं ता किं संपयं एत्थ होहिइ ? ॥
- [११८०] अहवा मुणियं तु परमत्थ-जाणगे अनुमती कया ।
संघट्ठंतीए चिडुल्लीए सीलं तेन विराहियं ॥
- [११८१] मूयंध-काण-बहिरं पि कुट्ठं सिडि विडि विडिवडं ।

- जाव सीलं न खंडेइ ताव देवेहिं थुव्वइ ॥
- [११८२] कंटगं चेव पाए मे खुत्तं आगासागासियं ।
एणं जं अहं चुक्का तं मे लाभं महंतियं ॥
- [११८३] सत्त वि साहाउ पायाले इत्थी जा मनसा वि य ।
सीलं खंडेइ सा नेइ कहियं जननीए मे इमं ॥
- [११८४] ता जं न निवडई वज्जं पंसु-विट्ठी ममोवरिं ।
सय-सक्करं न फुट्टइ वा हियं तं महच्छेरगं ॥
- [११८५] नवरं जइं एयमालोयं ता लोगो एत्थ चिंतिही ।
जहा-अमुगस्स धूयाए इयं मनसा अज्झवसियं ॥
- [११८६] तं नं तह वि पओगेणं परववएसेनालोइमो ।
जहा-जइ कोइ एयं अज्झवसइ पच्छित्तं तस्स होइ किं ? ॥
- [११८७] तं चिय सोऊण काहामि तवेणं तत्थ कारणं ।
जं पुण भयवयाऽऽइद्वं घोरं अच्चंत-निदुरं ॥
- [११८८] तं तवं सील-चारित्तं तारिसं जाव नो कयं ।
तिविहं तिविहेण नीसल्लं ताव पावं न खीयए ॥
- [११८९] अह सा पर-ववएसेणं आलोइत्ता तवं चरे ।
पायच्छित्तं निमित्तेणं पन्नासं संवच्छरे ॥
- [११९०] छट्ठ-ट्ठम-दसम-दुवालसेहिं लयाहिं नेइ दस वरिसे ।
अकयमकारियमसंकप्पिएहिं परिभूयभिक्ष-लद्धेहिं ॥
- [११९१] चनगेहिं दुन्नि वे भुज्जिएहिं सोलसय मासखमणेहिं ।
वीसं आयामायंबिलेहिं आवस्सगं अछड्डेती ॥
- [११९२] चरई य अदीनमनसा अह सा पच्छित्त-निमित्तं ।
ताहे गोयम सा चिंते- जं पच्छित्तं तयं कयं ॥
- [११९३] ता किं तमेव न कयं मे जं मनसा अज्झवसियं ।
तया इयरहे वि उ पच्छित्तं इयरहे व उ मे कयं ॥
- [११९४] ता किं तं न समायरियं चिंतैती निहणं गया ।
उग्गं कट्टं तवं घोरं दुक्करं पि चरित्तु सा ॥

अज्झयणं-६, उद्देसो-

- [११९५] सच्छंद-पायच्छित्तेणं सकलुस-परिणाम-दोसओ ।
कुच्छिय-कम्मा समुप्पन्ना वेसाए पडिचेडिया ॥
- [११९६] खंडोद्वा-नाम चडुगारी मज्ज-खडहडग-वाहिया ।
विनीया सव्व-वेसाणं थेरीए य चउग्गुणं ॥
- [११९७] लावणं कंती-रूवं नत्थि भुवने वि तारिसं ।
अन्नया थेरी चिंतेइ मज्झं बोडाए जारिसं ॥
- [११९८] लावणं कंती-रूवं नत्थि भुवने वि तारिसं ।

ता विरंगामि एईए कण्णे नक्कं सहोद्वयं ॥

[११९९] एसा उ न जाव विउप्पज्जे मम धूयं को वि नेच्छिही ।

अहवा हा हा ! न जुत्तमिणं धूया तुल्लेसा वि मे ॥

[१२००] नवरं सुविनीया एसा विउप्पन्नत्थ गच्छिही ।

ता तह करेमि जहा एसा देसंतरं गया वि य ॥

[१२०१] न लभेज्जा कत्थइ थामं आगच्छइ पडिल्लिया ।

देवेमि से वसी-करणं गुज्झ-देसं तु साडिमो ॥

[१२०२] निगडाइं च से देमि भमडं तहिं नियंतिया ।

एवं सा जुण्ण-वेसज्जा मनसा परितप्पिउं सुवे ॥

[१२०३] ता खंडोद्वा सिमिणंमि गुज्झं साडिज्जंतगं ।

पेच्छइ नियडे य दिज्जंते कण्णे नासं च वड्ढियं ॥

[१२०४] सा सिमिणत्थं वियारेउं नद्वा जह कोइ न याणइं ।

कह कह वि परिभमंती सा गाम-पुर-नगर-पट्टणे ॥

[१२०५] छम्मासेणं तु संपत्ता संखडं नाम खेडगं ।

तत्थ वेसमण-सरिस-विहव-रंडा-पुत्तस्स सा जुया ॥

[१२०६] परिणीया महिला ताहे मच्छरेण पज्जले दढं ।

रोसेण फुरफुरंती सा जा दियहे केइ चिड्डइ ॥

[१२०७] निसाए निब्भरं सइयं खंडोद्दी ताव पेच्छइ ।

तं दहुं धाइया चुल्लिं दित्तं धेत्तुं समागया ॥

[१२०८] तं पक्खिविऊण गुज्झंते फालिया जाव हिययं ।

जाव दुक्ख-भरक्कंता चल-चल्लचेल्लिं करंतो ॥

[१२०९] ता सा पुणो विचिंतेइ जाव जीवं न उड्डए ।

ताव देमी से दाहाइं जेण मे भव-सएसु वि ॥

[१२१०] न तरइ पियमं काउं इणमो पडिसंभरंतिया ।

ताहे गोयम ! आणेउं चक्किय-सालाओ अयमयं ॥

[१२११] तावित्तु फुलिंग मेल्लंतं जोणिए पक्खित्तंतकुसं ।

एवं दुक्ख-भरक्कंता तत्थ मरिऊण गोयमा

! ॥

अज्झयणं-६, उद्देसो-

[१२१२] उववन्ना चक्कवट्टिस्स महिला-रयणत्तेण सा ।

इओ य रंडा-पुत्तस्स महिला तं कलेवरं ॥

[१२१३] जीवुडज्झियं पि रोसेणं छेत्तुं छेत्तुं सुसंमयं ।

साण-काग-मादीणं जाव धत्ते दिसोदिसिं ॥

[१२१४] तावं रंडा-पुत्तो व बाहिरभूमीओ आगओ ।

सो य दोसगुणे नाउं बहुं मनसा वियप्पियं ।

गंतूण साहु-पामूलं पव्वज्जं काउ निव्वुडो ॥

- [१२१५] अह सो लक्खणदेवीए जीवो खंडोद्वियत्तणा ।
इत्थि-रयणं भवेत्ताणं गोयमा छद्वियं गओ ॥
- [१२१६] तन्नेरइयं महा-दुक्खं अइघोरं दारुणं तहिं ।
तिकोणे निरयावासे सुचिरं दुक्खेणावेइउं ॥
- [१२१७] इहागओ समुप्पन्नो तिरिय-जोणीए गोयमा ! ।
साणत्तेणाह मयकाले विलग्गो मेहुणे तेहिं ॥
- [१२१८] माहिसिएणं कओ घाओ विच्चे जोणी समुच्छला ।
तत्थ किमिएहिं दस-वरिसे खद्धो मरिऊण गोयमा ! ॥
- [१२१९] उववन्नो वेसत्ताए तओ वि मरिऊण गोयमा ! ।
एगूणं जाव सय-वारं आम-गब्भेसु पच्चिओ ॥
- [१२२०] जम्म-दरिद्धस्स गेहम्मि मानुसत्तं समागओ ।
तत्थ दो मास-जायस्स माया पंचत्तं उवगया ॥
- [१२२१] ताहे महया किलेसेणं थण्णं पाउं धराधरिं ।
जीवावेऊण जनगेणं गोउल्लियस्स समल्लिओ ॥
- [१२२२] तहियं निय-जननीओ च्छीरं आवियमाणे निबंधिउं ।
छाव-रुए गोणीओ दुहमाणेणं जं बद्धं अंतराइयं ॥
- [१२२३] तेणं सो लक्खणज्जाए कोडाकोडिं भवंतरे ।
जीवो थण्णमलहमाणो बज्झंतो रुज्झंतो नियलिज्जंतो ।
हम्मंतो दम्मंतो विच्छोहिज्जंतो य हिंडिओ ॥
- [१२२४] उववन्नो मनुय-जोणीए डागिणित्तेण गोयमा ! ।
तत्थ य साणय-पालेहिं कीलिउं छद्वियं गया ॥
- [१२२५] तओ उव्वट्टिऊण इहइं तं लद्धो मानुसत्तणं ।
जत्त य सरीर-दोसेणं ए महंत-महि-मंडले ॥
- [१२२६] जामद्ध-जाम-घडियं वा नोलद्धं वेरत्तियं जहियं ।
पंचेव उ घरे गामे नगरे पुर-पट्टणेसु वि ॥
- [१२२७] तत्थ य गोयम ! मनुयत्ते नारय-दुक्खानुसरिसिए ।
अनेगे रण्ण-सरण्णेणं घोरे दुक्खेऽनुभोत्तु णं ॥

अज्झयणं-६, उद्वेसो-

- [१२२८] सो लक्खणदेवी-जीवो सुरोद्ध-ज्झाण-दोसए ।
मरिऊण सत्तमं पुढविं उववन्नो खाडाहडे ॥
- [१२२९] तत्थ य तं तारिसं दुक्खं तेत्तिसं सागरोवमए ।
अनुभविऊणेह उववन्नो वंझा गोणीत्तणेण य ॥
- [१२३०] खेत्त-खलयाइं चमढंती भंजंती य चरंति या ।
सा गोणी बहु-जनोहेहिं मिलिऊणागाह-पंक-वलए पवेसिया ॥
- [१२३१] तत्थ खुट्टि जलोयाहिं लुसिज्जंती तहेव य ।

काग-मादिहिं लुप्पंती कोहाविद्धा मरेऊणं ॥

[१२३२] ताहे वि जल-धणे रण्णे मरुदेसे दिट्ठिवीसो ।

सप्पो होऊण पंचमगं पुढविं पुनरवि गओ ॥

[१२३३] एवं सो लक्खणज्जाए जीवो गोयमा ! चिरं ।

घन-घोर-दुक्ख-संतत्तो चउगइ-संसार-सागरे ॥

[१२३४] नारय-तिरिय-कुमनुएसु आहिंडित्ता पुणो विहं ।

होइ सेणियजीवस्स तित्थे पउमस्स खुज्जिया ॥

[१२३५] तत्थ य दोहग्ग-खाणी सा गमे निय-जननीओ वि य ।

गोयमा ! दिद्धा न कस्सा वि अत्थियरही तहिं भवे ॥

[१२३६] ताहे सव्व-जनेहिं सा उच्चियण्णिज्ज त्ति काऊणं ।

मसि-गेरुय-विलित्तंगा खरे रूढा भमाडिउं ॥

[१२३७] गोयमा उ पक्ख-पक्खेहिं वाइय-खर-विरस-डिंडिमं ।

निद्धाडिहिई न अन्नत्थ गामे लहिइ पविसिउं ॥

[१२३८] ताहे कंदफलाहारा रण्ण-वासे वसंतिया ।

छच्छुंदरेण वियणत्ता नाहीए मज्झ देसए ॥

[१२३९] तओ सव्वं सरीरं से भरिज्जी सुंदुराण य ।

तेहिं तु विलुप्पमाणी सा दूसह-घोर-दुहाउरा ॥

[१२४०] वियाणित्ता पउम-तित्थयरं तप्पएसे समोसढं ।

पेच्छिही जाव ता तीए

अन्नेसिमवि बहु-वाही-वेयणा-परिगय-सरीराणं

तद्देस विहारी भव्व सत्ताणं

नर नारी-गणाणं तित्थयर-दंसणा चव

सव्व दुक्खं विणिट्ठिही

[१२४१] ताहे सो लक्खणज्जाए तहियं खुज्जियत्ते जीओ ।

गोयम ! घोरं तवं चरिउं दुक्खाणमंतं गच्छिही ॥

[१२४२] एसा सा लक्खणदेवी जा अगीयत्थ-दोसओ ।

गोयम ! अनुकलुसचित्तेणं पत्ता दुक्ख-परंपरं ॥

अज्झयणं-६, उद्देसो-

[१२४३] जहा णं गोयमा ! एसा लक्खण-देवज्जिया तहा ।

सकलुस-चित्ते अगीयत्थे ऽनंते पत्ते दुहावली ॥

[१२४४] तम्हा एयं वियाणित्ता सव्व-भावेण सव्वहा ।

गीयत्थेहिं भवेयव्वं कायव्वं तु सुविसुद्धं ।

निम्मल-विमल-नीसल्लं निक्कलुसं मनं । तिबेमि ॥

[१२४५] पणयामरमरुय मउडुग्घुद्ध चलण सयवत्त जयगुरु ! ।

जगनाह धम्मतित्थयर भूय-भविस्स वियाणग ! ॥

- [१२४६] तवसा निद्वड्ढ-कम्मंस ! वम्मह वइर वियारण ।
चउकसाय निद्ववण सव्व जगजीववच्छल ॥
- [१२४७] घोरंधयार-मिच्छत्त- तिमिस-तम-तिमिर-नासण ।
लोगालोग-पगासगर मोह-वइरिनिसुंभण ॥
- [१२४८] दुरुज्झय-राग-दोस मोह-मोस सोग संत सोम सिवंकर ।
अतुलिय बल विरिय माहप्पय तिहुयणेक्क महायस ॥
- [१२४९] निरुवमरूव अनन्नसम सासयसुह-मुख-दायग ।
सव्वलक्खणसंपुन्न तिहुयणलच्छिविभूसिय ॥
- [१२५०] भयवं! परिवाडीए सव्वं जं किंचि कीरई ।
अथक्के हुंडि-दुद्धेणं कज्जं तं कत्थ लब्भइ ? ॥
- [१२५१] सम्मद्धंसणमेगम्मि बितियं जम्मे अणुव्वए ।
तइयं सामाइयं जम्मे चउत्थ पोसहं करे ॥
- [१२५२] दुद्धरं पंचमे बंभं छट्ठे सचित्त-वज्जणं ।
एवं सत्तद्व-नव-दसमे जम्मे उद्धिद्वमाइयं ॥
- [१२५३] चेच्चेक्कारसमे जम्मे समण-तुल्ल-गुणो भवे ।
एयाए परिवाडिए संजयं किं न अक्खसि ? ॥
- [१२५४] जं पुणो सोऊण मइविगलो बालयणो केसरिस्स व ।
सद्धं गय-जुव तसिउं नासे-दिसोदिसिं ॥
- [१२५५] तं एरिस-संजमं नाह ! सुदुल्ललिया सुकुमालया ।
सोऊणं पि नेच्छंति तणुट्ठीसुं कहं पुन ? ॥
- [१२५६] गोयम! तित्थंकरे मोत्तुं अन्नो दुल्ललिओ जगे ।
जइ अत्थि कोइ ता भणउ अह णं सुकुमालओ ॥
- [१२५७] जेणं गब्भद्वाणंमि देविंदो अमयं अंगुड्डयं कयं ।
आहारं देइ भत्तीए संथवं सययं करे ॥
- [१२५८] देव-लोग-चुए संते कम्मासेणं जहिं धरे ।
अभिजाहिंति तहिं सययं हीरण्ण-वुट्ठी य वरिस्सइ ॥
- [१२५९] गब्भावन्नाण तद्देसे ईति-रोगा य सत्तुणो ।

अज्झयणं-६, उद्देसो-

अनुभावेण खयं जंति जाय-मेत्ताण तक्खणे ॥

[१२६०] आगंपियासणा चउरो देव-संघा महीधरे ।

अभिसेयं सव्विड्ढीए काउं स-द्वामे गया ॥

[१२६१] अहो लावण्णं कंती दित्ती रूवं अनोवमं ।

जिणाणं जारिसं पाय-अंगुड्डग्गं न तं इहं ॥

[१२६२] सव्वेसु देव-लोगेसु सव्व-देवाण मेलियं ।

कोडाकोडिगुणं काउं जइ वि उ ण्हाणिज्जए ॥

- [१२६३] अह जा अमर-परिग्गहिया नाण-त्तय-समणिया ।
कला-कलाव-निलया जन-मनानंद कारय ॥
- [१२६४] सयण-बंधव-परियारा देव-दानव-पूइया ।
पणइयण पूरियासा भुवणुत्तम सुहालया ॥
- [१२६५] भोगिस्सरियं रायासिरिं गोयमा ! तं तवज्जियं ।
जा दियहा केइ भुंजंति ताव ओहीए जाणिउं ॥
- [१२६६] खणभंगुरं अहो एयं लच्छी पाव-विवइढणी ।
ता जाणंता वि किं अम्हे चरित्तं नाणुचेद्विमो ? ॥
- [१२६७] जाव एरिस-मन-परिणामं ताव लोगंतिया सुरा ।
थुणिउं भणंति जग-जीव-हिययं तित्थं पवट्टिही ॥
- [१२६८] ताहे वोसद्ध-चत्त-देहा विहवं सव्व-जगुत्तमं ।
गोयमा ! तणमिव परिचिच्चा जं इंदाणं वि दुल्लहं ॥
- [१२६९] नीसंगा उग्गं कट्ठं घोरं अइदुक्करं तवं ।
भुयणस्स वि उक्कट्ठ समुप्पायं चरंति ते ॥
- [१२७०] जे पुण खरहर-फुट्टिसिरे एग-जम्म सुहेसिणो ।
तेसिं दुल्ललियाणं पि सुट्ठं वि नो हियइच्छियं ॥
- [१२७१] गोयमा! महु-बिंदुस्सेव जावइयं तावइयं सुहं ।
मरणंते वी न संपज्जे कयरं दुल्ललियत्तणं ॥
- [१२७२] अहवा गोयमा ! पच्चक्खं पेच्छ य जारिसयं नरा ।
दुल्ललियं सुहमनुहवंति जं निसुणेज्जा न कोइ वि ॥
- [१२७३] केइ करिंति मासेल्लिं हालिय-गोवालत्तणं ।
दासत्तं तह पेसत्तं गोडत्तं सिप्पे बहू ॥
- [१२७४] ओलग्गं किसि वाणिज्जं पाणच्चाय-किलेसियं ।
दालिद्धविहवत्तणं केइ कम्मं काउं धराधरिं ॥
- [१२७५] अत्ताणं वि गोवेउं ठिणि-ढिणिंते य हिंडिउं ।
नग्गुग्घाडे किलेसेणं जा समज्जंति परिहणं ॥
- [१२७६] जर-जुण्ण-फुट्ट-सयच्छिद्धं लद्धं कह कह वि ओइढणं ।

अज्झयणं-६, उद्देसो-

जा अज्ज कल्लिं कारिमोफट्टं ता तम वि परिहरणं ॥

- [१२७७] तहा वि गोयमा ! बुज्झ-फुड-वियड-परिफुडं ।
एतेसिं चेव मज्झाओ अनंतरं भणियाण कस्स ॥
- [१२७८] लोगं लोगाचारं च चेच्चा सयण-कियं तं च ।
भोगावभोगं दानं च भोत्तूणं कदसणासणं ॥
- [१२७९] धाविउं गुप्पिउं सुइरं खिज्जिरुण अहन्निसं ।
कागिणिं कागिणी-काउं अद्धं पायं विसोवणं ॥

- [१२८०] कत्थइ कहिंचि कालेणं लक्खं कोडिं च मेलिउं ।
जइ एगिच्छा मई पुन्ना बीया नो संपज्जए ॥
- [१२८१] एरिसयं दुल्ललियत्तं सुकुमालत्तं च गोयमा ! ।
धम्मारंभंमि संपडइ कम्मारंभे न संपडे ॥
- [१२८२] जेणं जस्स मुहे कवलं गंडी अन्नेहिं धेज्जए ।
भूमीए न ठवए पायं इत्थी-लक्खेसु कीडए ॥
- [१२८३] तस्सा वि णं भवे इच्छा अन्नं सोऊण सारियं ।
समोद्धहामि तं देसं अह सो आणं पडिच्छओ ॥
- [१२८४] साम-भेय-पयाणाइं अह सो सहसा पउंजिउं ।
तस्स साहस-तुलणद्वा गूढ-चरिएण वच्चइ ॥
- [१२८५] एगागी कप्पडा-बीओ दुग्गारणं गिरी-सरी ।
लंघित्ता बहु-कालेणं दुक्खदुक्खं पत्तो तहिं ॥
- [१२८६] दुक्खं खु-खाम-कंठो सो जा भमडे धराधरिं ।
जायंतो छिद्ध-मम्माइं तत्थ जइ कह वि न नज्जए ॥
- [१२८७] ता जीवंतो न चुक्केज्जा अह पुणेहिं समुच्चरे ।
तओ णं परवत्तियं देहं तारिसो स-गिहे वि से ॥
- [१२८८] को तंमि परियणो मन्ने ताहे सो असि-नाणाइसु ।
नियचरियं पायडेऊणं जुज्ज-सज्जो भवेऊणं ॥
- [१२८९] सव्व-बला थोभेणं खंडं खंडेण जुज्झिउं ।
अह तं नरिदं निज्जिणइ अह वा तेण पराजियए ॥
- [१२९०] बहु पहारगलंत-रुहिरंगो गय-तुरया उद्ध-अहो मुहो ।
निवडइ रणभूमीए गोयमा ! सो जया तया ॥
- [१२९१] तं तस्स दुल्ललीयत्तं सुकुमालत्तं कहिं वए ? ।
जे केवलं पि स-हत्थेणं अहो-भागं च धोविउं ॥
- [१२९२] नेच्छंतो पायं ठविउं भूमीए न कयाइ वि ।
एरिसो वी स दुल्ललिओ एयावत्थं अ वी गओ ॥
- [१२९३] जइ भण्णे धम्मं चेद्वे ता पडिभणइ न सक्किमो ।

अज्झयणं-६, उद्वेसो-

ता गोयम ! अहन्नानं पाव कम्माण पाणिणं ॥

- [१२९४] धम्म-द्वानंमि मइ न कयाइ वि भविस्सए ।
एएसिं इमो धम्मो एक्क-जम्मी न भासए ॥
- [१२९५] जहा खंत-पियंताणं सव्वं अम्हाण होहिई ।
ता जो जं इच्छे तं तस्स जइ अनुकूलं पवेइए ॥
- [१२९६] तो वय-नियम विहूणा वि मोक्खमिच्छंति पाणिणो ।
एए एतेण रूसंति एरिसं चिय कहेयव्वं ॥

- [१२९७] नवरं न मोक्खो एयाणं मुसावायं च आवई ।
अन्नं च रागं दोसं मोहं च भयं छंदानुवत्तिणं ॥
- [१२९८] तित्थंकराण नो भूयं नो भवेज्जा उ गोयमा ! ।
मुसावायं न भासंते गोयमा ! तित्थंकरे ॥
- [१२९९] जेणं तु केवलनाणेणं तेसिं सव्वं पच्चक्खं जगं ।
भूयं भव्वं भविस्सं च पुन्नं पावं तहेव य ॥
- [१३००] जं किंचि तिसु वि लोएसु तं सव्वं तेसिं पायडं ।
पायालं अवि उड्ढ-मुहं सग्गं पज्जा अहोमुहं ॥
- [१३०१] नूनं तित्थयर-मुह-भणियं वयणं होज्ज न अन्नहा ।
नाण-दंसण-चारित्तं तवं घोरं सुदुक्करं ॥
- [१३०२] सोग्गइ-मग्गो फुडो एस परूवती जहड्ढिओ ।
अन्नहा न तित्थयरा वाया मनसा य कम्मणा ॥
- [१३०३] भाणेंति जइ वि भुवनस्स पलयं हवइ तक्खणे ।
जं हियं सव्व-जग-जीव-पाण-भूयाण केवलं ।
तं अनुकंपाए तित्थयरा धम्मं भासिंति अवितहं ॥
- [१३०४] जेणं तु समणुचिण्णेणं-दोहग्ग-दुक्ख-दारिद्ध-रोग-सोग-कुगइ-भयं ।
न भवेज्जा अबिइएणं संतावुव्वेगं तथा ॥
- [१३०५] भयवं! नो एरिसं भणिमो-जह छंदं अनुवत्तयं ।
नवरमेयं तु पुच्छामो जो जं सक्के स तं करे ॥
- [१३०६] गोयमा! नेरिसं जुत्तं खणं मनसा वि चिंतिउं ।
अह जइ एवं भवे नायं तावं धारेह अंचलं ॥
- [१३०७] घयऊरे खंडरब्बाए एक्को सक्केइ खाइउं ।
अन्नो महु-मंस-मज्जाइं अन्नो रमिऊण इत्थियं ॥
- [१३०८] अन्नो एयं पि नो सक्के अन्नो जोएइ पर-कयं ।
अन्नो चडवड-मुहे एसु अन्नो एयं पि भाणिऊणं न सक्कुणोइ ॥
- [१३०९] चोरियं जारियं अन्नो अन्नो किं चि न सक्कुणोइ ।
भोत्तुं भोत्तुं सुपत्थरिए सक्के चिट्ठे तु मंचगे ॥

अज्झयणं-६, उद्देसो-

- [१३१०] मिच्छा मि दुक्कडं भयंत एरिसं नो भणामि हं ।
गोयम ! अन्नं पि जं भणसि तं पि तुज्झ कहेमहं ॥
- [१३११] एत्थ जम्मो नरो कोई कसिणुग्गं संजमं तवं ।
जइ नो सक्कइ काउं जे तह वि सोग्गइ-पिवासिओ ॥
- [१३१२] नियमं पक्खि-खीरस्स एग-वाल-उप्पाडणं ।
रयहरणस्स एगियं दसियं एत्तियं तु परिधारिउं ॥
- [१३१३] सक्कुणोइ एयं पि न जाव-जीवं पालेउं ता इमस्स वी ।

- गोयमा ! तुज्झ बुद्धीए सिद्धि-खेत्तस्स उप्परं ॥
- [१३१४] मंडवियाए भवेयत्वं दुक्कर-कारि भणित्तु णं ।
नवरं एयारिसं भविया किमत्थं गोयमा ! पयं पुणो ? ॥
- [१३१५] तं एयं पुच्छंमी तित्थकरे चउन्नाणी ससुरासुर-जगपूइए ।
निच्छियं सिज्झियत्वे वि तंमि जम्ममे न अन्न-जम्ममे ॥
- [१३१६] तहा वि अनिगूहिता बलं विरियं पुरिसायार-परक्कमं ।
उग्गं कट्ठं तवं घोरं दुक्करं अनुचरंति ते ॥
- [१३१७] ता अन्नेसु वि सत्तेसु चउगइ-संसार-घोर-दुक्ख-भीएसु ।
जं जहेव तित्थयरा भणंति ।
- तं तहेव समणुद्धियत्वं गोयम ! सत्वं जहद्वियं ॥
- [१३१८] जं पुण गोयम ! ते भणियं-परिवाडिए कीरइ ।
अत्थक्के-हुडि-दुद्धेणं कज्जं तं कत्थ लब्भए ? ॥
- [१३१९] तत्थ वि गोयम ! दिट्ठं महासमुद्धंमि कच्छभो ।
अन्नेसि मगरमादीणं संघट्टा-भीउद्धओ ॥
- [१३२०] बुड्ड निबुड्डकरेमाणो सबली झालोज्झलि पेल्ला-पेल्लीए कत्थई ।
उल्लरिज्जंतो तट्ठो नासंतो धावित्तो पलायंतो य दिसोदिसिं ॥
- [१३२१] उच्छल्लं पच्छल्लं हिलणं बहुविहं तहिं ।
असहंतो ठामं अलहंतो खण-निमिसं पि कत्थइ ॥
- [१३२२] कह कह वि दुक्ख-संतत्तो सुबहु-कालेहिं तं जलं ।
अवगाहित्तो गओ उवरिं पउमिणी-संडं सघणं ॥
- [१३२३] छिड्डं महया किलेसेणं लद्धुं ता जत्थ पेच्छई ।
गह-नक्खत्त-परियरियं कोमुइ-चंदं खहेऽमले ॥
- [१३२४] दिप्पंत-कुवलय-कल्हारं कुमुय-सयवत्त-वणप्फई ।
कुरिलित्ते हंस-कारंडे चक्कवाए सुणेइ या ॥
- [१३२५] जमदिट्ठं सत्तसु वि साहासु अब्भुयं चंदमंडलं ।
तं दट्ठुं विम्हिओ खणं चिंतइ एयं जहा ॥
- [१३२६] होही एयं तं सग्गं ता हं बंधवाण पयंसिमो ।

अज्झयणं-६, उद्देसो-

- बहु कालेणं-गवेसेउं ते घेत्तूण समागओ ॥
- [१३२७] घनघोरंघयार-रयणीए भद्दव-किण्ह-चउद्धसिहिं तु ।
न पेच्छे जाव तं रिद्धि बहुकालं निहालित्तं ॥
- [१३२८] पुण कच्छभो जाओ तहा वि तं रिद्धिं न पेच्छए ।
एवं चउगई-भव-गहणे दुलभे मानुसत्तणे ॥
- [१३२९] अहिंसा-लक्खणं धम्मं लहिरुणं जो पमायइ ।
सो पुण बहु-भव-लक्खेसु दुक्खेहिं मानुसत्तणं ।

- लद्धं पि न लभई धम्मं तं रिद्धिं कच्छओ जहा ॥
- [१३३०] दियहाइं दो व तिन्नि व अद्धानं होइ जं तुलग्गेण ।
सव्वायरेण तस्स वि संवलयं लेइ पवसंतो ॥
- [१३३१] जो पुण दिह-पवासो चुलसीई जोणि-लक्ख-नियमेण ।
तस्स तव-सील-मइयं संवलयं किं न चिंतेह ? ॥
- [१३३२] जह जह पहरे दियहे मासे संवच्छरे य बोलेति ।
तह तह गोयम ! जाणसु दुक्के आसन्नयं मरणं ॥
- [१३३३] जस्स न नज्जइ कालं न य वेला नेय दियह-परिमाणं ।
नाए वि नत्थि कोइ वि जगम्मि अजरामरो एत्थं ॥
- [१३३४] पावो पमाय-वसओ जीवो संसार-कज्जमुज्जुत्तो ।
दुक्खेहिं न निव्विण्णो सोक्खेहिं न गोयमा ! तिप्पे ॥
- [१३३५] जीवेण जाणि उ विसज्जियाणि जाई-सएसु देहाणि ।
थेवेहिं तओ सयलं पि तिहुयणं होज्जा पडहत्थं ॥
- [१३३६] नह-दंत-मुद्ध-भमुहक्खि केस-जीवेण विप्पमुक्केसु ।
तेसु वि हवेज्ज कुल-सेल-मेरु-गिरि-सन्निभे कुडे ॥
- [१३३७] हिमवंत-मलय-मंदर दीवोदहि-धरणि-सरिस-रासीओ ।
अहिययरो आहारो जीवेणाहारिओ अनंतहुत्तो ॥
- [१३३८] गुरु-दुक्ख-भरुक्कंतस्स अंसु-निवाएण जं जलं-गलियं ।
तं अगड-तलाय-नई-समुद्ध-माईसु न वि होज्जा ॥
- [१३३९] आवीयं थण-छीरं सागर-सलिलाओ बहुयरं होज्जा ।
संसारंमि अनंते अविला-जोणीए एक्काए ॥
- [१३४०] सत्ताह-विवन्न-सुकुहिय-साण जोणीए मज्झ-देसंमि ।
किमियत्तण-केवलएण जाणि मुक्काणि देहाणि ॥
- [१३४१] तेसिं सत्तम-पुढवीए सिद्धि-खेत्तं च जाव उक्कुरुडं ।
चोद्धस-रज्जुं लोगं अनंत-भागेण वि भरिज्जा ॥
- [१३४२] पत्ते य काम-भोगे कालं अनंतं इहं सउवभोगे ।
अपुत्वं चिय मन्नए जीवो तह वि य विसय-सोक्खं ॥

अज्झयणं-६, उद्देसो-

- [१३४३] जह कच्छुल्लो कच्छुं कंडुयमाणो दुहं मुणइ सोक्खं ।
मोहाउरा मनुस्सा तह काम-दुहं सुहं बैति ॥
- [१३४४] जाणंति अनुहंवति य जम्म-जरा-मरण-संभवे दुक्खे ।
न य विसएसु विरज्जंति गोयमा ! दोग्गई-गमन-पत्थिए जीवे ॥
- [१३४५] सव्व-गहाणं पभवो महागहो सव्वदोस-पायड्ढि ।
काम-गहो उ दुरप्पा तस्स वसं जे गया पाणी ॥
- [१३४६] जाणंति जहा भोग-इड्ढि-संपया सव्वमेव धम्मफलं ।

- तह वि दढ-मूढ-हियए पावं काउण दोग्गइं जंति ॥
- [१३४७] वच्चइ खणेण जीवो पित्ताणिल-संभ-धाउ-खोभेहिं ।
उज्जमह मा विसीयह तरतम-जोगो इमो दुसहो ॥
- [१३४८] पंचिंदियत्तणं मानुसत्तणं आरियं जनं सुकुलं ।
साहु-समागम-सुणणं सद्धणारोग्ग-पव्वज्जा ॥
- [१३४९] सूल-विस-अहि-विसुइया पाणिय-सत्थग्गि-संभमेहिं च ।
देहंतर-संकमणं करेइ जीवो मुहुत्तेणं ॥
- [१३५०] जाव आउ सावसेसं जाव य थेवो वि अत्थि ववसाओ ।
ताव करे अप्प-हियं मा तप्पिहहा पुणो पच्छा ॥
- [१३५१] सुर-धनु-विज्जू-खण-दिट्ठ-नट्ठ-संझानुराग-सिमिण समं ।
देहं इंति तु पणइ-आमयभंडं व जल-भरियं ॥
- [१३५२] इय जाव न चुक्कसि एरिसस्स खणभंगुरस्स देहस्स ।
उग्गं कट्ठं घोरं चरसु तवं नत्थि परिवाडि गोयमा त्ति ॥
- [१३५३] वास-सहस्सं पि जई काउणं संजमं सुविउलं पि ।
अंते किलिड्ढ-भावो न विसुज्झइ कंडरिओ व्व ॥
- [१३५४] अप्पेण वि कालेणं केइ जहा गहिय-सील-सामण्णा ।
साहिंति नियय-कज्जं पोंडरिय-महा-रिसि व्व जहा ॥
- [१३५५] न य संसारंमि सुहं जाइ-जरा-मरण-दुक्ख-गहियस्स ।
जीवस्स अत्थि जम्हा तम्हा मोक्खो उवाए उ ॥
- [१३५६] सव्व पयारेहिं सव्वहा सव्व-भाव-भावंतरेहिं णं, गोयमा ! त्ति बेमि ।

◦ गीयत्थ-विहारनामं-छट्ठंअज्झयणं समत्तं ◦

◦ सत्तमं अज्झयणं-पच्छित्तसुत्तं ◦

[- पढमा चूलिया-एगंत निज्जरा -]

- [१३५७] भयवं! ता एय नाएणं जं भणियं आसि मे तुमं ।
जहा परिवाडिए तच्चं किं न अक्खसि पायच्छित्तं ? ॥
- [१३५८] तत्थ मज्झ अवी हवइ गोयम! ।

अज्झयणं-७ / चूलिका-१

- पच्छित्तं जइ तुमं तं आलंबसि ।
- नवरं धम्म-वियारो ते कओ सुवियारिओ फुडो ॥
- [१३५९] न होइ एत्थ पच्छित्तं पुनरवि पुच्छेज्जा गोयमा ! ।
संदेहं जाव देहत्थं मिच्छित्तं ताव निच्छयं ॥
- [१३६०] मिच्छित्तेण य अभिभूए तित्थयरस्स अवि भासियं ।
वयणं लंघित्तु विवरीयं वाएत्ताणं पविसंति ॥
- [१३६१] घोरतम-तिमिर बहलंधयारं पायालं ।

नवरं सुवियारियं काउं तित्थयरा सयमेव य ।

भणंति तं तहा चेव गोयमा ! समणुदुए ॥

[१३६२] अत्थेगे गोयमा ! पाणी जे पव्वज्जिय जहा तहा ।

अविहीए तह चरे धम्मं जह संसारा न मुच्चए ॥

[१३६३] से भयवं ! कयरे णं से विही-सिलोगो ? गोयमा ! ।

इमे णं से विहि-सिलोगो तं जहा-

चिइ-वंदन-पडिक्कमणं जीवाजीवाइ-तत्त-सब्भावं ।

समि-इंदिय-दम-गुत्ति कसाय-निग्गहणमुवओगं ॥

[१३६४] नाऊण सुवीसत्थो सामायारिं किया-कलावं च ।

आलोइय-नीसल्लो आगब्भा परम-संविग्गो ॥

[१३६५] जम्म-जर-मरण-भीओ चउ-गइ संसार-कम्म-दहणडा ।

पइदियहं हियएणं एयं अनवरय-झायंतो ॥

[१३६६] जरमरण-मयर-पउरे रोग-किलेसाइ-बहुविह-तरंगे ।

कम्मदु-कसाय-गाह-गहिर-भव-जलहि मज्झम्मि ॥

[१३६७] भमिहामि भदु-सम्मत्त-नाण-चारित्त-लद्ध-वरपोओ ।

कालं अनोर-पारं अंतं दुक्खाणमलंभतो ॥

[१३६८] ता कइया सो दियहो जत्था-हं सत्तु-मित्त-सम-पक्खो ।

नीसंगो विहरिस्सं सुह-झाण-नीरंतरो पुणोऽभवदुं ? ॥

[१३६९] एवं चिर-चिंतियाभिमुह-मनोरहोरु-संपत्ति-हरिस-समुल्लसिओ ।

भत्ति-भर-निब्भरणय रोमंच-उक्कंच पुलय-अंगो ॥

[१३७०] सीलंग-सहस्स अद्वारसण्ह धरणे समोत्थय-क्खंधो ।

छत्तीसायारुक्कंठ निट्ठियासेस-मिच्छत्तो ॥

[१३७१] पडिवज्जे पव्वज्जं विमुक्क-मय-मान-मच्छरामरिसो ।

निम्मम-निरहंकारो विहिणेवं गोयमा ! विहरे ॥

[१३७२] विहग इवापडिबद्धो उज्जुत्तो नाणं-दंसण-चरित्ते ।

नीसंगो घोर-परीसहोवसग्गाइं पजिणंतो ॥

[१३७३] उग्गाभिग्गह-पडिमाइ राग-दोसेहिं दूरतर मुक्को ।

अज्झयणं-७ / चूलिका-१

रोद्धुज्झाण-विवज्जिओ य विगहासु य असत्तो ॥

[१३७४] जो चंदनेन बाहुं आलिंपइ वासिणा व जो तच्छे ।

संथुणइ जो अ निंदइ सम-भावो हुज्ज दुण्हं पि ॥

[१३७५] एवं अनिगूहिय बल-विरिय-पुरिसक्कार-परक्कमो, सम-तण-मणि-लदु-कंचणोवेक्को,

परिचत्त-कलत्त-पुत्त-सुहि-सयण-मित्त-बंधव, धन-धन्न-सुवण्ण-हिरण्ण-मणी-रयण-सार-भंडारो, अच्चंत-परम-वेरग्ग-वासनाजनिय-पवर, सुहज्झवसाय-परम-धम्म-सद्धा-परो, अकिलिदु-निक्कलुस-अदीन-मानसो य

वय-नियम-नाण-चरित्त, तवाइ-सयल-भुवणेक्क, मंगल-अहिंसा-लक्खण-संताइ, दस-विह धम्माणुद्वाणेक्कंत-बद्ध-लक्खो ।

सव्वावस्सग-तक्काल-करण-सज्झाय-झाणं आउत्तो संखाइय-अनेग-कसिण-संजम-पएसु अविखलिओ, संजय-विरय-पडिहय-पच्चक्खाय-पाव-कम्मो अनियाणो माया-मोस-विवज्जिओ, साहू वा साहूणी वा एवं गुण-कलिओ, जइ कह वि पमाय-दोसेणं असइं कहिंचि कत्थइ वाचा इ वा मनसा इ वा ति-करण-विसुद्धीए सव्व-भाव-भावंतरेहिं चेव संजममायरमाणो असंजमेणं छलेज्जा, तस्स णं विसोहि-पयं पायच्छित्तमेव । तेणं पायच्छित्तेणं गोयमा ! तस्स विसुद्धिं उवदिसिज्जा, न अन्नह त्ति । तत्थ णं जेसुं जेसुं ठाणेसुं जत्थ जत्थ जावइयं पच्छित्तं तमेव निट्टंकिंयं भण्णइ ।

से भयवं ! के णं अट्टेणं भण्णइ जहा णं-तं एव निट्टंकिंयं भण्णइ ? गोयमा! अनंतरानंतर-क्कमेणं इणमो पच्छित्त-सुत्तं अनेगे भव्व सत्ता चउगइ संसार चारगाओ बद्ध पुट्ट निकाइय दुव्विमोक्ख घोर पारद्ध कम्म नियडाइं संचुण्णिऊण अचिरा विमुच्चिहिंति । अन्नं च इणमो पच्छित्तसुत्तं अनेग-गुणगणाइण्णस्स दढ-व्वय-चरित्तस्स एगंतेण जोगस्स एव विवक्खिए पएसे चउक्कण्णं पन्नवेयव्वं, नो छक्कण्णं । तहा य-जस्स जावइयेणं पायच्छित्तेणं परम-विसोही भवेज्जा, तं तस्स णं अनुयट्टणा-विरहिणं धम्मक्क-रसिएहिं वयणेहिं जह-द्वियं अणुणाहियं तावाइयं चेव पायच्छित्तं पयच्छेज्जा । एएणं अट्टेणं एवं वुच्चइ जहा णं गोयमा! तमेव निट्टंकिंयं पायच्छित्तं भण्णइ ।

[१३७६] से भयवं कइविहं पायच्छित्तं उवइट्टं ? गोयमा ! दसविहं पायच्छित्तं उवइट्टं, तं च अनेगहा जाव णं पारंचिए ।

[१३७७] से भयवं केवइयं कालं जाव इमस्स णं पच्छित्त-सुत्तस्सानुद्वाणं वट्ठीही ? गोयमा! जाव णं कक्की नाम रायाणे निहणं गच्छिय एक्क-जियाययण-मंडियं वसुहं सिरिप्पभे अनगारे । भयवं! उड्ढं पुच्छा, उड्ढं न केइ एरिसे पुण्ण-भागे होही, जस्स णं इणमो सुयक्खंधं उवइसेज्जा ।

[१३७८] से भयवं ! केवइयाइं पायच्छित्तस्स पयाइं ? गोयमा ! संखाइयाइं पायच्छित्तस्स णं पयाइं ।

से भयवं ! तेसिं णं संखाइयाणं पायच्छित्तस्स पयाणं किं तं पढणं पायच्छित्तस्स णं पयं ? गोयमा ! पइदिन-किरियं । से भयवं ! किं तं पइदिन-किरियं ? गोयमा ! जं अनुसमयं अहन्निसा-पाणोवरमं जाव अनुट्टेयव्वाणि संखेज्जाणि आवस्सगाणि ।

से भयवं ! केणं अट्टेणं एवं वुच्चइ जहा णं-आवस्सागाणि ? गोयमा! असेस-कसिणइ कम्म कक्खयकारि उत्तम-सम्म-दंसण-नाण-चारित्त अचंचंत-घोर-वीरुग्ग-कट्ट सुदुक्कर-तव-साहणद्वाए परुविज्जंति नियमिय विभत्तुद्धिइ-परिमिएणं काल-समएणं पयंपएणं अहन्निस-अनुसमयं आजम्मं अवस्सं अज्झयणं-७ / चूलिका-१

एव तित्थयराइसु कीरंति अनुट्टिज्जंति, उवइसिज्जंति परुविज्जंति पन्नविज्जंति सययं, एएणं अट्टेणं एवं वुच्चइ गोयमा ! जहा णं-आवस्सगाणि ।

तेसिं च णं गोयमा ! जे भिक्खू कालाइक्कमेणं वेलाइक्कमेणं समयाइक्कमेणं अलसायमाणे अनोवउत्त-पमत्ते अविहीए अन्नेसिं च असद्धं उप्पायमाणे अन्नयरमावस्सगं पमाइय-पमाइयं संतेणं बल-वीरिएणं सात-लेहडत्ताए आलंबनं वा किंचि धेत्तूणं चिराइउं पउरिया, नो णं जहुत्तयालं समणुट्टेज्जा, से णं गोयमा! महा-पायच्छित्ती भवेज्जा ।

[१३७९] से भयवं किं तं बितियं पायच्छित्तस्सणं पयं ? गोयमा ! बीयं तइयं चउत्थं पंचमं जाव णं संखाइयाइं पच्छित्तस्स णं पयाइं ताव णं एत्थं च एव पढम-पच्छित्त-पए अंतरोवगायाइं समनुविंदा । से भयवं ! केण अट्ठेणं एवं वुच्चइ ? गोयमा ! जओ णं सव्वावस्सग-कालानुपेही भिक्खू णं रोद्धट्ठज्झाणं-राग-दोस-कसाय-गारव-ममाकाराइसुं णं अनेग-पमायालंबणेसु सव्व-भाव-भावतरंतरेहि णं अच्चंतं-विप्पमुक्को भवेज्जा । केवलं तु नाण-दंसण-चारित्त-तवोकम्म-सज्झायज्झाण-सद्धम्मावस्सगेसु अच्चंतं अनिगूहिय बल वीरिय परक्कमे सम्मं अभिरमेज्जा । जाव णं सद्धम्मावस्सगेसुं अभिरमेज्जा, ताव णं सुसंवुडासव-दारे हवेज्जा । जाव णं सुसंवुडासव-दारे हवेज्जा ताव णं सजीव-वीरिएणं अनाइ-भव-गहणं संचियाणिट्ठ-दुट्ठ-इ-कम्मरासीए एगंत-निट्ठवणेक्क-बद्ध-लक्खो अनुक्कमेण निरुद्ध-जोगी भवित्ताणं निद्धासेस-कम्मिंधणे विमुक्क-जाइ-जरा-मरण-चउगइ-संसार-पास-बंधणे य सव्व-दुक्ख-विमोक्ख तेलोक्क-सिहर-निवासी भवेज्जा । एएणं अट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ जहा णं एत्थं चैव पढम-पए अवसेसाइं पायच्छित्तं-पयाइं अंतरोवगायाइं समनुविंदा ।

[१३८०] से भयवं ! कयरे ते आवस्सगे? गोयमा! णं चिइ-वंदणादओ । से भयवं ! कम्ही आवस्सगे असइं पमाय-दोसेणं कालाइक्कमिए इ वा वेलाइक्कमिए इ वा समयाइक्कमिए इ वा अनोवउत्त-पमत्ते इ वा अविहीए समणुट्ठिए इ वा, नो णं जहुत्तयालं विहीए सम्मं अनुट्ठिए इ वा, असंपडिए इ वा विच्छंपडिए इ वा, अकए इ वा पमाइए इ वा, केवतियं पायच्छित्तं उवइसेज्जा ? गोयमा ! जे केई भिक्खू वा भिक्खुणी वा संजय-विरय-पडिहय-पच्चक्खाय पाव-कम्मे-दिक्खा-दिया-पभईओ अनुदियहं जावज्जीवाभिग्गहेणं सुविसत्थे भत्ति-निब्भरे जहुत्त-विहीए सुत्तत्थं अनुसरमाणेण अनन्न-मानसे-गग्ग-चित्ते तग्गय-मानस-सुहज्झवसाए थय-थुइहिं न तेकालियं चेइए वंदेज्जा तस्स णं एगाए वाराए खवणं पायच्छित्तं उवइसेज्जा बीयाए छेदं तइयाए उवट्ठावणं ।

अविहीए चेइयाइं वंदए, तओ पारंचियं, जओ अविहीए चेइयाइं वंदेमाणे अन्नेसिं असद्धं संजणे इइ काउणं । जो उण हरियाणि वा बीयाणि वा पुप्फाणि वा फलाणि वा पूयट्ठा वा महिमट्ठाए वा सोभट्ठाए वा संघट्ठेज्ज वा संघट्ठावेज्ज वा छिंदेज्ज वा छिंदावेज्ज वा संघट्ठिज्जंताणि वा छिंदिज्जंताणि वा परेहिं समणुजाणेज्जा वा, एएसुं सव्वेसुं उवट्ठावणं खवणं चउत्थं आयंबिलं एक्कासणगं निट्ठिगइयं गाढागाढ-भेदेणं-जहा संखेणं नेयं ।

[१३८१] जे णं चेइए वंदेमाणस्स वा नमंसमाणस्स वा संथुणेमाणस्स वा पंचप्पयारं सज्झायं पयरेमाणस्स वा विग्घं करेज्ज वा कारवेज्ज वा कीरंतं वा परेहिं समणुजाणेज्जा वा, से तस्स एएसुं दुवालसं छट्ठं एक्कासणगं कारणिगस्स निक्कारणिगे अवंदए संवच्छरं जाव पारंचियं काऊणं उवट्ठवेज्जा ।

अज्झयणं-७ / चूलिका-१

[१३८२] जे णं पडिक्कमणं न पडिक्कमेज्जा से णं तस्सोट्ठावणं निट्ठिसेज्जा । बड्ढ-पडिक्कमणे खमणं । सुन्नासुन्नीए अनोवउत्त-पमत्तो वा पडिक्कमणं करेज्जा, दुवालसं । पडिक्कमण-कालस्स चुक्कइ, चउत्थं । अकाले पडिक्कमणं करेज्जा, चउत्थं । कालेण वा पडिक्कमणं नो करेज्जा, चउत्थं ।

संथार-गओ वा संथारगोवट्ठो वा पडिक्कमणं करेज्जा, दुवालसं । मंडलीए न पडिक्कमेज्जा, उवट्ठावणं । कुसीलेहिं समं पडिक्कमणं करेज्जा, उवट्ठावणं । परिब्भट्ठ-बंधेच-वएहिं समं

पडिक्कमेज्जा, पारंचियं । सव्वस्स समण-संघस्स तिविहं तिविहेण खमण-मरिसामणं अकाऊणं पडिक्कमणं करेज्जा, उवद्दावणं । पयं पएणाविच्चामेलिय पडिक्कमण-सुत्तं न पयट्टेज्जा, चउत्थं ।

पडिक्कमणं काऊणं संथारगे इ वा फलहगे इ वा तुयट्टेज्जा, खमणं । दिया तुयट्टेज्जा, दुवालसं । पडिक्कमणं काउं गुरु-पामूलं वसहिं संदिसावेत्ताणं न पच्चुप्पेहेइ, चउत्थं ।

वसहिं पच्चुप्पेहिऊणं न संपवेएज्जा, छट्ठं । वसहिं असंपवेएत्ताणं रयहरणं पच्चुप्पेहेज्जा, पुरिवड्ढं । रयहरणं विहीए पच्चुप्पेहेत्ताणं गुरु-पामूलं मुहनंतगं पच्चुप्पेहिय उवहिं न संदिसावेज्जा, पुरिवड्ढं । मुहनंतगेणं अपच्चुप्पेहिएणं उवहिं संदिसावेज्जा, पुरिवड्ढं । असंदिसावियं उवहिं पच्चुप्पेहेज्जा, पुरिवड्ढं । अनुवउत्तो वसहिं वा उवहिं वा पच्चुप्पेहे, दुवालसं । अविहीए वसहिं वा उवहिं वा अन्नयरं वा भंड-मत्तोवगरणं जायं किंचि अनोवउत्ता-पमत्तो पच्चुप्पेहेज्जा, दुवालसं । वसहिं वा उवहिं वा भंड-मत्तोवगरणं वा अपडिलेहियं वा दुप्पडिलेहियं वा परिभुंजेज्जा, दुवालसं । वसहिं वा उवहिं वा भंड-मत्तोवगरणं वा न पच्चुप्पेहेज्जा, उवद्दावणं ।

एवं वसहिं उवहिं पच्चुप्पेहेत्ताणं जम्ही पएसे संथारयं जम्ही उ पएसे उवहिए पच्चुप्पेहणं कयं तं ठाणं निउणं हलुय-हलुयं दंडापुंछणगेण वा रयहरणेण वा साहरेत्ताणं तं च कयवरं पच्चुप्पेहित्तुं छप्पाइयाओ न पडिगाहेज्जा, दुवालसं ।

छप्पाइयाओ पडिगाहेत्ताणं तं च कयवरं परिद्वेऊणं इरियं न पडिक्कमेज्जा, चउत्थं । अपच्चुप्पेहियं कयवरं परिद्वेजेज्जा, उवद्दावणं । जइ णं छप्पाइयाओ हवेज्जा अहा णं नत्थि, तओ दुवालसं । एवं वसहिं उवहिं पच्चुप्पेहिऊणं समाहिं खइरोल्लगं च न परिद्वेजेज्जा, चउत्थं ।

अनुग्गए सूरिए समाहिं वा खइरोल्लगं वा परिद्वेजेज्जा, आयंबिलं हरिय-काय-संसत्ते इ वा बीयकाय-संसत्ते इ वा तसकाय-बेइंदियाईएहिं वा संसत्ते, थंडिले समाहिं वा खइरोल्लगं वा परिद्वे अन्नयरं वा उच्चारायइं वोसिरेज्जा, पुरिवड्ढेक्कासणगायंबिलं अहक्कमेणं ।

जइ णं नो उद्ववणं संभवेज्जा अहा णं उद्ववणा संभावीए, तओ खमणं । तं च थंडिलं पुनरवि पडिजागरेऊणं नीसकं काऊणं पुनरवि आलोएत्ताणं जहा-जोगं पायच्छित्तं न पडिगाहेज्जा, तओ उवद्दाणं । समाहिं परिद्वेमाणो सागारिएणं संचिकखीयए संचिकखीयमाणो वा परिद्वेजेज्जा, खवणं । अपच्चुवेहिए थंडिल्ले जं किंचि वोसिरेज्जा, तत्तोवद्दाणं ।

एवं च वसहिं उवहिं पच्चुप्पेहेत्ताणं समाही खइरोल्लगं च परिद्वेत्ताणं एगग्ग-मानसो आउत्तो विहीए सुत्तत्थं अनुसरेमाणो ईरियं न पडिक्कमेज्जा, एक्कासणगं ।

मुहनंतगेणं विना इरियं पडिक्कमेज्जा वंदन-पडिक्कमणं वा करेज्जा जंभाएज्ज वा सज्झायं वा करेज्जा वायणादी, सव्वत्थ पुरिवड्ढं । एवं च इरियं पडिक्कमित्ताणं सुकुमाल-पम्हल-अचोप्पड-अवि-अज्झयणं-७ / चूलिका-१

क्किट्ठेणं अविद्ध-दंडेणं दंड-पुच्छणगेणं वसहिं न पमज्जे, एक्कासणगं ।

बाहिरियाए वा वसहिं वोहारेज्जा, उवद्दाणं । वसहीए दंड-पुच्छणगं दाऊणं कयवरं न परिद्वेजेज्जा, चउत्थं । अपच्चुप्पेहियं कयवरं परिद्वेजेज्जा, दुवालसं । जइ णं छप्पाइयाओ न हवेज्जा अहा णं हवेज्जा, तओ णं उवद्दावणं । वसही संतियं कयवरं पच्चुप्पेहमाणे णं जाओ छप्पाइयाओ तत्थ अन्नेसिऊणं अन्नेसिऊणं समुच्चिणियं समुच्चिणिय पडिगाहिया ताओ जइ णं न सव्वेसिं भिक्खूणं संविभाइउणं देज्जा,

तओ एककासणं । जइ सयमेव अत्थणो ताओ छप्पइयाओ पडिगाहेज्जा अहणं न संविभइउं दिज्जा न य अत्तणो पडिग्गहेज्जा, तओ पारंचियं ।

एवं वसहिं दंडा पुच्छणगेणं विहीए पमज्जिऊणं कयवरं पच्चुप्पेहेऊणं छप्पइयाओ संविभातिऊणं च तं च कयवरं न परिद्वेज्जा परिद्वित्ताणं च सम्मं विहीए अच्चंतोवउत्ते एगग्गमानसेणं पयंपएणं तु सुत्तत्थो भयं सरमाणे जे णं भिक्खू न इरियं पडिक्कमेज्जा, तस्स य आयंबिल-खमणं पच्छित्तं निद्विसेज्जा । एवं तु अइक्कमेज्जा णं, किंचूणं दिवड्ढं घडिगं पुव्वण्हिगस्स णं पढमजामस्स ।

एयावसरम्ही उ गोयमा ! जे णं भिक्खू गुरुणं पुरओ विहीए सज्झायं संदिसावेऊणं एगग्ग-चित्ते सुयाउत्ते दढं धिईए घडिगूण पढम-पोरिसिं जावज्जीवाभिग्गहेणं अनुदियहं अपुव्व-नाण-गहणं न करेज्जा, तस्स दुवालसमं पच्छित्तं निद्विसेज्जा । अपुव्व-नाणाहिज्जणस्स असइं जं एव पुव्वाहिज्जियं तं सुत्तत्थोभयं अनुसरमणो एगग्गमानसे न परावत्तेज्जा भत्तित्थी-राय-तक्कर-जनवयाइ विचित्तं-विगहासु णं अभिरमेज्जा, अवंदणिज्जे ।

जेसिं च णं पुव्वाहीयं सुत्तं न अत्थे व अउव्व-नाण-गहणस्स णं असंभवो वा तेसिं अवि घडिगूण पढम-पोरिसीए-पंच-मंगलं पुणो पुणो परावत्तनीयं । अहा णं नो परावत्तिया विगहं कुव्वीया वा निसामिया वा, से णं अवंदे ।

एवं घडिगूणाए पढम-पोरिसीए जे णं भिक्खू एगग्ग-चित्तो सज्झायं काऊणं तओ पत्तग-मत्तग-कमढगाइं भंडोवगरणस्सणं अक्खित्तउत्तो विहीए पच्चुप्पेहेणं न करेज्जा, तस्स णं चउत्थं पच्छित्तं निद्विसेज्जा । भिक्खू-सद्धो पच्छित्त-सद्धो य इमे सव्वत्थ पइ-पयं जो जणीए जइ णं तं भंडोवगरणं न भुंजीया अहा णं परिभुंजे, दुवालसं ।

एवं अइक्कंता पढमा पोरिसी । बीय-पोरिसीए अत्थ-गहणं न करेज्जा, पुरिवड्ढं । जइ णं वक्खाणस्स णं अभावो अहा णं वक्खाणं अत्थ एवं तं न सुणेज्जा, अवंदे । वक्खाणस्सासंभवे कालवेलं जाव वायाणाइ-सज्झायं न करेज्जा, दुवालसं ।

एवं पत्ताए काल-वेलाए जं किंचि अइय-राइय-देवसिय-अइयारे निंदिए गरहिए आलोइए पडिक्कंते जं किंचि काइगं वा वाइगं वा मानसिगं वा उस्सुत्तायरणेण वा उम्मग्गायरणेण वा अकप्पासेवणेण वा अकरणिज्ज-समायरणेण वा दुज्झाएण वा दुचिंतिएण वा अनायार-समायरणेण वा अनिच्छियव्व समायरणेण वा असमण-पाओग्ग-समायरणेण वा नाणे दंसणे चरित्ते सुए सामाइए तिण्हं गुत्तियादीणं चउण्हं कसायादीणं पंचण्हं महव्वयादीणं छण्हं जीव-निकायादीणं सत्तण्हं पिंडेसणाइणं अडुण्हं पवयणमाइणं नवण्हं बंधचेर-गुत्तादीणं दसविहस्स णं समणधम्मस्स एवं तु, जाव णं एमाइ अनेगालावग-माइणं खंडणे विराहणे वा आगम-कुसलेहिं णं गुरुहिं पायच्छित्तं उवइड्ढं, तं निमित्तेणं जहा सत्तीए अनिगूहिय-बल-वीरिय-पुरिसयार-परक्कमे असढत्ताए अदीन-मानसे अनसनाइ स-बज्झंतरं दुवालसविहं अज्झयणं-७ / चूलिका-१

तवो-कम्मं गुरुणं अंतिए पुनरवि निद्वंकिऊणं सुपरिफुडं काऊणं तह त्ति अभिनंदित्ताणं खंडखंडी-विभत्तं वा एग-पिंड-द्वियं वा न सम्मं अनुचिद्वेज्जा, से णं अवंदे ।

से भयवं ! के णं अद्वेणं खंडखंडीए काउमनुचेद्वेज्जा ? गोयमा ! जे णं भिक्खू संवच्छरद्धं चाउमास खमणं वा एक्को लग्गं काऊणं न सक्कुणोइ, से णं छट्ठ-द्वम-दसम-दुवालसद्ध-मास-खमणेहिं णं तं

पायच्छित्तं अनुपवेसेइ अन्नमवि जं किं चि पायच्छित्ताणुयं, एते णं अत्थेणं खण्ड-खंडीए समनुचेद्वे, एवं तु समोगाढं किंचूनं, पुरिवड्ढं ।

एयावसरंमि उ जे णं पडिक्कमंते इ वा वंदंते इ वा सज्झायं करंते इ वा संचरते इ वा परिभमंते इ वा गए इ वा ठिए इ वा बइड्डलगे इ वा उड्डियल्लगे इ वा तेउ-काएण फुसियल्लगे भवेज्जा, से णं आयंबिलं । न संवरेज्जा, तओ चउत्थं ।

अन्नेसिं तु जहा जोग्गं जहेव पायच्छित्ताणं पविसंति तहा स-सत्तीए तवो-कम्मं नाणुद्विएइ तओ चउगुणं पायच्छित्तं तं एव बीय-दियहे उवइसेज्जा, जेसिं च णं वंदंताण वा पडिक्कमंताण वा दीहं वा मज्झारं वा छिंदिऊणं गयं हवेज्जा तेसिं च णं लोय-करणं अन्नत्थगमनं तं मानं उग्ग-तवाभिरमणं, एयाइं न कुव्वंति, तओ गच्छ बज्जे ।

जे णं तु तं महोवसग्ग-साहगं उप्पाइगं दुन्निमित्तं अमंगलावहं हविया, जे णं पढम-पोरिसीए वा बीय-पोरिसीए वा चंक्रमणियाए परिसक्किरेज्जा अगालसन्निए इ वा छड्डिकडे इ वा से णं जइ चउत्थिहेणं न संचरेज्जा, तओ छड्डं । दिया थंडिल्ले पडिलेहिए राओ सन्नं वोसिरेज्जा समाहीए इ वा, एगासनगं गिलाणस्स, अन्नेसिं तु छड्डं एव ।

जइ णं दिया न थंडिल्लं पच्चुप्पेहियं नो णं समाही संजमिया अपच्चुप्पेहिए थंडिल्ले अपच्चुप्पेहियाए चेव समाहीए रयणीए सन्नं वा काइयं वा वोसिरेज्जा, एगासनगं गिलाणस्स, सेसाणं दुवालसं अहा णं गिलाणस्स मिच्छुक्कडं वा । एवं पढम, बीय-पोरिसीए वा सुत्तत्थ-अहिज्जणं मोत्तूणं जे णं इत्थी-कहं वा भत्त-कहं वा देस-कहं वा राय-कहं वा तेण-कहं वा गारत्थिय-कहं वा अन्नं वा असंबद्धं रोद्धज्झाणोदीरणा कहं पत्थावेज्ज वा उदीरेज्ज वा कहेज्ज कहावेज्ज वा, से णं संवच्छरं जाव अवंदे ।

अह णं पढम-बीय-पोरिसीए जइ णं कयाइं महया कारण-वसेणं अद्ध-घडिगं घडिगं वा सज्झायं न कयं, तत्थ मिच्छुक्कडं गिलाणस्स, अन्नेसिं निव्विगइयं दढ-निदुरं । तेण वा गिलाणेण वा जइ णं कहिं चि केणइ कारणेणं जाएणं असइं गीयत्थ-गुरुणा अणणुण्णाएणं सहसा कयाई बइड्ड-पडिक्कमणं कयं हवेज्जा, तओ मासं जाव अवंदे चउ-मासे जाव मुणेव्वयं च ।

जे णं पढम-पोरिसीए अणइक्कंताए तइय-पोरिसीए अइक्कंताए भत्तं वा पानं वा पडिगाहेज्ज वा परिभुंजेज्जा वा, तस्स णं पुरिवड्ढणं । चेइएहिं अवंदिएहिं उवओगं करेज्जा, पुरिवड्ढं । गुरुणो अंतिए न उवओगं करेज्जा, चउत्थं । अकएणं उवओगेणं जं किंचि पडिगाहेज्जा, चउत्थं । अविहीए उवओगं करेज्जा, खवणं ।

भत्तद्वाए वा पाणद्वाए वा भेसज्जद्वाए वा सकज्जेण वा गुरु-कज्जेण वा बाहिर-भूमीए निग्गच्छंते णं गुरुणो पाए उत्तिमंगेण संघट्टेत्ताणं आवस्सियं न करेज्जा पविसंते घंघसालाईसु णं वसही दुवारे निसीहियं न करेज्जा, पुरिवड्ढं । सत्तण्हं कारण-जायाणं असइं वसहीए बहिं निग्गच्छे, गच्छ-बज्जो । एगो गच्छे, उवद्वावणं ।

अज्झयणं-७ / चूलिका-१

अगीयत्थस्स गीयत्थस्स वा संकणिज्जस्स वा भत्तं वा पानं वा भेसज्जं वा वत्थं वा पत्तं वा दंडगं वा अविहीए पडिगाहेज्जा गुरुणं च न आलोएज्जा तइय-वयस्स छेदं, मासं जाव अवंदे मूणेव्वयं च ।

भत्तद्वाए वा पाणद्वाए वा भेसज्जद्वाए वा सकज्जेण वा गुरु-कज्जेण वा पविट्ठो गामे वा नगरे वा रायहाणीए वा तिय-चउक्क-चच्चर-परिसा-गिहे इ वा तत्थ कहं वा विकहं वा पत्थावेज्जा, उवद्वावणं । सोवाहणो परिसक्केज्जा उवद्वाणं । उवाहणाओ न पडिगाहेज्जा, खवणं । तारिसे णं स-विहाणगे उवाहणाओ न परिभुंजेज्जा, खवणं ।

गओ वा ठिओ वा केणइ पुट्ठो निउणं महुरं थोवं कज्जावडियं अगव्वियं अतुच्छं निट्ठोसं सयल-जनमनानंद-कारयं इह-पर-लोग-सुहावहं वयणं न भासेज्जा, अवंदे ।

जइ णं नाभिग्गहिओ सोलस-दोस-विरहियं पी स-सावज्जं भासेज्जा, उवद्वावणं । बहु भासे, उवद्वावणं । पडिनियं भासे, उवद्वाणं । कसाएहिं जिज्जे, अवंदे । कसाएहिं समुइण्णेहिं भुंजे रयणिं वा परिवसेज्जा, मासं जाव मुणव्वए अवंदे य उवद्वाणं च । परस्स वा कस्सइ कसाए समुइरेज्जा दर-कसायस्स वा कसाय-वुइठिं करेज्जा मम्मं वा किंचि बोलेज्जा, एतेसुं गच्छ-बज्झो ।

फरुसं भासे, दुवालसं । कक्कसं भासे, दुवालसं । खर-फरुस-कक्कस-निट्ठुरमनिट्ठं भासे, उवद्वावणं । दुब्बोल्लं देइ, खमणं । कलिं किलिकिंचं कलहं झं झं डमरं वा करेज्जा, गच्छ-बज्झो । मगार-जगारं वा बोल्ले, खमणं । बीय-वाराए, अवंदे । वहंतो, संघ-बज्झो । हणंतो, संघ-बज्झो । एवं खणंतो भजंतो ल्हसंतो लूडंतो जालेंतो जालावेंतो पयंतो पयावेंतो एतेसुं सव्वेसुं पत्तेगं, संघ-बज्झो ।

गुरुं पडिसूरेज्जा अन्नं वा मयहराइयं कहिं चि हीलेज्जा, गच्छायारं वा संघायारं वा वंदन-पडिक्कमणमाइ मंडली-धम्मं वा अइक्कमेज्जा, अविहीए पव्वावेज्ज वा उवद्वावेज्ज वा, अओग्गस्स वा सुत्तं वा अत्थं वा उभयं वा परुवेज्जा, अविहीए सारेज्ज वा वारेज्ज वा चोएज्ज वा, विहीए वा सारण-वारण चोयणं न करेज्जा उम्मग्ग-पट्टियस्स वा जहा विहीए जाव णं सयल-जन-सण्णिज्झं परिवाडिए न भासेज्जा हियं भासं स-पक्ख-गुणावहं एतेसुं सव्वेसुं पत्तेगं कुल-गण-संघ-बज्झो । कुल-गण-संघ-बज्झीकयस्स णं अच्चंत-घोर-वीर-तवाणुट्ठानाभिरयस्सा वि णं गोयमा ! अप्पेही तम्हा कुल-गण-संघ-बज्झीकयस्स णं खण-खण-द्धघडिग-घडिगद्ध वा न चिट्ठेयव्वं ति ।

अप्पुचुप्पेहिए थंडिल्ले उच्चारं वा पासवणं वा खेल्लं वा सिंघाणं वा जल्लं वा परिट्ठवेज्जा निसीयंतो संडासगे न पमज्जेज्जा, निव्विगइयायंबिलं अहक्कमेणं । भंड-मत्तोवगरण-जायं जं किंचि दंडगाई ठवंते इ वा निक्खिवंतं इ वा साहरंतं इ वा पडिसाहरंतं इ वा गिण्हंतं इ वा पडिगिण्हंतं इ वा अविहीए ठवेज्ज वा निक्खिवेज्ज वा साहरेज्ज वा पडिसाहरेज्ज वा गिण्हेज्ज वा पडिगिण्हेज्ज वा एतेसुं असंसत्त-खेत्ते, पत्तेगं चउरो आयंबिले । संसत्तखेत्ते, उवद्वाणं ।

दंडगं वा रयहरणं वा पाय-पुच्छणं वा अंतरकप्पगं वा चोल-पट्टगं वा वासाकप्पं वा जाव णं मुहनंतगं वा अन्नयरं किंचि संजमोवगरण-जायं अप्पडिलेहियं वा दुप्पडिलेहियं वा ऊणाइरित्तं गणणाए पमाणेणं वा परिभुंजे, खवणं सव्वत्थ पत्तेगं । अविहीए नियंसणुत्तरीयं रयहरणं दंडगं वा परिभुंजे, चउत्थं । सहसा रयहरणं खवे निक्खिवइ, उवद्वावणं । अंगं वा उवंगं वा संबाहावेज्जा, खवणं । रयहरण-सुसंघट्टे, चउत्थं । पमत्तस्स सहसा मुहनंतगाइ किं चि संजमोवगरणं विप्पनस्से, तत्थ णं जाव खमणोद्वावणं जहा अज्झयणं-७ / चूलिका-१

जोगं गवेसणं मिच्छुक्कड-वोसिरणं पडिगाहणं च ।

आउकाय-तेउकायस्स णं संघट्टणाई एगंतेणं निसिद्धे । जो ऊण जोइए अंतलिक्खबिंदु-वारेहिं वा आउत्तो वा अनाउत्तो वा सहसा फुसेज्जा, तस्स णं पकहियं च एवायंबिलं । इत्थीणं अंगावयवं किंचि

हत्थेण वा पाएण वा दंडगेण वा कर-धरिय-कुसग्गेण वा चलणक्खेवेण वा संघट्टे, पारंचियं । सेसं पुणो वि सत्थाणे पबंधेण भाणीहई । एवं तु आगयं भिक्खा-कालं । एयावसम्ही उ गोयमा ! जे णं भिक्खू पिंडेसणाभिहिणं विहिणा अदीन-मनसो ।

[१३८३] वज्जेतो बीय-हरीयाइं पाणे य दग-मट्टियं ।

उववायं विसमं खाणुं रन्ना गिहवईणं च ॥

[१३८४] संकट्टाणं विवज्जंतो, पंच-समिय-ति-गुत्तो गोयर-चरियाए पाहुडियं न पडियरिया, तस्स णं चउत्थं पायच्छित्तं उवइसेज्जा । जइ णं नो अभत्तट्ठी ठवणा-कुलेसु पविसे, खवणं । सहसा पडिवुत्थं पडिगाहियं तक्खणा न परिट्टवे निरुवद्धवे थंडिले, खवणं । अकप्पं पडिगाहेज्जा, चउत्थाइ । जहा जोगं कप्पं वा पडिसेहेइ, उवट्टावणं । गोयर-पविट्टो कहं वा विकहं वा उभय-कहं वा पत्थावेज्ज वा उदीरेज्ज वा कहेज्ज वा निसामेज्ज वा, छट्ठं । गोयर-मागओ य भत्तं वा पानं वा भेसज्जं वा जं जेण चित्तियं, जं जहा य चित्तियं, जहा य पडिगाहियं तं तहा सव्वं नालोएज्जा, पुरिवड्ढं ।

इरियाए अपडिक्कंताए भत्त-पाणाइयं आलोएज्जा, पुरिवड्ढं । ससरक्खेहिं पाएहिं अपमज्जिएहिं, इरियं पडिक्कमेज्जा पुरिमड्ढं । इरियं पडिक्कमिउकामो तिन्नि वाराओ चलणगाणं हिट्ठिम-भूमि-भागं न पमज्जेज्जा, निव्विइयं । कण्णोट्टियाए वा मुहनंतगेण वा विना इरियं पडिक्कमे, मिच्छदुक्कडं पुरिमड्ढं वा । पाहुडियं आलोइत्ता सज्झायं पट्टावित्तुं तिसराइं धम्मोमंगलाइं न कड्ढेज्जा, चउत्थं । धम्मो मंगलगेहिं च णं अपयट्टिएहिं चेइय-साहूहिं च अवंदिएहिं पारावेज्जा, पुरिवड्ढं । अपाराविणं भत्तं वा पानं वा भेसज्जं वा परिभुंजे, चउत्थं । गुरुणो अंतियं न पारावेज्जा नो उवओगं करेज्जा नो णं पाहुडियं आलोएज्जा न सज्झायं पट्टावेज्जा, एतेसुं पत्तेयं उवट्टावणं । गुरु वि य जेणं नो उवउत्ते हवेज्जा, से णं पारंचियं ।

साहम्मियाणं संविभागेणं अविइन्नेणं जं किंचि भेसज्जाइ परिभुंजे, छट्ठं । भुंजंते इ वा परिवेसंते इ वा पारिसाडिं करेज्जा, छट्ठं । तित्त-कडुय-कसायंबिल-महुर-लवणाइं रसाइं आसायंते इ वा पलिसायंते इ वा परिभुंजे, चउत्थं । तेसुं चेव रसेसुं रागं गच्छे, खमणं अट्टमं वा । अकएणं काउसग्गेणं विगइं परिभुंजे, पंचेवायंबिलाणि । दोणहं विगइणं उड्ढं परिभुंजे, पंच निव्विगइयाणि । अकारणिगो विगइ-परिभोगं कुज्जा, अट्टमं ।

असनं वा पानं वा भेसज्जं वा गिलाणस्स अइण्णाणुच्चरियं परिभुंजे, पारंचियं । गिलाणेणं अपडिजागरिएणं भुंजे, उवट्टावणं सव्वमवि निय-कत्तव्वं परिचेच्चाणं गिलाण-कत्तव्वं न करेज्जा, अवंदे । गिलाण-कत्तव्वमालंबिरुणं निय-कत्तव्वं पमाएज्जा, अवंदे । गिलाण-कप्पं न उत्तारेज्जा, अट्टमं । गिलाणेण सद्धिरे एग-सद्धेणागतुं जमाइसे तं न कुज्जा, पारंचिए । नवरं जइ णं से गिलाणे सत्थ-चित्ते अहा णं संन्निवायादीहिं उब्भामिय-मानसे हवेज्जा तओ जमेव गिलाणेणमाइड्ढं तं न कायव्वं तस्स जहाजोगं कायव्वं न करेज्जा, संघबज्झो ।

आहाकम्मं वा उद्देसियं वा पूइकम्मं वा मीस-जायं वा ठवणं वा पाहुडियं वा पाओयरं वा अज्झयणं-७ / चूलिका-१

कीयं वा पामिच्चं वा पारियट्टियं वा अभिहडं वा उब्भिण्णं वा मालोहडं वा अच्छेज्जं वा अनिसड्ढं वा अज्झोयरं वा धाई-दूई-निमित्तेणं आजीववणिमग-तिगिच्छा-कोह-मान-माया-लोभेणं पुट्ठिं संथव-पच्छा-संथव विज्जा-मंत-चुण्ण-जोगे संकिय-मक्खिय-निक्खित्त-पिहिय-साहरिय-दाय-गुम्मीस-अपरिणय-लित्त-

छड्डिय एयाए बायालाए सेहिं अन्नयर-दोस दूसियं आहारं वा पानं वा भेसज्जं वा परिभुंजेज्जा, सव्वत्थ पत्तेगं जहा-जोगं कमेणं खमणायंबिलादी उवइसेज्जा । छण्हं दोसेहिं कारण जायाणमसई भुंजे, अट्ठमं । सधूम सइंगालं-भुंजे, उवद्वावणं । संजोइय-संजोइय जीहा लेहडत्ताए भुंजे, आयंबिल-खवणं ।

संते बल-वीरिय-पुरिसयार-परक्कमे अट्ठमि-चाउद्वसी-नाण-पंचमी पज्जोसवणा चाउम्मासिए चउत्थट्ठम-छट्ठे न करेज्जा, खमणं ।

कप्पं नावियइ, चउत्थं । कप्पं परिद्ववेज्जा, दुवालसं । पत्तग-मत्तग-कमढगं वा अन्नयरं वा भंडोवगरण-जायं अतिप्पिरुणं ससिणिद्धं वा अससिणिद्धं अनुल्लेहियं ठवेज्जा, चउत्थं पत्ता-बंधस्स णं गंठिओ न छोडेज्जा न सोहेज्जा, चउत्थं पच्छित्तं ।

समुद्वेस-मंडलीओ संघट्टेज्जा आयामं संघट्टं वा समुद्वेस-मंडलिं छिविरुणं दंडा पुंछणगं न देज्जा, निव्विइयं । समुद्वेस-मंडलीं छिविरुणं दंडा-पुंछणगं च दाऊणं इरियं न पडिक्कमेज्जा, निव्वीइयं ।

एवं इरियं पडिक्कमित्तुं दिवसावसेसियं न संवरेज्जा, आयामं गुरु-पुरओ न संवरेज्जा, पुरिमइढं । अविहीए संवरेज्जा, आयंबिलं । संवरेत्ता णं चेइय साहूणं वंदनं न करेज्जा, पुरिमइढं । कुसीलस्स वंदनगं देज्जा, अवंदे ।

एयावसरम्ही उ बहिर-भूमीए पाणिय-कज्जेणं गंतूणं जावागमे ताव णं समोगाढेज्जा किंचूणाहियं तइय-पोरिसी ।

तमवि जाव णं इरियं पडिक्कमित्ता णं विहीए गमनागमनं च आलोइऊणं पत्तगमत्तगकमढगाइयं भंडोवगरणं निक्खिवइ, ताव णं अनूनाहिया तइय-पोरिसी हवेज्जा । एवं अइक्कंताए तइय-पोरिसीए गोयमा ! जे णं भिक्खू उवहिं थंडिलाणि विहिणा गुरु-पुरओ संदिसावेत्ता णं पानगस्स य संवरेऊण काल-वेलां जाव सज्झायं न करेज्जा, तस्स णं छट्ठं पायच्छित्तं उवइसेज्जा ।

एवं च आगयाए काल-वेलाए गुरु-संतिए उवहिं थंडिले वंदन-पडिक्कमण-सज्झाय-मंडलीओ वसहिं च पच्चुप्पेहित्ताणं समाही-खइरोल्लगे य संजमिरुणं अत्तणगे उवहिं थंडिल्ले पच्चुप्पेहित्तु गोयर-चरियं पडिक्कमिरुणं कालो गोयर-चरिया-घोसणं काऊणं तओ देवसियाइयार-विसोहि-निमित्तं काउस्सग्गं करेज्जा, एएसुं पत्तेगं उवद्वावणं पुरिवइढेगासणगोवद्वावणं जहा संखेणं नेयं ।

एयं काऊणं काउस्सग्गं मुहनंतगं पच्चुप्पेहेउं विहीए गुरुणो कितिकम्मं काऊणं जं किंचि कत्थइ सूरुग्गमं पभितीए चिट्ठंतेण वा गच्छंतेण वा चलंतेण वा भमंते ण वा संभरंते न वा पुढवि-दग-अगनि-मारुय-वणस्सइ-हरिय-तण-बीय-पुप्फ-फल-किसलय-पवाल-कंदल-बि-ति-चउ-पंचिदियाणं संघट्टण-परियावण-किलावण-उद्ववणं वा कयं हवेज्जा, तहा तिण्हं गुत्तादीणं चउण्हं कसायादीणं पंचण्हं महव्वयादीणं छण्हं जीव-निकाया-दीणं सत्तण्हं पान-पिंडेसणाणं अट्ठण्हं पवयण-मायादीणं नवण्हं बंधचेरादीणं दस विहस्स णं समण-धम्मस्स-नाण-दंसण-चरित्ताणं च जं खंडियं जं विराहियं तं निंदिरुणं गरहिरुणं आलोइऊणं पायच्छित्तं च पडिवज्जिरुणं एगग्ग-मानसे सुत्तत्थोभयं धणियं भावेमाणे पडिक्कमणं न करेज्जा उवद्वावणं ।

अज्झयणं-७ / चूलिका-१

एवं तु अदंसणं गओ सूरिओ । चेइएहिं अवंदिएहिं पडिक्कमेज्जा, चउत्थं । एत्थं च अवसरं विण्णेयं । पडिक्कमिरुणं विहीए रयणीए पढम-जामं अनूनगं सज्झायं न करेज्जा, दुवालसं । पढम पोरिसीए अनइक्कंताए संथारगं संदिसावेज्जा, छट्ठं । असंदिसाविणं संथारगेणं संथारेज्जा, चउत्थं ।

अपच्युप्पेहि ए थंडिल्ले संथारेइ, दुवालसं । अविहीए संथारेज्जा, चउत्थं । उत्तर-पट्टेणं विना संथारेइ, चउत्थं । दोउडं संथारेज्जा, चउत्थं । कुसिरणप्पयादी संथारेज्जा, सयं आयंबिलाणि ।

सव्वस्स समण-संघस्स साहम्मियाणमसाहम्मियाणं च सव्वस्सेव जीव-रासिस्स सव्वभावभावंतरेहि णं तिविहं तिविहेणं खामण-मरिसावणं अकाऊणं चेइएहिं तु अवंदिएहिं गुरु-पायमूलं च उवही-देहस्सासनादीणं च सागारेणं पच्चक्खाणेणं अकएणं कण्ण-विवरेसुं च कप्पास-रूवेणं अट्टइएहिं संथारगम्ही ठाएज्जा, एएसुं पत्तेगं उवट्टावणं ।

संथारगम्ही उ ठाऊणमिमस्स णं धम्म-सरीरस्स गुरु-पारंपरिएणं समुवलद्धेहिं तु इमेहिं परममंतक्खरेहिं दससु वि दिसासुं अहि-करि-हरि-दुट्ठ-मंत-वाणमंतर-पिसायादीणं रक्खं न करेज्जा, उवट्टाणं । दससु वि दिसासु रक्खं काऊणं दुवालसहिं भावनाहिं अभावियाहिं सोवेज्जा, पणुवीसं आयंबिलाणि । एककं निद्धं सोऊणं पडिबुद्धे इरियं पडिक्कमेत्ताणं पडिक्कमणं- कालं जाव सज्झायं न करेज्जा, दुवालसं । पसुत्ते दुसुमिणं वा कुसुमिणं वा ओगाहेजा सएणं, उसासेणं काउस्सग्गं । रयणीए छीएज्ज वा खासेज्ज वा फलहग-पीढग-दंडगेण वा खडुक्कगं पउरिया, खमणं । दीया वा राओ वा हास-खेइड-कंदप्प-नाहवायं करेज्जा, उवट्टावणं ।

एवं जे णं भिक्खू सुत्ताइक्कमेणं कालाइक्कमेणं आवासगं कुव्वीया तस्स णं कारणिगस्स मिच्छुक्कडं गोयमा ! पायच्छित्तं उवइसेज्जा । जे य णं अकारणिगे, तेसिं तु णं जहा-जोगं चउत्थाइए उवएसे य । जे णं भिक्खू सद्धे करेज्जा सद्धे उवइसेज्जा सद्धे गाढागाढ-सद्धे य, सव्वत्थ पइ-पयं पत्तेयं सव्व-पएसुं संबज्झावेयव्वे ।

एवं जे णं भिक्खू आउकायं वा तेउकायं वा इत्थी-सरीरावयवं वा संघट्टेज्जा नो णं परिभुंजेज्जा, से णं तस्स पणुवीसं आयंबिलाणि उवइसेज्जा । जे उ णं परिभुंजेज्जा दुरंत-पंत-लक्खणे अदट्टव्वे महा-पाव-कम्मं पारंचिए ।

अहा णं महा-तवस्सी हवेज्जा, तओ सयरिं मासखवणाणं सयरिं अद्ध-मास-खवणाणं सयरिं दुवालासाणं सयरिं दसमाणं सयरिं अट्टमाणं सयरिं छट्टाणं सयरिं चउत्थाणं सयरिं आयंबिलाणं सयरिं एगट्टाणं सयरिं सुद्धायामेगासणाणं सयरिं निव्विगइयाणं जाव णं अनुलोम-पडिलोमेणं निद्धिसेज्जा एयं च पच्छित्तं जे णं भिक्खू अविंसंते समणुट्टेज्जा से णं आसण्ण-पुरेक्खडे नेए ।

[१३८५] से भयवं ! इणमो सयरिं सयरिं अनुलोम-पडिलोमेणं केवतिय-कालं जाव समनुट्टिहिइ ? गोयमा ! जाव णं आयारमंगं वाएज्जा । भयवं ! उड्ढं पुच्छा गोयमा ! उड्ढं केई समनुट्टेज्जा केइ नो समनुट्टेज्जा । जे णं समनुट्टेज्जा से णं वंदे से णं पुज्जे से णं दट्टव्वे से णं सुपसत्थ सुमंगले सुगहियनामधेज्जे तिण्हं पि लोगाणं वंदणिज्जे त्ति । जे णं तु नो समनुट्टे, से णं पावे से णं महापावे से णं महापाव-पावे से णं दुरंत-पंत-लक्खणे जाव णं अदट्टव्वे त्ति ।

[१३८६] जया णं गोयमा ! इणमो पच्छित्तसुत्तं वोच्छिज्जिहिइ तया णं चंदाइच्चा गहा-रिक्खा-तारगाणं सत्त-अहोरत्ते तेयं नो विप्फुरेज्जा ।

अज्झयणं-७ / चूलिका-१

[१३८७] इमस्स णं वोच्छेदे गोयमा ! कसिणस्स संजमस्स अभावो, जओ णं सव्व-पाव-निट्टवगे चेव पच्छित्ते सव्वस्स णं तवसंजमानुट्टाणस्स पहाणमंगे परम-विसोही-पए पवयणस्सावि णं नवनीय-सारभूए पन्नत्ते ।

[१३८८] इणमो सव्वमवि पायच्छित्ते गोयमा ! जावइयं एगत्थ संपिंडियं हवेज्जा तावइयं चेव एगस्स णं गच्छाहिवइणो मयहर-पवत्तिणीए य चउगुणं उवइसेज्जा, जओ णं सव्वमवि एएसिं पयंसियं हवेज्जा अहाणमिमे चेव पमायवसं गच्छेज्जा, तओ अन्नेसिं संते धी-बल-वीरिए सुद्धतरागमच्चुज्जमं हवेज्जा । अहा णं किं चि सुमहंतमवि तवानुद्वाणमब्भुज्जमेज्जा, ता णं न तारिसाए धम्म-सद्धाए किं तु मंदुच्छाहे समणुद्देज्जा । भग्गपरिणामस्स य निरत्थगमेव काय-केसे । जम्हा एयं तम्हा उ अच्चिंतानंत-निरनुबंधि-पुन्न-पब्भारेणं संजुज्जमाणे वि साहुणो न संजुज्जंति, एवं च सव्वमवि गच्छाहिवइयादीणं दोसेणेव पवत्तेज्जा । एएणं अट्ठेणं एवं पवुच्चइ गोयमा जहा णं गच्छाहिवइयाईणं इणमो सव्वमवि पायच्छित्तं जावइयं एगत्थ संपिंडियं हवेज्जा तावइयं चेव चउगुणं उवइसेज्जा ।

[१३८९] से भयवं ! जे णं गणी अप्पमादी भवित्ताणं सुयानुसारेणं जहुत्त-विहाणेहिं चेव सययं अहन्निसं गच्छं न सारवेज्जा, तस्स किं पच्छित्तमुवइसेज्जा ? गोयमा ! अप्पउत्ती पारंचियं उवइसेज्जा ।

से भयवं ! जस्स उ णं गणिणो सव्व पमायालंबनविप्पमुक्कस्सावि णं सुयानुसारेणं जहुत्तविहाणेहिं चेव सययं अहन्निसं गच्छं सारवेमाणस्सेव केइ तहाविहे दुडुसीले न सम्मग्गं समायारेज्जा, तस्स वी उ किं पच्छित्तमुवइसेज्जा ? गोयमा ! उवइसेज्जा । से भयवं के णं अट्ठेणं ? गोयमा ! जओ णं तेणं अपरिक्खिय-गुणदोसे निक्खमाविए हवेज्जा, एएणं । से भयवं ! किं तं पायच्छित्तमुवइसेज्जा ? गोयमा ! जे णं एवं गुणकलिए गणी से णं जया एवंविहे पावसीले गच्छे तिविहं तिविहेणं वोसिरेत्ताणमाय-हियं न समनुद्देज्जा, तया णं संघ-बज्झे-उवइसेज्जा ।

से भयवं ! जया णं गणिणा गच्छे तिविहेणं वोसिरिए हवेज्जा तया णं ते गच्छे आदरेज्जा, गोयमा! जइ संविग्गे भवित्ताणं जहुत्तं पच्छित्तमनुचरित्ताण अन्नस्स गच्छाहिवइणो उवसंपज्जित्ताणं सम्मग्गमनुसारेज्जा तओ णं आयरेज्जा । अहा णं सच्छंदत्ताए तहेव चिट्ठे, न उ णं चउत्विहस्सा वि समण-संघस्स बज्झं, तं गच्छं नो आयरेज्जा ।

[१३९०] से भयवं ! जया णं से सीसे जहुत्त-संजम-किरियाए पवट्ठंति तहाविहे य केई कुगुरु तेसिं दिक्खं परूवेज्जा तया णं सीसा किं समनुद्देज्जा ? गोयमा! घोर-वीर-तव-संजमे, से भयवं ! कहं ? गोयमा! अन्न गच्छे पविसित्ताणं । से भयवं ! जया णं तस्स संतिणं सिरिगारेणं विम्हिए समाणे अन्न-गच्छेसुं पवेसमेव न लभेज्जा तया णं किं कुच्चिज्जा ? गोयमा! सव्व-पयारेहिं णं तं तस्स संतियं सिरियारं फुसावेज्जा, से भयवं! केणं पयारेणं तं तस्स संतियं सिरियारं सव्व-पयारेहिं णं फुसियं हवेज्जा ? गोयमा! अक्खरेसुं, से भयवं! किं नामे ते अक्खरे? गोयमा! जहा णं अप्पडिग्गाही कालकालंतरेसुं पि अहं इमस्स सीसाणं वा सीसिणीगाणं वा । से भयवं ! जया णं एवंविहे अक्खरे न प्पयादी, गोयमा ! जया णं एवंविहे अक्खरे न प्पयादी तया णं आसन्न-पावयणीणं पकहित्ताणं चउत्थादीहिं समक्कमित्ताणं अक्खरे दावेज्जा ।

से भयवं! जया णं एएणं पयारेणं से णं कुगुरु अक्खरे न पदेज्जा तया णं किं कुज्जा ? गोयमा! जया णं एएणं पयारेणं से णं कुगुरु अक्खरे न पदेज्जा, तया णं संघ-बज्झे उवइसेज्जा । से अज्झयणं-७ / चूलिका-१

भयवं! केणं अट्ठेणं एवं वुच्चइ ? गोयमा ! सुदुप्पयहे इणमो महा-मोह-पासे गेह-पासे तमेव विप्पहि-त्ताणं अनेग सारीरग-मनो-समुत्थ-चउ-गइ-संसार-दुक्ख-भय-भीए-कह-कहादी-मोह-मिच्छत्तादीणं खओव-

समेणं सम्मग्गं समोवलभित्ताणं निव्विन्न-काम-भोगे निरणुबंधे पुन्नमहिज्जे तं च तव-संजमानुद्वाणेणं तस्सेव तव-संजम किरियाए जाव णं गुरु सयमेव विग्घं पयरे अहा णं परेहिं कारवे कीरमाणे वा समनुवेक्खे सपक्खेण वा परपक्खेणं वा ताव णं तस्स महानुभागस्स साहुणो संतियं विज्जमाण-मवि धम्म-वीरियं पणस्से । जाव णं धम्म-वीरियं पणस्से ताव णं जे पुण्ण-भागे आसन्न-पुरक्खडे चेव सो पणस्से ।

जइ णं नो समण लिंगं विप्पजहे । ताहे जे एवं गुणोववेए से णं तं गच्छमुज्झिय अन्न गच्छं समुप्पयाइ । तत्थवि जाव णं संपवेसं न लभे ताव णं कयाइ उ न अविहीए पाणे पयहेज्जा कयाइ उ न मिच्छत्तभावं गच्छिय पर-पासंडं आसएज्जा कयाइ उ न ताराइसंगहं काऊणं अगार-वासे पविसेज्जा । अहा णं से ताहे महातवस्सी भवेत्ताणं पुणो अतवस्सी होउणं पर-कम्मकरे हवेज्जा, जाव णं एयाइं न हवंति ताव णं एगंतेणं वुड्ढिं गच्छे मिच्छत्ततमे, जाव णं मिच्छत्त-तमंधी-कए-बहुजन-निवहे दुक्खेणं समनुद्देज्जा । दोग्गइ-निवारए सोक्ख-परंपरकारए अहिंसा लक्खणसमण-धम्मे ।

जाव णं एयाइं भवंति ताव णं तित्थस्सेव वोच्छित्ती जाव णं तित्थस्सेव वोच्छित्ती ताव णं सुदूर-ववहिए परम-पए जाव णं सुदूर-ववहिए परम-पए ताव णं अच्चंत सुदुक्खिए चेव भव्वसत्तसंघाए पुणो चउगईए संसरेज्जा एएणं अट्टेणं एवं वुच्चइ गोयमा ! जहा णं जे णं एएणेव पयारेणं कुगुरु अक्खरे नो पएज्जा से णं संघ-वज्झे उवइसेज्जा ।

[१३९१] से भयवं केवतिएणं कालेणं इहे कुगुरु भवीहंति ? गोयमा ! इओ य अद्ध-तेरसणं वास सयाणं साइरेगाणं समइक्कंताणं परओ भवीसुं । से भयवं ! के णं अट्टेणं ? गोयम ! तक्कालं इड्ढि-रस-साय गारव संगए ममीकार-अहंकारग्गीए अंतो संपज्जलंत-बोंदी अहमहं ति कय-मानसे अमुणिय-समय-सब्भावे गणी भवीसुं, एएणं अट्टेणं । से भयवं ! किं सव्वे वी एवंविहे तक्कालं गणी भवीसुं ? गोयमा एगंतेणं नो सव्वे । के ई पुण दुरंत-पंत-लक्खणे अदद्ववे णं एगाए जननीए जमग-समगं पसूए निम्मरे पाव-सीले दुज्जाय-जम्मे सुरोद्ध-पयंडाभिग्गहिय-दूर-महामिच्छदिट्ठी भविंसु । से भयवं ! कहं ते समुवलक्खेज्जा ? गोयमा ! उस्सुत्तुम्मग्ग-वत्तणुद्धिसण-अनुमइ-पच्चएण वा ।

[१३९२] से भयवं! जे णं गणी किंचि आवस्सगं पमाएज्जा? गोयमा! जे णं गणी अकारणिगे किंचि खणमेगमवि पमाए, से णं अवंदे उवदिसेज्जा । जे उ णं तु सुमहा कारणिगे वि संते गणी खणमेगमवी न किंचि निययावस्सगं पमाए से णं वंदे पूए दद्ववे जाव णं सिद्धे बुद्धे पार-गए खीणद्वक्कम्ममले नीरए उवइसेज्जा । सेसं तु महया पबंधेण स-द्वाने चेव भाणिहिइ ।

[१३९३] एवं पच्छित्तविहिं सोऊणाणुद्धती अदीन-मनो ।

जुंजइ य जहा-थामं जे से आराहगे भणिए ॥

[१३९४] जल-जलण-दुद्ध-सावय चोर-नरिंदाहि-जोगिणीण भए ।

तह भूय-जक्खरक्खस्स खुद्धपिसायाण मारीणं ॥

[१३९५] कलि-कलए विग्घ-रोहग कंताराडइ-समुद्ध-मज्झे वा ।

दुच्चिंतिय अवसउणे संभरियव्वा इमा विज्जा ॥

अज्झयणं-७ / चूलिका-१

[१३९६] प् अ अ ए ह इ म्, ज् अ ण् अ म् द् अ ण् उ ज् अ म् घ् अ ण् इ उ म् ए

ह इ म् त् इ व् इ क् क् अ म् उ ण् आ ह् ई ह् इ म् प् अ व् व् अ ण् आ भ् उ ह् इ अ ए ह् अ र् उ
 भ् उ ए ह् इ म् म् अ ह् उ स् उ उ अ ण् उ, म् अ त्थ अ इ द् ए उ अ ण् अ म् त् उ ए ह् इ म् अ
 त् थ् अ स् इ क् ख् अ ण् अ म् ध् ए म् प् प् इ स् स् अ म् ।

[१] पाएहिं जणदणुं जंघ निउम्मेहिं तिविक्कमु ।

नाहिहिं पव्वनाभु हियए हरु भुएहिं महुसूदणु ।

मत्थइ देउ अनंतु एहिं अत्थ सिक्खणं धेप्पिस्सं ॥

तओ एयाए पवर-विज्जाए विहीए अत्ताणगं समहिमंतिऊण इमे य सत्तक्खरे

उत्तमंगोभय-खंध-कुच्छी चलणतलेसु नसेज्जा तं, जहा- अ उ म् [ओं] उ त्तमंगे क् उ [कु] वाम-
 खंध-गीवाए र् उ [रु] वाम कुच्छीए क् उ [कु] वाम चलणयले ल् ए [ले] दाहिण चलणयले [स् व् अ आ
 स्वा] दाहिण-कुच्छीए ह् अ अ- [हा] दाहिण-खंध-गीवाए ।

[१३९७] दुसुमिण दुन्निमित्ते गह-पीडुवसग्ग मारि-रिद्ध-भए ।

वासासणिविज्जूए वायारी महाजन-विरोहे ॥

[१३९८] जं चत्थि भयं लोगे तं सव्वं निद्वले इमाए विज्जाए ।

सण्हद्धे मंगलयरे रिद्धियरे पावहरे सयलवरक्खयसोक्खदाई ।

काउमिमे पच्छित्ते जइ न तु णं तब्भवे सिज्झे ॥

[१३९९] ता लहिऊण विमाणगइं सुकुलुप्पत्तिं दुयं च पुणो बोहिं ।

सोक्ख परंपरणं सिज्झे कम्मइं बंधरयमलविमुक्के ॥

गोयमो त्ति बेमि

[१४००] से भयवं ! किमेयाणुमेत्तमेव पच्छित्तं-विहाणं जेणेवमाइसे ? गोयमा ! एय
 सामण्णेणं दुवालसण्ह-काल-मासाणं पइदिन-महन्निसानुसमयं पाणोवरमं जाव स-बाल वुड्ड-सेह-
 मयहरायरिय-माईणं तथा य अपडिवाइ-महोवहि-मनपज्जवनाणी छउमत्थ-तित्थयराणं एगंतेणं
 अब्भुट्ठारिहावस्सगसंबंधयं चैव सामण्णेणं पच्छित्तं समाइड्डं नो णं एयाणुमेत्तमेव पच्छित्तं । से भयवं
 ! किं अपडिवाइ-महोवही-मन-पज्जवनाणी छउमत्थ-वीयरागे य सयलावस्सगे समणुट्ठीया ? गोयमा !
 समणुट्ठीया, न केवलं समणुट्ठीया जमग-समगमेवानवरयमणुट्ठीया ।

से भयवं ! कहं ? गोयमा! अचिंत-बल-वीरिय-बुद्धि-नाणाइसय-सत्ती-सामत्थेणं । से भयवं !
 के णं अट्ठेणं ते समणुट्ठीया ? गोयमा ! मा णं उस्सुत्तुम्मग्गपवत्तणं मे भवउ त्ति काऊणं ।

[१४०१] से भयवं किं तं सविसेसं पायच्छित्तं जाव णं वयासि ? गोयमा ! वासारत्तियं पंथ-
 गामियं वसहि पारिभोगियं गच्छायारमइक्कमणं संघायारमइक्कमणं गुत्ती-भय-पयरणं सत्त-मंडली-
 धम्माइक्कमणं अगीयत्थं गच्छ-पयाण-जायं कुसील-संभोगजं अविहीए पव्वज्जा-दाणोवट्ठावणा जायं
 अओग्गस्स सुत्तत्थोभयपन्नवणजायं अणाययणेक्क-खण-विरत्तणा-जायं देवसियं राइयं पक्खियं मासियं
 चाउम्मासियं संवच्छरियं एहियं पारलोइयं मूल-गुण-विराहणं उत्तर-गुण-विराहणं आभोगानाभोगयं आउट्ठि-
 पमाय-दप्प-कप्पियं वय-समण-धम्म-संजम-तव-नियम-कसाय-दंड-गुत्तीयं मय-भय-गारव-इंदियजं
 वसणायक-रोद्ध-ट्टज्झाण राग-दोस-मोह-मिच्छत्त-दुट्ठ-कूर-ज्झवसाय-समुत्थं ममत्तं-मुच्छा-परिग्गहारंभजं
 अज्झयणं-७ / चूलिका-१

असमिइत्त-पट्ठी-मंसासित्त धम्मं-तराय-संतावुव्वेवगासमा-हाणुप्पायगं संखाईया आसायणा-अन्नयरा आसा-

यणयं पाणवह-समुत्थं मुसावाय-समुत्थं अदत्तादान-गहण-समुत्थं मेहुणासेवणा-समुत्थं परिग्गह-करण-समुत्थं राइ-भोयण-समुत्थं मानसियं वाइयं काइयं असंजम-करण-कारवणअनुमइ-समुत्थं जाव णं नाण-दंसण-चारित्तायार-समुत्थं किं बहुणा जालइयाइं ति-गाल-चिति-वंदाणादओ पायच्छित्त-ठाणाइं पन्नत्ताइं तावइयं च पुणो विसेसेणं गोयमा! असंखेयहा पन्नविज्जंति ।

एवं संघारेज्जा जहा णं गोयमा पायच्छित्त-सुत्तस्स णं संखेज्जाओ निज्जुत्तीओ संखेज्जाओ संगहणीओ संखिज्जाइं अनुयोग-दाराइं संखेज्जे अक्खरे अनंते पज्जवे जाव णं दंसिज्जंति उवदंसिज्जंति आघविज्जंति पन्नविज्जंति परूविज्जंति कालाभिग्गहत्ताए दव्वाभिग्गहत्ताए खेत्ताभिग्गहत्ताए भावाभिग्गह-त्ताए जाव णं आनुपुव्वीए अनानुपुव्वीए जहा-जोगं गुण-द्वणोसुं, ति बेमि ।

[१४०२] से भयवं ! एरिसे पच्छित्त-बाहुल्ले से भयवं ! एरिसे पच्छित्त-संघट्टे से भयवं ! एरिसे पच्छित्त संगहणे अत्थि केई जे णं आलोएत्ताणं निंदित्ताणं गरहित्ताणं जाव णं अहारिहं तवो-कम्मं पायच्छित्तमनुचरित्ताणं सामन्नमाराहेज्जा पवयणमाराहेज्जा आणं आराहेज्जा जाव णं आयहिय-द्वयाए उवसंपज्जित्ताणं सकज्जं तमद्वं आराहेज्जा गोयमा! णं चउत्विहं आलोयणं विंदा तं-जहा-नामालोयणं ठवणालोयणं दव्वाल्लोयणं भावाल्लोयणं एते चउरो वि पए अनेग्गहा वि उप्पाइज्जंति । तत्थ ताव समासेणं नामालोयणं नाममेत्तेण ठवणालोयणं पोत्थयाइसु-मालिहियं दव्वाल्लोयणं नाम जं आलोएत्ताणं-असद-भावत्ताए जहोवइद्वं पायच्छित्तं नाणुचिद्वे । एते तओ वि पए एगंते णं गोयमा ! अपसत्थे, जे य णं से चउत्थे पए भावाल्लोयणं नाम ते णं तु गोयमा ! आलोएत्ताणं निंदित्ताणं गरहित्ताणं पायच्छित्त-मनुचरित्ताणं जाव णं आय-हियद्वयाए उवसंपज्जित्ताणं स कज्जुत्तमद्वं आराहेज्जा ।

से भयवं! कयरे णं से चउत्थे पए ? गोयमा ! भावाल्लोयणं, से भयवं किं तं भावाल्लोयणं ? गोयमा! जे णं भिक्खू-एरिस-संवेग-वेरग्ग-गए सील-तव-दान-भावन-चउ-खंध-सुसमण-धम्माराहणेककंत-रसिए मय-भय-गारवादीहिं अचंचंत-विप्पमुक्के सव्व-भाव-भावंतरेहिं णं नीसल्ले आलोइत्ताणं विसोहिपयं पडिगाहित्ताणं तह त्ति समनुद्वीया सव्वुत्तमं संजम-किरियं समनुपालेज्जा [तं जहा] :- ।

[१४०३] कयाइं पावाइं इमाइं जेहिं अद्वी न बज्झए ।

तेसिं तित्थयरवयणेहिं सुद्धी अम्हाण कीरउ ॥

[१४०४] परिचिच्चाणं तयं कम्मं घोर-संसार-दुक्खदं ।

मनो-वय-काय-किरियाहिं सीलभारं धरेमि अहं ॥

[१४०५] जह जाणइ सव्वन्नू केवली तित्थंकरे ।

आयरिए चारित्तइद्वे उवज्झाए य सुसाहुणो ॥

[१४०६] जह पंच-ल्लोयपाले य सत्ताधम्मे य जाणए ।

तहास्सलोएमि हं सव्वं तिलमेत्तं पि ण निह्ववं ॥

[१४०७] तत्थेव जं पायच्छित्तं गिरिवरगुरुयं पि आवए ।

तमनुच्चरेमि दे सुद्धिं जह पावे झत्ति विलिज्जए ॥

[१४०८] मरिऊणं नरय-तिरिएसुं कुंभीपाएसु कत्थई ।

कत्थइ करवत्त-जंतेहिं कत्थइ भिन्नो हु सूलिए ॥

अज्झयणं-७ / चूलिका-१

[१४०९] घंसणं घोलणं कहिम्मि कत्थई छेयण-भेयणं ।

बंधनं लंघनं कहिम्मि कत्थइ दमण-मंकणं ॥

[१४१०] नत्थणं वाहणं कहिम्मि कत्थइ वहन-तालणं ।

गुरु-भारक्कमणं कहिंचि कत्थइ जमलार-विंधणं ॥

[१४११] उर-पट्टि-अट्टि-कडि-भंगं पर-वसो तण्हं-छुहं ।

संतावुव्वेग-दारिद्धं विसहीहामि पुणो वि हं ॥

[१४१२] ता इहइं चेव सव्वं पि निय-दुच्चरियं जह-द्वियं ।

आलोएत्ता निंदित्ता गरहित्ता पाच्छित्तं चरित्तु णं ॥

[१४१३] निद्धहेमि पावयं कम्मं झत्ति संसार-दुक्खयं ।

अब्भुट्टित्ता तवं घोरं-धीर-वीर-परक्कमं ॥

[१४१४] अच्चत्तं-कडयडं कट्टं दुक्करं दुरनुच्चरं ।

उग्गुग्गयरं जिनाभिहियं सयल-कल्लाण-कारणं ॥

[१४१५] पायच्छित्त-निमित्तेण पाण-संधार-कारयं ।

आयरेणं तं तवं चरिमो जेणुब्भे सोक्खई तणुं ॥

[१४१६] कसाए विहली कट्टु इंदिए पंच-निग्गहं ।

मनो वई काय-दंडाणं निग्गहं धणियमारभं ॥

[१४१७] आसव-दारे निरुंभित्ता चत्त-मय-मच्छर-अमरिसो ।

गय-राग-दोस-मोहो हं निसंगो निप्परिग्गहो ॥

[१४१८] निम्ममो निरहंकारो सरीरे अच्चंत-निप्पिहो ।

महव्वयाइं पालेमि निरइयाराइं निच्छिओ ॥

[१४१९] हंद्धी हा अहन्नो हं पावो पाव-मती अहं ।

पाविट्ठो पाव-कम्मो हं पावाहमायरो अहं ॥

[१४२०] कुसीलो भट्ट-चारित्ती भिल्लसूणोवमो अहं ।

चिलातो निक्किवो पावी कूर-कम्मीह निग्घिणो ॥

[१४२१] इणमो दुल्लभं लभिउं सामण्णं नाणं-दंसणं ।

चारित्तं वा विराहेत्ता अनालोइय निंदिया ।

गरहिय अकय-पच्छित्तो वावज्जंतो जइ अहं ॥

[१४२२] ता निच्छयं अनुत्तारे घोरे संसार-सागरे ।

निब्बुड्डो भव-कोडीहिं समुत्तरंतो न वा पुणो ॥

[१४२३] ता जा जरा न पीडेइ वाही जाव न केइ मे ।

जाविंदियाइं- न हायंति ताव धम्मं चरेत्तुं हं ॥

[१४२४] निद्धमइरेण पावाइं निंदिउं गरहिउं चिरं ।

पायच्छित्तं चरित्ताणं निक्कलंको भवामि हं ॥

[१४२५] निक्कलुस-निक्कलंकाणं सुद्ध-भावाण गोयमा

! ।

अज्झयणं-७ / चूलिका-१

तं नो नट्टं जयं गहियं सुदूरामवि परिवलित्तु णं ॥

- [१४२६] एवमालोयणं दाउं पायच्छित्तं चरेत्तु णं ।
कलि-कलुस-कम्म-मल-मुक्के जइ नो सिज्जेज्ज तक्खणं ॥
- [१४२७] ता वए देव-लोगम्हि निच्चुज्जोए सयं पहे ।
देव-दुंदुहि-निग्घोसे अच्छरा-सय-संकुले ॥
- [१४२८] तओ चुया इहागंतु सुकुलुप्पत्तिं लभेत्तु णं ।
निव्विण्ण-काम-भोगा य तवं काउं मया पुणो ॥
- [१४२९] अनुत्तर-विमानेसुं निवसिऊनेहमागया ।
हवंति धम्म-तित्थयरा सयल-तेलोकक-बंधवा ॥
- [१४३०] एस गोयम ! विण्णेए सुपसत्थे चउत्थे पए ।
भावालोयणं नाम अक्खय-सिवसोक्ख-दायगो त्ति बेमि ॥
- [१४३१] से भयवं एरिसं पप्पा विसोहिं उत्तमं वरं ।
जे पमाया पुणो असई कत्थइ चुक्के खलेज्ज वा ॥
- [१४३२] तस्स किं तं विसोहि-पयं सुविसुद्धं चेव लिक्खए ।
उयाहु नो समुल्लिक्खे ? संसयमेयं वियागरे ॥
- [१४३३] गोयमा! निदिउं गरहिउं सुदूरं पायच्छित्तं चरेत्तु णं ।
निक्खारिय-वत्थामिवाए खंपणं जो न रक्खए ॥
- [१४३४] सो सुरभिगंध-गब्भिण गंधोदय-विमल-निम्मल-पवित्ते ।
मज्जिय-खीर-समुद्धे गइडाए जइ पडइ ॥
- [१४३५] ता पुण तस्स सामग्गी सव्व-कम्म-खयंकरा ।
अह होज्ज देव-जोग्गा असुई-गंधं खु दुद्धरिसं ॥
- [१४३६] एवं कय-पच्छित्ते जे णं छज्जीव-काय-वय-नियमं ।
दंसण-नाण-चरित्तं सीलंगे वा तवंगे वा ॥
- [१४३७] कोहेण व माणेण व माया लोभ-कसाय-दोसेणं ।
रागेण पओसेण व अन्नाण-मोह-मिच्छित्त-हासेण वा वि ॥
- [१४३८] [भएणं कंदप्पा दप्पेण] ।
एएहिं य अन्नेहिं य गारवमालंबणेहिं जो खंडे ।
सो सव्वट्ठ-विमाणा घल्ले अप्पाणगं निरए खिवे ॥

[१४३९] से भयवं ! किं आया संरक्खेयव्वे उयाहु छज्जीव-निकाय-माइ संजमं संरक्खेव्वं ?
गोयमा ! जे णं छक्कायाइ-संजमं संरक्खे से णं अनंत-दुक्ख-पयायगाओ दोग्गइ-गमनाओ अत्ताणं
संरक्खे, तम्हा उ छक्कायाइ संजममेव रक्खेयव्वं होइ ।

[१४४०] से भयवं ! केवतिए असंजमट्ठाणे पन्नत्ते ? गोयमा ! अनेगे असंजमट्ठाणे पन्नत्ते
जाव णं कायासंजमट्ठाणे । से भयवं ! कयरेणं से काया संजमट्ठाणे ? गोयमा ! काया संजमट्ठाणे अनेगहा
पन्नत्ते [तंजहा] :-

अज्झयणं-७ / चूलिका-१

[१४४१] पुढवि-दगागनि-वाऊ-वणप्फती तह तसाण विविहाणं ।

हत्थेण वि फरिसणयं वज्जेज्जा जावजीवं पि ॥

[१३४२] सी-उण्ह-खारखित्ते अग्गी लोणूस अंबिले नेहे ।

पुढवादीण-परोप्पर खयंकरे बज्झ-सत्थेए ॥

[१४४३] ण्हाणुम्मद्वणखोभण-हत्थं-गुलि-अक्खि-सोय-करणेणं ।

आवीयंते अनंते आऊ-जीवे खयं जंति ॥

[१४४४] संधुक्कण-जलगुणज्जालणेण उज्जोय-करण-मादीहिं ।

वीयण-फूमण-उब्भावणेहिं सिहि-जीव-संघायं ॥

[१४४५] जाइ-खयं अन्ने वि य छज्जीव-निकायमइगए जीवे ।

जलणो सुट्ठुओ वि हु संभक्खइ दस-दिसाणं च ॥

[१४४६] वीयणग-तालियंटय चामर-उक्खेव-हत्थ-तालेहिं ।

धोवण-डेवण-लंघण ऊसासाईहिं वाऊणं ॥

[१४४७] अंकूर-कुहर-किसलय पवाल-पुप्फ-फल-कंदलाईणं ।

हत्थ-फरिसेण बहवे जंति खयं वणप्फती-जीवे ॥

[१४४८] गमनागमन-निसीयण सुयणुट्ठण अनुवउत्तय-पमत्तो ।

वियलिंदि-बि-ति-चउ-पंचेदियाण गोयम ! खयं नियमा ॥

[१४४९] पाणाइवाय-विरई सिव-फलया गेण्हिऊण ता धीमं ।

मरणावयम्मि पत्ते मरेज्ज विरइ न खंडेज्जा ॥

[१४५०] अलिय-वयणस्स विरई सावज्जं सच्चमवि न भासेज्जा ।

पर-दव्व-हरण-विरइं करेज्ज दिन्ने वि मा लोभं ॥

[१४५१] धरणं दुद्धर-बंधवयस्स काउं परिग्गहच्चायं ।

राती-भोयण-विरती पंचेदिय-निग्गहं विहिणा ॥

[१४५२] अन्ने य कोह-माणा राग-द्वोसे य आलोयणं दाउं ।

ममकार-अहंकाए पयहियव्वे पयत्तेणं ॥

[१४५३] जह तव-संजम-सज्झाय-ज्झाणमाईसु सुद्ध-भावेहिं ।

उज्जमियव्वं गोयम ! विज्जुलया-चंचले जीए ॥

[१४५४] किं बहुना ? गोयमा ! एत्थं दाऊणं आलोयणं ।

पुढवीकायं विराहिज्जा कत्थ गंतुं स सुज्झिही ? ॥

[१४५५] किं बहुना ? गोयमा ! एत्थं दाऊणं आलोयणं ।

बाहिर-पाणं तहिं जम्मे जो पिए कत्थ सुज्झिही ? ॥

[१४५६] किं बहुना ? गोयमा ! एत्थं दाऊणं आलोयणं ।

उण्हवइ जालाइ जाओ फुसिओ वा कत्थ सुज्झिही ? ॥

[१४५७] किं बहुना ? गोयमा ! एत्थं दाऊणं आलोयणं ।

वाउकायं उदीरेज्जा कत्थं गंतुं स सुज्झिही ? ॥

अज्झयणं-७ / चूलिका-१

[१४५८] किं बहुना ? गोयमा ! एत्थं दाऊणं आलोयणं ।

- जो हरिय-तणं पुप्फं वा फरिसे कत्थं स सुज्झिही ? ॥
- [१४५९] किं बहुना ? गोयमा ! एत्थं दाऊणं आलोयणं ।
अक्कमई बीय-कायं जो कत्थं गंतुं स सुज्झिही ? ॥
- [१४६०] किं बहुना ? गोयमा ! एत्थं दाऊणं आलोयणं ।
वियलिंदी-बि-ति-चउ-पंचेदिय परियावेजो कत्थं स सुज्झिही ? ॥
- [१४६१] किं बहुना ? गोयमा ! एत्थं दाऊणं आलोयणं ।
छक्काए जो न रक्खेज्जा सुहुमे कत्थं स सुज्झिही ? ॥
- [१४६२] किं बहुना ? गोयमा ! एत्थं दाऊणं आलोयणं ।
तस-थावरे जो न रक्खे कत्थं गंतुं स सुज्झिही ? ॥
- [१४६३] आलोइय-निंदिय-गरहिओ वि कय-पायच्छित्त-नीसल्लो ।
उत्तम-ठाणम्मि ठिओ पुढवारंभं परिहरेज्जा ॥
- [१४६४] आलोइय-निंदिय गरहिओ वि कय-पायच्छित्त-नीसल्लो ।
उत्तम-ठाणम्मि ठिओ जोईए मा फुसावेज्जा ॥
- [१४६५] आलोइय-निंदिय-गरहिओ वि कय-पायच्छित्त संविग्गो ।
उत्तम ठाणम्मि ठिओ मा वियावेज्ज अत्ताणं ॥
- [१४६६] आलोइय-निंदिय-गरहिओ वि कय पायच्छित्तं संविग्गो ।
छिन्नं पि तणं हरियं असई मनगं मा फरिसे ॥
- [१४६७] आलोइय-निंदिय-गरहिओ वि कय पायच्छित्तं संविग्गो ।
उत्तम ठाणम्मि ठिओ जावज्जीवं पि एतेसिं ॥
- [१४६८] बेइंदिय-तेइंदिय-चउरो पंचेदियाण जीवाणं ।
संघट्टण-परियावण किलावणोद्धवण मा कासी ॥
- [१४६९] आलोइय-निंदिय-गरहिओ वि कय-पायच्छित्त संविग्गो ।
उत्तम ठाणम्मि ठिओ सावज्जं मा भणिज्जासु ॥
- [१४७०] आलोइय-निंदिय-गरहिओ वि कय-पायच्छित्त संविग्गो ।
लोयट्टेण वि भूई गहिया गिहि उक्खिविउसदिन्ना ॥
- [१४७१] आलोइय-निंदिय-गरहिओ वि कय-पायच्छित्त संविग्गो ।
जो इत्थिं संलवेज्जा गोयमा ! कत्थं स सुज्झिही ॥
- [१४७२] आलोइय-निंदिय-गरहिओ वि कय-पायच्छित्त नीसल्लो ।
चोद्धस-धम्मवुवगरणं उड्डं मा परिग्गहं कुज्जा ॥
- [१४७३] तेसिं पि निम्ममत्तो अमुच्छिओ अगढिओ दढं हविया ।
अह कुज्जा उ ममत्तं ता सुद्धी गोयमा ! नत्थि ॥
- [१४७४] किं बहुना ? गोयमा ! एत्थं दाऊणं आलोयणं ।
रयणीए आविए पाणं कत्थं गंतुं स सुज्झिही ? ॥

अज्झयणं-७ / चूलिका-१

[१४७५] आलोइय-निंदिय-गरहिओ वि कय-पायच्छित्त नीसल्लो ।

छाइक्कमे न रक्खे जो कत्थ सुद्धिं लभेज्ज सो ॥

[१४७६] अप्पसत्थे य जे भावे परिणामे य दारुणे ।

पाणाइवायस्स वेरमणे एस पढमे अइक्कमे ॥

[१४७७] तिव्व-रागा य जा भासा निदुर-खर-फरुस-कक्कसा ।

मुसावायस्स वेरमणे एस बीए अइक्कमे ॥

[१४७८] उग्गहं अजाइत्ता अचियत्तम्मि अवग्गहे ।

अदत्तादानस्स वेरमणे एस तइए अइक्कमे ॥

[१४७९] सद्दा रूवा रसा गंधा फासाणं पवियारणे ।

मेहुणस्स वेरमणे एस चउत्थ अ इक्कमे ॥

[१४८०] इच्छा मुच्छा य गेही य कंखा लोभे य दारुणे ।

परिग्गहस्स वेरमणे पंचमगे साइक्कमे ॥

[१४८१] अइमित्ताहारहोइत्ता सूर-खेत्तम्मि संकिरे ।

राई-भोयणस्स वेरमणे एस छट्टे अइक्कमे ॥

[१४८२] आलोइय-निंदिय-गरहिओ वि कय-पायच्छित्त नीसल्लो ।

जयणं अयाणमाणो भव-संसारे भमे जहा सुसढो ॥

[१४८३] भयवं ! को उण सो सुसढो ? कयरा वा सा जयणा ? जं अजाणमाणस्स णं तस्स

आलोइय-निंदिय गरहिओ वि कय-पायच्छित्तस्सा वि संसारं नो विनिद्धियं ति ? गोयमा ! जयणा नाम अद्वारसणं सीलंग सहस्साणं सत्तरस्स-विहस्स णं संजमस्स चोद्धसणं भूय-गामाणं तेरसणं किरिया-ठाणाणं सबज्जभंंतरस्स णं दुवालस-विहस्स णं तवोणुद्वाणस्स दुवालसाणं, भिक्खू-पडिमाणं दसविहस्स णं समणधम्मस्स नवणं चैव बंभगुत्तीणं अट्टणं तु पवयण-माईणं सत्तणं चैव पानपिंडेसणाणं छणं तु जीवनिकायाणं पंचणं तु महव्वयाणं तिणं तु चैव गुत्तीणं ।

जाव णं तिणमेव सम्मद्धंसण-नाण-चरित्ताणं तिणं तु भिक्खू कंतार-दुब्भिक्खायंकाईसु णं सुमहासमुप्पन्नेसु अंतोमुहुत्तावसेस-कंठग्गय-पाणेसुं पि णं मनसा वि उ खंडणं विराहणं न करेज्ज न कारवेज्जा न समणुजाणेज्जा जाव णं नारभेज्जा न समारभेज्जा जावज्जीवाए त्ति । से णं जयणाए भत्ते, से णं जयणाए धुवे, से णं जयणाए दक्खे, से णं जयणाए-वियाणे, त्ति ।

गोयमा सुसढस्स उ णं महती संकहा परम-विम्हय-जननी य ।

◦ सत्तमं अज्झयणं - [पढमा चूलिया] समत्तं ◦

◦ अट्टमं अज्झयणं-विइया चूलिया ◦

[१४८४] से भयवं! केणं अट्टेणं एवं वुच्चइ ? ते णं काले णं ते णं समएणं सुसढनामधेज्जे अनगारे हभूयवं । तेणं च एगेगस्स णं पक्खस्संतो पभूय-द्वाणिओ आलोयणाओ विदिन्नाओ सुमहंताइं च । अच्चंत-घोर-सुदुक्कराइं पायच्छित्ताणं समणुचिन्नाइं । तथा वि तेणं विरणं विसोहिपयं न समुवलद्धं ति एतेणं अट्टेणं एवं वुच्चइ ।

अज्झयणं-८ / चूलिका-२

से भयवं! केरिसा उ णं तस्स सुसढस्स वत्तव्वया ? गोयमा ! अत्थि इहं चैव भारहेवासे

अवंती नाम जनवओ, तत्थ य संबुक्के नामं खेडगे । तंमि य जम्मदरिद्धे निम्मेरे निक्किवे किविणे निरनुकंपे अइकूरे निक्कलुणे नित्तिंसे रोद्धे चंडरोद्धे पयंड-दंडे पावे अभिग्गहिय-मिच्छादिट्ठी अनुच्चरिय-नामधेज्जे सुज्जसिवे नाम धिज्जाई अहेसि । तस्स य धूया सुज्जसिरी । सा य अपरितुलिय सयल-तिहुयण-नर-नारिगणा लावण्ण-कंति-दित्ति-रूव-सोहग्गाइसएणं अनोवमा अत्तगा, तीए अन्नभवंतरम्मि इणमो हियएण दुच्चिंतियं अहेसि जहा णं सोहणं हवेज्जा जइ णं इमस्स बालगस्स माया वावज्जे, तओ मज्झ असवक्कं भवे । एसो य बालगो दुज्जीविओ भवइ, ताहे मज्झ सुयस्स य रायलच्छी परिणमेज्ज त्ति, तक्कम्म-दोसेणं तु जायमेत्ताए चेव पंचत्तमुवगया जननी ।

तओ गोयमा ! ते णं सुज्जसिवेणं महया किलेसेणं छंदमाराहमाणेणं बहूणं अहिनव-पसूय-जुवतीणं धराधरिं थन्नं पाऊणं जीवाविया सा बालिया । अहन्नया जाव णं बाल-भावमुत्तिन्ना सा सुज्जसिरी ताव णं आगयं अमाया-पुत्तं महारोवं दुवालस-संवच्छरियं दुभिक्खं ति, जाव णं फेट्टाफेट्टीए जाउमारद्धे सयले वि णं जनसमूहे ।

अहण्णया बहु-दिवस-खुहत्तेणं विसायमुवगएणं तेन चिंतियं जहा- किमेयं वावाइऊणं समुद्धिसामि किं वा णं इमीए पोग्गलं विक्किणिऊणं चेव अन्नं किंचिवि वणिमग्गाओ पडिगाहित्ताणं पाण-वित्तिं करेमि ? नो णं अन्ने केइ जीव-संधारणोवाए संपयं मे हवेज्ज त्ति, अहवा हद्धी हा हा न जुत्तमिणं ति, किंतु जीवमाणिं चेव विक्किणामि त्ति, चिंतिऊणं विक्किया सुज्जसिरी महा-रिद्धी-जुयस्स चोद्धस-विज्जा-ट्टाण-पारगयस्स णं माहण-गोविंदस्स गेहे । तओ बहु-जनेहिं धि-द्धी सदोवहओ तं देसं परिचिच्चाणं गओ अन्न-देसंतरं सुज्जसिवो, तत्था वि णं पयट्टो सो, इत्थेव विण्णाणे, जाव णं अन्नेसि कन्नगाओ अवहरित्ताणं अवहरित्ताणं अनत्थ विक्कणिऊणं चामेलियं सुज्जसिवेणं बहुं दविण-जायं ।

एयावसरम्मि उ समइक्कंते साइरेगे अट्ट-संवच्छरे दुब्भिक्खस्स जाव णं वियलियमसेसविहवं तस्सावि णं गोविंद-माहणस्स । तं च वियाणिऊणं विसायमुवगएणं चिंतियं गोयमा ! ते णं गोविंद-माहणेणं जहा णं होही संधारकालं मज्झ कुडुंबस्स, नाहं विसीयमाणे बंधवे खणद्धमवि दडूणं सक्कुणोमि । ता किं कायव्वं संपयमम्हेहिं ? ति, चिंतियमाणस्सेव आगया गोउलाहिवइणो भज्जा खइयग-विक्किणत्थं तस्स गेहे जाव णं गोविंदस्स भज्जाए तंडुल-मल्लगेणं पडिगाहियाओ चउरो घन-विगइ-मीस-खइयगं गोलियाओ तं च पडिगाहियमेत्तमेव परिभुत्तं डिंभेहिं ।

भणियं च महयरीए जहा णं- भट्टिदारिगे पयच्छाहि णं तमम्हाणं तंडुल-मल्लगं चिरं वट्टे जेणम्हे गोउलं वयामो । तओ समाणत्ता गोयमा ! तीए माहणीए सा सुज्जसिरी जहा णं हला तं जं अम्हाण नरवइणा निसावयं पहियं पेहियं तत्थ जं तं तंडुल-मल्लगं तमाणेहिं लहुं जेणाहमिमीए पयच्छामि, जाव दुंढिऊण नीहरिया मंदिरं सा सुज्जसिरी, नोवलद्धं तंडुल-मल्लगं । साहियं च माहणीए, पुणो वि भणियं माहणीए जहा- हला अमुगं अमुगं थामणुहुया अन्नेसिऊणमाणहिं । पुणो वि पइट्टा अलिंदगे जाव णं न पेच्छे ताहे समुद्धिया सयमेव सा माहणी ।

जाव णं तीए वि न दिट्ठं तओ णं सुविम्हिय-मानसा निउणं अन्नेसिउं पयत्ता जाव णं पेच्छे गणिगा-सहायं पढमसुयं पइरिक्के ओदन्नं समुद्धिसमाणं तेणावि पडिदट्टुं जननीं आगच्छमाणी चिंतियं अहन्नेणं जहा, णं चलिया अम्हाणं ओयणं अवहरिउकामा पायमेसा, ता जइ इहासन्नामागच्छिही अज्झयणं-८ / चूलिका-२

तओ अहमेयं वावाइस्सामि त्ति चिंतियं तेणं भणिया दूरासन्ना चेव महाय सद्धेणं सा माहणी जहा णं

भट्टिदारगे जइ तुं इहयं समागच्छिहिसि तओ मा एवं तं वोच्चिया जहा णं नो परिकहियं, निच्छयं अहयं ते वावाइस्सामि ।

एवं च अनिद्ध-वयणं सोच्चाणं वज्जासणि-पहया इव धस त्ति मुच्छिऊणं निवडिया धरणि-वट्ठे गोयमा ! सा माहणी त्ति । तओ णं तीए महयरिए परिवालिऊणं कंचि कालक्खणं वुत्ता सा सुज्जसिरी जहा णं हला हला कण्णगे, अम्हाणं चिरं वट्ठे, ता भणसु सिग्घं नियजननिं जहा णं एह लहुं, पयच्छसु तमम्महाणं तंदुल-मल्लगं । अहा णं तंदुल-मल्लगं विप्पणडुं तओ णं मुग्ग-मल्लगमेव पयच्छसु । ताहे पविट्ठा सा सुज्जसिरी अलिंदगे जाव णं दडूणं तमवत्थंतरगयं निच्चेट्ठं मुच्छिरं तं माहणी महया हा-हा खेणं धाहाविउं पयत्ता सा सुज्जसिरी । तं चायन्निऊणं सह परिवग्गेणं वाइओ सो माहणो महयरी य । तओ पवनजलेणं आसासिऊणं पुट्ठा सा तेहिं जहा भट्टिदारगे ! किमेयं किमेयं ति ।

तीए भणियं, जहा णं मा मा अत्ताणगं दरमएणं दीहेणं खावेह, मा मा विगय-जलाए सरीए वुब्भेह, मा मा अरज्जुएहिं पासेहिं नियंतिए मज्झामाहेणाणप्पेह जहा णं किल एस पुत्ते एसा धूया एस णं नत्तुगे एसा णं सुण्हा एस णं जामाउगे एसा णं माया एस णं जनगे एसो भत्ता एस णं इट्ठे मिट्ठे-पिए-कंते सुही-सयण-मित्त-बंधु-परिवग्गे । इहइं पच्चक्खमेवेयं वि दिट्ठे अलिय-मलिया चेवेसा बंधवासा स-कज्जत्थी चे संभयए लोओ परमत्थओ न केइ सुही । जाव णं सकज्जं ताव णं माया ताव णं जनगे, ताव णं धूया ताव णं जामाउगे ताव णं नत्तुगे ताव णं पुत्ते ताव णं सुण्हा ताव णं कंता ताव णं इट्ठे मिट्ठे पिए कंते सुही-सयण-जन-मित्त-बंधु-परिवग्गे । सकज्जसिद्धी विरहेणं तु न कस्सई काइ माया, न कस्सई केइ जनगे न कस्सई काइ धूया न कस्सई केइ जामाउगे न कस्सई केइ पुत्ते न कस्सई काइ सुण्हा न कस्सई केइ भत्ता न कस्सई केइ कंता न कस्सई केइ इट्ठे मिट्ठे पिए-कंते-सुही-सयणजन-मित्त-बंधु-परिवग्गे ।

जे णं ता पेच्छ पेच्छ मए अनेगोवाइयसउलद्धे साइरेग-नव-मासे कुच्छीए वि धारिऊणं च अनेग-मिद्ध-महर-उसिण-तिक्ख-गुलिय-सणिद्ध-आहार-पयाण-सिणाण-उव्वट्ठण-धूयकरण-संबाहण-थन्न-पयाणाईहि णं एमहंत-मनुस्सीकए जहा किल अहं पुत्त-रज्जम्मि पुण्ण पुण्ण-मनोरहा सुहं सुहेण पणइयण-

पूरियासा कालं गमिहामि, ता एरिसं-एयं वइयरं ति । एयं च नाऊणं मा धवाईसुं करेह खणद्धमवि अणुं पि पडिबंधं । जहा णं इमे मज्झ सुए संवुत्ते तहा णं गेहे गेहे जे केइ भूए, जे केई वट्ठंति जे केई भविंसु सुए तहा वि एरिसे वि बंधु-वग्गे । केवलं तु स-कज्ज-लुद्धे चेव घडिया-मुहुत्त-परिमाणमेव कंचि कालं भएज्जा वा, ता भो भो जना न किंचि कज्जं एतेणं कारिम-बंधु-संताणेणं अनंत-संसार-घोर-दुक्ख-पदायगेणं ति एगे चेवाहन्निसानुसमयं सययं सुविसुद्धासए भयह धम्ममे ।

धम्ममे य णं इट्ठे पिए कंते परमत्थे सुही-सयण-जन-मित्त-बंधु-परिवग्गे । धम्ममे य णं हिट्ठिकरे धम्ममे य णं पुट्ठिकरे धम्ममे य णं बलकरे धम्ममे य णं उच्छाहकरे धम्ममे य णं निम्मल-जस-कित्तीपसाहगे धम्ममे य णं माहप्पजनगे धम्ममे य णं सुट्ठु-सोक्ख-परंपरदायगे, से णं सेव्वे से णं आराहणिज्जे से य णं पोसणिज्जे से य णं पालणिज्जे से य णं करणिज्जे से य णं चरणिज्जे से य णं अनुट्ठणिज्जे से य णं उवइस्सणिज्जे से य णं कहणिज्जे से य णं भणणिज्जे से य णं पन्नवणिज्जे से अज्झयणं-८ / चूलिका-२

य पं कारवणिज्जे, से य पं धुवे सासए अक्खए अक्खए सयल-सोक्ख-निहीधम्म, से य पं अलज्जणिज्जे, से य पं अउल-बल-वीरिए सरिय-सत्त-परक्कम-संजुए पवरे वरे इट्ठे पिये कंते दइए सयल-दुक्ख-दारिद्र-संतावुक्खेग अयस अब्भक्खाण जम्म-जरा-मरणाइ असेस-भय-निन्नासगे, अनन्न-सरिसे सहाए तेलोक्के-क्कसामिसाले ।

ता अलं सुही-सयण-जन-मित्त-बंधुगण-धण-धन्न-सुवण्ण-हिरण्ण-रयणोह-निही-कोस-संचयाइ-सक्क-चाव-विज्जुलयाडोवचंचलाए, सुमिणिंदजाल-सरिसाए खण-दिट्ठ-नट्ठ-भंगुराए, अधुवाए असासयाए संसार-वुड्ढि-कारिगाए, निरयावयारहेउभूयाए सोग्गइ-मग्ग-विग्घ-दायगाए अनंत-दुक्ख-पदायगाए रिद्धीए, सुदुल्लहा खलु भो धम्मस्स साहणी सम्म-दंसण-नाण-चारित्ताराहणी निरुत्ताइ-सामग्गी-अनवरय-महन्निसानुसमएहिं पं खंड-खंडेहिं तु परिसडइ आउं, दढ-घोर-निट्ठुरासज्जं चंडा जरासणिसन्नवाया संचुण्णिणए सयजज्जरभंडगे इव अकिंचिकरे भवइ उ दियगानुदियगेणं इमे तनू किसल-दलग्ग-परिसंठिय-जल-बिंदुमिवाकंडे, निमिसद्धभतरेणेव लहुं ढलइ जीविए, अविट्ठ-परलोगपत्थयणाणं तु निप्फले चेव मनुयजम्मे, ता भो न खमे तनुतनुयतरे वि ईसिंपि पमाए ।

जओ पं एत्थं खलु सक्ककालमेव समसत्तु-मित्त-भावेहिं भवेयव्वं-अप्पमत्तेहिं च पंच महव्वए धारियव्वे । तं जहा-कसिणपाणाइवायविरती, अणलिय-भासित्तं दंत-सोहणमेत्तस्सवि अदिन्नस्स वज्जणं मनो वइ-काय-जोगेहिं तु अखंडिय-अविराहिय-नव-गुत्ती-परिवेढियस्स पं पर-पवित्तस्स सक्ककालमेव दुद्धर बंधचेरस्स धारणं, वत्थ-पत्तं संजमोवगरणेसुं पि निम्मत्तया असन-पाणाईणं तु चउव्विहेणेव राईभोयणच्चाओ, उग्गमुप्पायणे ऽसणाईसु पं सुविसुद्धपिंडग्गहणं संजोयणाइ-पंच-दोस-विरहितएणं परिमिणं काले भिन्ने पंच-समिति-विसोहणं ति-गुत्ती-गुत्तया इरिया-समिईमाइओ भावनाओ अनसनाइतवोवहाणाणुट्ठाणं मासाइभिक्खु-पडिमाओ, विचित्ते दव्वाइ अभिग्गह,

अहो पं भूमी सयणे केसलोए निप्पडिकम्म-सरीरया सक्क-कालमेव गुरुनिओगकरणं, खुहा-पिवासाइ परिसहहियासणं दिव्वाइउवसग्गविजओ लद्धावलद्धवित्तिया, किं बहुना ? अच्चंत-दुव्वहे भो वहियव्वे अवीसामंतेहिं चेव सिरिमहापुरिसत्तवूढे अट्टारस-सीलंग-सहस्सभारे, तरियव्वे य भो बाहाहिं महासमुद्धे, अविसाईहिं च पं भो भक्खियव्वे, निरासाए वालुयाकवले परिसक्केयव्वं च भो निसियसुत्तिक्खदारुण करवालधाराए पायव्वा य पं भो सुहुय हुयवह जालावली भरीयव्वे पं भो सुहुम-पवण-कोत्थलगे, गमियव्वं च पं भो गंगा-पवाह-पडिसोएणं, तोलेयव्वं भो साहस-तुलाए मंदर-गिरं, जेयव्वे य पं भो एगागिएहिं चेव धीरत्ताए सुदुज्जए चाउरंग-बले, विंधेयव्वे पं भो परोप्पर-विवरीय-भमंत-अट्ठ-चक्कोवरिं वामच्छम्मि उ धीउल्लिया, गहेयव्वे पं भो सयल-तिहुयण-विजया निम्मला जस-कित्ति-जय पडागा ।

ता भो भो! जना एयाओ धम्माणुट्ठाणाओ सुदुक्करं नत्थि किंचि मन्नं ति ।

[१४८५] बुज्झंति नाम भारा ते च्चिय उज्झंति वीसमंतेहिं ।

सील-भरो अइगरुओ जावज्जीवं अविस्सामो ॥

[१४८६] ता उज्झिऊण पेम्मं घरसारं पुत्त-दविणमाईयं ।

नीसंगा अविसाई पयरह सक्कत्तमं धम्मं ॥

[१४८७] नो धम्मस्स भडक्का उक्कंचण-वंचणा च ववहारो ।

निच्छम्मो भो धम्मो मायादी-सल्ल-रहिओ हु ॥

- [१४८८] भूएसु जंगमत्तं तेसु वि पंचेदियत्तमुक्कोसं ।
तेसु वि य मानुसत्तं मनुयत्ते आरिओ देसो ॥
- [१४८९] देसे कुलं पहाणं कुले पहाणे य जाई-मुक्कोसा ।
तीए रूव-समिद्धी रूवे य बलं पहाणयरं ॥
- [१४९०] होइ बले चिय जीयं जीए य पहाणयं तु विण्णाणं ।
विण्णाणे सम्मत्तं सम्मत्ते सील-संपती ॥
- [१४९१] सीले खाइय-भावो खाइय-भावे य केवलं नाणं ।
केवलिए पडिपुन्ने पत्ते अयरामरो मोक्खो ॥
- [१४९२] न य संसारम्मि सुहं जाइ-जरा-मरण-दुक्ख-गहियस्स ।
जीवस्स अत्थि जम्हा तम्हा मोक्खो उवाओ उ ॥
- [१४९३] आहिंडिऊण सुइरं अनंतहुत्तो हु जोणि-लक्खेसु ।
तस्साहण-सामग्गी पत्ता भो भो बहू इण्हं ॥
- [१४९४] ता एत्थ जं न पत्तं तदत्थ भो उज्जमं कुणह तुरियं ।
विबुह-जन-निंदियमिणं उज्झह संसार-अनुबंधं ॥
- [१४९५] लहिउं भो धम्मसुइं अनेग भवकोडि लक्खेसु वि दुल्लहं ।
जइणाणुइह सम्मं ता पुनरवि दुल्लहं होही ॥
- [१४९६] लद्धेल्लियं च बोहिं जो नाणुइे अनागयं पत्थे ।
सो भो अन्नं बोहिं लहिही कयरेणं मोल्लेण ? ॥

[१४९७] जाव णं पुव्व-जाइ-सरण-पच्चएणं सा माहणी इयं वागरेइ ताव णं गोयमा !
पडिबुद्धमसेसं पि बंधुयणं बहु-नागर-जनो य । एयावसरम्मि उ गोयमा ! भणियं सुविदिय-सोग्गइ-पहेणं
तेणं गोविंदमाहणेणं जहा णं धिद्धिद्धि वंचिए एयावंतं कालं जतो वयं मूढे ! अहो णु कइमन्नाणं
दुत्विन्नेयमभागाधिज्जेहिं खुद्ध-सत्तेहिं अदिट्ठ-घोरुग्ग-परलोग-पच्चवाएहिं-अतभिनिविट्ठ-दिट्ठीहिं-पक्खवाय-
मोह-संधुक्किय-मानसेहिं राग-दोसो-वहयबुद्धिहिं परं तत्तधम्मं ! अहो सज्जीवेणेव परिमुसिए
एवइयं काल-समयं । अहो किमेस णं परमप्पा भारिया-छलेणासि उ मज्झ गेहे, उदाहु णं जो सो
निच्छिओ मीमंसएहिं सव्वन्नू सोच्चि, एस सूरिए इव संसय-तिमिरावहारित्ता णं लोगावभासे मोक्ख-मग्ग-
संदरिसणत्थं सयमेव पायडीहूए ?

अहो महाइसयत्थ-पसाहगाओ मज्झं दइयाए वायाओ भो भो ! जण्णयत्त-विण्हयत्त-
जन्नदेव-विस्सामित्त-सुमिच्चादओ मज्झं अंगया अब्भुट्ठाणारिहा ससुरासुरस्सा वि णं जगस्स एसा तुम्ह
जननि त्ति भो भो ! पुरंदर-पभितीओ खंडियाओ वियारह णं सोवज्झाय-भारियाओ जगत्तयानंदाओ
कसिण-किट्ठिस-निद्धहण-सीलाओ वायाओ । पसण्णोज्ज तुम्ह गुरु, आराहणेक्क-सीलाणं परमप्पं बलं
जजण-जायण-ज्झयणाइणा छक्कम्ममाभिसंगेणं तुरियं विणिज्जिणेह पंचेदियाणि परिच्चयह णं कोहाइए पावे
वियाणेह णं अमेज्झाजंबाल-पंक-पडिपुन्ना असुती कलेवरे, पविसामो वणंतं ।

इच्चेवं अनेगेहिं वेरग्गजननेहिं सुहासिएहिं वागरमाणं तं चोदस-विज्जा-ठाण-पारगं भो
गोयमा! गोविंद-माहणं सोऊण अच्चंत-जम्म-जरा-मरण-भीरुणो बहवे सप्पुरिसे सव्वुत्तमं धम्मं विमरिसिउं

समारद्धे । तत्थ केइ वयंति जहा एस धम्मो पवरो । अन्ने भणंति जहा एस धम्मो पवरो जाव णं सव्वेहिं पमाणीकया गोयमा ! सा जातीसरा माहणि त्ति । ताहे तीए य संपवक्खायमहिंसोवक्खियमसंदिद्धं खंताइ-दस-विहं समण-धम्मं दिद्धंत-देऊहिं च परमपच्चयं विनीयं तेसिं तु । तओ य ते तं माहणि सव्वण्णमिति काऊणं सुरइय-कर-कमलंजलिणो सम्मं पणमिऊणं गोयमा ! तीए माहणीए सद्धिं अदीनमानसे बहवे नर-नारि-गणा चेच्चाणं सुहिय-जन-मित्त-बंधु-परिवग्ग-गिह-विहव-सोक्खमप्प-कालियं निकखंते सासय-सोक्ख-सुहाहिलासिणो सुनिच्छियमानसे समणत्तेण सयल-गुणोह-धारिणो चोदस-पुव्वधरस्स चरिम-सरीरस्स णं गुणंधर-थविरस्स णं सयासे त्ति । एवं च ते गोयमा ! अच्चंत-घोर-वीर-तव-संजमानुट्ठाण-सज्झाय-झाणाईसुं णं असेस-कम्मक्खयं काऊणं तीए माहणीए सम्मं विहुय-रय-मले सिद्धे गोविंदमाहणादओ नर-नारिगणे सव्वे वी महायसे, त्ति बेमि ।

[१४९८] से भयवं ! किं पुण काऊणं एरिसा सुलह-बोही जाया सा सुगहियनामधेज्जा माहणी जीए एयावइयाणं भव्व-सत्ताणं अनंत-संसार-घोर-दुक्ख-संतत्ताणं सद्धम्म-देसणाईहिं तु सासय-सुह-पयाणपुव्वगमब्भुद्धरणं कयं? ति । गोयमा ! जं पुव्विं सव्व-भाव-भावंतरंतरेहिं णं नीसल्ले आजम्मालोयणं दाऊणं सुद्धभावाए जहोवइद्धं पायच्छित्तं कयं पायच्छित्तसमत्तीए य समाहिए य कालं काऊणं सोहम्मं कप्पे सुरिंदग्गमहिंसी जाया तमनु-भावेणं ।

से भयवं ! किं से णं माहणी जीवे तब्भवंतरंमि समणी निग्गंथी अहेसि ? जे णं नीसल्लमालोएत्ता णं जहोवइद्धं पायच्छित्तं कयं? ति । गोयमा ! जे णं से माहणी जीवे से णं तज्जम्मं बहुलद्धिसिद्धी जुए महिइढीयत्ते सयलगुणाहारभूए उत्तम-सीलाहिद्विय-तनू महातवस्सी जुगप्पहाणे समणे अनगारे गच्छाहिवई अहेसि नो णं समणी ।

से भयवं ता कयरेणं कम्म-विवागेणं तेणं गच्छाहिवइणा होऊणं पुणो इत्थित्तं समज्जियं ति ? गोयमा ! माया पच्चएणं । से भयवं ! कयरेणं से माया पच्चए जे णं पयणू-कय-संसारे वि सयल-पावाययणा विबुह-जन-निंदिए सुरहि-बहु-दव्व-घय-खंड-चुण्ण-सुसंकरिय-समभाव-पमाण-पाग-निप्फन्न-मोयग-मल्लगे-इव-सव्वस्स भक्खे सयल-दुक्ख-केसाणिमालए सयल-सुह-साहणस्स परमपवित्तुमस्स णं अहिंसा-लक्खण-समण-धम्मस्स विग्घे, सग्गलानिरयदार-भूए सयल-अयस-अकिल्ली-कलंक-कलि-कलह-वेराइ-पाव-निहाणे, निम्मल-कुलस्स णं दुद्धरिस-अकज्ज-कज्जल-कण्हमसी-खंपणे, ते णं गच्छाहिवइणा इत्थीभावे निव्वत्तिए त्ति ।

गोयमा ! नो तेणं गच्छाहिवइत्ते अनुमवि माया कया, से णं तया पुहईवई चक्कहरे भवित्ताणं परलोग-भीरूए निव्विण्ण-काम-भोगे तणमिव परिचिच्चाणं तं तारिसं चोदस-रयण-नवनिहीतो, चोसट्ठी सहस्से वरजुवईणं बत्तीसं साहस्सीओ अणावइ वि वर-नरिंद-छन्नउई गाम-कोडिओ जाव णं छ खंड-भरहवासस्स णं देविंदोवमं महाराय-लच्छीत्तीयं बहुपुन्न-चोइए नीसंगे पव्वइए य थेवेणेव कालेणं सयल-गुणोहधारी महातवस्सी सुयहरे जाए । जोग्गे नाऊणं सगुरुहिं गच्छाहिवई समणुण्णाए, तहिं च गोयमा ! ते णं सुदिद्ध-सुग्गई-पहेणं जहोवइद्धं समण-धम्मं समनुट्ठेमाणेणं उग्गाभिग्गह-विहारत्ताए घोर-परिसहोवसग्गाहियासणेणं राग-दोस-कसाय-विवज्जणेणं आगमानुसारेणं तु विहीए गणपरिवालणेणं, आजम्मं समणी-कप्प-परिभोग-वज्जणेणं, छक्काय समारंभ विवज्जणेणं, इसिं पि दिव्वोरालिय-मेहुण-परिणाम-विप्पमुक्केणं इह-परलोगा-संसाइणियाण-मायाइ-सल्लविप्पमुक्केणं नीसल्लालोयण-निंदण-गरहणेणं

जहोवइडुपायछित्तकरणेणं सव्वत्थापडिबद्धत्तेणं, सव्वपमाया लंबणविप्पमुक्केण य निदड्ढ-अवसेसीकए अनेगभवसंचिए कम्मरासी, अन्नभवे ते णं माया कया । तप्पच्चएणं गोयमा! एस विवागो ।

से भयवं कयरा उ णं अन्नभवे ते णं महानुभागे णं माया कया जीए णं एरिसो दारुणो विवागो? गोयमा! तस्स णं महानुभागस्स गच्छाहिवइणो जीव अनूनाहिए लक्खे इमे भवग्गहणा सामण्ण-नरिंदस्स णं इत्थित्ताए धूया अहेसि । अन्नया परिणीयानंतरं मओ भत्ता । तओ नरवइणा भणिया जहा भद्दे! एते तुज्झं पंच सए सुगामाणं देमु, जहिच्छाए अंधाणं विगलाणं अपंगमाणं अनाहाणं बहु-वाहि-वेयणा परिगय-सरीराणं सव्व-लोय-परिभूयाणं दारिद्ध-दुक्ख-दोहग्ग-कलंकियाणं जम्म-दारिद्धाणं समणाणं माहणाणं विहलियाणं च संबंधि-बंधवाणं जं जस्स इहं भत्तं वा पानं वा अच्छायणं वा जाव णं धन-धन्न-सुवण्ण-हिरण्णं वा कुणसु सयल-सोक्खदायगं संपुण्णं जीवदयं ति । जेणं भवंतरेसुं पि न होसि सयलजन-सुहप्पियागारिया सव्व-परिभूया गंध-मल्ल-तंबोल-स-मालहणाइ-जहिच्छिय-भोगोपभोगवज्जिया हयासा दुज्जम-जाया निदड्ढणामिया रंडा ।

ताहे गोयमा ! सा तहत्ति पडिवज्जिऊण पगलंतलोयणं सुजलणिद्धोयकवोल-देसा उसरसुंभसमण्णुघग्घरसरा भणिउमाढत्ता-जहा णं न याणिमो हं पभूयमालवित्ताणं निग्गच्छावेह लहुं कट्ठे रएह महइ चियं, निद्वेहेमि अत्ताणगं न किंचि मए जीवमाणीए पावाए, मा हं कहिंचिं कम्म-परिणइवसेणं महापावित्थी चवल-सहावत्ताए एयस्स तुज्झमसरिसनामस्स निम्मल-जस-कित्ती-भरिय-भुवनोयरस्स णं कुलस्स खंपणं काहं, जेण मलिणी भवेज्जा सव्वमवि कुलं अम्हाणं ति । तओ गोयमा ! चिंतियं तेणं नरवइणा जहा णं अहो धन्नो हं जस्स अपुत्तस्सा वि य एरिसा धूया, अहो विवेगं बालियाए, अहो बुद्धी अहो पन्ना अहो वेरग्गं अहो कुल-कलंक भीरुयत्तणं, अहो खणे खणे वंदनीया एसा । जीए एए महंते गुणा ता जाव णं मज्झ गेहे परिवसे एसा । ताव णं महामहंते मम सेए अहो दिट्ठाए संभरियाए संलावियाए चेव सुज्झीयए इमाए ता अपुत्तस्स णं मज्झं एसा चेव पुत्ततुल्ल त्ति चिंतिऊणं भणिया गोयमा! सा तेणं नरवइणा जहा णं न एसो कुलक्कमो अम्हाणं वच्छे ! जं कट्ठारोहणं कीरइ त्ति । ता तुमं सील-चारित्तं परिवालेमाणी दानं देसु जहिच्छाए कुणसु य पोसहोववासाइं, विसेसेणं तु जीवदयं, एयं रज्जं तुज्झं ति । ता णं गोयमा ! जनगेणेवं भणिया ठिया सा । समप्पिया य कंचुईणं अंतेउररक्ख-पालाणं ।

एवं च वच्चंतेणं कालसमएणं तओ णं कालगए से नरिंदे । अन्नया संजुज्जिऊणं महामईहिं णं मंतीहिं कओ तीए बालाए रायाभिसेओ । एवं च गोयमा ! दियहे दियहे देइ अत्थाणं । अह अन्नया तत्थ णं बहु वंद-चट्ट-भट्ट-तडिग-कप्पडिग-चउर-वियक्खण-मंति-महतगाइ-पुरिस-सय-संकुल-अत्थाणं-मंडव-मज्झंमि सीहासनोवविट्ठाए कम्मपरिणइवसेणं सरागाहिलासाए चक्खुए निज्झाए तीए सव्वुत्तम-रूव-जोव्वण-लावण्ण-सिरी-संपओववेए भाविय-जीवाइ-पयत्थे एगे कुमारवरे । मुणियं च तेणं गोयमा ! कुमारेणं जहा णं- हा हा ! ममं पेच्छियं-गया एसा वराई, घोरंधयारमनंत-दुक्ख-दायगं पायालं, ता अहन्नो हं जस्स णं एरिसे पोग्गल-समुदाए तनू राग-जंते, किं मए जीविएणं ? दे सिग्घं करेमि अहं इमस्स णं पावसरीस्स संथारं अब्भुट्ठेमि णं सुदुक्करं पच्छित्तं, जाव णं काऊणं सयल-संग-परिच्चायं समणुट्ठेमि णं सयलपावनिद्वलणे अनगार-धम्मं सिद्विली करेमि णं अनेग-भवंतर-विइण्णे सुदुत्विमोक्खे, पाव-बंधन-संधाए, धि द्वी द्वी अव्ववत्थियस्स णं जीवलोगस्स, जस्स णं एरिसे अणप्पवसे इंदिय-गामे ।

अहो! अदिद्वपरलोग-पच्चवाययालोगस्स अहो एक्कजम्माभिनिविद्वचित्तया, अहो! अविण्णाय कज्जाकज्जया अहो! निम्मेरया अहो! निरप्परिहासया अहो! परिच्छत-लज्जया हा हा हा ! न जुत्तमम्हाणं खणमवि विलंबितं एत्थं एरिसे सुदिन्निवाराऽसज्ज-पावगमे देसे । हा हा हा ! घट्टारिए अहन्ने णं कम्मट्टरासी जं सुईरियं पईए रायकुल-बालियाए इमेणं कुट्ट-पाव-सरीर-रूव-परिदंसणेणं नयनेसुं रागाहिलासे । परिचेच्चाणं इमे विसए तओ गेण्हामि पवज्जं ति चिंतिऊणं भणियं गोयमा ! तेणं कुमारवरेणं जहा णं खंतमरिसियं नीसल्लं तिविहं तिविहेणं तिगरण-सुद्धीए सव्वस्स अत्थाण-मंडव-राय-कुल-पुर-जनस्से ति भणिऊणं विनिग्गओ रायउलाओ पत्तो य निययावासं ।

तत्थ णं गहियं पच्छयणं दो खंडीकाऊणं च सियं फेणावलीतरंगमउयं सुकुमालवत्थं परिहिएणं अद्धफलगे गहिएणं दाहिणहत्थेणं सुयण-जन-हियए इव सरलवेत्तलय-खंडे । तओ काऊणं तिहुयमेक्कगुरूणं अरहंताणं भगवंताणं जगप्पवराणं धम्मं तित्थंकराणं जहुत्तविहिणाभिसंथवणं भाववंदनं से णं चलचवलगई पत्ते णं गोयमा ! दूरं देसंतरं से कुमारे जाव णं हिरण्णुक्करूडी नाम रायहाणी ।

तीए रायहाणीए धम्मायरियाणं गुणविसिद्धाणं पउत्तिं अन्नेसमाणे चिंतिउं पयत्ते से कुमारे जहा णं जाव णं न केइ गुणविसिद्धे धम्मायरिए मए समुवलद्धे ता विहइं चव महिं वि चिट्ठियव्वं, ता गयाणि कइवयाणि दियहाणि, भयामि णं एस बहु-देस-विक्खाय-कित्ती-नरवरिंदे । एवं च मंतिऊण जाव णं दिट्ठो राया, कयं च कायव्वं सम्माणियाओ य नरनाहेणं पडिच्छिया सेवा ।

अन्नया लद्धावसरणे पुट्ठो सो कुमारो गोयमा ! तेणं नरवइणा जहा णं भो भो महासत्ता कस्स नामालंकिए एस तुज्झं हत्थम्मि विरायए मुद्दारयणे, को वा ते सेविओ एवइयं कालं ? के वा अवमाने पकए तुह सामिणि? त्ति कुमारेणं भणियं जहा णं जस्स नामालंकिएणं इमे मुद्दारयणे से णं मए सेविए एवइयं कालं, जे णं मए सेविए एवइयं कालं तस्स नामालंकिएणं इमे मुद्दारयणे ! तओ नरवइणा भणियं-जहा णं किं तस्स सद्वकरणं? ति ! कुमारेणं भणियं नाहमजिमिएणं तस्स चक्खुकुसीलाहम्मस्स णं सद्वकरणं समुच्चारेमि । तओ रण्णा भणियं जहा णं-भो भो महासत्ता ! केरिसो उण सो चक्खु-कुसीलो ? भण्णे, किं वा णं अजिमिएहिं तस्स सद्वकरणं नो समुच्चारियए ? कुमारेणं भणियं जहा णं चक्खुकुसीलो तिसट्ठिए ठाणंतरेहिंतो जइ कहाइ इह तं दिद्व-पच्चयं होही, तो पुण वीसत्थो साहीहामि ।

जं पुण तस्स अजिमिएहिं सद्व-करणं एतेणं न समुच्चारिए जहा णं जइ कहाइ अजिमिएहिं चव तस्स चक्खुकुसीलाहम्मस्स नामग्गहणं कीरए, ता णं नत्थि तम्मि दियहे संपत्ति पानभोयणस्स त्ति । ताहे गोयमा! परमविम्हिइएणं रण्णा कोउहल्लेणं लहुं हक्काराविया रसवई, उवविट्ठो य भोयणमंडवे राया सह कुमारेणं असेस-परियणेणं च आणावियं अट्टारस-खंड-खज्जय वियप्पं नानाविहं आहारं एयावसरम्मि भणियं नरवइणा जहा णं भो भो महासत्त ! भणसु नीसंको तुमं संपयं तस्स णं चक्खुकुसीलस्स णं सद्वकरणं । कुमारेण भणियं जहा णं नरनाह ! भणिहामि णं भुत्तुत्तुरकालेणं, नरवइणा भणियं-जहा णं ।

भो महासत्त ! दाहिण-कर-धरिएणं कवलेणं संपयं चव भणसु, जेणं खु जइ एयाए कोडीए संठियाणं केइ विग्घे हवेज्जा ताणमम्हे वि सुदिद्वपच्चए संतेउर-पुरस्सरे तुज्झाणत्तीए अत्तहियं समनुचिद्धामो । तओ णं गोयमा ! भणियं तेणं कुमारेणं जहा णं एयं एयं अमुगं सद्वकरणं तस्स चक्खुकुसीलाहम्मस्स णं दुरंत-पंतलक्खण-अदट्टव्व-दुज्जाय-जम्मस्स त्ति । ता गोयमा ! जाव णं चव इयं समुल्लवे से णं कुमारवरे ताव णं अनोहिय-पवित्तिएण एव समुद्धुसियं तक्खणा परचक्केणं तं रायहाणीं

समुद्धाए णं सन्नद्ध-बद्धुद्धए-निसिए-करवाल-कुंत-विप्फुरंत-चक्काइ-पहरणाडोववग्गपाणी हण हण हण राव-भीसणा बहु-समर-संघटा दिण्ण-पिट्ठी जीयंतकरे अउल-बल-परक्कमे णं महाबले पर-बले जोहे ।
 एयावसरम्मि उ कुमारस्स चलणेसु निवडिऊणं दिट्ठ-पच्चए मरण-भयाउलत्ताए अगणियकुलक्कमपुरिसयारं विप्पनासे दिसिमेक्कमासाइत्ताणं स-परिकरे पण्ढे से णं नरवरिंदे ।

एत्थंतरम्मि चिंतियं गोयमा ! तेषं कुमारेणं जहा णं न मेरिसं कुलक्कमे ऽम्हाणं जं पट्ठिं दाविज्जइ नो णं तु पहरियव्वं मए कस्सावि णं अहिंसा-लक्खण-धम्मं वियाणमाणेणं कय-पाणाइवाय-पच्चक्खाणेणं च, ता किं करेमि णं? सागारे भत्त-पाणाईणं पच्चक्खाणे अहवा णं करेमि जओ दिट्ठेणं ताव मए दिट्ठी-मेत्त कुसीलस्स नामग्गहणेणावि एमहंते संविहाणगे ता संपयं कुसीलस्सावि णं एत्थं परिकखं करेमि त्ति । चिंतिऊणं भणिउमाढत्ते णं गोयमा ! से कुमारे जहा णं जइ अहयं वायामेत्तेणावि कुसीलो ता णं मा नीहरेज्जाह । अक्खय-तणुं खेमेणं एयाए-रायहाणीए । अहा णं मनो-वइ-कायतिएणं सव्वपयारेहिं णं सील-कलिओ ता मा वहेज्जा ममोवरिं इमे सुनिसिए दारुणे जीयंतकरे पहरणे निहए । नमो नमो अरहंताणं ।

ति भणिऊणं जाव णं पवर-तोरण दुवारेणं चल-चवल-गई जाउमारद्धो जाव णं परिकक्कमे थेवं भूमिभागं ताव णं हेल्लावियं कप्पडिग-वेसेणं गच्छइ एस नरवइ त्ति काऊणं सरहसं हण हण मर मर त्ति भणमाणुक्खित्तकरवालादि-पहरणेहिं परबल-जोहेहिं । जाव णं समुद्धाए अच्चंत-भीसणे जीयंतकरे परबल-जोहे ताव णं अविसण्ण-अनुदुयार-भीय-अत्थ अदीनमानसेणं गोयमा ! भणियं कुमारणं जहा णं भो भो दुट्ठपुरिसा! ममोवरिं चेह एरिसेणं घोर-मातस-भावेणं अन्निए पि सुहज्झवसाय-संचिय-पुण्ण-पब्भारे एस अहं से तुम्ह पडिसत्तू अमुगो नरवती । मा पुणोवि भणेज्जासु जहा णं निलुक्को अम्हाणं भएणं, ता पहरेज्जासु जइ अत्थि वीरियं ति । जावेत्तियं भणे ताव णं तक्खणं चेव थंभिए ते सव्वे गोयमा ! पर-बल-जोहे सीलाहिट्ठियत्ताए तियसाणं पि अलंघणिज्जाए तस्स भारतीए जाए य निब्बल-देहे । तओ य णं धस त्ति मुच्छिऊणं निच्चेट्ठे निवडिए धरणिवट्ठे से कुमारे ।

एयावसरम्मि उ गोयमा तेषं नरिंदाहमेणं गूढहियय-मायाविणा वुत्ते धीरे सव्वत्थावी समत्थे सव्वलोय समंत-धीरे भीरु वियक्खणे मुखे सूरु कायरे चउरे चाणक्के बहुपवंचभरिए संधि-विग्गहिए निउत्ते छइल्ले पुरिसे जहा णं भो भो तुरियं रायहाणीए वज्जिंद-नील-ससि-सूरकंतादीए पवर-मणि-रयण-रासीए

हेमज्जुण-तवनीय-जंबूनय-सुवण्ण-भारलक्खाणं, किं बहुना ? विसुद्धबहुजच्च-मोत्तियं-विट्ठुमखारि-लक्ख-पडिपुन्नस्स णं कोसस्स चाउरंगस्स बलस्स । विसेसओ णं तस्स सुगविय नाम-गहणस्स पुरिस-सीहस्स सीलसुद्धस्स कुमारवरस्से ति पउत्तिं आणेह जेणाहं निव्वुओ भवेज्जा । ताहे नरवइणो पणामं काऊणं गोयमा! गए ते निउत्तपुतरिसे जाव णं तुरियं चल-चवल-जइण-कम-पवन-वेगेहिं णं आरुलहिऊणं जच्च-तुरंगमेहिं निउंज-गिरिकंदरुद्धेस-पइरिक्काओ खणेण पत्ते रायहाणिं, दिट्ठो य तेहिं वामदाहिणभुया-पल्लवेहिं वयणं सिरोरुहे विलुंपमाणो कुमारो तस्स य पुरओ सुवण्णाभरण-नेवच्छा दस-दिसासु उज्जोयमाणी जय जय सद्धमंगल-मुहला रयहरण-वावडोभयकर-कमल-विरइयंजली देवया । तं च दडूणं विम्मिहय भूयमणे लिप्प-कम्म निम्मविए ।

एयावसरम्मि उ गोयमा ! सहरिस-रोमंच-कंचुपुलइयसरीराए “नमो अरहंताणं ” ति
समुच्चरिऊणं भणिरे गयणट्टियाए पवयण-देवयाए से कुमारे । तं जहा :-
अज्झयणं-८ / चूलिका-२

- [१४९९] जो दलइ मुट्टि-पहरेहि मंदरं धरइ करयले वसुहं ।
सव्वोदहीण वि जलं आयरिसइ एक्क घोट्टेणं ॥
- [१५००] टाले सग्गाओ हरिं कुणइ सिवं तिहुयणस्स वि खणेणं ।
अक्खंडिय सीलाणं कुद्धो वि न सो पहुप्पेज्जा ॥
- [१५०१] अहवा सो च्चिय जाओ गणिज्जए तिहुयणस्स वि स वंदो ।
पुरिसो वि महिलिया वा कुलुग्गओ जो न खंडए सीलं ॥
- [१५०२] परम-पवित्तं सप्पुरिस-सेवियं सयल-पाव-निम्महणं ।
सव्वुत्तम-सुक्ख-निहिं सत्तरसविहं जयइ सीलं ॥

[१५०३] ति भाणिऊणं गोयमा ! झत्ति मुक्का कुमारस्सोवरिं कुसुमवुट्ठिं पवयण-देवयाए ।
पुणो वि भणिउमाढत्ता देवया, तं :-

- [१५०४] देवस्स दैती दोसे पवंचिया अत्तणो स-कम्महिं ।
न गुणेषु ठवित्तस्सपुं मुहाइं मुद्धाए जोएति ॥
- [१५०५] मज्झत्थभाववत्ती सम-दरिसी सव्व-लोय-वीसासो ।
निक्खवय-परियत्तं दिव्वो न करेइ तं ढोए ॥
- [१५०६] ता बुज्झिऊण सव्वुत्तमं जणा सील-गुण-महिड्ढीयं ।
तामसभावं चिच्चा कुमार-पय-पंकयं नमह ॥

[१५०७] त्ति भाणिऊणं अदंसणं गया देवया इति ते छइल्ल-पुरिसे लहुं च गंतूण साहियं
तेहिं नरवइणो ।

तओ आगओ बहु-विकप्प-कल्लोल-मालाहि णं आउरिज्जमाण-हियय-सागरो हरिस-विसाय-
वसेहिं भीऊड्डपायातत्थ चकिर-हियओ सणियं गुज्झ-सुरंग-खडक्किया-दारेणं कंपंत-सव्वगत्तो महया
कोऊहल्लेणं कुमार-दंसणुककंठिओ य तमुद्देसं । दिट्ठो य तेणं सो सुगहियनामधेज्जो महायसो महासत्तो
महानुभावो कुमार-महरिसी अपडिवाइ महोही पच्चएणं साहेमाणो संखाइयाइ-भवाणुहूयं दुक्ख-सुहं
सम्मत्ताइलंभं संसार-सहावं कम्मबंध-ट्टिती-विमोक्खमहिंसा-लक्खण-मनगारे वयरबंधं नरादीणं सुहनिसण्णो
सोहम्माहिवई धरिओवरिपंडुरायवत्तो ताहे य तं अदिट्ठपुव्वं अच्छेरगं दट्ठूणं पडिबुद्धो
सपरिग्गहो पव्वइओ य गोयमा ! सो राया परचक्काहिवई वि एत्थतरम्मि पहय-सुस्सर-गहिर-गंभीर-दुंदुभि-
निग्घोस-पुव्वेणं समुग्घुट्ठं चउव्विहं देवनिकाएणं [तं जहा] :- ।

- [१५०८] कम्मडं-गंठि-मुसुमूरण जय जय परमेट्ठी महायस ।
जय जय जयाहिचारित्त-दंसण-नाण-समणिय ! ॥
- [१५०९] स च्चिय जननी जगे एक्का वंदनीया खणे खणे ।
जीसे मंदरगिरि गरुओ उयरे वुत्थो तुमं महा मुनि ॥

[१५१०] त्ति भाणिऊणं विमुंचमाणे सुरभिकुसुम-वुडिं भत्ति-भरनिब्भरे विरइय-कर-कमलंजलीउ त्ति निवडिए ससुरासुरे देव-संधे गोयमा ! कुमारस्स णं चलणारविंदे पणच्चियाओ य देव-सुंदरीओ पुणो पुणोऽभिसंधुणिय नमंसिय चिरं पज्जुवासिऊणं स-द्वानेसुं गए देवनिवहे ।

[१५११] से भयवं ! कहं पुण एरिसे सुलभबोही जाए महायसे सुगहिय-नामधेज्जे से णं अज्झयणं-८ / चूलिका-२

कुमारं महरिसी? गोयमा ! ते णं समणभावद्विएणं अन्न-जम्ममि वाया दंडे पउत्ते अहेसि, तन्निमित्तेणं जावज्जीवं मूणव्वए गुरुवएसे णं संधारिए अन्नं च तिन्नि महापाव-द्वाने संजयाणं तं जहा-आऊ-तेऊ-मेहुणे एते य सव्वोवाएहिं परिवज्जए ते णं तु एरिसे सुलभबोही जाए ।

अहन्नया णं गोयमा! बहु-सीसगण-परियरिए से णं कुमारमहरिसी पत्थिए सम्मेयसेलसिहरे देहच्चाय निमित्तेणं कालक्कमेणं तीए चेव वत्तणीए जत्थ णं से राय-कुल-बालियानरिंदे चक्खु-कुसीले । जाणावियं च रायउले आगओ य वंदणवत्तियाए सो इत्थी-नरिंदो उज्जाणवरंमि । कुमार-महरिसिणो पणामपुवं च उवविट्ठो स पुरस्सरो जहोइए भूमिभागे मुणिणा व पबंधेणं कया देसणा । तं च सोऊणं धम्म-कहावसाने उवविट्ठो स परिवग्गो नीसंगत्ताए, पव्वइओ गोयमा ! सो इत्थीनरिंदो । एवं च अच्चंत-घोर-वीरुग्ग-कट्टदुक्कर-तव-संजमानुद्वान-किरियाभिरयाणं सव्वेसिं पि अपडिकम्म-सरीराणं अप्पडिबद्धविहारत्ताए अच्चंतणिप्पिहाणं संसारिएसुं चक्कहर-सुरिंदाइ-इड्ढि-समुदय-सरीर-सोकखेसुं गोयमा ! वच्छइ कोई कालो, जाव णं पत्ते सम्मेय-सेल-सिहरब्भासं,

तओ भणिया गोयमा ! तेण महरिसिणा रायकुल-बालियानरिंदसमणी- जहा णं दुक्कर-कारिगे! सिग्घं अनुदुय-मानसा सव्व-भाव-भावंतरेहिं णं सुविसुद्धं पयच्छहिं णं नीसल्लमालोयणं । आढवेयव्वा य संपयं सव्वेहिं अम्हेहिं देहच्चाय-करणेक्क-बद्ध-लक्खेहिं नीसल्लालोइय-निंदिय-गरहिय-जहुत्त-सुद्धासय-जहोवइड्ढ-कय-पच्छित्तुद्धिय-सल्लेहिं च णं कुसलदिट्ठा संलेहण त्ति ।

तओ णं जहुत्तविहीए सव्वमालोइयं तीए रायकुल-बालिया नरिंदसमणीए, जाव संभारिया तेणं महामुणिणा जहा णं जं अहं तया रायत्थाणं उवविट्ठाए तए गारत्थ-भावम्मि सरागाहिलासाए संविक्किओ अहेसि । तं आलोएह दुक्कर-कारिए जेणं तुम्हं सव्वुत्तमविसोही हवइ, तओ णं तीए मनसा परितप्पिऊणं अइचव-लासयनियडी-निकेय-पावित्थीसभावत्ताए मा णं चक्खुकुसील त्ति अमुगस्स धूया समणीनमंतो परिवसमाणी भण्णाहिमि त्ति चिंतिऊणं गोयमा ! भणियं तीए अभागाधिज्जाए जहा णं भगवं ! न मे तुमं एरिसेणं अट्ठेणं सरागाए दट्ठीए निज्जाइओ ।

जओ णं अहयं ते अहलसेज्जा, किंतु जारिसेणं तुब्भे सव्वुत्तमं - रूव - तारुण्ण - जोव्वण - लावण्ण-कंति-सोहग कला-कलाव विण्णाण-नाणाइसयाइ-गुणोह-विच्छ-इड-मंडिएहोत्था विसएसुं निरहिलासे सुत्थिरे । ता किमेयं तह त्ति किं वा नो णं तह त्ति त्ति, तुज्झं मान-परितोलणत्थं सरागाहिलासं चक्खुं पउत्ता, नो णं चाभिलासिउ कामाए । अहवा इणमेत्थ चेवालोइयं भवउ, किमित्थ दोसं ति, मज्झमवि गुणावहयं भवेज्जा । किं तित्थं गंतूणं माया-कवडेणं सुवण्णसयं केइ पयच्छे ?

ताहे य अच्चंत-गुरुय-संवेगमावण्णेणं धी द्वी द्वी संसार-चलित्थी-सभावस्स णं ति चिंतिऊणं भणियं मुनिवरेणं जहा णं धि द्वि द्विरत्थु पावित्थी-चलस्स भावस्स । जेणं तु पेच्छ पेच्छ एद्धमेत्तानुकालसमएणं केरिसा नियडी पउत्त त्ति ? अहो खलित्थीणं चल-चवल-चडुल-चंचलासंठि पगडुमानसाणं खणमेगवमवि दुज्जम्म-जायाणं अहो सयलाकज्ज-भंडे हलियाणं, अहो सयलायस-अकित्ती-

वुड्ढिकारणं, अहो पावकम्माभिद्ध-ज्झवसायाणं अहो अभीयाणं पर-लोग-गमनंधयार-घोर-दारुण-दुक्ख-कंडू-कडाह-सामलि-कुंभी-पागाइ-दुरहियासाणं एवं च बहु-मनसा परितप्पिऊणं अनुयत्तणा विरहियधम्ममेक्क-रसियसुपसंत-वयणेहिं णं पसंत-महुरक्खरेहिं णं धम्म-देसना पुव्वगेणं भणिया कुमारेणं रायकुल-वालिया-नरिंद-समणी, गोयमा ! तेणं मुनिवरेणं जहा णं - दुक्करकारिगे मा एरिसेणं माया-पवंचेणं अच्चंत-घोर-अज्झयणं-८ / चूलिका-२

वीरुग्ग-कट्ट-सुदुक्कर-तव-संजम-सज्झाय-झाणाईहिं समज्जिए निरनुबंधि-पुन्न-पब्भारे निप्फले कुणसु, न किंचि एरिसेणं माया-दंभेणं अनंत-संसारदायगेणं पओयणं नीसंकमालोएत्ताणं नीसल्ल-मत्ताणं कुरु । अहवा अंधयार-नट्टिगानट्टमिव-धमिय-सुवण्णमिव एक्काए फुक्कयाए जहा तहा निरत्थयं होही । तुज्झेयं वालुप्पडण-भिकखा-भूमी-सेज्जा बावीस परीसहोवसग्गाहियासणाइए काय-किलेस त्ति ।

तओ भणियं तीए भग्गलक्खणाए जहा भयवं ! किं तुम्हेहिं सद्धिं छम्मेणं उल्लविज्जइ ? विसेसणं आलोयणं दाउमाणेहिं नीसंकं पत्तिया, नो णं मए तुमं तक्कालं अभिलसिउकामाए सरागाहिलासाए चक्खूए निज्झाइ उ त्ति किंतु तुज्झ परिमाण-तोलणत्थं निज्झाइओ त्ति । भणमाणी चव निहणं गया, कम्म-परिणइवसेणं समज्जित्ताणं बद्ध-पुट्ट-निकाइयं उक्कोस-ठिइं इत्थीवेयं कम्मं गोयमा ! सा राय-कुल-वालिया नरिंद-समणि त्ति तओ य स-सीस-गणे गोयमा से णं महच्छेरगभूए सयंबुद्ध-कुमार-महरिसीए विहीए संलिहिऊणं अत्ताणगं मासं पावोवगमणेणं सम्मेयसेलसिहरम्मि अंतगओ केवलित्ताए सीसगण-समण्णिए परिनिव्वुडे त्ति ।

[१५१२] सा उण रायकुल वालिया नरिंद समणी गोयमा ! तेण मायासल्ल भाव दोसेणं उववन्ना विज्जुकुमारीणं वाहणत्ताए नउलीरूवेणं किंकरीदेवेसुं । ततो चुया समाणी पुणो पुणो उववज्जंती वावज्जंति अहिंडिया मानुस तिरिच्छेसुं सयल-दोहग्ग-दुक्ख-दारिद्ध-परिगया सव्वलोय-परिभूया सकम्मफलमनुभवमाणी गोयमा ! जाव णं कह कह वि कम्माणं खओवसमेणं बहु-भवंतरेसुं तं आयरिय-पयं पाविऊण निरयार-सामण्ण-परिपालेणं सव्वत्थामेसुं च सव्वपमायालंबण-विप्पमुक्केणं तु उज्जमिऊणं निद्धइढावसेसी-कय-भवंकुरे तहा वि गोयमा ! जा सा सरागा-चक्खुणालोइया तया तक्कम्मदोसेणं माहणित्थित्ताए परिनिव्वुडे णं से रायकुल-वालियानरिंद-समणी जीवे ।

[१५१३] से भयवं ! जे णं केई सामन्नमब्भुट्टेज्जा से णं एक्काइ जाव णं सत्त-अट्ट-भवंतरेसुं नियमेण सिज्झेज्जा ता किमेयं अनूनाहियं लक्ख-भवंतर-परियडणं ति ? गोयमा ! जे णं केई निरइयारे सामन्ने निव्वाहेज्जा से णं नियमेणं एक्काइ जाव णं अट्टभवंतरेसुं सिज्झे, जे उ णं सुहुमे बायरे केई मायासल्ले वा आउकाय-परिभोगे वा तेउकायपरिभोगे वा मेहुण-कज्जे वा अन्नयरे वा केई आणाभंगे काऊणं सामन्नमइयरेज्जा से णं जं लक्खेण भवग्गहणेणं सिज्झे, तं महइ लाभे जओ णं सामण्णमइयरित्ता बोहिं पि लभेज्जा दुक्खेणं । एसा सा गोयमा ! तेणं माहणी जीवेणं माया कया । जीए य एद्धमेत्ताए वि एरिसे पावे दारुणे-विवागि त्ति ।

[१५१४] से भयवं किं तीए मयहरीए तेहिं से तंदुलमल्लगे पयच्छिए किं वा णं सा वि य मयहरी तत्थेव तेसिं समं असेस-कम्मक्खयं काऊणं परिनिव्वुडा हवेज्जा ? त्ति गोयमा ! तीए मयहरिए तस्स णं तंदुल-मल्लगस्सडाए तीए माहणीए धूय त्ति काऊणं गच्छमाणी अवंतराले चव अवहरिया सा सुज्जसिरी, जहा णं मज्झं गोरसं परिभोत्तूणं कहिं गच्छसि संपयं ? त्ति । आह वच्चामो गोउलं । अन्नं

च-जइ-तुमं मज्झं विनीया हवेज्जा, ता अहयं तुज्जं जहिच्छाए ते कालियं बहु-गुल-घरणं अनुदियहं पायसं पयच्छिहामि ।

जाव णं एयं भणिया ताव णं गया सा सुज्जसिरि तीए मयहरीए सद्धिं ति । तेहिं पि परलोगानुद्वाणेक्क सुहज्झवसायाखित्तमानसेहिं न संभरिया ता गोविंद-माहणाईहिं । एवं तु जहा भणियं मयहरीए तहा चेव तस्स घय-गुल-पायसं पयच्छे ।

अज्झयणं-८ / चूलिका-२

अहन्नया कालक्कमेणं गोयमा! वोच्छिन्ने णं दुवालस-संवच्छरिए महारोरवे दारुणे दुब्भिकखे जाए णं रिद्धित्थिमिय-समिद्धे सव्वे वि जनवए ।

अहन्नया पणुवीसं अणग्घेयाणं पवर-ससि-सूरकंताईणं मणि-रयणाणं घेत्तूण सदेस-गमन-निमित्तेणं दीहद्धाण-परिखिन्न-अंगयट्ठी-पह-पडिवण्णेणं तत्थेव गोउले, भवियव्वयानियोगेणं आगए अनुच्चरीय-नामधेज्जे पावमती सुज्जसिवे । दिट्ठा य तेणं सा कन्नगा जाव णं परितुलिय-सलय-तिहुयण-नर-नारी-रूव-कंति-लावण्णा तं सुज्जसिरिं पासिय चवलत्ताए इंदियाणं, रम्मयाए किंपागफलोवमाणं, अनंत-दुक्ख-दायगाणं विसयाणं विनिज्जियासेसतिहुयणस्स णं गोयर-गएणं मयर-केउणो भणियाणं गोयमा ! सा सुज्जसिरी ते णं महापावकम्मेणं सुज्जसिवेणं जहा णं हे हे कन्नगे ! जइ णं इमे तुज्झ संतिए जननी-जनगे समणुमण्णंति । ता णं तु अहयं ते परिणेमि ।

अन्नं च करेमि सव्वं पि ते बंधुवग्गमदरिद्धं ति । तुज्झमवि घडावेमि पलसयमन्नगं सुवण्णस्स, ता गच्छ, अइरेणेव साहेसु माया-पित्तागं तओ य गोयमा ! जाव णं पहडु-तुट्ठा सा सुज्जसिरी तीए मयहरीए एयं वइयरं पकहेइ ताव णं तक्खणमागंतूणं भणिओ सो मयहरीए-जहा-भो भो पयंसेहिं णं जं ते मज्झ धूयाए सुवण्ण-पलसए सुंकिए । ताहे गोयमा ! पयंसिए तेन पवरमणी । तओ भणियं मयहरीए जहा-तं सुवण्णसयं दाएहिं किमेएहिं डिंभ-रमणगेहिं पंचिद्वगेहिं ? ताहे भणियं सुज्जसिवेणं जहा णं-एहि वच्चामो नगरं दंसेमि णं अहं तुज्झमिमाणं पंचिद्वगाणं माहप्पं ।

तओ पभाए गंतूणं नगरं पयंसियं ससि-सूर-कंत-पवर-मणि-जुवलगं तेणं नरवइणो, नरवइणा वि सद्दाविऊणं भणिए पारिक्खी जहा-इमाणं परममणीणं करेह मुल्लं, तोल्लंतेहिं तु न सक्किरं तेसिं मुल्लं काऊणं । ताहे भणियं नरवइणा जहा णं भो भो माणिक्कखंडिया नत्थि केइ एत्थ जेणं एएसिं मुल्लं करेज्जा, तो गिण्हसु णं दसकोडिओ दविणजायस्स । सुज्जसिवेणं भणियं- जं महाराओ पसायं करेति, नवरं इणमो आसण्ण-पव्वय-सन्निहिए अम्हाणं गोउले । तत्थ एगं च जोयणं जाव गोमीणं गोयर-भूमी, तं अकरभरं विमुंचसु त्ति । तओ नरवइणा भणियं जहा एवं भवउ त्ति ।

एवं च गोयम ! सव्वं अदरिद्धमकरभरे गोउले काऊं तेणं अनुच्चरिय-नामधिज्जेणं परिणीया सा निययधूया सुज्जसिरि-सुज्जसिवेणं ।

जाया परोप्परं तेसिं पीई जाव णं नेहाणुराग-रंजिय-मानसे गर्मेति कालं किंचि ताव णं दडूणं गिहागए साहूणो पडिनियत्ते हा-हा-कंदं करेमाणी पुट्ठा सुज्जसिवेणं सुज्जसिरी जहा-पिए ! एयं अदिद्वपुव्वं भिक्खायर-जुयलयं दडूणं किमेयावत्थं गयासि ? तओ तीए भणियं ननु मज्झं सामिणी एएसिं महया भक्खन्न-पाणेणं पत्त-भरणं किरियं । तओ पहडु-तुट्ठ-मानसा उत्तमंगेणं चलणग्गे पणमयंती ता मए अज्ज एएसिं परिदंसणेणं सा संभारिय त्ति, ताहे पुणो वि पुट्ठा सा पावा तेणं, जहा णं पिए । काउ तुज्झं सामिणी अहेसि? तओ गोयमा ! णं दढं ऊसुसरुसुंभंतीए समण्णुगघरविसंतुल्लंसुगगिराए साहियं सव्वं पि

निययवुत्तत्तं तस्सेति । ताहे विण्णायं तेषं महापावकम्मणं जहा णं निच्छयं एसा सा ममंगया सुज्जसिरी । न अन्नाए महिलाए एरिसा रूव-कंती-दित्ती-लावण्ण सोहग्ग-समुदयसिरी भवेज्ज त्ति । चिंतिऊण भणिउमाढत्तो तं जहा :-

[१५१५] एरिस कम्म-रयाणं जं ण पडे खडहडिंतयं वज्जं ।

तं नूण इमं चिंतेइ सो वि जहित्थविउ मे कत्थ सुज्झिस्सं ?॥

अज्झयणं-८ / चूलिका-२

[१५१६] ति भाणिऊणं चिंतउं पवत्तो सो महापावयारी । जहा णं किं छिंदामि अहयं सहत्थेहिं तिलं तिलं सगत्तं ? किं वा णं तुंगगिरियडाओ पक्खिविउं दढं संचुन्नेमि ? इनमो अनंतो-पाव-संघाय-समुदयं दुढं ? किं वा णं गंतूणं लोहयार-साला सुतत्त-लोह-खंडमिव-घण-खंडाहिं चुण्णावेमि सुइरमत्ताणगं ?

किं वा णं फालावेऊणं मज्झोमज्झीए तिक्ख-करवत्तेहिं अत्ताणगं पुणो संभरावेमि अंतो सुकड्ढियतउय-तंब-कंसलोए-लोणूससज्जियक्खारस्स? किं वा णं सहत्थेणं छिंदामि उत्तमंगं ? किं वा णं पविसामि मयरहरं ? किं वा णं उभयरूक्खेसु अहोमुहं विणिबंधाविऊणमत्ताणगं हेइवा पज्जलावेमि जलणं ?

किं बहुना ? निद्वहेमि कट्ठेहिं अत्ताणगं ति ? चिंतिऊणं जाव णं मसाणभूमीए, गोयमा ! विरइया महती चिई । ताहे सयल-जन-सन्निज्झं सुईरं निंदिऊण अत्ताणगं साहियं च सव्व-लोगस्स जहा णं मए एरिसं एरिसं कम्मं समायरियं ति भाणिऊण आरूढो चीयाए ।

जाव णं भवियव्वयाए निओगेणं तारिस-दव्व-चुन्न-जोगाणुसंसट्ठे ते सव्वे वि दारु त्ति काऊणं फूइज्जमाणे वि अनेग-पयारेहिं तहा वि णं पयलिए सिही । तओ य णं धिद्धिकारेणोवहओ सयल-गोववयणेहिं जहा-भो भो पेच्छ पेच्छ हुयासणं पि न पज्जले पावकम्मं-कारिस्सं ति भाणिऊणं निद्धाडिए ते बेवि गोउलाओ ।

एयावसरंमि उ अण्णासन्न-सन्निवेसाओ आगए णं भत्त-पानं गहाय तेणेव मग्गेणं उज्जाणाभिमुहे मुणीण संघाडगे । तं च ददूणं अनुमग्गेणं गए ते बेवि पाविट्ठे, पत्ते य उज्जाणं जाव णं पेच्छंति सयल-गुणोह धारिं चउन्नाण-समन्नियं बहु-सीसगण-परिकिन्नं देविंदं नरिंदं वंदिज्जमाणं-पायरविंदं सुगहिय-नामधेज्जं जगानंदं-नाम अनगारं तं च ददूणं चिंतियं तेहिं जहा नंदे मग्गामि विसोहि-पयं एस महायसे त्ति चिंतिऊणं तओ पणाम-पुव्वगेणं उवविट्ठे ते जहोइए भूमिभागे पुरओ गणहरस्स, भणिओ य सुज्जसिवो तेषं गणहारिणा जहा णं भो भो देवाणुप्पिया ! नीसल्लमालोएत्ताणं लघुं करेसुं सिग्घं असेस पाविट्ठ-कम्म-निद्ववणं पायच्छित्तं ।

एसा उण आवण्णसत्ताए पाणयाए पायच्छित्तं नत्थि जाव णं नो पसूया ताहे गोयमा ! समुहच्चंत-परम-महासंवेगए से णं सुज्जसिवे आजम्माओ नीसल्ला-लोयणं पयच्छिऊण जहवइडुं घोरं सुदुक्करं महंतं पायच्छित्तं अनुचरित्ताणं,

तओ अच्चंत-विसुद्ध-परिणामो सामण्णमब्भुट्ठिऊणं छव्वीसं संवच्छरे तेरस य राइंदिए अच्चंत-घोर-वीरुग्ग-कट्ठ-दुक्कर-तव-संजमं-समणुचरिऊणं जाव णं एग-दु-ति-चउ-पंच-छम्मासिएहिं खमणेहिं खवेऊणं निप्पडि-कम्म-सरीरत्ताए अप्पमाययाए सव्वत्थामेसु अनवरय-महन्निसानुसमयं सययं सज्झाय-झाणाईसु णं निद्विहिऊणं सेस-कम्ममलं अउव्व-करणेणं खवग-सेढीए अंतगड-केवली जाए सिद्धे य।

[१५१७] से भयवं तं तारिसं महापावकम्मं समायरिऊणं तहा वी कहं एरिसेणं से सुज्जसिवे लहं थेवेणं कालेणं परिनिव्वुडे त्ति ? गोयमा ! ते णं जारिसं भावद्विएणं आलोयणं विइन्नं जारिस संवेग-गएणं तं तारिसं घोरदुक्करं हंतं पायच्छित्तं समणुद्वियं जारिसं सुविसुद्ध-सुहज्झवसाएणं तं तारिसं अच्चंतक-घोर-वीरुग्ग-कट्ट-सुदुक्कर-तव-संजम-किरियाए वट्टमाणेणं अखंडिय अविराहिए मूलुत्तरगुणे परिपालयंतेणं निरइयारं सामण्णं निव्वाहियं, जारिसेणं रोद्धट्टज्झाण-विप्पमुक्केणं निद्विय-राग-दोस-मोह-मिच्छत्त-मय-भय-गारवेणं मज्झत्थ-भावेणं अदीनमानसेणं दुवालस वासे संलेहणं काऊणं पाओवगमनमन अज्झयणं-८ / चूलिका-२

सनं पडिवण्णं । तारिसेणं एगंतं सुहज्झवसाएणं णं केवलं से एगे सिज्जेज्जा ।

जइ णं कयाइ परकय-कम्म-संकमं भवेज्जा ता णं सव्वेसिं पि भव्व-सत्ताणं असेस-कम्म-कखयं-काऊण सिज्जेज्जा । नवरं परकयकम्मं न कयादी कस्सई संकमेज्जा, जं जेण समज्जियं तं तेणं समनुभवियव्वयं ति, जया णं निरुद्धे जोगे हवेज्जा, तया णं असेसंपि कम्मट्ट-रासिं अनुकाल-विभागेणव निद्ववेज्जा सुसंवुडा सेसासवदारे । जोगनिरोहेणं तु कम्मकखए दिद्वे न उण काल-संखाए जओ णं ।

[१५१८] काले णं तु खवे कम्मं काले णं तु पबंधए ।

एगं बंधे खवे एगं गोयमा कालमनंतगं ॥

[१५१९] निरुद्धेहिं तु जोगेहिं वेए कम्मं न बंधए ।

पोराणं तु पहीएज्जा नवगस्साभावमेव तु ॥

[१५२०] एवं कम्मकखयं विंदा नो एत्थं कालमुद्विसे ।

अनाइकाले जीवे य तहा वि कम्मं न निद्विए ॥

[१५२१] खाओवसमेमं कम्माणं जया वीरियं समुच्छले ।

कालं खेत्तं भवं भावं दव्वं संपप्प जीवे तया ॥

[१५२२] अप्पमादी खवे कम्मं जे जीवे तं कोडिं चडे ।

जो पमादि पुणोऽनंतं कालं कम्मं निबंधिया ॥

[१५२३] निवसेज्जा चउगईए उ सव्वत्थाच्चंत-दुक्खिए ।

तम्हा कालं खेत्तं भवं भावं संपप्प गोयमा

! ।

मइमं अइरा कम्मकखयं करे ॥

[१५२४] से भयवं सा सुज्जसिरी कहिं समुववन्ना ? गोयमा ! छट्ठीए नरय-पुढवीए । से भयवं ! केणं अट्टेणं ? गोयमा! तीए पडिपुन्नाणं साइरेगाणं नवणं मासाणं गयाणं इणमो विचिंतियं जहा-णं पच्चुसे गब्भं पडावेमि, ति एवमज्झवसमाणी चेव बालयं पसूया, पसूयमेत्ता य तक्खणं निहणं गया, एतेणं अट्टेणं गोयमा! स सुज्जसिरी छट्ठियं गयं त्ति ।

से भयवं! जं तं बालगं पसविऊणं मया सा सुज्जसिरी तं जीवियं वा ण व त्ति ? गोयमा! जीवियं । से भयवं ! कहं? गोयमा! पसूयमेत्तं तं बालगं तारिसेहिं जरा-जहा-जलुस-जंबाल-पूइ-रुहिर-खार-दुगंधासुईहिं विलत्तमनाहं विलवमाणं दट्टूणं कुलाल-चक्कस्सोवरिं काऊणं साणेणं समुद्विसिउमारद्धं ताव णं दिद्वं कुलालेणं । ताहे धाइओ सघरणिओ कुलालो अविनासिय बाल-तणू पणडो साणो ।

तओ कारुण्ण-हियएणं अपुत्तस्स णं पुत्तो एस मज्झ होहिइ त्ति वियप्पुऊणं कुलालेणं समप्पिओ से बालगो गोयमा ! स दईयाए । तीए य सब्भाव-नेहेणं परिवालिऊणं मानुसी कए से बालगे ।

कयं च पामं कुलालेणं लोगानुवित्तीए सजणगाहिहाणेणं, जहा णं सुसढो । अन्नया कालक्कमेणं गोयमा ! सुसाहु-संजोग-देसनापुव्वेणं पडिबुद्धे णं सुसढे पव्वइए य । जाव णं परम-सद्धा-संवेग-वेरग्ग-गए अच्चंतघोरवीरुग्ग-कड्डसुदुक्करं महाकायकेसं करेइ ।

संजमं जयणं न याणइ अजयणा दोसेणं तु सव्वत्थ असंजम-पएसु णं अवरज्जे । तओ तस्स गुरुहिं भणियं जहा भो भो महासत्त ! तए अन्नाण-दोसओ संजम-जयणं अयाणमाणेणं महंते काय-केसे समाढत्ते । नवरं जइ निच्चालोयणं दाऊणं पायच्छित्तं न काहिसि ता सव्वमेयं निप्फलं होही, अज्झयणं-८ / चूलिका-२

ता जाव णं गुरुहिं चोइए ताव णं से अनवरयालोयणं पयच्छे, से वि णं गुरु तस्स तहा पायच्छित्ते पयाइ । जहा णं संजम-जयणं ननु एगंतेणेव अहन्निसाणुसमयं रोद्धज्झाणाइविप्पमुक्के सुहज्झवसाय-निरंतरे पविहरेज्जा ।

अहन्नया णं गोयमा ! से पावमती जे केइ छड्ड-डुम-दसम-दुवालसद्धमास-मास-जाव णं छम्मास-खवणाइए अन्नयरे वा सुमहं काय-केसाणुगए पच्छित्ते से णं तह त्ति समणुद्धे । जे य उणं एगंत-संजम-किरियाणं जयणाणुगए मनोवइ-काय-जोगे सयलासव-निरोहे सज्झाय-ज्झाणावस्सगाईए असेस-पाव-कम्म-रासि-निद्धणे पायच्छित्ते से णं पमाए अवमन्ने अवहेले असद्धे सिढिले जाव णं किल किमित्थ दुक्करं ति काऊणं न तहा समणुद्धे ।

अन्नया णं गोयमा ! अहाउयं परिवालिऊणं से सुसढे मरिऊणं सोहम्मे कप्पे इंदसामानिए महिड्ढी देवे समुप्पन्ने, तओ वि चविऊणं इहइं वासुदेवो होऊणं सत्तम-पुढवीए समुप्पन्ने । तओ उव्वट्टे समाणे महा काए हत्थी होऊणं मेहुणा-सत्त-मानसे मारिऊणं अनंत-वणस्सतीए गय त्ति । एस णं गोयमा ! से सुसढे जे णं ।

[१५२५] आलोइय-निंदियगरहिए णं कय-पायच्छित्ते वि भवित्ताणं ।

जयणं अयाणमाणे भमिही सुइरं तु संसारे ॥

[१५२६] से भयवं कयराओ य तेणं जयणा न विन्नाया, जओ णं तं तारिसं सुदुक्करं काय-केसं काऊणं पि तहा वि णं भमिहिइ सुइरं तु संसारे ? गोयमा! जयणा नाम अट्टारसणं सीलंग-सहस्साणं संपुण्णाणं अखंडिय-विराहियाणं जावज्जीव-महण्णिसाणुसमयं धारणं कसिणं संजम-किरियं अनुमन्नंति, तं च तेण न विण्णायंति । ते णं तु से अहन्ने भमिहिइ सुइरं तु संसारे ।

से भयवं ! केणं अट्टेणं तं च तेणं न विण्णायंति ? गोयमा ! ते णं जावइए काय-केसे कए तावइयस्स अद्ध-भागेणेव जइ से बाहिर-पानगं विवज्जंते ता सिद्धीए मनुवयंते नवरं तु तेण बाहिर-पानगे परिभुत्ते बाहिरपानग परिभोइस्स णं गोयमा ! बहूइ वि कायकेसे निरत्थगे हवेज्जा । जओ णं गोयमा ! आऊ-तेऊ-मेहुणे एए तओ वि महापावट्टाणे अबोहिदायगे एगंतेणं वि वज्जियव्वे, एगंतेणं न समायरियव्वे सुसंजएहिं ति, एतेणं अट्टेणं तं च तेणं न विण्णाय त्ति ।

से भयवं केणं अट्टेणं आऊ-तेऊ-मेहुणे त्ति अबोहिदायगे समक्खाए ? गोयमा ! णं सव्वमवि छक्काय-समारंभे महापावट्टाणे किंतु आऊ-तेऊकाय-समारंभे णं अनंत-सत्तोवघाए मेहुणासेवणेणं तु संखेज्जासंखेज्ज-सत्तोवघाए घन-राग-दोस-मोहानुगए एगंत-अप्प-सत्थज्झवसायत्तमेव जम्हा णं एवं तम्हाओ गोयमा ! एतेसिं समारंभासेवणपरिभोगादिसु वट्टमाणे पाणी पढममहव्वयमेव न धारेज्जा । तयभावे अवसेसमहव्वय-संजमट्टाणस्स अभावमेव जम्हा एवं तम्हा सव्वहा विराहिए सामण्णे । जओ एवं

तओ णं पवत्तियसंमग्गपणासित्तेणेव गोयमा ! तं किं किंपि कम्मं निबंधेज्जा जे णं तु नरय-तिरिय-कुमानुसेसु अनंत-खुत्तो पुणो पुणो धम्मो त्ति अक्खराइं सिमिणे वि णं अलभमाणे परिभमेज्जा । एएणं अट्ठेणं आऊ-तेऊ-मेहुणो अबोहिय-दायगे गोयमा ! समक्खाए त्ति ।

से भयवं! किं छट्ठ-ट्ठम-दसम-दुवालसद्ध-मास-मासे जाव णं छम्मास-खवणाईणं अचंचंत-घोर-वीरुग्ग-कट्ठ-सुदुक्करे-संजम-जयणावियले सुमहंते वि उ काय-केसे कए निरत्थगे हवेज्जा ? गोयमा! णं निरत्थगे हवेज्जा । से भयवं ! केणं अट्ठेणं ? गोयमा ! जओ णं खरुट्ठ-महिस-गोणाद-अज्झयणं-८ / चूलिका-२

ओवि संजमजयणावियले अकाम निज्जराए सोहम्म-कप्पाइसु वयंति । तओ वि भोग-खएणं-चुए समाणे तिरियादिसु संसारमनुसरेज्जा ।

तहा य दुग्गंधामेज्झचिलीण-खारपित्तोज्झ-सिंभ-पडहत्थे-वसा-जलुस-पूइ-दुद्धिणि-चिलिविले-रुहिर-चिक्खल्ले दुद्धंसणिज्ज-बीभच्छ-तिमिसंधयारए गंतुव्वियणिज्ज-गब्भ-पवेस-जम्म-जार-मरणाई-अनेग-सारीर-मनोसमुत्थ-सुघोर-दारुण-दुक्खाणमेव भायणं भवंति । न उण संजम-जयणाए विना जम्म-जरा-मरणाइएहिं घोर-पयंड-महारुद्ध-दारुण-दुक्खाणं निट्ठवणमेगंतियमचंचंतियं भवेज्जा । एतेणं अट्ठेणं संजम-जयणावियले सुमहंतेवि काय-केसे पकए गोयमा ! निरत्थगे भवेज्जा, से भयवं ! किं संजम-जयणं समुप्पेहमाणे समनुपालेमाणे समणुट्ठेमाणे अइरेणं जम्म-मरणादीणं विमुच्चेज्जा ? गोयमा! अत्थेगे जे णं नो अइरेणं विमुच्चेज्जा ।

से भयवं ! केणं अट्ठेणं एवं वुच्चइ? जहा णं अत्थेगे जेणं नो अइरेणं विमुच्चेज्जा अत्थेगे जे णं अइरेणेव विमुच्चेज्जा ? गोयमा! अत्थेगे जे णं किंचिउ ईसि मनगं अत्ताणगं अनोवलक्खेमाणे सराग-ससल्ले-संजम-जयणं समणुट्ठे जे णं एवंविहे से णं चिरेणं जम्म-जरा-मरणाइं अनेग-संसारिय-दुक्खाणं विमुच्चेज्जा ।

अत्थेगे जे णं निम्मूलुद्धिय-सव्वसल्ले निरारंभ-परिग्गहे निम्ममे निरहंकारे ववगयराग-दोस-मोह-मिच्छत्त-कसाय-मलकलंके सव्व-भावभावंतरेहिं णं सुविसुद्धासए-अदीन-मानसे एगंतेणं निज्ज-रापेही परम-सद्धा-संवेग-वेरग्गगए विमुक्कासेस मय-भय-गारव-विचित्ताणेग-पमायलवणे ।

जाव णं निज्जिय-घोर-परीसहोवसग्गे ववगयरोद्धट्ठज्झाणे असेस-कम्म-खयट्ठाए जहुत्त-संजम-जयणं समनुपेहिज्जा पालेज्जा अनुपालेज्जा समणुपालेज्जा जाव णं समणुट्ठेज्जा । जे य णं एवंविहे से णं अइरेणं जम्म-जरामरणाइ अनेगसंसारिय-सुदुव्विमोक्खदुक्खजालस्स णं विमुच्चेज्जा, एतेणं अट्ठेणं एवं वुच्चइ- जहा णं गोयमा ! अत्थेगे जे णं नो अइरेणं विमुच्चेज्जा अत्थेगे जे य णं अइरेणेव विमुच्चेज्जा ।

से भयवं ! जम्म-जरा-मरणाइ-अनेग-संसारिय-दुक्ख-जाल-विमुक्के समाणे जंतू कहिं परिवसेज्जा? गोयमा! जत्थ णं न जरा न मच्चू न वाहिओ नो अयसब्भक्खाणं संतावुव्वेग-कलि-कलह-दारिद्ध-दंद-परिकेसं न इट्ठ-विओगो, किं बहुना ? एगंतेणं अक्खय-धुव-सासय-निरुवम-अनंत-सोक्खं मोक्खं परिवसेज्ज त्ति बेमि ।

◦ अट्ठमं अज्झयणं बिइया चूलिया समत्तं ◦

[१५२७] ॐ नमो चउवीसाए तित्थंकराणं, ॐ नमो तित्थस्स, ॐ नमो सुयदेवयाए भगवईए,
ॐ नमो सुयकेवलीणं ॐ नमो सव्वसाहूणं ॐ नमो [सव्वसिद्धाणं] ॐ नमो भगवओ अरहओ सिज्झउ
मे भगवई महइ महाविज्जा व् इ इ र् ए म ह अ अ व् इ इ र् ए, ज य व् इ इ र् ए स् ए ण व्
इ इ र् ए वद्ध म् अ अ ण् अ व् इ इ र् ए ज य् अ इ त् ए अ प् अ र् अ अ ज् इ ए स् व् अ
अ ह् अ अ ।

[वीरे महावीरे जयवीरे सेणवीरे वद्धमाणवीरे जयइ ते अपराजिए स्वाहा]

उपचारो चउत्थभत्तेणं सहिज्जइ एसा विज्जा सव्वगओ ण् इ त्थ् अ अ र ग प् अ अ र

ग्

अज्झयणं-८ / चूलिका-२

अ ओ होइ उवट्ठ अ अ व ण् अ अ गणस्स वा अ ण् उ ण् ण् आ ए एसा सत्तवारा परिजवेयव्वा
[नित्थारगो पारगो होइ] ।

जे णं कप्पसमत्तीए विज्जा अभिमंतिऊणं विग्घविणाइगा आराहंति सूरे संगामे पविसंतो
अपराजिओ होइ जिनकप्प-समत्तीए विज्जा अभिमंतिऊण खेमवहणी मंगलवहणी भवति ।

[१५२८] चत्तारि सहस्साइं पंचसयाओ तहेव चत्तारि ।

सिलोगा वि य महानिसीहंमि पाएण ॥

◦ अइमं अज्झयणं [बिइया चूलिया] समत्तं ◦

मुनि दीपरत्नसागरेण संशोधिताः सम्पादिताश्च “महानिसीहं छेयसुत्तं” सम्मत्तं

३९

महानिसीहं- छट्ठं छेयसुत्तं सम्मत्तं